

पुस्तक प्राप्ति स्थान :—

१. मंत्री श्री दिगम्बर जैन अ० क्षेत्र श्री महार्गीजी  
महावीर पार्क रोड, जयपुर ( राजस्थान )
२. मैनेजर श्री दिगम्बर जैन अ० क्षेत्र श्री महार्गीजी  
श्री महावीरजी ( राजस्थान )



प्रथम संस्करण  
५०० प्रति

वीर निर्वाण मंत्र २४=३  
वि० सं० २०१४  
अगस्त १९७७

मूल्य  
१५)



मुद्रक —  
भवरलाल न्यायतीर्थ,  
श्री वीर प्रेस, जयपुर ।

# ★ विषय सूची ★

		पृष्ठ संख्या
१. प्रकाशकीय	—	अ
२. प्रस्तावना	—	१
३. विषय	बधीचन्दजी के मन्दिर के ग्रन्थ	ठोलियों के मन्दिर के ग्रन्थ
	पृष्ठ	पृष्ठ
<u>सिद्धांत एवं चर्चा</u>	१—२२	१७५—१८२
धर्म एवं आचार शास्त्र	२३—३८	१८२—१९०
अध्यात्म एवं योग शास्त्र	३८—४६	१९१—१९५
न्याय एवं दर्शन	४६—४९	१९६—१९७
पूजा एवं प्रतिष्ठादि अन्य विधान	४९—६३	१९७—२०६
पुराण	६३—६७	२२२—२२४
काव्य एवं चरित्र	६७—८०	२०६—२२१
कथा एवं रासा साहित्य	८१—८७	२२४—२२६
व्याकरण शास्त्र	८७	२३०—२३१
कोश एवं छन्द शास्त्र	८८	२३२—२३३
नाटक	८९—९२	२३३—२३४
लोक विज्ञान	९२—९४	२३४
सुभाषित एवं नीति शास्त्र	९४—१००	२३५—२३७
स्तोत्र	१००—१०६	२३८—२४४
ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान शास्त्र	—	२४५—२४६
आयुर्वेद	—	२४६—२४७
गणित	—	२४८
रस एवं भ्रलकार	—	२४८—२५२
स्फुट एवं अवशिष्ट रचनाये	१६८—१७४	२५२—२५८
गुटके एवं संग्रह ग्रन्थ	११०—१६७	२५८—३१४
४. ग्रन्थानुक्रमणिका	—	३१५—३४६
५. ग्रन्थ प्रशस्तियों की सूची	—	३५०—३५३
६. लेखक प्रशस्तियों की सूची	—	३५४—३५५
७. ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार	—	३५६—३७६
८. शुद्धाशुद्धिपत्र	—	३७७

# क्षेत्र के अनुसन्धान विभाग की ओर से शीघ्र प्रकाशित होने वाली पुस्तकें



## १. प्रद्युम्नचरित :-

हिन्दी भाषा की एक अत्यधिक प्राचीन रचना जिसे कवि मधारु ने सवत १४११ (मन् १३५४) में समाप्त किया था।

## २. सदंसणचरित :-

अपभ्रंश भाषा का एक महत्त्वपूर्ण काव्य जो महाकवि नयनन्दि द्वारा सवत ११०० (मन् १०४३) में लिखा गया था।

## ३. प्राचीन हिन्दी जैन पद संग्रह :-

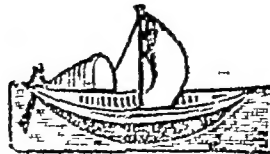
६० से भी अधिक कवियों द्वारा रचे हुये २५०० हिन्दी पदों का अपूर्व संग्रह।

## ४. राजस्थान के जैन मूर्ति लेख एवं शिलालेख :

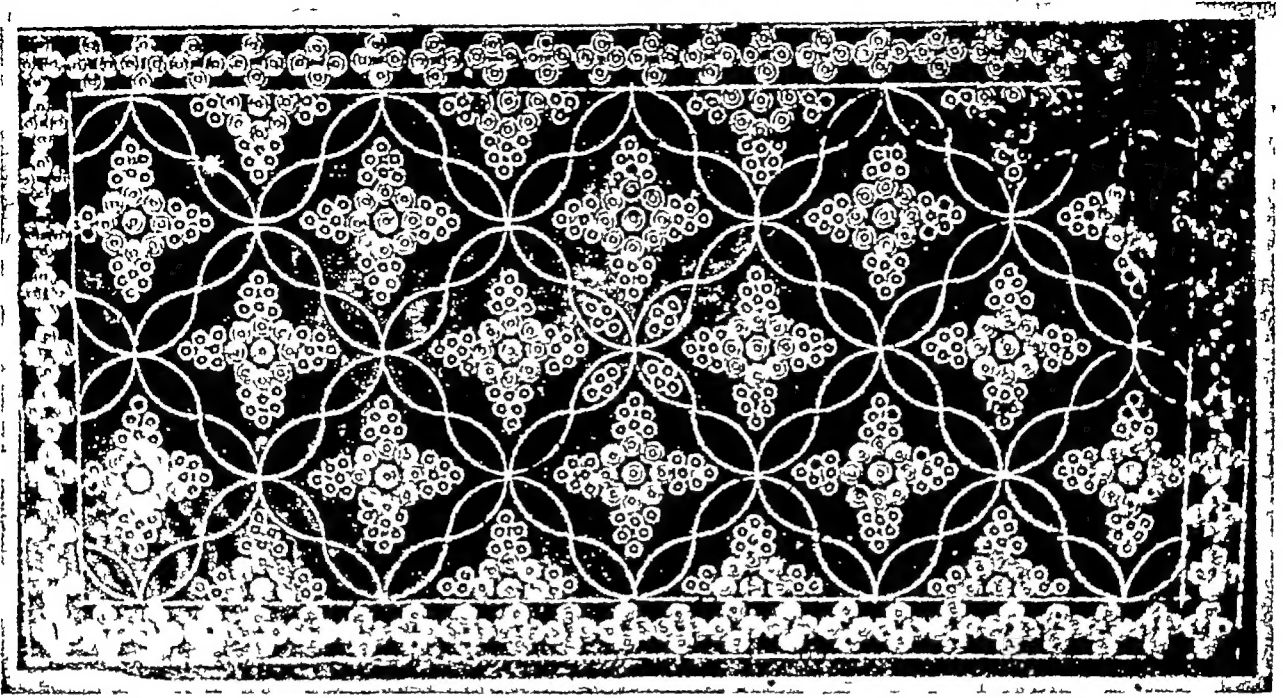
राजस्थान के १००० से अधिक प्राचीन मूर्तिलेखों एवं शिलालेखों का सचित्र संग्रह।

## ५. हिन्दी के नये साहित्य की खोज :- [ राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों से ]

१४वीं शताब्दी से लेकर १८वीं शताब्दी तक रचित हिन्दी की अज्ञात एवं अप्रकाशित रचनाओं का विस्तृत परिचय।



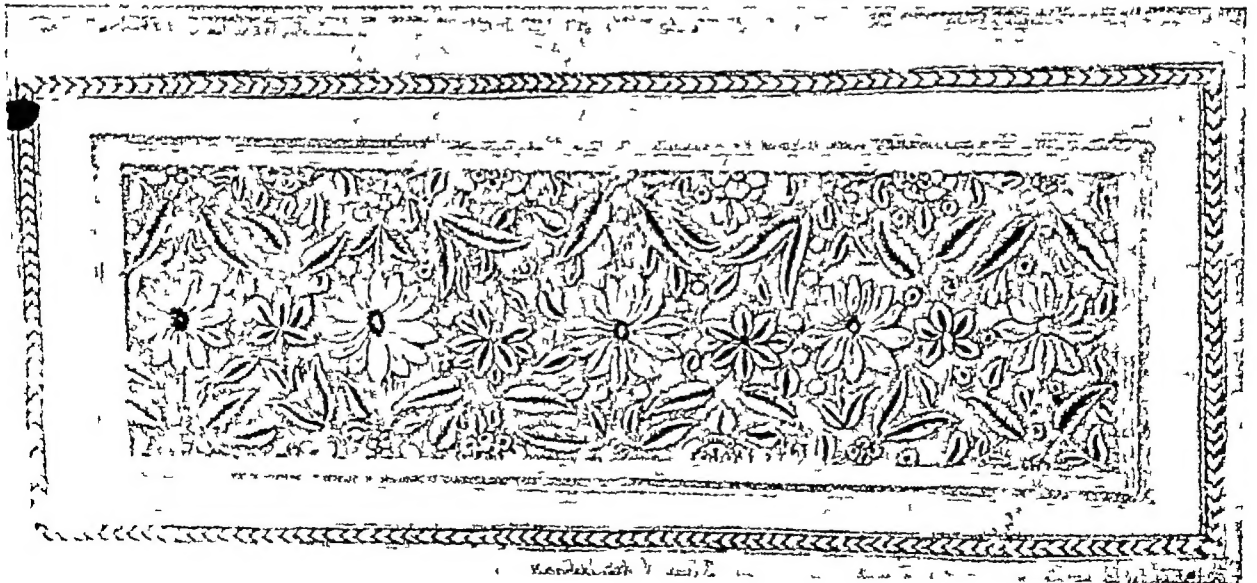
जैन शास्त्र-भण्डारों के ग्रन्थों के नीचे ऊपर लगाये जाने वाले कलात्मक पुट्टों के चित्र—



जयपुर के चौधरियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार का एक कलात्मक पुट्टा  
जिस पर चादी के तारों से काम किया गया है।

मिहो जीवद्रव्य नित्यचेतनास्वरूपमेवैकमोहैवनादितैकलैककर्ममिन्नको ताहिको निमित्तपाय  
रागादिकजावन्पणको हैरादीरको मिन्नापजैसोभवलको ॥ रागादिकतावन्तिको पायके निमित्तपु  
निलोतकर्मदेभैसोहैवनावकलको ॥ तैसैही ज्ञमतनयोमानुधनादीरजोगहूँ वनें तो वनें  
इहीउपायनिजधलको ॥ ३६ ॥ सोहा ॥ ईनापतिसुतगुनज... जाको जोगी हासा ॥ सोईमि...  
शाने ॥ पारंप्रगटम का सा ॥ ३७ ॥ मिं प्रातम अरपुजलस्वैभ मि थिके न जोपरस्परवैभ ॥ तो अस्मा

जयपुर के वधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार मे सप्रहीत महा पं० टोडरमलजी द्वारा  
लिखित 'मोक्षमार्ग प्रकाश' का चित्र।



जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार का एक पुट्टा—  
जिस पर खिले हुए फूलों का जाल बिछा हुआ है।





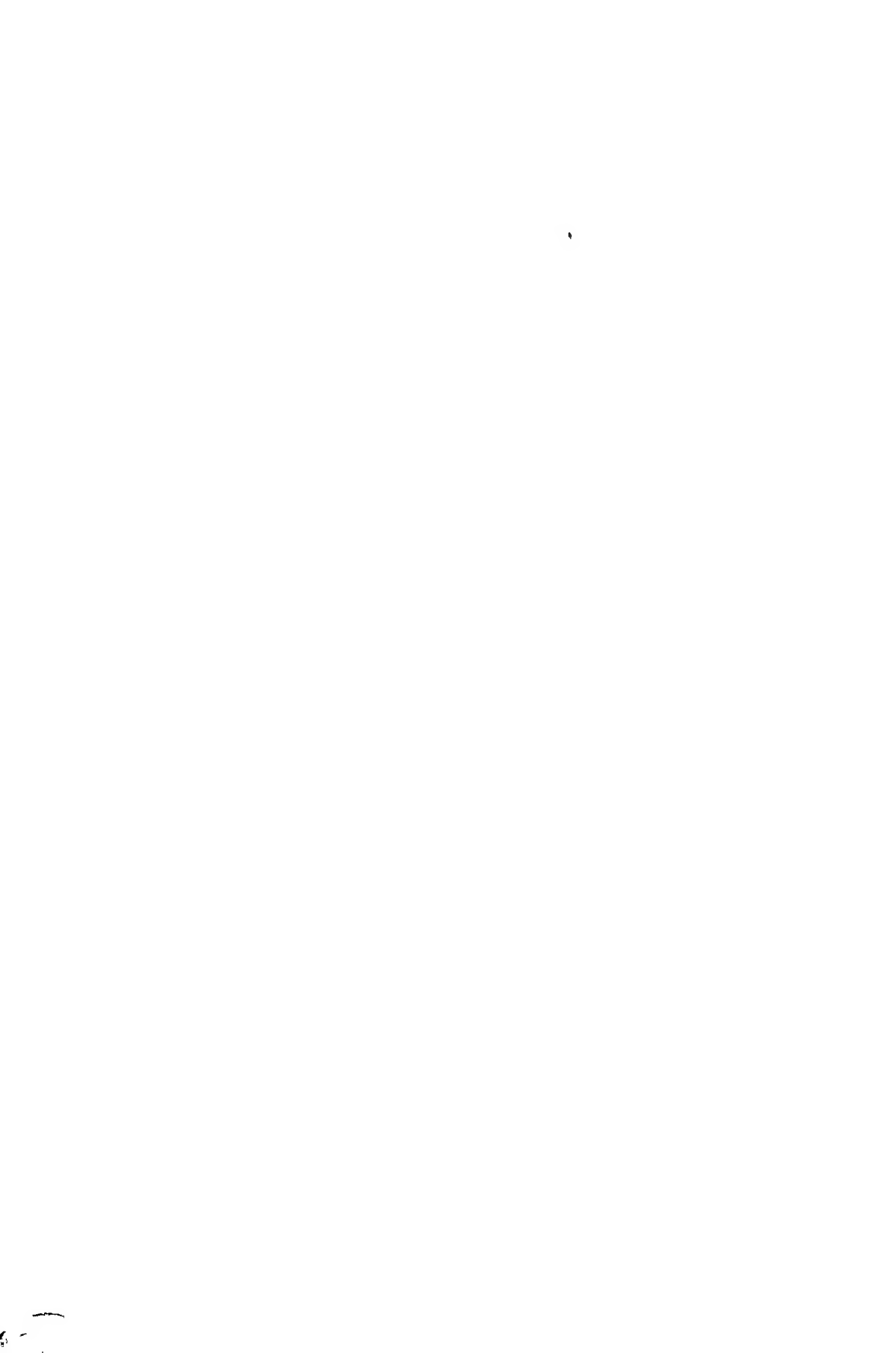
## — प्रकाशकीय —

श्री महावीर ग्रन्थमाला का यह सातवां पुष्प है तथा राजस्थान के जैन ग्रन्थभण्डारों की ग्रन्थ सूची का तीसरा भाग है जिसे पाठकों के हाथों में देते हुये बड़ी प्रसन्नता होती है। ग्रन्थ सूची का दूसरा भाग सन् १९५४ मे प्रकाशित हुआ था। तीन वर्ष के इस लम्बे समय में किसी भी पुस्तक का प्रकाशन न होना अवश्य खटकने वाली बात है लेकिन जयपुर एवं अन्य स्थानों के शास्त्र भण्डारों की छान बिन तथा सूची बनाने आदि के कार्यों में व्यस्त रहने के कारण प्रकाशन का कार्य न हो सका। सूची के इस भाग मे जयपुर के दि० जैन मन्दिर वधीचन्दजी तथा ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डारों के ग्रन्थों की सूची दी गयी है। ये दोनों ही मन्दिर जयपुर के प्रमुख एवं प्रसिद्ध मन्दिरों में से है। दोनों भण्डारों में कितना महत्वपूर्ण साहित्य संग्रहित है यह बताना तो विद्वानों का कार्य है किन्तु मुझे तो यहाँ इतना ही उल्लेख करना है कि वधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार तो १८ वीं शताब्दी के सर्व प्रसिद्ध विद्वान् टोडरमलजी की साहित्यिक सेवाओं का केन्द्र रहा था और आज भी उनके पावन हाथों से लिखी हुई मोक्षमार्गप्रकाश एव आत्मानुशासन की प्रतियां इस भण्डार में संग्रहित हैं। ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में भी प्राचीन साहित्य का अच्छा संग्रह है तथा जयपुर के व्यवस्थित भण्डारों में से है।

इस तीसरे भाग में निर्दिष्ट भण्डारों के अतिरिक्त जयपुर, भरतपुर, कामां, डीग, दौसा, मौजमावाद, बसवा, करौली, बयाना आदि स्थानों के करीब ४० भण्डारों की सूचियां पूर्ण रूप से तैय्यार हैं जिन्हें चतुर्थ भाग में प्रकाशित करने की योजना है। ग्रन्थ सूचियों के अतिरिक्त हिन्दी एव अपभ्रंश भाषा के ग्रन्थों के सम्पादन का कार्य भी चल रहा है तथा जिनमें से कवि सधारू कृत प्रद्युम्नचरित, प्राचीन हिन्दी पद संग्रह, हिन्दी भाषा की प्राचीन रचनायें, महाकवि नयनन्दि कृत सुदंसणचरित एव राजस्थान के जैन मूर्तिलेख एव शिलालेख आदि पुस्तके प्रायः तैय्यार हैं तथा जिन्हें शीघ्र ही प्रकाशित करवाने की व्यवस्था की जा रही है।

हमारे इस साहित्य प्रकाशन के छोटे से प्रयत्न से भारतीय साहित्य एव विशेषत जैन साहित्य को कितना लाभ पहुँचा है यह बताना तो कुछ कठिन है किन्तु समय समय पर जो रिसर्चस्काटर्स जयपुर के जैन भण्डारों को देखने के लिये आने लगे हैं इससे पता चलता है कि सूचियों के प्रकाश में आने से जैन शास्त्र भण्डारों के अवलोकन की ओर जैन एवं जैनैतर विद्वानों का ध्यान जाने लगा है तथा वे खोजपूर्ण पुस्तकों के लेखन मे जैन भण्डारों के ग्रन्थों का अवलोकन भी आवश्यक समझने लगे हैं।

सूचियां बनाने का एक और लाभ यह होता है कि जो भण्डार वर्षों से बन्द पड़े रहते हैं वे भी खुल जाते हैं और उनको व्यवस्थित बना दिया जाता है जिससे उनसे फिर सभी लाभ उठा सके। यहाँ



## — प्रकाशकीय —

श्री महावीर ग्रन्थमाला का यह सातवां पुष्प है तथा राजस्थान के जैन ग्रन्थभण्डारों की ग्रन्थ सूची का तीसरा भाग है जिसे पाठकों के हाथों में देते हुये बड़ी प्रसन्नता होती है। ग्रन्थ सूची का दूसरा भाग सन् १९५४ में प्रकाशित हुआ था। तीन वर्ष के इस लम्बे समय में किसी भी पुस्तक का प्रकाशन न होना अवश्य खटकने वाली बात है लेकिन जयपुर एवं अन्य स्थानों के शास्त्र भण्डारों की छान बिन तथा सूची बनाने आदि के कार्यों में व्यस्त रहने के कारण प्रकाशन का कार्य न हो सका। सूची के इस भाग में जयपुर के दि० जैन मन्दिर बधीचन्दजी तथा ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डारों के ग्रन्थों की सूची दी गयी है। ये दोनों ही मन्दिर जयपुर के प्रमुख एवं प्रसिद्ध मन्दिरों में से हैं। दोनों भण्डारों में कितना महत्वपूर्ण साहित्य संग्रहीत है यह बताना तो विद्वानों का कार्य है किन्तु मुझे तो यहाँ इतना ही उल्लेख करना है कि बधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार तो १८ वीं शताब्दी के सर्व प्रसिद्ध विद्वान् टोडरमलजी की साहित्यिक सेवाओं का केन्द्र रहा था और आज भी उनके पावन हाथों से लिखी हुई मोक्षमार्गप्रकाश एव आत्मानुशासन की प्रतियां इस भण्डार में संग्रहीत हैं। ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में भी प्राचीन साहित्य का अच्छा संग्रह है तथा जयपुर के व्यवस्थित भण्डारों में से है।

- इस तीसरे भाग में निर्दिष्ट भण्डारों के अतिरिक्त जयपुर, भरतपुर, कामां, डीग, दौसा, मौजमाबाद, बसवा, करौली, बयाना आदि स्थानों के करीब ४० भण्डारों की सूचियां पूर्ण रूप से तैय्यार हैं जिन्हें चतुर्थ भाग में प्रकाशित करने की योजना है। ग्रन्थ सूचियों के अतिरिक्त हिन्दी एव अपभ्रंश भाषा के ग्रन्थों के सम्पादन का कार्य भी चल रहा है तथा जिनमें से कवि सधारू कृत प्रद्युम्नचरित, प्राचीन हिन्दी पद संग्रह, हिन्दी भाषा की प्राचीन रचनायें, महाकवि नयनन्दि कृत सुदंसणचरित एव राजस्थान के जैन मूर्तिलेख एवं शिलालेख आदि पुस्तकें प्रायः तैय्यार हैं तथा जिन्हें शीघ्र ही प्रकाशित करवाने की व्यवस्था की जा रही है।

हमारे इस साहित्य प्रकाशन के छोटे से प्रयत्न से भारतीय साहित्य एव विशेषतः जैन साहित्य को कितना लाभ पहुँचा है यह बताना तो कुछ कठिन है किन्तु समय समय पर जो रिसर्चस्कालर्स जयपुर के जैन भण्डारों को देखने के लिये आने लगे हैं इससे पता चलता है कि सूचियों के प्रकाश में आने से जैन शास्त्र भण्डारों के अवलोकन की ओर जैन एवं जैनैतर विद्वानों का ध्यान जाने लगा है तथा वे खोजपूर्ण पुस्तकों के लेखन में जैन भण्डारों के ग्रन्थों का अवलोकन भी आवश्यक समझने लगे हैं।

सूचियां बनाने का एक और लाभ यह होता है कि जो भण्डार वर्षों से बन्द पड़े रहते हैं वे भी खुल जाते हैं और उनको व्यवस्थित बना दिया जाता है जिससे उनसे फिर सभी लाभ उठा सके। यहाँ

हम समाज से एक निवेदन करना चाहते हैं कि यदि राजस्थान अथवा अन्य स्थानों में प्राचीन शास्त्र भण्डार हों तो वे हमें सूचित करने का कष्ट करें। जिससे हम वहाँ के भण्डारा की ग्रन्थ सूची तैयार करवा सकें। तथा उसे प्रकाश में ला सकें।

क्षेत्र के सीमित साधनों को देखते हुये साहित्य प्रकाशन का भारी कार्य जल्दी से नहीं हो रहा है, इसका हमें भी दुःख है लेकिन भविष्य में यही आशा की जाती है कि इस कार्य में और भी तेजी आवेगी और हम अधिक से अधिक ग्रन्थों को प्रकाशित कराने का प्रयत्न करेंगे।

अन्त में हम वधीचन्दजी एवं ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार के व्यवस्थापकों को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिन्होंने हमें शास्त्रों की सूची बनाने एवं समय समय पर ग्रन्थ देखने की पूरी सुविधाएं प्रदान की हैं।

जयपुर,

ता० १५-६-५७

वधीचन्द गंगवाल



## प्रस्तावना

राजस्थान प्राचीन काल से ही साहित्य का केन्द्र रहा है। इस प्रदेश के शासकों से लेकर साधारण जनों तक ने इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया है। कितने ही राजा महाराजा स्वयं साहित्यिक थे तथा साहित्य निर्माण में रस लेते थे। उन्होंने अपने राज्यों में होने वाले कवियों एवं विद्वानों को आश्रय दिया तथा बड़ी बड़ी पदवियां देकर सम्मानित किया। अपनी अपनी राजधानियों में हस्तलिखित ग्रंथ संग्रहालय स्थापित किये तथा उनकी सुरक्षा करके प्राचीन साहित्य की महत्त्वपूर्ण निधि को नष्ट होने से बचाया। यही कारण है कि आज भी राजस्थान में कितने ही स्थानों पर विशेषतः जयपुर, अलवर, बीकानेर आदि स्थानों पर राज्य के पोथीखाने मिलते हैं जिनमें संस्कृत, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा का महत्त्वपूर्ण साहित्य संग्रहीत किया हुआ है। यह सब कार्य राज्य-स्तर पर किया गया। किन्तु इसके विपरीत राजस्थान के निवासियों ने भी पूरी लगन के साथ साहित्य एवं साहित्यिकों की उल्लेखनीय सेवाएँ की हैं और इस दिशा में ब्राह्मण परिवारों की सेवाओं से भी अधिक जैन यतियों एवं गृहस्थों की सेवा अधिक प्रशंसनीय रही है। उन्होंने विद्वानों एवं साधुओं से अनुरोध करके नवीन साहित्य का निर्माण करवाया। पूर्व निर्मित साहित्य के प्रचार के लिये ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ करवायी गयीं तथा उनको स्वाध्याय के लिये शास्त्र भण्डारों में विराजमान की गयीं। जन साधारण के लिये नये नये ग्रंथों की उपलब्धि की गयी, प्राचीन एवं अनुपलब्ध साहित्य का संग्रह किया गया तथा जीर्ण एवं शीर्ण ग्रंथों का जीर्णोद्धार करवा कर उन्हें नष्ट होने से बचाया। उधर साहित्यिकों ने भी अपना जीवन साहित्य सेवा में होम दिया। दिन रात वे इसी कार्य में जुटे रहे। उनको अपने खान-पान एवं रहन-सहन की कुछ भी चिन्ता नहीं थी। महापंडित टोडरमलजी के सम्बन्ध में तो यह किम्बदन्ती है कि साहित्य-निर्माण में व्यस्त रहने के कारण ६ मास तक उनके भोजन में नमक नहीं डाला गया किन्तु इसका उनको पता भी न लगा। ऐसे विद्वानों के कारण ही विशाल साहित्य का निर्माण हो सका जो हमारे लिये आज अमूल्य निधि है। इसके अतिरिक्त कुछ साहित्यसेवी जो अधिक विद्वान् नहीं थे वे प्राचीन ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ करके ही साहित्य सेवा का महान पुण्य उपार्जन करते थे। राजस्थान के जैन शास्त्र-भण्डारों में ऐसे साहित्य-सेवियों के हजारों शास्त्र संग्रहीत हैं। विज्ञान के इस स्वर्णयुग में भी हम प्रकाशित ग्रंथों को शास्त्र-भण्डारों में इसलिये संग्रह करना नहीं चाहते कि उनका स्वाध्याय करने वाला कोई नहीं है किन्तु हमारे पूर्वजों ने इन शास्त्र भण्डारों में शास्त्रों का संग्रह केवल एक मात्र साहित्य सेवा के आधार पर किया था न कि स्वाध्याय करने वालों की संख्या को देख कर। क्योंकि यदि ऐसा होता तो आज इन शास्त्र भण्डारों में इतने वर्षों के पश्चात् भी हमें हजारों की संख्या में हस्तलिखित ग्रन्थ संग्रहीत किये हुये नहीं मिलते।

जैन सघ की इस अनुकरणीय एवं प्रशसनीय साहित्य सेवा के फलस्वरूप राजस्थान के गांवों, कस्बों एवं नगरों में ग्रंथ सप्रहालय स्थापित किये गये तथा उनकी सुरक्षा एवं संरक्षण का भार उन्हीं स्थानों पर रहने वाले जैन श्रावकों को दिया गया। कुछ स्थानों के भण्डार भट्टारकों, यतियों एवं पाठ्यों के अधिकार में रहे। ऐसे भण्डार श्वेताम्बर जैन समाज में अधिक हैं। राजस्थान में आज भी करीब ३०० गाव, कस्बे तथा नगर आदि होंगे जहाँ जैन शास्त्र सप्रहालय मिलते हैं। यह तीन सौ की संख्या स्थानों की संख्या है भण्डारों की नहीं। भण्डार तो किसी एक स्थान में दो तीन से लेकर २५-३० तक पाये जाते हैं। जयपुर में ३० से अधिक भण्डार हैं, पाटन में बीस से अधिक भण्डार हैं तथा बीकानेर आदि स्थानों में दस पन्द्रह के आस पास होंगे। सभी भण्डारों में शास्त्रों की संख्या भी एक सौ नहीं है। यदि किसी भण्डार में पन्द्रह हजार तक ग्रन्थ हैं तो किसी में दो सौ तीन सौ भी हैं। भण्डारों की आकार प्राकार के साथ साथ उनका महत्त्व भी अनेक दृष्टियों से भिन्न भिन्न है। यदि किसी भण्डार में प्राचीन प्रतियों का अधिक संग्रह है तो दूसरे भण्डार में किसी भाषा विशेष के ग्रंथों का अधिक संग्रह है। यदि किसी भण्डार में सैद्धान्तिक एवं धार्मिक ग्रन्थों का अधिक संग्रह है तो किसी भण्डार में काव्य, नाटक, रासा, व्याकरण, ज्योतिष आदि लौकिक साहित्य का अधिक संग्रह है। इनके अतिरिक्त किसी किसी भण्डार में जैनैतर साहित्य का भी पर्याप्त संग्रह मिलता है।

साहित्य संग्रह की इस दिशा में राजस्थान के अन्य स्थानों की अपेक्षा जयपुर, नागौर, जैसलमेर, बीकानेर, अजमेर आदि स्थानों के भण्डार संख्या, प्राचीनता, साहित्य-समृद्धि एवं विषय-वैचित्र्य आदि सभी दृष्टियों से उल्लेखनीय हैं। राजस्थान के इन भण्डारों में, ताडपत्र, कपडा, और कागज इन तीनों पर ही ग्रंथ मिलते हैं किन्तु ताडपत्र के ग्रंथ तो जैसलमेर के भण्डारों में ही मुख्यतया संग्रहीत हैं अन्य स्थानों में उनकी संख्या नाम मात्र की है। कपडे पर लिखे हुये ग्रंथ भी बहुत कम संख्या में मिलते हैं। अभी जयपुर के पार्श्वनाथ ग्रंथ भण्डार में कपडे पर लिखा हुआ सवत् १५१६ का एक ग्रंथ मिला है। इसी तरह के ग्रंथ अन्य भण्डारों में भी मिलते हैं लेकिन उनकी संख्या भी बहुत कम है। सबसे अधिक संख्या कागज पर लिखे हुये ग्रंथों की है जो सभी भण्डारों में मिलते हैं तथा जो १३ वीं शताब्दी से मिलने लगते हैं। जयपुर के एक भण्डार में सवत् १३१६ (सन १२६०) का एक ग्रंथ कागज पर लिखा हुआ सुरक्षित है।

यद्यपि जयपुर नगर को बसे हुये करीब २२५ वर्ष हुये हैं किन्तु यहाँ के शास्त्र-भण्डार संख्या, प्राचीनता, साहित्य-समृद्धि एवं विषय वैचित्र्य आदि सभी दृष्टियों से उत्तम हैं। वैसे तो यहां के प्रायः प्रत्येक मन्दिर एवं चैत्यालय में शास्त्र संग्रह किया हुआ मिलता है किन्तु आमेर शास्त्र भण्डार, बड़े मन्दिर का शास्त्र भण्डार, बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भण्डार, ठोलियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, बंधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, पाडे लूणकरणी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, गोधो के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, पार्श्वनाथ के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, पाटोदी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, लश्कर के मन्दिर

का शास्त्र भण्डार, छोटे दीवान जी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, सधीजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, छावडों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, जोवनेर के मन्दिर का शास्त्र भण्डार, नया मन्दिर का शास्त्र भण्डार आदि कुछ ऐसे शास्त्र भण्डार हैं जिनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी, भाषाओं के महत्त्वपूर्ण साहित्य का संग्रह है। उक्त भण्डारों की प्रायः सभी की ग्रंथ सूचियाँ तैय्यार की जा चुकी हैं जिससे पता चलता है कि इन भण्डारों में कितना अपार साहित्य संकलित किया हुआ है। राजस्थान के ग्रंथ भण्डारों के छोटे से अनुभव के आधार पर यह लिखा जा सकता है कि अपभ्रंश एवं हिन्दी की विभिन्न धाराओं का जितना अधिक साहित्य जयपुर के इन भण्डारों में संग्रहीत है उतना राजस्थान के अन्य भण्डारों में संभवतः नहीं है। इन ग्रन्थ भण्डारों की ग्रन्थ सूचियाँ प्रकाशित हो जाने के पश्चात् विद्वानों को इस दिशा में अधिक जानकारी मिल सकेगी।

ग्रंथ सूची का तृतीय भाग विद्वानों के समक्ष है। इसमें जयपुर के दो प्रसिद्ध भण्डार—वधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार एवं ठोलियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार—के ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय उपस्थित किया गया है। ये दोनों भण्डार नगर के प्रसिद्ध एवं महत्त्वपूर्ण भण्डारों में से हैं।

### वधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार—

वधीचन्दजी का दि० जैन मन्दिर जयपुर के जैन पञ्चायती मन्दिरों में से एक मन्दिर है। यह मन्दिर गुमानपन्थ के आम्नाय का है। गुमानीरामजी महापंडित टोडरमलजी के सुपुत्र थे जिन्होंने अपना अलग ही गुमानपन्थ चलाया था। यह पन्थ दि० जैनों के तेरहपन्थ से भी अधिक सुधारक है तथा भट्टारकों द्वारा प्रचलित शिथिलाचार का कट्टर विरोधी है। यह विशाल एवं कलापूर्ण मन्दिर नगर के जौहरी बाजार के घी वालों के रास्ते में स्थित है। काफी समय तक यह मन्दिर पं० टोडरमलजी, गुमानीरामजी की साहित्यिक प्रवृत्तियों का केन्द्रस्थल रहा है। पं० टोडरमलजी ने यहाँ बैठकर गोमट्टसार, आत्मानुशासन जैसे महान् ग्रंथों की हिन्दी भाषा एवं मोक्षमार्गप्रकाश जैसे महत्त्वपूर्ण सैद्धान्तिक ग्रन्थ की रचना की थी। आज भी इस भण्डार में मोक्षमार्गप्रकाश, आत्मानुशासन एवं गोमट्टसार भाषा की मूल प्रतियाँ जिनको पंडितजी ने अपने हाथों से लिखा था, संग्रहीत हैं।

पञ्चायती मन्दिर होने के कारण तथा जयपुर के विद्वानों की साहित्यिक प्रगतियों का केन्द्र होने के कारण यहाँ का शास्त्र भण्डार अधिक महत्त्वपूर्ण है। यहाँ संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश हिन्दी, राजस्थानी एवं वृहारी भाषाओं के ग्रन्थों का उत्तम संग्रह किया हुआ मिलता है। इन हस्तलिखित ग्रन्थों की संख्या १२७८ है। इनमें १६२ गुटके तथा शेष १११६ ग्रंथ हैं। हस्तलिखित ग्रंथ सभी विषय के हैं जिनमें सिद्धान्त, धर्म एवं आचार शास्त्र, अध्यात्म, पूजा, स्तोत्र आदि विषयों के अतिरिक्त, काव्य, चरित, पुराण, कथा, नीतिशास्त्र, सुभाषित आदि विषयों पर भी अच्छा संग्रह है। लेखक प्रशस्ति संग्रह में ४० लेखक प्रशस्तियाँ इसी भण्डार के ग्रन्थों पर से दी गयी हैं। इनसे पता चलता है कि भण्डार में



१५ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी तक की प्रतियों का अच्छा संग्रह है। ये प्रतियां सम्पादन कार्य में काफी सहायक सिद्ध हो सकती हैं। हेमराज कृत प्रवचनसार भाषा एवं गोमट्टमार कर्मकाण्ड भाषा, वनारसीदास का समयसार नाटक, भ० शुभचन्द्र का चारित्रशुद्धि विधान, पं० लागू का जिणदत्तचरित्र, पं० टोडरमलजी द्वारा रचित गोमट्टसार भाषा, आदि कितने ही ग्रन्थों की तो ऐसी प्रतियां हैं जो अपने अस्तित्व के कुछ वर्षों पश्चात् की ही लिखी हुई हैं। इनके अतिरिक्त कुछ ग्रन्थों की ऐसी प्रतियां भी हैं जो ग्रन्थ निर्माण के काफी समय के पश्चात् लिखी होने पर भी महत्त्वपूर्ण हैं। ऐसी प्रतियों में स्वयम्भू का हरिवंशपुराण, प्रभाचन्द्र की आत्मानुशासन टीका, महाकवि धीर कृत जन्मवार्त्ताचरित्र, कवि सधारू का प्रद्युम्नचरित, नन्द का यशोधर चरित्र, मल्लकवि कृत प्रबोधचन्द्रोदय नाटक, सुगदेव कृत वणिकप्रिया, वशीधर की दस्तूरमालिका, पूज्यपाद कृत सर्वार्थसिद्धि आदि उल्लेखनीय हैं।

भण्डार में सबसे प्राचीन प्रति बड्ढमाणकाव्य की वृत्ति की है जो मगत १४८१ की लिखी हुई है। यह प्रति अपूर्ण है। तथा सबसे नवीन प्रति मगत १६८७ की अढाई द्वीप पूजा की है। इस प्रकार गत ५०० वर्षों में लिखा हुआ साहित्य का यहाँ उत्तम संग्रह है। भण्डार में मुख्य रूप में आमेर एवं सांगानेर इन दो नगरों से आये हुये ग्रन्थ हैं जो अपने २ समय में जैनों के केन्द्र थे।

### ठोलियों के दि० जैन मन्दिर का शास्त्र भण्डार—

ठोलियों के मन्दिर का शास्त्र भण्डार भी ठोलियों के दि० जैन मन्दिर में स्थित है। यह मन्दिर भी जयपुर के सुन्दर एवं विशाल मन्दिरों में से एक है। मन्दिर में विराजमान चिल्लोरी पाषाण की सुन्दर मूर्त्तियां दर्शनार्थियों के लिये विशेष आकर्षण की वस्तु हैं। जयपुर के फिस्ती ठोलिया परिवार द्वारा निर्मित होने के कारण यह मन्दिर ठोलियों के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। मन्दिर पञ्चायती मन्दिर तो नहीं है किन्तु नगर के प्रमुख मन्दिरों में से एक है। यहाँ का शास्त्र भण्डार एक नवीन एवं भव्य कमरे में विराजमान है। शास्त्र भण्डार के सभी ग्रन्थ वेष्टनों में बंधे हुये हैं एवं पूर्ण व्यवस्था के साथ रखे हुये हैं जिससे आवश्यकता पडने पर उन्हें सरलता से निकाला जा सकता है। पहिले गुटक की कोई व्यवस्था नहीं थी तथा न उनकी सूची ही बनी हुई थी किन्तु अब उनको भी व्यवस्थित रूप से रख दिया गया है।

ग्रन्थ भण्डार में ५१५ ग्रन्थ तथा १४३ गुटके हैं। यहाँ पर प्राचीन एवं नवीन दोनों ही प्रकार की प्रतियों का संग्रह है जिससे पता चलता है कि भण्डार के व्यवस्थापकों का ध्यान सदैव ही हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रह की ओर रहा है। इस भण्डार में ऐसा अच्छा संग्रह मिल जावेगा ऐसी आशा सूची बनाने के प्रारम्भ में नहीं थी। किन्तु वास्तव में देखा जावे तो संग्रह अधिक न होने पर भी महत्त्वपूर्ण है और भाषा साहित्य के इतिहास की किननी ही कडियां जोडने वाला है। यहाँ पर मुख्यतः संस्कृत और हिन्दी इन दो भाषाओं के ग्रन्थों का ही अधिक संग्रह है। भण्डार में सबसे प्राचीन प्रति ब्रह्मदेव कृत द्रव्यसंग्रह टीका की है जो मगत १४१६ ( सन् १३५६ ) की लिखी हुई है। इनके अतिरिक्त ये गीन्द्रदेव

का परमात्मप्रकाश सटीक, हेमचन्द्राचार्य का शब्दानुशासनवृत्ति एव पुष्पदन्त का आदिपुराण आदि रचनाओं की भी प्राचीन प्रतिया उल्लेखनीय हैं। यहाँ पर पूजापाठ संग्रह का एक गुटका है जिसमें ४७ पूजाओं का संग्रह है। गुटका प्राचीन है। प्रत्येक पूजा का मण्डल चित्र दिया हुआ है। जो रंगीन एव सुन्दर है। इस सचित्र ग्रन्थ के अतिरिक्त वेष्टनों के २ पुट्टे ऐसे मिले हैं जिनमें से एक पर तो २४ तीर्थकरों के चित्र अंकित हैं तथा दूसरे पुट्टे पर केवल बेल बूटे हैं।

भण्डार में संग्रहीत गुटके बहुत महत्त्व के हैं। हिन्दी की अधिकांश सामग्री इन्हीं गुटकों में प्राप्त हुई है। भ० शुभचन्द्र, मेघराज, रघुनाथ, ब्रह्म जिनदास आदि कवियों की किन्तनी ही नवीन रचनाये प्राप्त हुई हैं जिनको हिन्दी साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त होगा। इनके अतिरिक्त भण्डार में २ रासो मिले हैं जो ऐतिहासिक हैं तथा दिगम्बर भण्डारों में उपलब्ध होने वाले ऐसे साहित्य में सर्वप्रथम रासों हैं। इनमें एक पर्वत पाटणी का रासो है जो १६ वीं शताब्दी में होने वाले पर्वत पाटणी के जीवन पर प्रकाश डालता है। दूसरा कृष्णदास वघेरवाल का रासो है जो कृष्णदास के जीवन पर तथा उनके द्वारा किये गये चान्दखेडी में प्रतिष्ठा महोत्सव पर विस्तृत प्रकाश डालता है। इसी प्रकार सत्र १७३३ में लिखित एक भट्टारक पट्टावलि भी प्राप्त हुई है जो हिन्दी में इस प्रकार की प्रथम पट्टावलि है तथा भट्टारक परम्परा पर प्रकाश डालनी है।

### भण्डारों में उपलब्ध नवीन साहित्य—

जैसा कि पहिले कहा जा चुका है दोनों शास्त्र भण्डार ही हिन्दी रचनाओं के संग्रह के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। १४ वीं शताब्दी से लेकर २० वीं शताब्दी तक जैन एव जैनेतर विद्वानों द्वारा निर्मित हिन्दी साहित्य का यहा अच्छा संग्रह है। हिन्दी साहित्य की नवीन कृतियों में कवि सुंधारु का प्रद्युम्न चरित, ( स० १४११ ) कवि वीर कृत मणिहार गीत, आज्ञासुन्दर की विद्याविलास चौपई (१५१६), मुनि कनकामर की ग्यारहप्रतिमावर्णन, पद्मनाभ कृत झूगर की वारनी (१५४३), विनयसमुद्र कृत विक्रमप्रबन्ध रास (१५७३) छीहल का उदर गीत एव पद, ब्रह्म जिनदास का आदिनाथस्तवन, ब्र० कामराज कृत त्रेसठ शलाकापुरुषवर्णन, कनकसोम की जहतपदवेलि (१६२५), कुमदचन्द्र एवं पूनो की पद एव विनतियां आदि उल्लेखनीय हैं। ये १४ वीं से लेकर १६ वीं शताब्दी के कुछ कवि हैं जिनकी रचनायें दोनों भण्डारों में प्राप्त हुई हैं। इसी प्रकार १७ वीं शताब्दी से १९ वीं शताब्दी के कवियों की रचनाओं में ब्र० गुलाल की विवेक चौपई, उपाध्याय जयसागर की जिनकुशलसूरि स्तुति, जिनरंगसूरि की प्रबोधवावनी एव प्रस्ताविक दोहा, ब्र० ज्ञानसागर का व्रतकथाकोश, टोडर कवि के पद, पदमराज का राजुल का बारहमासा एव पार्श्वनाथस्तवन, नन्द की यशोधर चौपई (१६७०), पोपटशाह कृत मदनमंजरी कथा प्रबन्ध, बनारसीदास कृत मांभा, मनोहर कवि की चिन्तामणि मनवावनी, लघु वावनी एवं सुगुरुसीख, मल्लकवि कृत प्रबोधचन्द्रोदयनाटक, मुनि मेघराज कृत संयम प्रवहणगीत (१६६८), रूपचन्द्र का अध्यात्म सवैय्या, भ० शुभचन्द्र कृत तत्त्वसार-

दोहा, समयसुन्दर का आत्मउपदेशगीत, ज्ञानवत्तीसों एवं दानशीलमवाद, सुखदेव कृत वणिक्प्रिया, (१७१५) हर्षकीर्त्ति का नेमिनाथराजुलगीत, नेमीश्वरगीत, एवं मोरडा, अजयराज कृत नेमिनाथचरित (१७६३) एवं यशोधर चौपई (१७६२), कनककीर्त्ति का मेघकुमारगीत, गोपालदाम का प्रमादीगीत एवं यदुरामों; थानमिह का रत्नकरण्ड श्रावकाचार एवं सुबुद्धिप्रकाश (१८३७) दादूदयाल के दोहे, दूलह कवि का कविकुलकण्ठा-भरण, नगरीदास का इस्कचिमन, एवं वैनविलास, वंशीधर कृत दरतूरमालिका, भगवानदाम के पद, मनराम द्वारा रचित अक्षरमाला, मनरामविलास, एवं धर्मसहेली, मुनि महेश की अक्षरवत्तीमी, रघुनाथ का गणभेद, ज्ञानसार, नित्यविहार एवं प्रसंगसार, श्रुतसागर का पदमालवर्णन (१८२१), हेमराज कृत दोहाशतक, केशरीसिंह का वर्द्धमानपुराण (१८७३) चपाराम का धर्मप्ररनोत्तरश्रावकाचार, एवं भद्रवाहु-चरित्र, बाबा दुलीचन्द कृत धर्मपरीक्षा भाषा आदि उल्लेखनीय हैं। ये रचनायें काव्य, पुराण, चरित, नाटक, रस एवं अलंकार त्र्यंशशास्त्र, इतिहास आदि सभी विषयों से सम्बन्धित हैं। इनमें से बहुत सी तो ऐसी रचनायें हैं। जो सम्भवत सर्व प्रथम विद्वानों के समक्ष आयी होंगी।

### सचित्र साहित्य—

दोनों भण्डारों में हिन्दी एवं अपभ्रंश का महत्त्वपूर्ण साहित्य उपलब्ध होने लगे सचित्र साहित्य का न मिलना जैन श्रावकों एवं विद्वानों की इस ओर उदासीनता प्रगट करती है। किन्तु फिर भी ठोलियों के मन्दिर में एक पूजा सग्रह प्राप्त हुआ है जो सचित्र है। इसमें पूजा के विद्वानों के मटल चित्रित किये हुये हैं। चित्र सभी रंगीन हैं एवं कला पूर्ण भी हैं। इसी प्रकार एक शास्त्र के पुष्टे पर चौबीस तीर्थंकरों के चित्र दिये हुये हैं। सभी रंगीन एवं कला पूर्ण हैं। यह पुष्टा १६ वीं शताब्दी का प्रतीत होता है।

### विद्वानों द्वारा लिखे हुये ग्रन्थ—

इस दृष्टि से वधीचन्दजी के मन्दिर का शास्त्र भण्डार उल्लेखनीय है। यहाँ पर महा पंडित टोडरमलजी द्वारा लिखित मोक्षमार्गप्रकाश एवं आत्मानुशासन भाषा एवं गोमट्टमार भाषा की प्रतियां सुरक्षित हैं। ये प्रतियां साहित्यिक दृष्टि से नहीं किन्तु इतिहास एवं पुरातत्त्व की दृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

### विशाल पद साहित्य—

दोनों भण्डारों के गुटकों में हिन्दी कवियों द्वारा रचित पदों का विशाल संग्रह है। इन कवियों की संख्या ६० है जिनमें कवीरदास, वृन्द, सुन्दर, सूरदास आदि कुछ कवियों के अतिरिक्त जेप सभी जैन कवि हैं। इनमें अजयराज, छीहल, जगजीवन, जगताराम, मनराम, रूपचन्द, हर्षकीर्त्ति आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन कवियों द्वारा रचित हिन्दी पद भाषा एवं भाव की दृष्टि से अच्छे हैं तथा जिनका प्रकाश में आना आवश्यक है। क्षेत्र के अनुसन्धान विभाग की ओर से ऐसे पद एवं भजनों का संग्रह

किया जा रहा है और शीघ्र ही करीब २५०० पदों का एक बृहद् संग्रह प्रकाशित करने का विचार है । जिससे कम से कम यह तो पता चल सकेगा कि जैन विद्वानों ने इस दिशा में कितना महत्त्वपूर्ण कार्य किया है ।

### गुटकों का महत्त्व—

घास्तव में यदि देखा जावे तो जितना भी महत्त्वपूर्ण एवं अनुपलब्ध साहित्य मिलता है उसका अधिकांश भाग इन्हीं गुटकों में संग्रहीत किया हुआ है । जैन श्रावकों को गुटकों में छोटी छोटी रचनायें संग्रहीत करवाने का बड़ा चाव था । कभी कभी तो वे स्वयं ही संग्रह कर लिया करते थे और कभी अन्य लेखकों के द्वारा संग्रह करवाते थे । इन दोनों भण्डारों में भी जितना हिन्दी का नवीन साहित्य मिला है उसका आधे से अधिक भाग इन्हीं गुटकों में संग्रह किया हुआ है । दोनों भण्डारों में गुटकों की संख्या ३०५ है । यद्यपि इन गुटकों में सर्वसाधारण के काम आने वाले स्तोत्र, पूजायें, कथायें आदि की ही अधिक संख्या है किन्तु महत्त्वपूर्ण साहित्य भी इन्हीं गुटकों में उपलब्ध होता है । गुटके सभी साइज के मिलते हैं । यदि किसी गुटके में १८-२० पत्र ही हैं तो किसी किसी गुटके में ४००-५०० पत्र तक हैं । ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार के एक गुटके में ६५४ पत्र हैं जिनमें ४७ पूजाओं का संग्रह किया हुआ है । कुछ गुटकों में तो लेखनकाल उसके अन्त में दिया हुआ होता है किन्तु कुछ गुटकों में बीच बीच में भी लेखनकाल दे दिया जाता है अर्थात् जैसे जैसे पाठ समाप्त होते जाते हैं वैसे वैसे लेखनकाल भी दे दिया जाता है ।

इन गुटकों में साहित्यिक एवं धार्मिक रचनाओं के अतिरिक्त आयुर्वेद के नुसखे भी बहुत मिलते हैं । यदि इन्हीं नुसखों के आधार पर कोई खोज की जावे तो वह आयुर्वेदिक साहित्य के लिये महत्त्वपूर्ण चीज प्रमाणित हो सकती है । ये नुसखे हिन्दी भाषा में अनुभव के आधार पर लिखे हुये हैं ।

आयुर्वेदिक साहित्य के अतिरिक्त किसी किसी गुटके में ऐतिहासिक सामग्री भी मिल जाती है । यह सामग्री मुख्यतः राजाओं अथवा वादशाहों की वंशावलि के रूप में होती है । कौन राजा कब राज्य सिंहासन पर बैठा तथा उसने कितने वर्ष, कितने महिने एवं कितने दिन तक शासन किया आदि विवरण दिया हुआ रहता है ।

### ग्रन्थ-सूची के सम्बन्ध में—

प्रस्तुत ग्रन्थ-सूची में जयपुर के केवल दो शास्त्र भण्डारों की सूची है । हमारा विचार तो एक भण्डार की और सूची देना था लेकिन ग्रन्थ सूची के अधिक पत्र हो जाने के डर से नहीं दिया गया । प्रस्तुत ग्रन्थ सूची में जिन नवीन रचनाओं का उल्लेख आया है उनके आदि अन्त भाग भी दे दिये गये हैं जिससे विद्वानों को ग्रन्थ की भाषा, रचनाकाल, एवं ग्रन्थकार के सम्बन्ध में कुछ परिचय मिल सके ।

इसके अतिरिक्त जो लेखक प्रशस्तियां अधिक प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण थी उन्हें भी ग्रन्थ सूची में दे दिया गया है। इस प्रकार सूची में १०६ ग्रन्थ प्रशस्तियां एवं ५५ लेखक प्रशस्तियां दी गयी हैं जो स्वयं एक पुस्तक के रूप में हैं।

प्रस्तुत सूची में एक और नवीन ढंग अपनाया गया है वह यह है कि अधिकांश ग्रन्थों की एक प्रति का ही सूची में परिचय दिया गया है। यदि उस ग्रन्थ की एक से अधिक प्रतियाँ हैं तो विशेष में उनकी संख्या को ही लिख दिया गया है लेकिन यदि दूसरी प्रति भी महत्त्वपूर्ण अथवा विशेष प्राचीन है तो उस प्रति का भी परिचय सूची में दे दिया गया है। इस प्रकार करीब ५०० प्रतियों का परिचय ग्रन्थ-सूची में नहीं दिया गया जो विशेष महत्त्वपूर्ण प्रतियां नहीं थी।

कुछ विद्वानों का यह मत है कि प्रत्येक भण्डार की ग्रन्थ सूची न होकर एक सूची में १०-१५ भण्डारों की सूची हो तथा एक ग्रन्थ किस किस भण्डार में मिलता है इतना मात्र उसमें दे दिया जावे जिससे प्रकाशन का कार्य भी जल्दी हो सके तथा भण्डारों की सूचियां भी आजावें। हमने इस शैली को अभी इसीलिये नहीं अपनाया कि इससे भण्डारों का जो भिन्न भिन्न महत्त्व है तथा उनमें जो महत्त्वपूर्ण प्रतियाँ हैं उनका परिचय ऐसी ग्रन्थ सूची में नहीं आसकेगा। यह तो अवश्य है कि बहुत से ग्रन्थ तो प्रत्येक भण्डार में समान रूप से मिलते हैं तथा ग्रन्थ सूचियों में बार बार में आते हैं जिससे कोई विशेष अर्थ प्राप्त नहीं होता। आशा है भविष्य में सूची प्रकाशन का यह कार्य किस दिशा में चलना चाहिये इस पर इस सम्बन्ध के विशेषज्ञ विद्वान् अपनी अमूल्य परामर्श से हमें सूचित करेंगे जिसमें यदि अधिक लाभ हो सके तो उसी के अनुसार कार्य किया जा सके।

ग्रन्थ सूची बनाने का कार्य कितना जटिल है यह तो वे ही जान सकते हैं जिन्होंने इस दिशा में कार्य किया हो। इसलिये कमियां रहना आवश्यक हो जाता है। कौनसा ग्रन्थ पहिले प्रकाश में आ चुका है तथा कौनसा नवीन है इसका भी निर्णय इस सम्बन्ध की प्रकाशित पुस्तकें न मिलने के कारण जल्दी से नहीं किया जा सकता इससे यह होता है कि कभी कभी प्रकाश में आये हुये ग्रन्थ नवीन समझने की गल्ती हो जाया करती है। प्रस्तुत ग्रन्थ सूची में यदि ऐसी कोई अशुद्धि हो गयी हो तो विद्वान् पाठक हमें सूचित करने का कष्ट करेंगे।

दोनों भण्डारों में जो महत्त्वपूर्ण कृतियां प्राप्त हुई है उनके निर्माण करने वाले विद्वानों का परिचय भी यहां दिया जा रहा है। यद्यपि इनमें से बहुत से विद्वानों के सम्बन्ध में तो हम पहिले से ही जानते हैं किन्तु उनकी जो अभी नवीन रचनायें मिली हैं उन्हीं रचनाओं के आधार पर उनका सक्षिप्त परिचय दिया गया है। आशा है इस परिचय से हिन्दी साहित्य के इतिहास निर्माण में कुछ सहायता मिल सकेगी।

## १. अचलकीर्ति

अचलकीर्ति १८ वीं शताब्दी के हिन्दी कवि थे। विषापहार स्तोत्र भाषा इनकी प्रसिद्ध रचना है जिसका समाज में अच्छा प्रचार है। अभी जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में कर्मवत्तीसी नाम की एक और रचना प्राप्त हुई है जो संवत् १७७७ में पूर्ण हुई थी। इन्होंने कर्मवत्तीसी में पावा नगरी एवं वीर संघ का उल्लेख किया है। इनकी एक रचना रविव्रतकथा देहली के भण्डार में संग्रहीत है।

## २. अजयराज

१८ वीं शताब्दी के जैन साहित्य सेवियों में अजयराज पाटणी का नाम उल्लेखनीय है। ये खण्डेलवाल जाति में उत्पन्न हुये थे तथा पाटणी इनका मोत्र था। पाटणीजी आमरे के रहने वाले तथा धार्मिक प्रकृति के प्राणी थे। ये हिन्दी एवं संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे। इन्होंने हिन्दी में कितनी ही रचनायें लिखी थी। अब तक छोटी और बड़ी २० रचनाओं का तो पता लग चुका है इनमें से आदि पुराण भाषा, नेमिनाथचरित्र, यशोधरचरित्र, चरखा चउपई, शिव रमणी का विवाह, कक्कावत्तीसी आदि प्रमुख हैं। इन्होंने कितनी ही पूजायें भी लिखी हैं। इनके द्वारा लिखे हुये हिन्दी पद भी पर्याप्त सख्या में मिलते हैं। कवि ने हिन्दी में एक जिनजी की रसोई लिखी है जिसमें पट् रस व्यंजन का अच्छा वर्णन किया गया है।

अजयराज हिन्दी साहित्य के अच्छे विद्वान् थे। इनकी रचनाओं में काव्यत्व के दर्शन होते हैं। इन्होंने आदिपुराण को संवत् १७६७, में यशोधरचौपई को १७६२ में तथा नेमिनाथचरित्र को संवत् १७६३ में समाप्त किया था।

## ३. ब्रह्म अजित

ब्रह्म अजित संस्कृत भाषा के अच्छे विद्वान् थे। हनुमच्चरित में इनकी साहित्य निर्माण की कला स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। ये गोलशृंगार वग में उत्पन्न हुये थे। माता का नाम पीथा तथा पिता का नाम वीरसिंह था। भृगुकच्छपुर में नेमिनाथ के जिन मन्दिर में इनका मुख्य रूप से निवास था। ये भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य एवं विद्यानन्दि के शिष्य थे।

हिन्दी में इन्होंने हंसा भावना नामक एक छोटी सी आध्यात्मिक रचना लिखी थी। रचना में ३७ पद्य हैं जिनमें संसार का स्वरूप तथा मानव का वास्तविक कर्तव्य क्या है, उसे क्या करना चाहिये तथा किसे छोड़ना चाहिये आदि पर प्रकाश डाला है। हंसा भावना अच्छी रचना है, तथा भाषा एवं शैली दोनों ही दृष्टियों से पढ़ने योग्य है। कवि ने इसे अपने गुरु विद्यानन्दि के उपदेश से बनायी थी।

## ४. अमरपाल

इन्होंने 'आदिनाथ के पंच मंगल' नामक रचना को संवत् १७७२ में समाप्त की थी। रचना में दिये हुये समय के आधार पर ये १८ वीं शताब्दी के विद्वान् ठहरते हैं। ये खण्डेलवाल जाति में उत्पन्न हुये थे तथा गंगवाल इनका गोत्र था। देहली के समीप स्थित जयसिंहपुरा इनका निवास स्थान था। आदिनाथ के पंचमंगल के अतिरिक्त इनकी अन्य रचना अभी तक उपलब्ध नहीं हुई है।

## ५. आज्ञासुन्दर

ये खरतरगच्छ के प्रधान जिनवर्द्धनसूरि के प्रशिष्य एवं आनन्दसूरि के शिष्य थे। इन्होंने संवत् १४१६ में विद्याविलास चौपई की रचना समाप्त की थी। इसमें ३६४ पद्य हैं। रचना अच्छी है।

## ६. उदैराम

उदैराम द्वारा लिखित हिन्दी की २ जखड़ी अभी उपलब्ध हुई हैं। दोनों ही जखड़ी ऐतिहासिक हैं तथा भट्टारक अनन्तकीर्ति ने संवत् १७८५ में सांभर ( राजस्थान ) में जो चातुर्मास किया था उसका उन दोनों में वर्णन किया गया है। दिगम्बर साहित्य में इस प्रकार की रचनायें बहुत कम मिलती हैं इस दृष्टि से इनका अधिक महत्व है। वैसे भाषा की दृष्टि से रचनायें साधारण हैं।

## ७. ऋषभदास निगोत्या

ऋषभदास निगोत्या का जन्म संवत् १८४० के लगभग जयपुर में हुआ था। इनके पिता का नाम शोभाचन्द था। इन्होंने संवत् १८८८ में मूलाचार की हिन्दी भाषा टीका सम्पूर्ण की थी। ग्रन्थ की भाषा द्वंद्वारी है तथा जिस पर ५० टोडरमलजी की भाषा का प्रभाव है।

## ८. कनककीर्ति

कनककीर्ति १७ वीं शताब्दी के हिन्दी के विद्वान् थे। इन्होंने तत्त्वार्थसूत्र श्रतसागरी टीका पर एक विस्तृत हिन्दी गद्य टीका लिखी थी। इसके अतिरिक्त कर्मघटावलि, जिनराजस्तुति, मेघकुमारगीत, श्रीपालस्तुति आदि रचनायें भी आपकी मिल चुकी हैं। कनककीर्ति हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। इनकी भाषा द्वंद्वारी है जिसमें 'है' के स्थान पर "हैं" का अधिक प्रयोग हुआ है। गुटकों में इनके कितने ही पद भी मिले हैं।

## ९. कनकसोम

कनकसोम १६ वीं शताब्दी के कवि थे। 'जइतपदवेलि' इनकी इतिहास से सम्बन्धित कृति है जो संवत् १६२५ में रची गयी थी। वेलि में उसी संवत् में मुनि वाचकदया ने आगरे में जो चातुर्मास किया था उसका वर्णन दिया हुआ है। यह खरतरगच्छ की एक अच्छी पद्यावलि है कवि ने इसमें साधुकीर्ति आदि कितने ही विद्वानों के नामों का उल्लेख किया है। रचना में ४६ पद्य हैं। भाषा हिन्दी है लेकिन

गुजराती का प्रभाव है। कवि की एक और रचना आपाढाभूतिस्वाध्याय पहिले ही मिल चुकी है। जो गुजराती में है।

### ११. मुनि कनकासर

मुनिकनकासर द्वारा लिखित 'ग्यारह प्रतिमा वर्णन' अपभ्रंश भाषा का एक गीत है। कनकासर कौनसे शताब्दी के कवि थे यह तो इस रचना के आधार से निश्चित नहीं होता है। किन्तु इतना अवश्य है कि वे १६ वीं या इससे भी पूर्व की शताब्दी के थे। गीत में १२ प्रतिमाओं का वर्णन है जिसका प्रथम पद्य निम्न प्रकार है।

मुनिवर जंपइ मृगनयणी, अंसु जल्लोलीइय गिरवयणी ।

नवनीलोपलकोमलनयणी, पहु कणयंवर भणमि पई ।

किम्म इह लब्भइ सिवपुर रम्मणी, मुनिवर जंपइ मृगनयणी ॥ १ ॥

### १२. कुलभद्र

सारसमुच्चय ग्रन्थ के रचयिता श्री कुलभद्र किस शताब्दी तथा किस प्रान्त के थे इसके विषय में कोई उल्लेख नहीं मिलता। किन्तु इतना अवश्य है कि वे १६ वीं शताब्दी के पूर्व के विद्वान् थे। क्योंकि सारसमुच्चय की एक प्रति संवत् १५४५ में लिखी हुई बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार के संग्रह में है। रचना छोटी ही है जिसमें ३३ श्लोक हैं। ग्रन्थ का दूसरा नाम ग्रन्थसारसमुच्चय भी है। ग्रन्थ की भाषा सरल एवं ललित है।

### १३. किशनसिंह

ये सवाईमाधोपुर प्रान्त के दामपुरा गांव के रहने वाले थे। खण्डेलजाति में उत्पन्न हुये थे तथा पाटणी इनका गोत्र था। इनके पिता का नाम 'काना' था। ये दो भाई थे। इनसे बड़े भाई का नाम सुखदेव था। अपने गांव को छोड़कर ये सांगानेर आकर रहने लगे थे, जो बहुत समय तक जैन साहित्यिकों का केन्द्र रहा है। इन्होंने अपनी सभी रचनायें हिन्दी भाषा में लिखी हैं। जिनकी संख्या १५ से भी अधिक है। मुख्य रचनाओं में क्रियाकोशभाषा, (१७८४) पुण्याश्रवकथाकोश, (१७७२) भद्रवाहुचरित भाषा (१७८०) एवं बावनी आदि हैं।

### १४. केशरीसिंह

पं० केशरीसिंह भट्टारकों के पंडित थे। इनका मुख्य स्थान जयपुर नगर के लश्कर के जैन मन्दिर में था। ये वहीं रहा करते थे तथा श्रद्धालु श्रावकों को धर्मापदेश दिया करते थे। दीवान बालचन्द के सुपुत्र दीवान जयचन्द छाबडा की इन पर विशेष भक्ति थी और उन्हीं के अनुरोध से इन्होंने सस्कृत भाषा में भट्टारक सक्तकीर्त्ति द्वारा विरचित बद्धमानपुराण की हिन्दी-गद्य में भाषा टीका लिखी थी। पंडित जी ने इसे संवत् १८७३ में समाप्त की थी। पुराण की भाषा पर दूहारी (जयपुरी) भाषा का प्रभाव है। ग्रन्थ प्रशस्ति के अनुसार पुराण की भाषा का सशोधन वस्तुपाल छाबडा ने किया था।



### १४. ब्रह्मगुलाल

ब्रह्मगुलाल हिन्दी भाषा के कवि थे यद्यपि कवि की अब तक छोटी २ रचनायें ही उपलब्ध हुई हैं किन्तु भाव एव भाषा की दृष्टि से ये साधारणतः अच्छी हैं। इनकी रचनाओं में त्रेपनक्रिया, समवसरणस्तोत्र, जलगालनक्रिया, विवेकचौपई आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। विवेकचौपई अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर में प्राप्त हुई है। कवि १७ वीं शताब्दी के थे।

### १५. गोपालदास

गोपालदास की दो छोटी रचनायें यादुरासो तथा प्रमादीगीत जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार के ६७ वे गुटके में संग्रहीत हैं। गुटके के लेखनकाल के आधार पर कवि १७ वीं शताब्दीया इससे भी पूर्व के विद्वान् थे। यादुरासो में भगवान् नेमिनाथ के वन चले जाने के पश्चात् राजुल की विरहावस्था का वर्णन है जो उन्हें वापिस लाने के रूप में है। इसमें २४ पद्य हैं। प्रमादीगीत एक उपदेशात्मकगीत है जिसमें आलस्य त्याग कर आत्महित करने के लिये कहा गया है। इनके अतिरिक्त इनके कुछ गीत भी मिलते हैं।

### १६. चपाराम भांवसा

ये खण्डेलवाल जैन जाति में उत्पन्न हुए थे। इनके पिता का नाम हीरालाल था जो माधोपुर (जयपुर) के रहने वाले थे। चपाराम हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। शास्त्रों की स्वाध्याय करना ही इनका प्रमुख कार्य था इसी ज्ञान वृद्धि के कारण इन्होंने भद्रवाहुचरित्र एवं धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार की हिन्दी भाषा टीका क्रमशः संवत् १८४४ तथा १८६८ में समाप्त की थी। भाषा एव शैली की दृष्टि से रचनाएँ साधारण हैं।

### १७. छीहल

१६ वीं शताब्दी में होनेवाले जैन कवियों में छीहल का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ये राजस्थानी कवि थे किन्तु राजस्थान के किस प्रदेश को सुशोभित करते थे इसका अभी तक कोई उल्लेख नहीं मिला। हिन्दी भाषा के आप अच्छे विद्वान् थे। इनकी अभी तक ३ रचनायें तथा ३ पद उपलब्ध हुये हैं। रचनाओं के नाम वावनी, पंचसहेली गीत, पंथीगीत हैं। सभी रचनायें हिन्दी की उत्तम रचनाओं में से हैं जो काव्यत्व से भरपूर हैं। कवि की वर्णन करने की शैली उत्तम है। वावनी में आपने कितने ही विषयों का अच्छा वर्णन किया है। पंचसहेली को इन्होंने संवत् १५७५ में समाप्त किया था।

### १८. पं जगन्नाथ

पं० जगन्नाथ १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। ये भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे तथा सस्कृत भाषा के पढ़े हुए विद्वान् थे। ये खण्डेलवाल जाति में उत्पन्न हुये थे तथा इनके पिता का नाम पोमराज था। इनकी ६ रचनायें श्वेताम्बरपराजय, चतुर्विंशतिसंधानस्वोपज्ञटीका, सुखनिधान, नेमिनरेन्द्रस्तोत्र,

तथा मुखेणचरित्र तो पहिले ही प्रकाश में आ चुकी है। इनके अतिरिक्त इनकी एक और कृति “कर्मस्वरूप-वर्णन” अभी बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भंडार में मिली है। इस रचना में कर्मों के स्वरूप की विवेचना की गयी है। कवि ने इसे संवत् १७०७ ( सन् १६५० ) में समाप्त किया था। ‘कर्मस्वरूप’ के उल्लासों के अन्त में जो विशेषण लगाये गये हैं उनसे पता चलता है कि पंडित जी न्यायशास्त्र के पारंगत विद्वान् थे तथा उन्होंने कितने ही शास्त्रार्थों में अपने विरोधियों को हराया था। कवि का दूसरा नाम चादिराज भी था।

### १६. जिनदत्त

प० जिनदत्त भट्टारक शुभचन्द्र के समकालीन विद्वान् थे तथा उनके धनिष्ठ शिष्यों में से थे। भट्टारक शुभचन्द्र ने अस्त्रिकाकल्प की जो रचना की थी उसमें मुख्य रूप से जिनदत्त का ही आग्रह था। ये स्वयं भी हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा संस्कृत भाषा में भी अपना प्रवेश रखते थे। अभी हिन्दी में इनकी २ रचनायें उपलब्ध हुई हैं जिनके नाम धर्मतरुगीत तथा जिनदत्तविलास है। जिनदत्तविलास में कवि द्वारा बनाये हुये पदों एवं स्फुट रचनाओं का सग्रह है तथा धर्मतरुगीत एक छोटा सा गीत है।

### २०. ब्रह्म जिनदास

ये भट्टारक सकलकीर्ति के शिष्य थे। संस्कृत, प्राकृत, एवं गुजराती भाषाओं पर इनका पूरा अधिकार था। इसके अतिरिक्त हिन्दी भाषा में भी इनकी तीव्र गति थी। कवि की अब तक संस्कृत एवं गुजराती का कितनी ही रचनायें उपलब्ध हो चुकी हैं इनमें आदिनाथ पुराण, धनपालरास, यशोधररास, आदि प्रमुख हैं। इनकी सभी रचनाओं की संख्या २० से भी अधिक है। अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर में इनका एक छोटा सा आदिनाथ स्तवन हिन्दी में लिखा हुआ मिला है जो बहुत ही सुन्दर एवं भाव पूर्ण है तथा ग्रंथ सूची में पूरा दिया हुआ है।

### २१. ब्रह्म ज्ञानसागर

ये भट्टारक श्रीभूषण के शिष्य थे। संस्कृत के साथ साथ ये हिन्दी के भी अच्छे विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी में २६ से भी अधिक कथायें लिखी हैं जो पद्यात्मक हैं। भाषा की दृष्टि से ये सभी अच्छी हैं। भट्टारक श्रीभूषण ने पाण्डवपुराण ( संस्कृत ) को संवत् १६५७ में समाप्त किया था। क्योंकि ब्रह्म ज्ञानसागर भी इन्हीं भट्टारक जी के शिष्य थे अतः कवि के १२ वीं शताब्दी के होने में कोई सन्देह नहीं रह जाता है। इन्होंने कथाओं के अतिरिक्त और भी रचनायें लिखी होंगी लेकिन अभी तक वे उपलब्ध नहीं हुई हैं।

### २२. ठक्कुरसी

१६ वीं शताब्दी में होने वाले कवियों में ठक्कुरसी का नाम उल्लेखनीय है। ये हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा हिन्दी में छोटी छोटी रचनायें लिखकर स्वाध्याय प्रेमियों का दिल बहलाया करते

थे। इनके पिता का नाम घेल्ह था जो स्वयं भी कवि थे। कवि द्वारा रचित कृष्णचरित्र तथा पंचेन्द्रिय नेलि तो पहिले ही प्रकाश में आ चुकी हैं लेकिन नेमिराजमतिवेलि पार्श्वशकुन्मत्तावीनी और चिन्तामणि-जयमाल तथा ग्रीमधरस्तवन और उपलब्ध हुए हैं जो हिन्दी की अच्छी रचनायें हैं।

### २३. थानसिंह

थानसिंह सागानेर ( जयपुर ) के रहने वाले थे। ये खण्डेलवाल जैन थे तथा ठोलिया इनका गोत्र था। सुबुद्धि प्रकाश की ग्रन्थ प्रशास्ति में इन्होंने आमेर, सागानेर तथा जयपुर नगर का वर्णन लिखा है। जब इनके माता पिता नगर में अशान्ति के कारण करौली चले गये थे तब भी ये सागानेर छोड़कर नहीं जा सके और इन्होंने वहीं रहते हुये रचनाये लिखी थी। कवि की २ रचनायें प्राप्त होती हैं—रत्नकरदश्रावकाचार भाषा तथा सुबुद्धि प्रकाश। प्रथम रचना को इन्होंने स. १८२१ में तथा दूसरी को स. १८४७ में समाप्त किया था। सुबुद्धि प्रकाश का दूसरा नाम थानविलास भी है इसमें कवि की छोटी २ रचनाओं का संग्रह है। दोनों ही रचनाओं की भाषा एवं वर्णन शैली साधारणतः अच्छी है। इनकी भाषा पर राजस्थानी का प्रभाव है।

### २४. मुनि देवचन्द्र

मुनि देवचन्द्र युगप्रधान जिनचन्द्र के शिष्य थे। इन्होंने आगमसार की हिन्दी गद्य टीका सन् १७७६ में मारोठ गाव में समाप्त की थी। आगमसार ज्ञानामृत एवं धर्मासृत का सागर है तथा तात्त्विक चर्चाओं से भरपूर है। रचना हिन्दी गद्य में है जिस पर मारवाडी मिश्रित जयपुरी भाषा का प्रभाव है।

### २५. देवाब्रह्म

देवाब्रह्म हिन्दी के अच्छे कवि थे। इनके सँकड़ों पद मिलते हैं जो विभिन्न राग रागिनियों में लिखे हुये हैं। मामवहू का भगदा आदि जो अन्य रचनाये हैं वे भी अधिकांशतः पद रूप में ही लिखी हुई हैं। इन्होंने हिन्दी साहित्य की ठोस सेवा की थी। कवि सभवतः जयपुर के ही थे तथा अनुमानतः १८ वीं शताब्दी के थे।

### २६. बाबा दुलीचन्द्र

जयपुर के २० वीं शताब्दी के साहित्य सेवियों में बाबा दुलीचन्द्र का नाम विशेषतः उल्लेखनीय है। ये मूलतः जयपुर निवासी नहीं थे किन्तु पूना (सितारा) से आकर यहाँ रहने लगे थे। इनके पिता का नाम मानकचन्द्रजी था। आते समय अपने साथ सँकड़ों हस्तलिखित ग्रन्थ भी साथ लाये थे, जो आजकल जयपुर के बड़े मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहित हैं तथा वह सग्रहालय भी बाबा दुलीचन्द्र भण्डार के नाम से प्रसिद्ध है। इस भण्डार में ८०६-६०० हस्तलिखित ग्रन्थ हैं। जो सभी बाबाजी द्वारा संग्रहित हैं।

बाबाजी बड़े साहित्यिक थे। दिन-रात साहित्य-सेवा में व्यतीत करते थे। ग्रन्थों की प्रतिलिपियां करना, नवीन ग्रन्थों का निर्माण तथा पुराने ग्रन्थों को व्यवस्थित रूप से रखना ही आपके प्रतिदिन के कार्य थे। बड़े मन्दिर के भण्डार में तथा स्वयं बाबाजी के भण्डार में इनके हाथ से लिखी हुई कितनी ही प्रतियां मिलती हैं। इन्होंने १५ से अधिक ग्रन्थों की रचना की थी। जिनमें उपदेशरत्नमाला भाषा, जैन-गारप्रक्रिया, ज्ञानप्रकाशविलास, जैनयात्रादर्पण, धर्मपरीक्षा भाषा आदि उल्लेखनीय हैं। इन्होंने भारत के सभी तर्थों की यात्रा की थी और उसीके अनुभव के आधार पर इन्होंने जैनयात्रादर्पण लिखा था। मन्दिरनिर्माण विधि नामक रचना से पता चलता है कि ये शिल्पशास्त्र के भी ज्ञाता थे। इन सबके अतिरिक्त इन्होंने भारत के कितने ही स्थानों के शास्त्र भण्डारों को भी देखा था और उसीके आधार पर संस्कृत और हिन्दी भाषा के ग्रन्थों के ग्रन्थकार विवरण लिखा था जिसमें किस विद्वान् ने कितने ग्रन्थ लिखे थे तथा वे किस किस भण्डार में मिलते हैं दिया हुआ है। अपने ढंग की यह अनूठी पुस्तक है। इनकी मृत्यु ता० ४ अगस्त सन् १९२८ में आगरे में हुई थी।

## २६. नन्द

ये अग्रवाल जाति में उत्पन्न हुये थे। गोयल इनका गोत्र था। पिता का नाम भैरू तथा माता का नाम चंदा था। ये गोसना गोव के निवासी थे जो संभवत आगरा के समीप ही था। कब्रि की अभी तक एक रचना यशोधर चरित्र चौपई ही उपलब्ध हुई है जो संवत् १६७० में समाप्त हुई थी। इसमें ५६८ पद्य हैं। रचना साधरणात् अच्छी है। तथा अभी तक अप्रकाशित है।

## २७. नागरीदास

संभवतः ये नागरीदास वे ही हैं जो कृष्णगढ नरेश महाराज सांवतसिंह जी के पुत्र थे। इनका जन्म संवत् १७५६ में हुआ था। इनका कविता काल स० १७८० से १८१६ तक, माना जाता है। इनकी छोटी बड़ी सब रचना मिलाकर ७३ रचनायें प्रकाश में आ चुकी हैं। वैभविलास एवं गुप्तरसप्रकाश नामक अप्राप्य रचनाओं में से वैभविलास जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध हुई हैं। इसमें ३० पद्य हैं जिनमें कु डलिया दोहे आदि हैं।

## २८. नाथूलाल दोशी

नाथूलाल दोशी दुलीचन्द दोशी के पौत्र एवं शिवचन्द के पुत्र थे। इनके पं० सदासुखजी काशलीवाल धर्म गुरु थे तथा दीवान अमरचन्द परम सहायक एवं कृपावान थे। दोशी जी विद्वान् थे तथा ग्रंथ चर्चा में अधिक रस लिया करते थे। इन्होंने हरचन्द गगवाल की प्रेरणा से संवत् १९१८ में सुकुमालचरित्र की भाषा समाप्त की थी। रचना हिन्दी गद्य में है जिस पर ढंढारी भाषा का प्रभाव है।

## २६. नाथूराम

लमेचू जाति में उत्पन्न होने वाले नाथूराम हिन्दी भाषा के अच्छे विद्वान् थे। ये संभवत १६ वीं शताब्दी के थे। इनके पिता का नाम दीपचन्द था। इन्होंने जम्बूस्वामीचरितं का हिन्दी गद्यानुवाद लिखा है। रचना साधारणत अच्छी है।

## ३०. निरमलदास

श्रावक निरमलदास ने पंचाख्यान नामक ग्रन्थ की रचना की थी। यह पंचतन्त्र का हिन्दी पद्यानुवाद है। संभवत यह रचना १७ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में लिखी गयी थी क्योंकि इसकी एक प्रति संवत् १७५४ में लिखी हुई जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है। रचना सरल हिन्दी में है तथा साधारण पाठकों के लिये अच्छी है।

## ३१. पद्मनाभ

पद्मनाभ १५-१६ वीं शताब्दी के कवि थे। ये हिन्दी एवं संस्कृत के प्रतिभा सम्पन्न विद्वान् थे इसीलिये संघपति डू गर ने इनसे वावनी लिखने का अनुरोध किया था और उसी अनुरोध से इन्होंने संवत् १५४३ में वावनी की रचना की थी। इसका दूसरा नाम डू गर की वावनी भी है। वावनी में ५४ सर्गैय्या हैं। भाषा राजस्थानी है। इसकी एक प्रति अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में उपलब्ध हुई है लेकिन लिखावट विकृत होने से सुपाठ्य नहीं है। वावनी अभी तक अप्रकाशित है।

## ३२. पन्नालाल चौधरी

जयपुर में होने वाले १६-२० वीं शताब्दी के साहित्यकारों में पन्नालाल चौधरी का नाम उल्लेखनीय है। ये संस्कृत, प्राकृत एवं हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। महाराजा रामसिंह के मन्त्री जीवनसिंह के ये गृह मन्त्री थे। इनके गुरु सदासुखजी काशलीवाल थे जो अपने समय के बहुत बड़े विद्वान् थे। यही कारण है कि साहित्य सेवा इनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य हो गया था। इन्होंने अपने जीवन में ३० से भी अधिक ग्रन्थों की रचना की थी। इनमें से योगसार भाषा, सद्भाषितावली भाषा, पाण्डवपुराण भाषा, जम्बूस्वामी चरित्र भाषा, उत्तरपुराण भाषा, भविष्यदत्तचरित्र भाषा उल्लेखनीय हैं। सद्भाषितावलि भाषा आपका सर्व प्रथम ग्रन्थ है जिसे चौधरीजी ने संवत् १६१० में समाप्त किया था। ग्रन्थ निर्माण के अतिरिक्त इन्होंने बहुत से ग्रन्थों की प्रतिलिपियां भी की थी जो आज भी जयपुर के बहुत से भण्डारों में उपलब्ध होती हैं।

## ३३. पुण्यकीर्ति

ये खरतरराज्य के आचार्य एवं युगप्रधान जिनचन्द्रसूरि के शिष्य थे। तथा ये सांगानेर (जयपुर) के रहने वाले थे। इन्होंने पुण्यसार कथा को संवत् १७६६ में समाप्त किया था। रचना साधारणत अच्छी है।

### ३४. बनारसीदास

कविवर बनारसीदास का स्थान जैन हिन्दी साहित्य में सर्वोपरि है। इनके द्वारा रचे हुये समयसार नाटक, बनारसीविलास, अर्द्धकथानक एवं नाममाला तो पहिले ही प्रसिद्ध हैं। अभी इनकी एक और रचना 'मांभा' जयपुर के वधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में मिली है। रचना आध्यात्मिक रस से ओत प्रोत है। इसमें १३ पद्य हैं।

### ३५. वंशीधर

इन्होंने संवत् १७६५ में 'दस्तूरमालिका' नामक हिन्दी ग्रंथ रचना लिखी थी। दस्तूरमालिका गणित शास्त्र से सम्बन्धित रचना है जिसमें वस्तुओं के खरीदने की रस्म रिवाज एवं उनके गुरु दिये हुये हैं। रचना खड़ी बोली में है तथा अपने ढग की अकेली ही रचना है। इसमें १४३ पद्य हैं। कवि सभवत वे ही वंशीधर हैं जो अहमदाबाद के रहने वाले थे तथा जिन्होंने संवत् १७८२ में उदयपुर के महाराणा जगतसिंह के नाम पर अलंकार रत्नाकर ग्रंथ बनाया था<sup>२</sup>।

### ३६. मनराम

१८ वीं शताब्दी के जैन हिन्दी विद्वानों में मनराम एक अच्छे विद्वान् हो गये हैं। यद्यपि रचनाओं के आधार पर इनके सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी है फिर भी इनकी वर्णन शैली से ज्ञात होता है कि मनराम का हिन्दी भाषा पर अच्छा अधिकार था। अब तक अक्षरमाला, धर्मसहेली, मनरामविलास, वत्तीसी, गुणाक्षरमाला आदि इनकी मुख्य रचनायें हैं। साहित्यिक दृष्टि से ये सभी रचनायें उत्तम हैं।

### ३७. मन्नासाह

मन्नासाह हिन्दी के अच्छी कवि थे। इनकी लिखी हुई मान वावनी एवं लघु वावनी ये दो रचनायें अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में मिली हैं। रचना के आधार पर यह सरलता से कहा जा सकता है कि मन्नासाह हिन्दी के अच्छे कवि थे। मान वावनी हिन्दी की उच्च रचना है जिसमें सुभाषित रचना की तरह कितने ही विषयों पर थोड़े थोड़े पद्य लिखे हैं। मन्नासाह सभवत १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे।

### ३८. मल्ल कवि

प्रबोधचन्द्रोदय नाटक के रचयिता मल्लकवि १६ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। इन्होंने कृष्णमिश्र द्वारा रचित सस्कृत के प्रबोधचन्द्रोदय का हिन्दी भाषा में पद्यानुवाद संवत् १६०१ में किया था। रचना

सुल्लित भाषा में लिखी हुई है। तथा उत्तम सवादों में भरपूर है। नाटक में काम, क्रोध मोह आदि की पराजय करवा कर विवेक आदि गुणों की विजय करवायी गयी है।

### ३६. मेघराज

मुनि मेघराज द्वारा लिखित 'संयमप्रवहण गीत' एक सुन्दर रचना है। मुनिजी ने इसे सवत् १६६१ में समाप्त की थी। इसमें मुख्यतः 'राजचन्दसूरि' के साधु जीवन पर प्रकाश डाला गया है किन्तु राजचन्दसूरि के पूर्व आचार्यों—सोमरत्नसूरि, पासचन्दसूरि, तथा समरचन्दसूरि के भी माता पिता का नामोल्लेख, आचार्य बनने का समय एवं अन्य प्रकार से उनका वर्णन किया गया है। रचना वास्तव में ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर लिखी गयी है। वर्णन शैली काफी अच्छी है तथा कहीं कहीं अलंकारों का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

### ४०. रघुनाथ

इनकी अब तक ५ रचनायें उपलब्ध हो चुकी हैं। रघुनाथ हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा जिनकी छन्द शास्त्र, रस एवं अलंकार प्रयोग में अच्छी गति थी। इनका गणभेद छन्द शास्त्र की रचना है। नित्यविहार शृंगार रस पर आश्रित है जिसमें राधा कृष्ण का वर्णन है। प्रसंगसार एवं ज्ञानसार सुभाषित, उपदेशात्मक एवं भक्तिरसात्मक हैं। ज्ञानसार को इन्होंने सवत् १७४३ में समाप्त किया था इससे पता चलता है कि कवि १७ वीं शताब्दी में पैदा हुये थे। कवि राजस्थानी विद्वान् थे लेकिन राजस्थान के किस प्रदेश को सुशोभित करते थे इसके सम्बन्ध में परिचय देने में इनकी रचनायें मौन हैं। इनकी सभी रचनायें शुद्ध हिन्दी में लिखी हुई हैं। ये जैनैतर विद्वान् थे।

### ४१. रूपचन्द

कविवर रूपचन्द १७ वीं शताब्दी के साहित्यिको में उल्लेखनीय कवि हैं। ये आध्यात्मिक रस के कवि थे इसीलिये इनकी अधिकांश रचनायें आध्यात्मिक रस पर ही आधारित हैं। इनकी वर्णन शैली सजीव एवं आकर्षक है। 'पंचमंगल, परमार्थदोहाशतक, परमार्थगीत, गीतपरमार्थी, नेमिनाथरासो आदि कितनी ही रचनायें तो इनकी पहिले ही उपलब्ध हो चुकी हैं तथा प्रकाश में आ चुकी हैं किन्तु अभी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर में अध्यात्म संवैय्या नामक एक रचना और प्राप्त हुई है। रचना आध्यात्मिक रस से ओतप्रोत है तथा बहुत ही सुन्दर रीति से लिखी हुई है। भाषा की दृष्टि से भी रचना उत्तम है। इन रचनाओं के अतिरिक्त कवि के कितने पद भी मिलते हैं वे भी सभी अच्छे हैं।

### ४२. लच्छीराम

लच्छीराम सवत् १८ वीं शताब्दी के हिन्दी कवि थे। इनका एक "करुणाभरणनाटक" अभी उपलब्ध हुआ है। नाटक में ६ अंक हैं जिनमें राधा अवस्था वर्णन, ब्रजवासी अवस्था वर्णन सत्यभामा

ईर्षा वर्णन, बलदाऊ मिलाप वर्णन आदि दिये हुये हैं। नाटक की भाषा साधारणतः अच्छी है। नाटककार जैनैतर विद्वान् थे।

### ४३. भट्टारक शुभचन्द्र

भट्टारक शुभचन्द्र १६-१७ वीं शताब्दी के महान् साहित्य सेवी थे। भट्टारक सकलकीर्त्ति की परम्परा में गुरु सकलकीर्त्ति के समान इन्होंने भी संस्कृत भाषा में कितने ही ग्रन्थों की रचना की थी जिनकी संख्या ४० से भी अधिक है। पट्भाषाचक्रवर्त्ति, त्रिविधविद्याधर आदि उपाधियों से भी आप विभूषित थे।

संस्कृत भाषा के ग्रन्थों के अतिरिक्त आपने हिन्दी में भी कुछ रचनाएँ लिखी थीं उनमें से २ रचनाएँ तो अभी प्रकाश में आयी हैं। इनमें से एक चतुर्विंशतिस्तुति तथा दूसरा तत्त्वसारदोहा है। तत्त्वसार दोहा में तत्त्ववर्णन है। इसकी भाषा गुजराती मिश्रित राजस्थानी है। इसमें ६१ पद्य हैं।

### ४४. सहजकीर्त्ति

सहजकीर्त्ति सांगानेर ( जयपुर ) के रहने वाले थे। ये १७ वीं शताब्दी के कवि थे। इनकी एक रचना प्राति छत्तीसी जयपुर के ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में ६७ वें गुटके में सग्रहीत है। यह सवत् १६८८ में समाप्त हुई थी। रचना में ३६ पद्य हैं जिसमें प्रातःकाल सबसे पहले भगवान का स्मरण करने के लिये कहा-गया है। रचना साधारण है।

### ४५. सुखदेव

हिन्दी भाषा में अर्थशास्त्र से सम्बन्धित रचनाएँ बहुत कम हैं। अभी कुछ समय पूर्व जयपुर के वधीचन्दजी के मन्दिर में सुखदेव द्वारा निर्मित वणिकप्रिया की एक हस्तलिखित प्रति उपलब्ध हुई है। वणिकप्रिया का मुख्य विषय व्यापार से सम्बन्धित है।

सुखदेव गोलापूरव जाति के थे। उनके पिता का नाम बिहारीदास था। रचना में ३२१ पद्य हैं जिनमें दोहा और चौपई प्रमुख हैं। कवि ने इसे सवत् १७१७ में लिखी थी। रचना की भाषा साधारणतः अच्छी है।

### ४६. सधारु कवि

अब तक उपलब्ध जैन हिन्दी साहित्य में १४ वीं शताब्दी में होने वाले कवियों में कवि सधारु का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनकी यद्यपि एक ही रचना उपलब्ध हुई है लेकिन वही इनकी काव्य शक्ति को प्रकट करने में पर्याप्त है। ये अग्रवाल जाति में उत्पन्न हुये थे जो अग्रोह-नगर के नाम से प्रसिद्ध हुई थी। इनके पिता का नाम शाह महाराज एव माता का नाम गुणवती था। कवि ने इस रचना को एरछ नगर में समाप्त की थी जो कानपुर कांसी रेलवे लाइन पर है।



कवि की रचना का नाम प्रद्युम्न चरित है जो संवत् १४११ मे समाप्त हुई थी। इसमे ६८२ पद्य हैं किन्तु कामा उज्जैन आदि स्थानों में प्राप्त प्रति में ६८२ से अधिक पद्य हैं तथा जो भाव भाषा, अलंकार आदि सभी दृष्टियों से उत्तम है। कविने प्रद्युम्न का चरित्र बड़े ही सुन्दर ढंग से अंकित किया है। रचना अभी तक अप्रकाशित है तथा शीघ्र ही प्रकाश मे आने वाली है।

### ४७. सुमतिकीर्ति

सुमतिकीर्ति भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा मे होने वाले भट्टारक ज्ञानभूषण के शिष्य थे तथा उनके साथ रह कर साहित्य रचना किया करते थे। कर्मकाण्ड की संस्कृत टीका ज्ञानभूषण तथा सुमतिकीर्ति दोनों ने मिल कर बनायी थी। भट्टारक ज्ञानभूषण ने भी जिस तरह कितने ही ग्रन्थों की रचना की थी उमी प्रकार इन्होंने भी कितने ही रचनायें की हैं। त्रिलोकसार चौपई को इन्होंने संवत् १६२७ मे समाप्त किया था। इसमे तीनलोकों पर चर्चा की गयी है। इस रचना के अतिरिक्त इनकी कुछ स्तुतियां अथवा पद भी मिलते हैं।

### ४८. स्वरूपचन्द विलाला

पं० स्वरूपचन्द जी जयपुर निवासी थे। ये खण्डेलवाल जाति में उत्पन्न हुये थे तथा विलाला इनका गोत्र था। पठन पाठन एवं स्वाध्याय ही इनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य था। विलाला जी ने कितनी ही पूजाओं की रचना की थी जो आज भी बड़े चाव से नित्य मन्दिरों मे पढी जाती हैं। पूजाओं के अतिरिक्त इन्होंने मदनपराजय की भाषा टीका भी लिखी थी जो संवत् १६१८ मे समाप्त हुई थी। इनकी रचनाओं के नाम मदनपराजय भाषा, चौसठश्रद्धापूजा, जिनसहस्रनाम पूजा तथा निर्वाणक्षेत्र पूजा आदि हैं।

### ४९. हरिकृष्ण पांडे

ये १८ वीं शताब्दी के कवि थे। इन्होंने अपने को विनयसागर का शिष्य लिया है। जयपुर के बधीचन्दजी के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में इनके द्वारा रचित चतुर्वशी-कथा प्राप्त हुई है जो संवत् १७६६ की रचना है। कथा मे ३५ पद्य हैं। भाषा एवं दृष्टि से रचना साधारण है।

### ५०. हर्षकीर्ति

हर्षकीर्ति हिन्दी भाषा के अच्छे विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी मे छोटी छोटी रचनायें लिखी हैं जो सभी उत्तम हैं। भाव, भाषा एवं वर्णन शैली की दृष्टि से कवि की रचनायें प्रथम श्रेणी की हैं। चतुर्गति वेलि को इन्होंने संवत् १६८३ मे समाप्त किया था जिससे पता चलता है कि कवि १७ वीं शताब्दी के थे तथा कविधर बनारसीदासजी के समकालीन थे। चतुर्गति वेलि के अतिरिक्त नेमिनाथ-

राजुल गीत, नेमीश्वरगीत, मोरडा, कर्महिंडोलना पञ्चमगतिवेलि आदि अन्य रचनायें भी मिलती हैं। सभी रचनायें आध्यात्मिक हैं। कवि द्वारा लिखे हुये कितने ही पद भी हैं। जो अभी तक प्रकाश में नहीं आये हैं।

### ५१. हीरा कवि

ये बू दी ( राजस्थान ) के रहने वाले थे। इन्होंने संवत् १८४८ में 'नेमिनाथ व्याहलो' नामक रचना को समाप्त किया था। व्याहलों में नेमिनाथ के विवाह के अवसर पर होने वाली घटनाओं का वर्णन किया गया है। रचना साधारणतः अच्छी है तथा इस पर हाडौती भाषा का प्रभाव झलकता है।

### ५२. पांडे हेमराज

प्राचीन हिन्दी गद्य लेखकों में हेमराज का नाम उल्लेखनीय है। इनका समय सत्रहवीं शताब्दी था तथा ये पांडे रूपचंद के शिष्य थे। इन्होंने प्राकृत एवं संस्कृत भाषा के ग्रन्थों का हिन्दी गद्य में अनुवाद करके हिन्दी के प्रचार में महत्त्वपूर्ण योग दिया था। इनकी अब तक १२ रचनायें प्राप्त हो चुकी हैं जिनमें नयचक्रभाषा, प्रवचनसारभाषा, कर्मकाण्डभाषा, पञ्चास्तिकायभाषा, परमात्मप्रकाश भाषा आदि प्रमुख हैं। प्रवचनसार को इन्होंने १७०६ में तथा नयचक्रभाषा को १७२४ में समाप्त किया था। अभी तीन रचनायें और मिली हैं जिनके नाम दोहाशतक, जखडी तथा गीत हैं। रचनाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि कवि का हिन्दी गद्य एव पद्य दोनों में ही एकसा अधिकार था। भाव एवं भाषा की दृष्टि से इनकी सभी रचनायें अच्छी हैं। दोहा शतक जखडी एवं हिन्दी पद अभी तक अप्रकाशित हैं।

उक्त विद्वानों में से २७, ३५, ४०, ४२ तथा ४५ संख्या वाले विद्वान् जैनैतर विद्वान् हैं। इनके अतिरिक्त ५, ६, २४, ३०, ३३ एव ३६ संख्या वाले श्वेताम्बर जैन एवं शेष सभी दिगम्बर जैन विद्वान् हैं। इनमें से बहुत से विद्वानों का परिचय तो अन्यत्र भी मिलता है इसलिये उनका अधिक परिचय नहीं दिया गया। किन्तु अजयराज, अमरपाल, उदैराम, केशरीसिंह, गोपालदास, चपाराम भांवसा ब्रह्मज्ञानसागर, थानसिंह, बाबा दुलीचन्द, नन्द, नाथूलाल दोशी, पद्मनाभ, पन्नालाल चौधरी, मनराम, रघुनाथ आदि कुछ ऐसे विद्वान् हैं जिनका परिचय हमें अन्य किसी पुस्तक में देखने को नहीं मिला। इन कवियों का परिचय भी अधिक न मिलने के कारण उसे हम विस्तृत रूप से नहीं दे सके।

ग्रन्थ सूची के अन्त में ४ परिशिष्ट हैं। इनमें से ग्रन्थ प्रशस्ति एवं लेखक प्रशस्ति के सम्बन्ध में तो हम ऊपर कह चुके हैं। ग्रंथानुक्रमणिका में ग्रन्थ सूची में आये हुये अकारादि क्रम से सभी ग्रन्थों के नाम दे दिये गये हैं। इससे सूची में कौनसा ग्रन्थ किस पृष्ठ पर है यह ढूँढने में सुविधा रहेगी। इस परिशिष्ट के अनुसार ग्रन्थ सूची में १७८५ ग्रन्थों का विवरण दिया गया है। ग्रन्थ एव ग्रन्थकार परिशिष्ट को भी हमने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी भाषाओं में विभक्त कर दिया है जिससे ग्रन्थ सूची में किसी एक विद्वान् के एक भाषा के कितने ग्रन्थों का उल्लेख आया है सरलता से जाना जा

सकता है। प्रस्तुत ग्रन्थ सूची में संस्कृत भाषा के १७३, प्राकृत के १४, अपभ्रंश के १६ तथा हिन्दी के २८२ विद्वानों के ग्रन्थों का परिचय मिलता है तथा इससे भाषा सम्बन्धी इतिहास लेखन में अधिक सहायता मिल सकती है।

ग्रन्थ सूची को उपयोगी बनाने का पूरा प्रयत्न किया गया है तथा यही प्रयास रहा है कि ग्रन्थ एवं ग्रन्थ कर्ता आदि के नामों में कोई अशुद्धि न रहे किन्तु फिर भी यदि कहीं कोई त्रुटि रह गयी हो तो विद्वान् पाठक हमें सूचित करने का कष्ट करें जिससे आगे प्रकाशित होने वाले संस्करणों में उमका परिमार्जन किया जा सके।

### धन्यवाद समर्पण—

सर्व प्रथम हम क्षेत्र कमेटी के सदस्यों एवं विशेषतः मन्त्री महोदय को धन्यवाद देते हैं जो प्राचीन साहित्य के उद्धार जैसे पवित्र कार्य को क्षेत्र की ओर से करवा रहे हैं तथा भविष्य में इस कार्य में और भी अधिक व्यय किया जावेगा ऐसी हमें आशा है। इसके अतिरिक्त राजस्थान के प्रमुख जैन साहित्य सेवी श्री अग्रचन्दजी नाहटा एवं वीर सेवा मन्दिर देहली के प्रमुख विद्वान् प० परमानन्दजी शास्त्री के हम हृदय से आभारी हैं जिन्होंने सूची के अधिकांश भाग को देखकर आवश्यक सुझाव देने का कष्ट किया है तथा समय समय पर अपनी शुभ सम्मतियों से सूचित करते रहते हैं। श्रद्धेय गुरु-वर्च्य प० चैतसुखदासजी सा० न्यायतीर्थ के प्रति भी हम कृतज्ञाजलिया अर्पित करने हैं जो हमें इस पुनीत कार्य में समय समय पर प्रेरणा देते रहते हैं और जिनकी प्रेरणा मात्र से ही जयपुर में साहित्य प्रकाशन का थोड़ा बहुत कार्य हो रहा है। वधीचन्दजी के मन्दिर के प्रबन्धक वावू सरदारमलजी आवूजी वाले तथा ठोलियों के मन्दिर के प्रबन्धक वावू नरेन्द्र मोहनजी डडिया तथा प० सनत्कुमारजी विलाला को भी हार्दिक धन्यवाद है जिन्होंने अपने यहाँ के शास्त्र भण्डारों की ग्रन्थ सूची बनाने की पूरी सुविधा प्रदान की है। अन्त में हमारे नवीन सहयोगी वावू सुगनचन्दजी को भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिन्होंने इस ग्रन्थ सूची के कार्य में हमारा पूरा हाथ बटाया है।

दि० २५-७-५७

कस्तूरचन्द कासलीवाल  
अनूपचन्द जैन

वर्ष १७६६

शास्त्रप्रमाण होवे वा कोई किसे जो जन हो ॥ बहु रिकस्यिक सम्यक् ह्ये सो पहलै अर्नन तुवंधी  
 का विधे जो जन नरे ही हो ॥ असा जाननी ॥ उपरा प्रस्यो परा प्रस्य क्रीके अर्नन तानुवंधी  
 का विधे जो जनते सताना जया धा बहु रिकस्यिक विधे अवे तो अर्नन तानुवंधी कविध  
 करैत ही बहु रिकस्यिक सताना का सजाव हो ॥ अरसा थिक सम्यक् क्रीके मि प्र्या त्व वि धे पावे नी  
 ही तते वा के अर्नन तानुवंधी की सताना कस चित्र हो ॥ इह प्रस्य जो अर्नन तानुवंधी ता चारि  
 त्र मो हकी प्रकृति है सो चारि त्र के अर्नन तानुवंधी प्रीतिया करि अर्नन तानुवंधी सम्यक् का प्रात के नें से नै  
 ता का स मा धान ॥ अर्नन तानुवंधी के उच्यते को धा दि रूप परिणाम हो है कि प्रत त प्रकृति  
 होना नारी तते अर्नन तानुवंधी चारि ही को प्रात है सम्यक् के अर्नन ही प्रात है ॥ मोह तो अर्नन  
 ही परे अर्नन तानुवंधी के उच्यते को जै म को धा दि कहो है तै से को धा दि के सम्यक् हा  
 तै न हो ॥ असा नि मत्त नै मि तिक पनी पाई रहे ॥ जै से अर्नन तानुवंधी त्र सपनी की घात कतौ  
 अर्नन प्रकृति ही है ॥ परे अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के प्रिय जाति प्रकृति का नी उच्यन हो  
 अर्नन उपचार करि के प्रिय प्रकृति को नी त्र सपनी का घात कपनी कहि एतौ दो पनी ही ॥ तै मे  
 सम्यक् की घात कतौ अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के  
 नि का नी उच्यन हो म तते उपचार करि अर्नन तानुवंधी के नी सम्यक् का घात कपनी कहि एतौ दो  
 पनी ही ॥ बहु रिकस्यिक प्रस्य जो अर्नन तानुवंधी नी चारि ही को प्रात है तौ यके गै कि प्र चारि त्र जया का  
 हो ॥ प्रस्य म को हकी को हो ॥ ता का स मा धान ॥ अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के

अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के

मोक्षमार्ग प्रकाश एव लपणासार की मूल प्रतियों के चित्र

धर्म राग तै कुरत अर्नन तानुवंधी हो है अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के  
 तते प्रगटे अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के  
 तते अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के  
 न ल हाय ॥ अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के  
 तते सुधी सई वा हो म ॥ अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के  
 सो शास्त्रा सको उच्यन कल ॥ अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के  
 नि ॥ अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के  
 नारा ॥ अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के  
 अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के  
 आ ॥ अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के  
 जा ॥ अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के  
 ॥ अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के  
 को उच्यते ॥ अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के  
 अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के  
 श्री मत्त नै मि तिक पनी पाई रहे ॥ अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के  
 अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के अर्नन तानुवंधी के



श्री महावीराय नमः  
**राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों**

की  
**ग्रन्थसूची**

श्री दि० जैन मन्दिर बधीचन्दजी (जयपुर) के

**ग्रन्थ**

**विषय—सिद्धान्त एवं चर्चा**

अन्तगढदशाश्रो वृत्ति (अन्तकृद्दशासूत्रवृत्ति)—अभयदेवसूरि पत्र संख्या-७ । साइज-१०×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च ।  
भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचनाकाल × । लेखनकाल × । पूर्ण । वेष्टन नं० २६० ।

विशेष—अन्तकृद्दशासूत्र श्वे० जैन आगम का ८ वां अंग है ।

२. आश्रव त्रिभगी—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-१२ । साइज-११ $\frac{3}{4}$ ×५ $\frac{1}{4}$  इञ्च । भाषा—प्राकृत ।  
विषय—सिद्धान्त । रचनाकाल × । लेखनकाल—स० १६०६, द्वितीय मादवा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७६ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३. इक्कीस ठाणा चर्चा—पत्र संख्या-६ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—चर्चा ।  
रचनाकाल × । लेखनकाल संवत् १८१३, फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १५४ ।

विशेष—पं० किशनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

४. इक्कीस गिणती का स्वरूप—पत्र संख्या-१३ । साइज-८ $\frac{1}{2}$ ×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त ।  
रचनाकाल × । लेखनकाल—स० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८६ ।

विशेष—संख्यात, असंख्यात और अनन्त इनके २१ भेदों का वर्णन किया गया है ।

५. एक सौ गुणहत्तर जीव पाठ—लक्ष्मणदास । पत्र संख्या-७१ । साइज-११×७ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—  
हिन्दी ( पद्य ) । विषय—चर्चा । रचनाकाल सं० १८८४ माघ सुदी ५ । लेखनकाल × । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६८ ।

विशेष—प्रारम्भ—अथ लिङ्गमणदास कृत पाठ लिख्यते । अथ एक सौ गुणहत्तर जीवों की संख्या पाठ लिख्यते ।

दोहा—वृषभ आदि चौबीस की नभौ नाम उरधार ।

कछु इक संख्या कहत हू उत्तम नर की सार ॥१॥

प्रथमहि जिन चौबीस के कहीं नाम सुखदाय ।

कोटि जनम के पाप ते क्षणक एक में जाय ॥२॥

छन्द—प्रथम वृषभ जिन देव, दूजौ अजित प्रमानौ ।

तीजौ समव नाथ अभिनंदन चउ जानौ ॥३॥

अन्तिम—इनका कथन वसेपतै पूरव नगरी आदि ।

अथ माहि तें जानयौ जया जोग अनवाद ॥६६॥

पाठ बदन के कारणै कियौ नाहि मै मित ।

नाम मात्र अचुराग वसि धारि कियौ हरि चित ॥७०॥

छन्द सुन्दरी—जैनमत के अथ लखाय कै । कहत हौं ये पाठ बनाय कै ।

नाम ए चित मै नू धरै नरा । होय मिथ्या जाल सबे परा ॥७१॥

भूल चूक जु होय सुधारयौ । हासि पंडित नाहि न फारयौ ।

करि क्षिमा मो गुण गहि लीजियो । राम कह किरप तुम कीजियो ॥७२॥

दोहा—ठारासै चौरासिया वार सनीश्चर वार, पोस कृष्ण तिथ पंचमी कियो पाठ सुम चार ॥७३॥

“इति एक सौ घुर्गंतर जीव पाठ संपूरण” ॥१॥

निम्न पाठ और हैं:—

नाम	पत्र संख्या	पद्य संख्या	विशेष
( १ ) तीस चौबीसी पाठ	६ से २४ तक	२२७	
( २ ) गणधर मुख्य पाठ	२४ से २५	१२	
( ३ ) दसकरण पाठ	२५ से ३४	१२४	दस बंध मेद वर्णन रामचन्द्र कृत
( ४ ) जयचन्द्र पचीसी	३४ से ३६	२६	
( ५ ) आगति जागति पाठ	३६ से ४१	७५	सं० १८८४ मंगसिर वदी ११
( ६ ) षट कारिक पाठ	४१ से ४२	१२	
( ७ ) शिष्य दिक्षा बीसी पाठ	४२ से ४३	२७	
( ८ ) सात प्रकार वनस्पति उत्पत्ति पाठ	४३ से ४४	१४	
( ९ ) जीवमोक्ष बचीसी पाठ	४४ से ४६	३३	

नाम	पत्र संख्या	पद्य संख्या	विशेष
( १० ) मोह उत्कृष्टभित्त पचीसी	४६ से ४८	२६	
( १ ) प्रथम शुक्ल प्यान पचीसी	४८ से ५०		
( १२ ) जतर चोबनो	५० से ५१	८	
( १३ ) बधवोल	५१	५	
( १४ ) इकबीस गिणती को पाठ	५१ से ६०	६३	
( १५ ) सम्पक चतुरदसी	६० से ६१	१४	
( १६ ) इक अक्षर आदि बचीसी	६१ से ६३	३३	
( १७ ) बावन छद रूपदीप	६३ से ७१	५५	१८=४ माघ सुदी ५ मंगलवार

६. कर्मप्रकृति—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र संख्या—२१ । साहज—११×४ $\frac{१}{२}$  इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । रचनाकाल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १६ ।

विशेष—मूल मात्र है तथा गाथाओं की संख्या १६२ हैं ।

७. प्रति नं० २—पत्र संख्या—१६ । साहज—१०×५ इच्छ । लेखनकाल सं०—१=५६ भावण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७ ।

विशेष—चंपाराम ने प्रतिलिपि की थी । इस प्रति में १६४ गाथायें हैं ।

८. प्रति नं० ३—पत्र संख्या—१६ । साहज—१२×४ $\frac{१}{२}$  इच्छ । लेखनकाल X । पूर्ण । वेष्टन नं० १८ ।

विशेष—गाथाओं की संख्या—१६१ है ।

९. प्रति नं० ४—पत्र संख्या—१३ । साहज—११×४ $\frac{१}{२}$  इच्छ । लेखनकाल सं० १६०६ अषाढ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० १९ । इसमें १६१ गाथायें हैं ।

विशेष—संस्कृत में कहीं २ टिप्पण दिया हुआ है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—सं० १६०६ वर्षे अषाढ मासे शुक्लपक्षे प्रतिपदा तिथौ भोमवासरे श्रीमूलसधे नद्याप्राये वलात्कारण्ये सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये आचार्ये भुवनकीर्तिदेव्या तत् शिष्यणी आ० मुक्तिश्री तत् शिष्या आ० कीर्तिश्री पठनार्थ । करुणाणमस्तु । अमरसरमध्ये राज्यधी सूजाजी ।

१०. प्रति नं० ५—पत्र संख्या—४४ । साहज—१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इच्छ । लेखनकाल सं०—१=११ माघा सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५३ ।

विशेष—हरचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी । ग्रथ गुटका साहज में है । १६१ गाथायें हैं ।

११. प्रति नं० ६—पत्र संख्या—२१ । साहज—१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इच्छ । लेखनकाल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २२ ।



विशेष—प्रति अशुद्ध है । सस्कृत टीका सहित है । मूल गाथायें नहीं हैं । कर्म प्रवृत्ति या सत्वस्थान मंग गहित गुणस्थान का वर्णन है ।

जिनदेव प्रणम्याह मुनिचन्द्र जगत्प्रभु ।

सत्कर्मप्रकृतिस्थान सृष्टीमि यथागम ॥१॥

णमिऊण वड्टमाण कणयगिंद देवरायपरिपुञ्ज ।

पयडीणसत्तटाणं थोघे भगे सम वोछे ॥१॥

देवराजपरिपूज्य फनफनिम वद्धमानभगवत् अर्हदमट्टारकं नत्वा कर्मप्रवृत्तीनां सत्वस्थान मंगसहितं गुणस्थानेण वसा-  
मीति संबध' ।

१२. प्रति नं० ७—पत्र संख्या-३० । साइज ११-×५ इंच । लेखनकाल-१६७६मादवा सुदी १४ । पूर्ण ।  
वेष्टन न० २१ । प्रति सटीक है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

विशेष—इति प्राय श्री गोमट्टसारमूलात् टीकाश्च निष्काप्य क्रमेण एकीकृत्य लिखिता श्रीनेमिचन्द्र सैद्धान्तिक  
प्रिचित-कर्मप्रकृतिप्रथस्य टीका समाप्ता ।

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स० १६७६ वर्षे माद्रपदमासे शुक्लपक्षे चतुर्दश्या तिथौ सम्रामपुरवास्तव्ये महाराजाधिराजराजश्रीमावसिंह-  
राज्ये श्रीमूलसधे नद्यान्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकृ दकु दाचार्यान्वये मट्टारक श्रीपञ्चनदिदेवातत्पट्टे मट्टारक  
शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे मट्टारक श्री प्रमाचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० श्रीचन्द्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे म० श्री  
श्री श्री श्री श्री देवेन्द्रकीर्तिजी । तदाप्नाये खडेलवालान्वये मौंभा गोत्रे सा० गगा तद्मार्या गौरादे तयो पुत्र सा० धेरूहा तद् मार्या  
धेलसिरि तयो. पुत्र पच । प्रथम सा० ताल्लु तद् मार्या ल्होड़ी तयो' पुत्री द्वौ प्र० सा० वाजू तद् मार्ये द्वे० प्र० बालहदे, द्वि०  
प्रतापदे तत्पुत्रौ द्वौ प्र० पुत्र सा० सावल तद् मार्या सहलालदे तयो पुत्र चि० साहीमल, द्वि० पुत्र सा० साकर । साह ताल्लु  
द्वि पुत्र सा० घट्ट तस्य मार्या गालदे । एतेषां मध्ये साह वाजू तद् मार्या बालहदे इद शास्त्र रत्नयत्नत-उद्यापनार्थं मट्टारक श्री  
श्री श्री देवेन्द्र कीर्ति तत् शिष्य आचार्य श्री रामकीर्तिये प्रदत्तं ।

१३. कर्मप्रकृति विधान—वनारसीदास । पत्र सरया-१३ । साइज-१०<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । माया-हन्दी ।  
विषय—सिद्धान्त । रचनाकाल-५० १७०० । लेखककाल-१७६० । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६२ ।

विशेष—यह रचना वनारसीविलास में सगृहीत रचनाओं में से है ।

१४. प्रति न० २—पत्र संख्या-५१ । साइज-६×६<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । लेखनकाल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३६७ ।

विशेष—कर्मप्रकृतिविधान गुटके में है जिसमें निम्न पाठ और है—आवषों के १७ नियम, सिंभूर प्रकरण-  
(वनारसीदास) और अनित्य पचाशिका-( त्रियुवनचन्द्र ) ।

१५. प्रति नं० ३—पत्र संख्या—१६ । साइज—६ ३/४ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६८ ।

१६. कर्मप्रकृतियों का व्योरा— ( कर्मप्रकृति चर्चा ) . . . . । पत्र संख्या—१७ । साइज—१० ३/४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८३३ ।

विशेष—ग्रंथ वही खाते की साइज में है ।

१७. कर्मस्वरूपवर्णन—अभिनव वादिराज ( प० जगन्नाथ ) । पत्र संख्या—१० । साइज—१० ३/४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—स० १७०७ माघ बुदी १३ । लेखन काल—स० १७०७ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६८४ ।

विशेष—१० से २३ तक के पत्र नहीं हैं । रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ— कर्मव्यूहविनिर्मुक्ता, मुक्त्वात्तत्वा विशुद्धितः ।  
ग्रन्थकर्मस्वरूपाख्यो वादिराजेन तन्यते ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

इति निरवधविद्यामण्डनमण्डित पण्डितमण्डलीमण्डित मट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्तिजीकाख्यशिश्यैः कविगमक्रीवादिधाग्मित्त्व  
शुश्रूषणभूषणै कणादाक्षपादप्रभाकरमट्टशिवसुगतचार्वार्कसाख्यप्रमुखप्रवादिगणोपन्यस्तदूषणदूषणैस्त्रैविधविधाधिपै पण्डित  
जगन्नाथैरपरारख्ययामिनववादिराजैर्विरचिते कर्मस्वरूपग्रन्थे स्थित्यनुभागप्रदेशनिरूपणं नाम द्वितीय उल्लास,

वर्षे तत्त्वनमो श्व भूपरिमिते ( १७०७ ) मासे मघौ सुन्दरे,  
तत्पक्षे च सिते तरेहनि तथा नाम्ना द्वितीयाह्वये ।

श्रीसर्वज्ञपदाञ्जुजानति—गलद ह्यानावृत्तिप्रामवा  
स्त्रैविद्येश्वरतांगता व्यरचयन् श्रीवादिराजा इम ॥ १ ॥

तावत्केवलमि.समः कलिमलैर्मुक्ता कलौ साधवः ।  
तावज्जैनमत चक्रारि विमल तावच्चधर्मोत्सवः ।

तावत्षोडशमावनामवष्टता स्वर्गापवर्गोक्तयो  
थावच्छ्रीपरभागमो विजयते गोमट्टसाराभिध ॥ २ ॥

१८. काल और अन्तर का स्वरूप— . . . . . । पत्र संख्या—१२ । साइज—११ X ५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७३ ।

रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रथम काल अन्तर का स्वरूप निरूपण करिए है ॥ छ ॥ तिन विषे आठ सांतर मार्गणा है तिनका स्वरूप

संख्या विधान निरूपणों के अर्थि गायत्रि तीन करि करै है । नाना जीवनि की अपेक्षा विवक्षित गुणस्थान वा मार्गस्थान नै छोटि अथ कोई गुणस्थान वा मार्गस्थान नै प्राप्त होइ । बहुरि उस ही विवक्षित गुणस्थान वा मार्गस्थान को यावत्काल प्राप्त न हो इति सत्काल का नाम अतर है ।

अन्तिम—विवक्षित मार्गणा के भेद का काल विषे विवक्षित गुणस्थान का अंतराल जेते कालि पार्श्व ताका वर्णन है । मार्गणा के भेद का पलटना मण् । अथवा मार्गणा के भेद का सद्भाव होतै विवक्षित गुणस्थान का अंतराल मया वा ताकी बहुरि प्राप्ति मण् विस अंतराल का अभाव हो है । ऐसे प्रसंग पाइ काल का अर अंतर कथन कीया है सो जानना ॥ इति सपूर्ण ॥

पोषी ज्ञान घाई की ।

१६ क्षपणासार टीका—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव । पत्र संख्या—६६ । साइज—१४×६३ इय । मापा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७६ ।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र कृत क्षपणासार की यह संस्कृत टीका है । मूल रचना प्राकृत भाषा में है ।

२०. गुणस्थान चर्चा— । पत्र संख्या—५० । साइज—१२×७ इय । मापा—हिन्दी । विषय—चर्चा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६२ ।

विशेष—चौदह गुणस्थानों पर विस्तृत चर्चा ( सट्टि ) है ।

२१ प्रति नं० २—पत्र संख्या—३६ । साइज—१२×७ इय । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६३ ।

२२ प्रति नं० ३—पत्र संख्या—५१ । साइज—१०३×६ इय । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६४ ।

२३. गोमट्टसार—आ० नेमिचन्द्र । पत्र संख्या—७२६ । साइज—१४×६३ इय । मापा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६८६ ।

विशेष—७२६ से आगे पत्र नहीं है । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२४. प्रति नं० २—पत्र सं०—१६३ से ८४८ । साइज—१२३×६ इय । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७८५ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२५. प्रति नं० ३—पत्र संख्या—८५ । साइज—११×५ इय । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८७ ।

विशेष—जीवकाण्ड मात्र है गाथाओं पर संस्कृत में पर्यायवाची शब्द हैं ।

२६. प्रति न० ४—पत्र संख्या १७२ । साइज-१३×८ इञ्च । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६६२ ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । आगे के पत्र नहीं हैं ।

२७. प्रति नं० ५—पत्र संख्या-४० । साइज-१०×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६४ ।

२८. प्रति न० ६—पत्र संख्या-११ । साइज-११×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६३१ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२९. प्रति नं० ७—पत्र संख्या-२४२ से ५३१ । साइज-२०×७ $\frac{३}{४}$  इञ्च । × । लेखन काल-सं० १७६६ ।

अपूर्ण । वेष्टन नं० ६८५ ।

विशेष—२४६ में २५३, ३७१ से ४४०, ४८८ से ५२८ तक पत्र नहीं हैं ।

यति नैय सागर ने प्रतिलिपि की थी । स० १७६६ में महाराजा जयसिंह के शासन काल में सवाई जयपुर में जोधराज पाटोदी द्वारा उस निामत्त ( बनवाये हुए ) ऋषभदेव चैत्यालय में गुलाबचन्द गोदीका ने प्रतिलिपि करवा कर इस ग्रन्थ को सेंट किया था । केशववर्णि की कर्णाटक वृत्ति के आधार पर संस्कृत टीका दी हुई है ।

प्रशस्ति—सवत्सरे नव-नारद-प्रनिर्दुमिते १७६६ भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे पंचमीतिथौ सवाईजयपुरनाम्न नगरे महाराजाधिराजसवाईजयसिंहराज्यप्रवर्तमाने पाटोदी गोत्रीय साह जोधराज कारित श्री ऋषभदेव चैत्यालय । श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्काराण्ये सरस्वतीगण्ड्ये कुन्दकुन्दाचार्यान्वये मट्टारकजित् श्री जगत्कीर्तिदेवास्तत्पट्टे प्रमाणद्वयावच्छिन्न प्रतिमाघा रक मट्टारकजित् श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवा । तत्पट्टधारक कुमतिनिवारक केतुप्रमोदनिवारक भवभय-भजक मट्टारकाधिराजजित् श्री महेन्द्रकीर्ति देवाम्नाये खंडेलवाल वशोत्पन्न माँवसा गोत्रीयमध्ये गोदीकैति नाम्ना प्रसिद्धा श्रेण्डीजित श्री लूणकरण्याख्यास्तत्पुत्र श्री मगवद्धर्म प्रकटनकरणपर साह जी रूपचन्द जी कस्त्युत्रः राद्धांतवितरणोवमितानादिमिष्यात्वनिकरेण चिरंजीवजित श्री गुलाब चन्द्रेण इदं गोमट्टसार शास्त्र लिखाप्य महारक जित् श्री महेन्द्र कीर्तिये प्रदत्तं ॥

३०. गोमट्टसार भाषा—पं० टोडरमलजी ( लब्धिसार क्षपणासार सहित ) पत्र संख्या-१०५३ । साइज-१०×६ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धांत । रचना काल-स० १८२८ माघ सुदी ५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१२ ।

विशेष—ईई प्रतियों का सम्मिश्रण है । बहुत से पत्र स्वर्थ पं० टोडरमलजी के हाथ के लिखे प्रतीत होते हैं । ग्रन्थ का विस्तार ६०,००० श्लोक प्रमाण है ।

३१. प्रति नं० २—पत्र संख्या-११०४ । साइज-१५×७ $\frac{३}{४}$  इञ्च । लेखन काल-स० १८६१ पौष जुदी १२ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७१६ ।

विशेष—सदृष्टि के अलग पत्र है । ११८, १३३ तथा २०२ के पत्र नहीं हैं ।

३० प्रति न० ३—पत्र सख्या-१०३१ । साइज-१२ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$  इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ७१७ ।

३३. प्रति न० ४—पत्र सख्या-३११ । साइज-१२ $\frac{1}{2}$ ×८ इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ८११ ।

विशेष—केवल कर्मकाण्ड भाषा है ।

३४ प्रति न० ५—पत्र सख्या-२२ । साइज-१४×६ $\frac{1}{2}$  इंच । लेखन काल-X अपूर्ण । वेष्टन न० ८७६ ।  
विशेष—जीवकाण्ड की भाषा मात्र है ।

३५ गोमट्टसार कर्मकाण्ड टीका—सुमति कीर्ति । पत्र सख्या-४५ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मिद्वात । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० २० ।

३६. गोमट्टसार कर्मकाण्ड भाषा—प० हेमराज । पत्र सख्या-३८ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-स० १७०६ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६६ ।

विशेष—प० संवा ने सरोजपुर में प्रतिलिपि ली थी । अथ का प्रारम्भ और अन्तिम भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—पणामय सिरस णमिं गुण रयण विद्वसण महावीरं ।

सम्मत्तरयानिलय पयच्चि समुक्कित्थं वोच्च ॥ १ ॥

अर्थ—अहं नेमिचद्राचाय प्रवृत्ती समुत्कीर्त्तनं वक्ष्ये । अहं हं जु हौं नेमिचद्र ऐमे नाम आचार्यं सो प्रकृतिसमुत्कीर्त्तनं प्रकृतिं हुं कारं हं समुत्कीर्त्तनं कथनं जिस विषये ऐसा जु अथ कर्मकाण्ड नामा तिसहिं वक्ष्ये वदूंगां । किंहुत्त्वा क्हा करिं मिरसा नेमिं प्रणम्य मिरकरिं थी नेमिनाथ को नमस्कार करिके । कैमे है नेमिनाथ गुणरत्न विभूषण-अनंत ज्ञानादिकं जु गुण तेई हुं रत्न तेई है विभूषण आमाण जिनके । बहुरिं कैमे है महाधीरं महासुमत्तं ई कर्म के नासकरणं नीं । बहुरिं कैमे है सम्यक् रत्न निलय । सम्यक् रूपं जु है रत्न तिसके निलय स्थानक है ।

अन्तिम—अथ जिस काल यह जीव पूर्वोक्त प्रत्यनीक आदिक क्रिया विषये प्रवर्त्ते, तब जैसी कुछ उत्कृष्ट मध्यम जघन्य शुभाशुभ क्रिया होई, तिस माफिक कर्म हूँ का वध करै स्थिति अनुभाग की विशेषता करि । तिस नै ममय समय वध जु करै सुती स्थित अनुभाग की हीनता करि । अथ जु प्रत्यनीक आदिक पूर्वोक्त क्रिया करि करै स्थित अनुभाग की विशेषता करि यह मिद्वात जाणना । इय भाषा टीका पंडित हेमराजेन कृता स्वधुद्रथानुसारेण । इति कर्म काण्ड भाषा टीका सम्पूर्ण । इति सवत्सरे अस्मिन् विक्रमादित्यराजैसप्तदशसत सतपटोत्तर १७०६ अथ सरोजपुरे सन्धिषे पुस्तक लिख्यत पंडित सेवा स्वपठनार्थं ॥

३७ प्रति न० २—पत्र सख्या-७६ । साइज-११×५ $\frac{1}{2}$  इंच । लेखन काल-स० १८२५ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन न० ३६६ ।

विशेष—फोटा में प्रतिलिपि हुई थी ।

३८. चर्चाशतक—द्यानतराय । पत्र संख्या-५३ । साइज-११×८ इंच । भाषा-हिन्दी ( पद्य ) ।

विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-स० १६२४ चैत सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० ७८३ ।

विशेष—यह प्रति वधीचन्द्र साहामिका के शिष्य हरजीमल पानीपत वाले की हिन्दी टव्वा टीका सहित है ।

३९ प्रति नं० २—पत्र संख्या-४७ । १४<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×११<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । लेखन काल-स० १६३८ व्येष्ठ बुदी ७ ।

पूर्ण । वेष्टन न० ७८४ ।

विशेष—प्रति बहुत सुन्दर है-हिन्दी टव्वा टीका सहित है । बीच २ में नकशे आदि भी दिये हुए हैं ।

४०. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-६३ । साइज-१२×१३ इंच । लेखन काल-स० १६०६ माघ सुदी ६ ।

पूर्ण । वेष्टन न० ८०८ ।

विशेष—प्रत्येक पत्र पर ३ पक्तियाँ हैं ।

४१ चर्चासमाधान--भूधरदास जी पत्र संख्या-७६ । साइज-१०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विषय—चर्चा । रचना काल-X । लेखन काल स० १८८४ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६१ ।

४२. प्रति नं० २--पत्र संख्या-११३ । साइज-१०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५ इंच । लेखन काल-स० १८८३ । पूर्ण । वेष्टन

न० ३६२ ।

४३. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-६३ । साइज-११×१३ इंच । लेखन काल-स० १८४८ । पूर्ण ।

वेष्टन-३६३ ।

४४. चर्चासंग्रह—पत्र संख्या-२७२ । साइज-१२×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । रचना-

काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० ३६६ ।

विशेष—गोमट्टसार त्रिलोकसार, क्षणसागर आदि ग्रंथों के आधार पर धार्मिक चर्चाओं को यहाँ संग्रह किया गया है । चर्चाओं के नाम निम्न प्रकार हैं चर्चा वर्णन, कर्मप्रकृति वर्णन, तीर्थकर वर्णन, मुनि वर्णन, नरक वर्णन, मध्यलोकवर्णन, अन्तरकालवर्णन समोसरमवर्णन श्रुतिज्ञानवर्णन । नरकानगोदवर्णन । मोक्षसुखवर्णन, अन्तरसमाधिबर्णन, कुदेषवर्णन आदि ।

४५. चौबीस ठाणा चर्चा—आ० नेमिचन्द्र । पत्र संख्या-५६ से १२७ । साइज—१२×६ इंच ।

भाषा प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० ३२० ।

विशेष—संस्कृत में टीका दी हुई है ।

४६. प्रति नं० २—पत्र संख्या-१२६ । साइज-११<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×४<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । लेखन काल-स० १७८३ । पूर्ण ।

वेष्टन नं० १६६ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टव्वा टीका सहित है । टीकाकार आनन्द राम है ।

४७. चौबीसठाणा चर्चा भाषा—पत्र संख्या-५० । साइज-११×५ इंच । भाषा—हिं दी । विषय—चर्चा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८८५ माह बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५६ ।

विशेष—भाषाटीका का नाम वाल बोध—चर्चा दिया हुआ है ।

४८. प्रति न० २—पत्र संख्या-३० । साइज-११×५ इंच । लेखन काल—३० १८२३ कार्तिक बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५८ ।

विशेष—खुशालचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

४९. चौबीसठाणा चर्चा—पत्र संख्या-३३ । साइज-१०×५ इंच । भाषा—हिं दी । विषय—चर्चा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६१ ।

५०. चौबीसठाणा चर्चा—पत्र संख्या-६ । साइज-११×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय चर्चा । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ५४६ ।

५१. चौबीसठाणा चर्चा—पत्र संख्या-३८ । साइज-११×५ इंच । भाषा—हिं दी । विषय—चर्चा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८२० । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४५ ।

विशेष—हिंडोली में प्रतिलिपि हुई थी ।

५२. चौबीसठाणा पीठिका—पत्र संख्या-८ । साइज-१३×६ इंच । भाषा—हिं दी । विषय—चर्चा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२७ ।

५३. चौबीसठाणा पीठिका—पत्र संख्या-४३ । साइज-११×५ इंच । भाषा—हिं दी । विषय—चर्चा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५१६ ।

५४. जीवसमास वर्णन—आ० नेमिचन्द्र । पत्र संख्या-१४ । साइज-१२×४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३२१ ।

विशेष—गोमट्टसार जीवकांड में से गाथाओं का समूह है ।

५५. प्रति नं० २—पत्र संख्या-४५ । साइज-११×४ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२२ । विशेष—गाथाओं पर सरकृत में अर्थ दिया हुआ है ।

५६. ज्ञानचर्चा—पत्र संख्या-४६ । साइज-११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चर्चा । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ३५७ ।

विशेष—गोमट्टसार, त्रिलोकसार, चण्डणसार आदि ग्रंथों के अनुसार मिश्र २ चर्चाओं का समूह है ।

५७. तत्त्वसार—देवसेन । पत्र संख्या-४ । साइज-१०×४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७० ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

५८. तत्त्वार्थसूत्र—वमास्वामि । पत्र संख्या-२३ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-  
सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८७३ । पूर्ण । वेष्टन न० ५१४ ।

विशेष—प्रारम्भ में भक्तामर स्तोत्र तथा द्रव्य समूह की गाथायें दी हुई हैं ।

५९. प्रति न० २—पत्र संख्या-३३ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×१ $\frac{३}{४}$  इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५२४ ।

विशेष—पत्र लाल रंग के हैं तथा चारों ओर बेलें हैं ।

६०. प्रति न० ३—पत्र सं०-१५ । साइज-११×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५३१ ।

६१. प्रति न० ४—पत्र संख्या-७ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×७ इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५६८ ।

६२. प्रति नं० ५—पत्र संख्या-१४ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन

नं० ५६६ ।

६३. प्रति नं० ६—पत्र संख्या-७ । साइज-१३ $\frac{३}{४}$ ×६ इञ्च । लेखन काल-१९३३ । पूर्ण । वेष्टन

नं० ६०६ ।

६४. प्रति नं० ७—पत्र संख्या-३-१६ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । लेखन काल-× अपूर्ण । वेष्टन

नं० ६६६ ।

विशेष—एक पत्र में ४ पक्तियाँ हैं ।

६५. प्रति न० ८—पत्र संख्या-७ । साइज-१०×४ इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०४१ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

६६. प्रति न० ९—पत्र संख्या-७२ । साइज-७×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६४८ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र तथा पूजाओं का भी समूह है ।

६७. प्रति नं० १०—पत्र संख्या-२० । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन  
नं० ६४२ ।

विशेष—तीन चौबीसी नाम तथा भक्तामर स्तोत्र भी है ।

६८. प्रति नं० ११—पत्र संख्या-४६ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$  इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन  
नं० ८५३ ।

विशेष—हिन्दी टिप्पणी टीका सहित है ।

६९. प्रति नं० १२—पत्र संख्या-४७ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$  इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन  
नं० ८५१ ।

विशेष—हिन्दी टिप्पणी टीका सहित है ।



७०. प्रति न० १३—पत्र संख्या-५० । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×७ $\frac{1}{2}$  इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० =१० ।

विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है ।

७१ प्रति न० १४—पत्र संख्या-११ । साइज-११×५ $\frac{1}{2}$  इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४६० ।

७२. प्रति नं० १५—पत्र संख्या-१५ । साइज-१०×५ इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३०८ ।

७३ प्रति न० १६—पत्र संख्या-१३ । साइज-६×४ $\frac{1}{2}$  इंच । लेखन काल-स० १२२श्रावण सुदी १४ । पूर्ण । वे टन न० ३०५ ।

७४. प्रति न० १७—पत्र संख्या-१० । साइज-६×४ $\frac{1}{2}$  इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३०६ ।

७५. प्रति नं १८—पत्र संख्या-६ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$  इंच × । लेखन काल-× । वेष्टन न० ३०७ । विशेष--प्रत्येक पत्र के चारों ओर सुन्दर बेलें हैं ।

७६ प्रति नं० १९—पत्र संख्या-६६ । साइज-११×५ इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । न० ८८७ । वे टन न० ५ ।

विशेष--सूत्रों पर संक्षिप्त हिन्दी अर्थ दिया हुआ है । अक्षर मोटे हैं । एक पत्र में तीन पंक्तियाँ हैं ।

७७. प्रति न० २०—पत्र संख्या-६३ । साइज-१२×४ $\frac{1}{2}$  इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन

विशेष--हिन्दी टक्का टीका सहित है प्रति प्राचीन है ।

७८. प्रति न० २१— पत्र संख्या-८६ । साइज-११×५ इंच । लेखन काल-स० १६४६ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वे टन नं० ६६ ।

विशेष—यह प्रति संस्कृत टीका सहित है जिसमें प्रमाचन्द्र कृत लिखा हुआ है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।  
कहीं नहीं हिन्दी में भी टीका दी हुई है ।

प्रगति—संवत् १६४६ वर्षे शाके १५१८ कार्तिक सुदी १५ गुरुवासरै मालपुरा वास्तव्ये महाराजाधिराज श्री चवर माधोसिंह जी राज्य प्रवर्तमाने श्री मूलमधे नद्याभाये बलात्कारणये सरस्वतीगच्छे श्री कुन्द कुदाचार्यान्वये मटारक श्री प्रमाचन्द्रदेव विरचिता । यह ग्रन्थ भीमराज वैद्य ने मनोहर लोका में पढ़ने के लिये मोल लिया था ।

७९ तत्त्वार्थ सूत्र धृति—पत्र संख्या-२८ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×८ $\frac{1}{2}$  इंच । साया-मंस्कृत । विषय-मिदान्त । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५८७ वैशाख सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६ ।

विशेष--टीका में मूल सूत्र दिये हुए नहीं हैं । टीका संक्षिप्त है ।

प्रशस्ति—सन् १५५७ वर्षे वैशाख सुदी ७ श्री मूलसंघे दलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये मंडलाचार्य रत्नकीर्ति शिष्येण ब्र० रत्नेन लिखापितं ।

८० तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति—योगदेव । पत्र संख्या—१११ । साइज—१०×४ ३/४ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—स० १६३८ ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण वेष्टन न० ६८ ।

विशेष—मठारक प्रभाचन्द्र देव की आश्रय के अजमेरा गोत्रवाले साह सातू व उनकी भार्या सुहागदे ने यह ग्रन्थ स० १६३८ में लिखवा कर षोडशकारण व्रतोद्यापन में मंडलाचार्य चन्द्रकीर्ति को भेंट किया था ।

८१. तत्त्वार्थसूत्र—पत्र संख्या—१२३ । साइज—१०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना—काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ६७ ।

विशेष—संस्कृत तथा हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है तथा दोनों भाषाओं की टीकायें सरल हैं ।

८२ तत्त्वार्थसूत्र भाषा टीका—कनककीर्ति—पत्र संख्या—२७१ । साइज—६×५ ३/४ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८३६ । वेष्टन न० ८३४ ।

विशेष—नेण सागर ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । पत्र १७५ से २७१ तक वाद में लिखे हुए हैं अथवा दूसरी प्रति के हैं ।

प्रारम्भ—मोक्ष मार्गस्य नेतार मेचार कर्मभूयतां । ज्ञातार विश्व तत्त्वार्ना वदे तद्गुण्य लब्धये ॥ १ ॥ टीका—अह उमास्वामी मुनीश्वर मूल ग्रन्थ कारक । श्री सर्वज्ञ वीतराग वदे कहतां श्री सर्वज्ञ वीतराग नै नमस्कार करू छू । किंसा इक छै श्री वीतराग सर्वज्ञ देव, मोक्ष (ख) मार्गस्य नेतारं कहतां मोक्षमार्ग का प्रकासका करवा वाला छै । श्रीरु किंसा इक छै सर्वज्ञ देव कर्म भूयतां मेचार कहतां ज्ञानावरणादिक आठ कर्म त्यह रूपि पञ्च त्वाह का भेदिवा वाला छ ।

अन्तिम—कै इक जीव चारण रिधि करि सिध छै । कै इक जीव चारण बिना सिध छै । कै इक जीव घोर तप करि सिध छै । कै इक जीव अघोर तप करि सिध छै । कै इक जीव उरध सिध छै । कै इक मध्य सिध छै । कै इक जीव अधो सिध छै । इह माति करि घणा हां मेदा सों सिध हुआ छै । सो सिधात सुं समभि लीज्यो । इति तत्त्वार्थाधि गये मोक्ष शास्त्रे दसमीयां पोसतक लिखत नेण सागर का चीमनराम दोसी सवाई जैपुर में लिख्यो संवत् १८४६ में पुरी कियो ।

८३ प्रति न० २—पत्र संख्या—१२२ । साइज ८×४ इच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ८२३ ।

विशेष—श्रुतसागरी टीका के प्रथम अध्याय की हिन्दी टीका है ।

८४. प्रति नं० ३—पत्रसंख्या—२१६ । साइज—१०×७ इच । लेखन काल—स० १८४० । पूर्ण । वेष्टन न० ७३५ ।

विशेष—चैन सागर ने सांभर में लिपि की थी । प्रारम्भ के पत्र नहीं है यद्यपि संख्या १ से ही प्रारम्भ है ।

८५ प्रति न ४—पत्र संख्या—११२ । साइज—१२×५ ३/४ इञ्च । लेखन काल—स० १७३८ ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न० ७३८ ।

विशेष—दूसरे अध्याय से है । वेष्टन नं० ७४७ के समान है ।

८६ प्रति नं० ५—पत्र संख्या-८२ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४७ । वेष्टन नं० ८३४ के समान है ।

८७. प्रति नं० ६—पत्र संख्या-१३१ । साइज-८ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । लेखन काल-वैशाख सुदी ५ स० १७७६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८३३ ।

विशेष—पापददा मं ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी । लिखितं ऋषि जवीराजेण । लिखापित श्री संघेन नगर पापददा मध्ये । दूसरे अध्याय से लेकर १० वें अध्याय तक की टीका है । यह टीका उतनी विस्तृत नहीं है जितनी प्रथम अध्याय की है ।

८८. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—जयचन्द्र छावडा । पत्र संख्या-४४० । साइज-१०×७ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-स० १८६६ चैत सुदी ५ । लेखन काल-स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७३२ ।

विशेष—महात्मा लालचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

८९. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र संख्या-३३६ । साइज-११×७ इंच । भाषा-हिंदी गद्य । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-स० १९१४ वैशाख सुदी १० । लेखन काल-स० १९३६ कार्तिक सुदी ० । पूर्ण । वेष्टन नं० ७०१ ।

विशेष—सदासुख जी कृत तत्त्वार्थ सूत्र की यह बृहद टीका है । टीका का नाम 'अर्थ प्रकाशिका' है । ग्रन्थ की रचना स० १९१२ में प्रारम्भ की गई थी ।

९०. तत्त्वार्थ सूत्र भाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र संख्या-१२३ । साइज-८×५ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-स० १९१० फाल्गुण सुदी १० । लेखन काल-स० १९१६ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७५२ ।

विशेष—सदासुखजी द्वारा रचित तत्त्वार्थ सूत्र की लघु भाषा वृत्ति है ।

९१. प्रति नं० २—पत्र संख्या-१०७ । साइज-११×५ इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७५३ ।

९२. तत्त्वार्थ सूत्र टीका भाषा—पत्र संख्या-१ से १०० । साइज-१५×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७८० ।

विशेष—१०० से आगेकेपत्र नहीं हैं । प्रारम्भिक पद्य निम्न प्रकार हैं—

श्रीवृषमादि जिनेश वर, अत नाम शुभ वीर ।

मनवचकायविशुद्ध करि, वदों परम शरीर ॥ १ ॥

करम धराधर मेदि जिन, मरम चराचर पाय ।

धरम बराबर कर नमूँ, सुगुरु परापर पाय ॥ २ ॥

६३. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—पत्र संख्या—३१ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन न० ७०३ ।

६४. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—पत्र संख्या—७७ से १७८ । साइज—६×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन न० = ३५ ।

६५. तत्त्वार्थबोध भाषा—बुधजन । पत्र संख्या—७७ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—१८७६ कार्तिक सुदी ५ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७३३ ।

विशेष—२०२६ पद्य है । प्राति नवीन एवं शुद्ध है रचना का अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

अन्तिमपाठ — सुवस वसे जयपुर तहाँ, नृप जयसिंह महाराज ।

बुधजन कीनों ग्रंथ तह निज परहित के काज ॥ २०२७ ॥

सवत् ठारासै विपै अधिक गुण्यासी वेस ।

कार्तिक सुदि ससि पचमी पूरन ग्रन्थ असेस ॥ २०२८ ॥

मंगल श्री अरहत सिद्ध मंगल दायक सदा ।

मंगल साध महत, मंगल जिनवर धर्मवर ॥ २०२९ ॥

६६. तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—प्रभाचन्द्र । पत्र संख्या—१२० । साइज—८×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७७७ । पूर्ण । वेष्टन न० ३०३ ।

विशेष—तत्त्वार्थ सूत्र की यह टीका मुनि श्री धर्मचन्द्र के शिष्य प्रभाचन्द्र द्वारा विरचित है । मवसूदावाद में मट्टारक श्री दीपकीर्ति के प्रशिष्य एवं लालसागर के शिष्य रामजी ने प्रतिलिपि की थी । १०६ पत्र के आगे नेमिराञ्जल गृहमासा तथा राजल पञ्चीसी, शारदा स्तोत्र ( म० शुभचन्द्र ) सरस्वती स्तोत्र मंत्र सहित स्तोत्र और दिया हुआ है ।

६७. तत्त्वार्थराजवार्तिक—भट्टकलंकदेव । पत्र संख्या—३ से ११७ । साइज—११×७ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन न० ६६१ ।

६८. प्राति न० २—पत्र संख्या—१ से ५३ । साइज—१६×६ $\frac{३}{४}$  इञ्च । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४४७ ।

६९. तत्त्वार्थश्लोकवार्तिकालंकार—आचार्य विद्यानन्दि । पत्र संख्या—५३२ । साइज—१२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७६५ आषाढ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६४ ।

विशेष—प्रथम श्लोक संख्या २००० प्रमाण है ।

१००. तत्त्वार्थसार—पत्र संख्या-४ । साइज-११×५ इञ्च । माषा-संस्कृत । विषय-सिद्धांत । रचना काल-× । लेखन काल । पूर्ण । वेष्टन न० ५१३ ।

१०१ त्रिभंगी समग्र—पत्र संख्या-८७ । साइज-१०×५ इञ्च । माषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७२२ श्रावण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० १३ ।

विशेष—साह नरहर दास के पुत्र साह गगाराम ने यह प्रति लिखवायी थी ।

प्रथम में निम्न त्रिमणियों का समग्र है—

वध त्रिमगी, उदयउदीरणा त्रिमगी (नेमिचन्द्र), सत्ता त्रिमगी, भावत्रिमगी तथा विशेष सत्ता त्रिमगी ।

१०२ त्रिभंगीसार—श्रुतमुनि । पत्र संख्या-३६ । साइज-११×५ इञ्च । माषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३०३ ।

१०३ द्रव्यसमग्र—आनेमिचन्द्र । पत्र संख्या-११ । साइज-१० इञ्च । माषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८३३ श्रावण सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन न० ७५ ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

१०४. प्रति न० २—पत्र संख्या-१३ । साइज-१२×५ इञ्च । लेखन काल-स० १७३६ कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६ ।

विशेष—संस्कृत तथा हिन्दी अर्थ सहित है ।

१०५. प्रति न० ३—पत्र संख्या-३६ । साइज-१०×५ इञ्च । लेखन काल-स० १७८६ सावन सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० ७७ ।

विशेष—पर्वतधर्मार्थोक्त बालबोधिनी टीका सहित है । लालसोट में मठ रतनजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१०६. प्रति न० ४—पत्र संख्या-३ । साइज-८ इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ७८ ।

१०७. प्रति न० ५—पत्र संख्या-३ । साइज-११×५ इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ७९ ।

विशेष—पद्मनन्दि के शिष्य ब्रह्मरूप ने प्रतिलिपि की ।

१०८ प्रति न० ६ —पत्र संख्या-६ । साइज-१०×५ इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८० ।

विशेष—इसी प्रकार की ७ प्रतियाँ और हैं । वेष्टन न० ८१ से ८७ तक हैं ।

१०६. प्रति नं० १४—पत्र संख्या-६ । साइज-१२×४ $\frac{१}{२}$  इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ६८ ।

विशेष—गाथाओं पर हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।

११०. प्रति न० १५—पत्र संख्या-११ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इंच । लेखन काल-स० १८२५ ज्येष्ठ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० ८६ ।

विशेष—माधोपुर में प० नगराज ने प्रतिलिपि की ।

१११. प्रति न० १६—पत्र संख्या-६ । साइज-११×४ इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ९० ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—शरदि पशुपतीक्षणाष्ट गवस्वज्जांकिते पुण्य समय भासे अर्जुनेतरपत्ने तिथौ त्रयोदश्यां भौम वासरे सवाईजयनगरे कामपालगजे वृषसचैलालय पढितोत्तम विद्वद्वरजिच्छ्री रामकृष्णजित्कृत्तच्छिष्य विद्वद्वरेण सकलशुष्य निधान जिच्छ्री नगराजे जित्कृत्तच्छिष्य बाल कृष्णेन स्वपठनार्थं लिखितं ।

प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

११२. प्रति न० १७—पत्र संख्या-६२ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×४ इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ९१

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं ।

११३ प्रति न० १८—पत्र संख्या-७ । साइज-८ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ९६ ।

११४ प्रति नं० १९—पत्र संख्या-७ । साइज-१२×५ $\frac{१}{२}$  इंच । लेखन काल-स० १८२० । पूर्ण । वेष्टन ९७ ।

विशेष—जीवराज छाबडा ने अपने पढ़ने को प्रतिलिपि कराई ।

११५. प्रति न० २०—पत्र संख्या-७ । साइज-१२×४ $\frac{१}{२}$  इंच । लेखन काल-स० १९०६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ९८ ।

११६. द्रव्यसंग्रह घृत्ति—ब्रह्मदेव । पत्र संख्या-१७० । साइज-१०×६ इंच । भाषा-संस्कृत विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४६ ।

११७. द्रव्यसंग्रह भाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र संख्या-२६ से ५६ । साइज-१०×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा-अजराती । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-स० १७५८ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० ७४२ ।

विशेष—वसुध्या में प्रति लिखी गई थी । अमरपाल ने लिखवायी थी ।

११८. प्रति नं० २—पत्र संख्या-३५ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×७ इंच । लेखन काल-सं० १७४३ पूर्ण शुद्धी १० ।

पूर्ण । वेष्टन नं० ७८३ ।

विशेष—सम्राजपुर नगर में प्रतिलिपि हुई ।

११९ प्रति नं० ३—पत्र संख्या-३७ । साइज-१२×१ $\frac{1}{2}$  इंच । लेखन काल-× । पूर्ण ।

वेष्टन नं० ७४४ ।

विशेष—प्रतियौ वर्षों में मींगी हुई हैं ।

१२०. प्रति नं० ४—पत्र संख्या-४८ । साइज-१२×१ $\frac{1}{2}$  इंच । लेखन काल-× । पूर्ण ।

वेष्टन नं० ७४५ ।

१२१ द्रव्यसंग्रह भाषा—जयचन्द्रजी । पत्र संख्या-३७ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×७ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विषय-सिद्धांत । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२६ ।

१२२ प्रति नं० २—पत्र संख्या-४६ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×७ इंच । लेखन काल-सं० १८६४ । पूर्ण ।

वेष्टन नं० ७३० ।

१२३. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-४८ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×६ इंच । लेखन काल-सं० १८६८ । भाषा-

सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४७ ।

विशेष—महात्मा देवकर्ण ने लवाण में प्रतिलिपि की । हुंहराज ने प्रतिलिपि कराकर बबीच द ने मन्दिर में स्थापित की । पहले तथा अन्तिम पत्र के चारों ओर लाइनें स्वर्ण की रंगीन रयाही में हैं, अन्य पत्रों के चारों ओर धेनें तथा बूँटे अच्छे हैं । प्रति दर्शनीय हैं ।

१२४ द्रव्यसंग्रह भाषा—वंशीधर । पत्र संख्या-३० । साइज-१०×६ $\frac{1}{2}$  इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-

सिद्धांत । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८५७ ।

विशेष—प्रारम्भ-जीवमजीव द्रव्य इत्यादि गायत्र की निम्न हिन्दी टीका दी हुई है ।

टीका—ग्रह कहिये में जू हो सिद्धांतचक्रवर्ति श्री नैमिचन्द्र नामा आचार्य सो तं कहिये आदिनाथ महाराज हैं ताहि

सिरसा कहिये मस्तक करि सञ्चटा कहिये सर्वकाल विपै बदे कहिये नमस्कार करू हैं ।

अन्तिम—

टीका—मो मुखियाहा कहिये हे मुन्यों के नाथ हो जूय कहिये तुम जू हो ते इण दन्वं सगहे कहिये इहु द्रव्यसंग्रह

ग्रन्थ है ताहि सोधयतु कहिये सौधो है मुनिनाथ हो तुम बैसाक हो . ।

१२५. द्रव्यसंग्रह भाषा—पत्र सख्या-८६ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ८४१ ।

विशेष—पहिले द्रव्य संग्रह की गायणों की हुई हैं और उसके पश्चात् गाथा के प्रत्येक पद का अर्थ दिया हुआ है ।

१२६. द्रव्य का च्योरा—पत्र सख्या-१८ । साइज-४×६ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन न० १००० ।

१२७ पञ्चास्तिकाय—आ० कुन्दकुन्द । पत्र सख्या-३३ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८०५ । पूर्ण । वेष्टन न० ११६ ।

विशेष—मूल मात्र है ।

१२८ पञ्चास्तिकाय टीका—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सख्या-४३ । साइज-१२×६ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८७२ फाल्गुण बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन न० ११४ ।

१२९ प्रति न० २—पत्र सख्या-८० । साइज-१२×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । लेखन काल—स० १८२५ आषाढ बुदी ७ । शुभ । वेष्टन न० ११५ ।

विशेष—सवलसिंह की पुत्री धारि रूपा ने जयपुर में प्रतिलिपि कराई थी ।

१३०. पञ्चास्तिकाय प्रदीप—प्रभाचन्द्र । पत्र सख्या-२२ । साइज-१३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन न० ३८६ ।

विशेष—आ० कुन्दकुन्द कृत पञ्चास्तिकाय की टीका है । अन्तिम पाठ इस प्रकार है—

इति प्रभाचन्द्र विरचिते पञ्चास्तिक प्रदीपे मूलपदार्थं प्ररूपणाधिकार समाप्तः ॥

१३१. पञ्चास्तिकाय भाषा—पं० हेमराज । पत्र सख्या-१०४ । साइज-११×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—स० १७२१ आषाढ बुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टन न० ३२१ ।

विशेष—आमेर में शाह रिश्मदास ने प्रतिलिपि कराई थी । प्रति प्राचीन है । हेमराज ने पञ्चास्तिकाय का हिन्दी गद्य में अर्थ लिखकर जैन सिद्धान्त के अपूर्व ग्रन्थ का पठन पाठन का अत्यधिक प्रचार किया था । हेमराज ने रूपचन्द्र के प्रसाद से ग्रन्थ रचना की थी ।

१३२. पञ्चास्तिकाय भाषा—बुधजन । पत्र सख्या-६२ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ( पद्य ) । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—स० १८६२ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७५ ।

विशेष—सर्षी अमरचन्द दीवान की प्रेरणा से ग्रन्थ रचना की गयी थी । ग्रन्थ में ५८२ पद्य हैं । रचना का आदि अन्त निम्न प्रकार है—



मगलाचरण—

वदू जिन जित क्रम अति इष्ट, वाक्य विशद त्रिभुवन हित मिष्ट ।  
अतर हित धारक गुन वृन्द, ताके पद वदत सत इंद ॥

अतिम पाठ—

पराकरत कुन्दकुन्द नखानी, ताका रहिस अमृतचन्द्र जानि ।  
टीका रची सहस कृत वानी, हेमराज वचनिका आनी ॥ ५७७ ॥  
करे सम्यक्त्व मिथ्यात्व हरै, भव सागर लील तै तरै ।  
महिमा मुख तै कही न जाय, बुधजन वदै मन वच काय ॥ ५७८ ॥  
सांगही अमर चन्द दीवान, सोऊ कही दयावर धान ।  
मुझालाल फुनि नेभिचन्द सहसकित ग्यायक गुन वृन्द ॥  
शब्द अर्थ धन यौ में लक्षो, भाषा करन तवे उमगक्षो ॥ ५८० ॥  
मक्ति प्रेरित रचना आनी, लिखो पदो वाचो भवि क्षानी ।  
जी कहू यामी असुध निहारो, मूलम म लखि ताहि सुधारो ॥  
रामसिंह नृप जयपुर बसै सुदि आसोज गुरु दिन दरौ ।  
उगणी सै में वटि है आठ ता दिवस में रचयो पाठ ॥ ५८२ ॥

१३३. भाव समग्र—देवसेन । पत्र सख्या—१ से ३४ । साइज—११×५ इञ्च । मापा—प्राकृत । विषय—  
सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६२१ फाल्गुण बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १११ ।

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

विशेष — अथ श्री सवत् १६२१ वर्षे फाल्गुण बुदी ७ भौमवासरे । अथ श्री काष्ठा रवे माथुरा वये पुष्करग  
जिनये, अमोक्तान्वये गोइल गोत्रे पचमीवत उद्धरण वीर साह जगुरु तस्य भार्या देल्हाही तस्य पुत्र सा० जुजोखा तस्य भार्या  
बाल्हाही फतेहावाद वास्तव्य । तयो पुत्रा पट्ट प्रथम पुत्र " ।

१३४ प्रति न० २—पत्र सख्या—६६ । साइज—११×५ इञ्च । लेखन काल—सं० १६०६ मार्गसिर सुदी  
१० । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२ ।

विशेष—शेरपुर निवासी पाटनी गोत्र वाले साह मल्लु ने यह शास्त्र लिखा था ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६०६ मार्गसरी १० शुक्ले रेवती नक्षत्रे श्री मूलसधे नयाझाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्द-  
भृन्दाचार्यान्वये मटारक श्री पन्नान्दि देवा' तत्पट्टे म० श्री शुमचन्द्र देवा तत्पट्टे म० श्री निणचन्द्र देवा तत्पट्टे म०

श्री प्रमाचन्द्रदेवा तत्शिष्य वसुन्धराचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तदाप्राये खडेलवालान्वये शेरपुर वास्तव्ये पाटणी गोत्रे साह श्रवणा तद्भार्या तेजी तयो पुत्रौ द्वौ प्र० सघी चापा द्वितीय सघी दूल्हा । सघी माया तद्भार्या श्रु गारदे तयो पुत्राश्च चत्वार ।

प्रथम साह ऊधा द्वितीय साह दीना तृतीय साह नेमा चतुर्थ साह मलू । साह ऊधा भार्या उर्धासिरि तत् पुत्र साह पर्वत तद्भार्या पोसिरी । साह दीपा भार्या देवलदे । साह नेमा भार्या लाडमदे तयो पुत्र चि० लाला । साह मल्लू भार्या महमाटे । साह दूल्हा भार्या बुधी तयो पुत्रास्त्रयः । प्रथम सघी नानू द्वितीय संधी ठक्कुरसी तृतीय सघी गृण्यदत्त । सघी नानू भार्या नायकदे तयो पुत्र चि० कौजू । सघी ठक्कुरदे भार्या पाटमदे तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम साह ईसर तद् भार्या अहकारदे, द्वि० चि० सेवा । साह गृण्यदत्त भार्या गारवदे । तयो पुत्रास्त्रयः प्रथम चि० गेगराज द्वि० चि० सुमतिदास तृ० चि० धर्मदास एतेषा मध्ये साह मलू इदं शास्त्रं लिखाय पचमीत्रतोयोतनाथं आचार्यं श्री ललितकीर्ति आचार्यं धनक राय दत्तं ।

१३५. भावसग्रह—श्रुतमुनि । पत्र सख्या-१ से १४ । साइज-११३×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-म० १५१० । पूर्ण । वेष्टन न० ११० ।

विशेष—कहीं २ मस्कृत में टीका भी है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५१० वर्षे आषाढ सुदि ६ शुक्ले शुक्रज्जदेशे कल्पवल्ली शुभस्थाने श्री आदिनाथचैत्यालये श्रीमत् नान्ठासघे नन्दीतटगच्छे त्रिधागणे मट्टारक श्रीराममेनान्वये मट्टारक श्री यश कीर्ति तत्पट्टे मट्टारक श्री उदयसेन, आचार्य श्री जिनमेन पठनार्थं ।

१३६. लब्धिसार—आ० नेमिचन्द्र । पत्र सख्या-६६ । साइज-१२३×४३ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-म० १५५१ आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० १०४ ।

विशेष—सस्कृत टीका सहित है । लेखक—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

सवत् १५५१ वर्षे आषाढ सुदी १० मंगलवासरे व्येष्टानक्षत्रे श्री मेदपाटे श्रीपुरनगरे श्री ब्रह्मचालुकवशे श्रीराजाधिराज रायश्री सूर्यसेनराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे, श्री नन्दिमघे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये म० श्री पद्यनदिदेवा तत्पट्टे श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे श्री जिनचन्द्र देवा, तत् शिष्य मुनि रत्नकीर्ति तत् शिष्य मुनि लक्ष्मीचन्द्र खडेलवालान्वये श्री साह गोत्रे साह काट्हा भार्या रानादे तत् पुत्र साह वीभा, साह माधव, साह लाला, साह इ गा । वीभा भार्या विजयश्री द्वितीय भार्या पूना । विजय श्री भार्या पुत्र जिणदास भार्या जौणदे, तत् पुत्र साह गगा, साह सांगा साह सहपा, साह चौडा । सहसा पुत्र पासा साम्रमिद लब्धिसारमिधान निजज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थं मुनि लक्ष्मीचन्द्राय पठनार्थं लिखापित । लिखित गोगा ब्राह्मण गौड ज्ञातीय ।

जयत्यन्वहमर्हंत सिद्धा. सूर्युपदेशका ।

साधवो मन्व्यलोकस्य शरणोत्तम मंगल ॥

श्री नागार्थतनूजातज्ञातिनाथोपरोधत ।

वृत्तिर्मन्यप्रबोधाय लब्धिसारस्य कथ्यते ॥

१३७. लब्धिसार टीका—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव । पत्र संख्या-६७ । साइज-१४×६ $\frac{१}{२}$  इच ।

भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८७७ ।

विशेष—इस प्रति की स० १५८३ वाली प्रति से प्रतिलिपी की गई थी ।

१३८. प्रति न० २—पत्र संख्या-२४ । साइज-१४×६ $\frac{१}{२}$  इच । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ८७८ ।

१३९. लब्धिसार भाषा—प० टोडरमल । पत्र संख्या-१ से ४५ । साइज-१२ $\frac{१}{२}$ ×७ $\frac{१}{२}$  इच । भाषा-

हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६६० ।

१४०. पट् द्रव्य वर्णन—पत्र संख्या-११ । साइज-१२×६ $\frac{१}{२}$  इच । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त ।

रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६२५ ।

१४१. सर्वार्थसिद्धि—पूज्यपाद । पत्र संख्या-१२२ । साइज-११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-स० १५२१ चैत सुदी ३ । पूर्ण वेष्टन न० ४० ।

विशेष—लेखक प्रगर्भित पूर्ण नहीं है । केवल सवत् मात्र है । प्रति शुद्ध है ।

१४२. सिद्धान्तसारदीपक—भ० सकलकीर्ति । पत्र संख्या-५ से २१ । साइज १२×५ $\frac{१}{२}$  इच ।

भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० १०७ ।

विशेष—तृतीय अधिकार तक है ।

१४३. प्रति न० २—पत्र संख्या-१२ से ५० । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$  इच । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

वेष्टन न० १०८ ।

१४४. प्रति न० ३—पत्र संख्या-३८ से २७५ । साइज-१०×४ $\frac{१}{२}$  इच । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

वेष्टन नं० २०० ।

१४५. सिद्धान्तसारदीपक भाषा—नथमल विलास्ता । पत्र संख्या-२४५ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×७ $\frac{१}{२}$  इच ।

भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-स० १८२४ । लेखन काल-स० १९३५ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६५ ।



## धर्म एवं आचार-शास्त्र

१४६. अनुभवप्रकाश—दीपचन्द्र । पत्र सख्या-२२ । साइज-१२ $\frac{३}{४}$ ×८ इंच । भाषा-हिंदी गद्य ।  
विषय-धर्म । रचना काल-स० १७८१ पौष सुदी ५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८४५ ।

१४७. अरहन्त स्वरूप वर्णन—पत्र सख्या-३ । साइज-८×५ इंच । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-  
धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अर्धपूर्ण । वेष्टन नं० १२४४ ।

१४८. आचारसार—वीरनन्दि । पत्र सख्या-८२ । साइज-११×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-  
आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८१६ वैशाख सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० १७७ ।

विशेष—प्रति उत्तम है, क्लिष्ट शब्दों के संस्कृत में अर्थ भी दिये हुये हैं ।

१४९. आचारसारवृत्ति—वसुनन्दि । पत्र सख्या-३२० । साइज-१०×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन न० ३७ ।

विशेष—मूलकर्ता श्री० बट्टकेर स्वामी हैं । मूल अथ प्राकृत भाषा में है ।

१५०. उपदेशरत्नमाला—सकलभूषण । पत्र सख्या-६० । साइज-१२×६ इंच । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-सं० १६२७ श्रावण सुदी ५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १५६ ।

विशेष—रचना का दूसरा नाम षट्कर्मोपदेशरत्नमाला भी है । इस अथ की ४ प्रतियां और हैं वे सभी पूर्ण हैं ।

१५१. उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला—भडारी नेमिचन्द्र । पत्र संख्या-११ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच ।  
भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८११ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० १६७ ।

विशेष—महात्मा सीताराम ने नोनदराम के पठनार्थ लिपि कराई थी ।

१५२. उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा । पत्र सख्या-१० । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी  
(पद्य) । विषय-धर्म । रचना काल-स० १७७२ चैत्र सुदी २४ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३७६ ।

विशेष—भाषाकार के मतानुसार उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला की रचना सर्व प्रथम प्राकृत भाषा में धर्मदास गणि  
ने की थी । उसी अथ का संक्षिप्त सार लेकर भडारी नेमिचन्द्र ने ग्रन्थ रचना की थी । भाषाकार ने भडारी नेमिचन्द्र की  
रचना की ही हिन्दी की है ।

मारम्भ—शुद्ध देव अरहन्त गुरु, धर्म पंच नवकार ।

वसै निरन्तर जासु हिय, धन्यकृती नर सार ॥१॥

पठइन गुणइन ढानन देहि, तप आचार नहु नाहि करेहि ।  
जो हिय एरु देख अरिहत, ताप त्रय न आताप करंत ॥२॥

अन्तिम पाठ—

इम भडारी नेमिचन्द, रची कितोयक गाह ।  
सुमगरवत जे भवि पठत, जीनतु सिव सुख लाह ॥६१॥  
यह उपदेश रतन माला सुम, अथ रच्यो भ्रमदामगणी,  
ता महि केतक गाह अनोपम नेमिचन्द भडार मणी ।  
जिनर वरम प्रभावन काजह माष रच्यो अतुद्वि तणी ।  
जाके पढत सुनत सर्वा धारत आत्म हुइ वर सिव रमणी ॥६२॥  
भवत् सतरह सै सतरि अधिक दौय पय सेत ।  
चैत मास चातुरदसी, पूरन मयो सु एत ॥६३॥

१५३ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला—भागचन्द्र । पत्र सख्या-६० । साइज-१०×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । मापा-  
द्विन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-स० १६२२ आषाढ बुदी २ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४०७ ।

१५४ उपासकदशा सूत्र विवरण—अभयदेव सूरि । पत्र सख्या-१८ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×१ $\frac{१}{२}$  इञ्च ।  
मापा-सस्तुत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १७६ ।

विशेष—उपासक दशा सूत्र श्वे० सम्प्रदाय का सातवा अंग है जो ढग अध्यायों में विभक्त है । मस्कृत में यह  
विवरण अति सलिप्त है । विवरण का प्रथम पद्य निम्न प्रकार है—

श्रीवर्द्धमानमानम्य व्याख्या काचिद् विधीयते  
उपासकदशादीना प्रायो अथातरेकिता ॥१॥

१५५ उपासकाचार दोहा—लक्ष्मीचन्द्र । पत्र सख्या-२७ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×१ $\frac{१}{२}$  इञ्च । मापा-अपत्र ग  
(प्राचीन द्विन्दी) । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८२१ वैशाख बुदी १० । पूर्ण ।  
वेष्टन न० १७८ ।

विशेष—दोहों की सख्या २२४ है ।

१५६ कर्मचरित्र वाईसी—रामचन्द्र । पत्र सख्या-५ । साइज-६×६ $\frac{१}{२}$  इञ्च । मापा-हिदी ।  
विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४५७ ।

विशेष—३ पत्र में आगे दौलतरामजी के पठ है ।

१५७ क्रियाकोश भाषा—किशनमिह । पत्र सख्या-११४ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । मापा-हिन्दी

पद्य । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—स० १७८८ भाद्रपद सुदी १५ । लेखन काल—स० १८५६ कार्तिक शुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७७० ।

विशेष—मण्डार में ग्रन्थ की ११ प्रतियाँ और हैं जो सभी पूर्ण हैं ।

१५८ गुणतीसो भावना—पत्र संख्या—२ । साइज—११ $\frac{३}{४}$ ×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन न० १०७६ ।

विशेष—हिन्दी गद्य में गाथाओं के ऊपर अर्थ दिया हुआ है । गाथाओं की संख्या २६ है ।

१५९. गुरोपदेश श्रावकाचार—डालूराम । पत्र संख्या—१३३ । साइज—१२ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—× । लेखन काल—सं० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन न० ८८० ।

विशेष—पचेवर में ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

१६० चारित्रसार (भावनासार संग्रह) चामुण्डराय । पत्र संख्या—११० । साइज—६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—मस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन न० १०५ ।

विशेष—प्रथम खंड तक है तथा अंतिम प्रशस्ति अधूर्ण है ।

१६१ चारित्रसार पंजिका—पत्र संख्या—८ । साइज—११×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—मस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—× । लेखन काल—× । पूर्ण । वेष्टन न० १०६ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । चरित्रसार टिप्पण्य भी नाम दिया हुआ है । टिप्पण्य अति सक्षिप्त है ।

प्रारम्भिक मंगलाचारण निम्न प्रकार है—

नमोनतसुखज्ञानद्वयीयाय जिनेशने ।

मसारवारापारास्मिन्निमज्जजीवतापिने ॥१॥

चारित्रसारे श्रुतसारं संग्रहे यन्मंदबुद्धे स्तमस्तावृत्त पठ ।

अव्यक्तये व्यक्तपदप्रयोगत प्रारभ्यते विद्वद्मीष्टपंजिका ॥२॥

१६२ चारित्रसार भाषा—मन्नालाल । पत्र संख्या—२३५ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—स० १८७१ । लेखन काल—स० १८७६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५४ ।

आदि भाग (पद्य)— श्री जिनेन्द्र चन्द्रा । परम मंगलमादिशतु तराम् ।

दोहा —परम धरम रथ नेमि सम, नेमिचन्द्र जिनराय ।

मंगल कर अघ हर विमल, नमो सुमन—वच-काय ॥१॥

भव अथाह सायर परं, जगत जंतु दुख पथ ।  
करि गहि काटत तिनहि यह, जैन धर्म विख्यात ॥१॥  
करत परम पद विदश सुख, घाटत गुण विस्तार ।  
नमों ताहि चित हार्य धरि, करुणामृत रम धार ॥२॥

मध्यमाग (गण) — (पत्र स० ६४) मदिरा को पीवै तथा और ह मादिक वस्तु भक्षण कर तब प्रमाद ते बंधन ते त्रिषेक का नाश होय । ताके नाश होतै हित अहित या विचार होता नाहीं । ऐमं धर्म फार्य तथा कर्म इन दोऊन हुनै भट्ट होइ तातै इस मघवत तथा मादिक वस्तु का सर्वथा प्रकार त्याग ही करना जोग्य ह । ऐमा जानना ।

प्रथोत्पत्ति वर्णन—प्रशस्ति —

सर्वाकाश अनन्त प्रमान । ताके चीच ठीक पहचान ॥  
लोकाकाश असंख्य प्रदेश, उरिध मध्य अधा भूमिग ॥१॥  
मध्यलोक मे जंचु दीप । सो है सब द्वीपनि अवनोप ॥  
ता मधि मेरु सुदर्शन जान । मानूँ मधि दृढ हे मान ॥२॥  
ता दक्षिण दिश भरत सु नाम । क्षेत्र प्रकट सोहै सुरधाम ॥  
ताके मध्य दूर दाहड देश । बहु शोभा सुत लर्म प्रशेष ॥३॥  
तहां सवाई जयपुर नाम । नगर लसत रचना अभिराम ॥  
बहु जिन मंदिर सहित मनोग्य । मानु सुर गण बसने जोग्य ॥४॥  
जगत सिंह राजा तसु जान । कपत अरिगन करै प्रनाम ॥  
तेजवत जसवत विशाल । रीभक्त गुन गन करत निहाल ॥५॥  
जहां बसै बहु जैनी लोग । सेवत धर्म वसे दुख रोग ॥  
तिन मधि सांगा बस विशाल । जोगिदास सुत मन्नालाल ॥६॥  
बालपने ते सगति पाय । विद्याभ्यास कियो मन लाय ॥  
जेन अथ देखे कुछ सार । जयचंद नंदलाल उपकार ॥७॥  
हस्तिनागपुर तीर्थ महान । तहि बदन आयो सुख धाम ॥  
इन्द्रप्रस्थ पुर शोभा होइ । देखै मयो अधिक मन मोइ ॥८॥  
तहां राज अंगरेज करत । हुकम कपनी छत्र फिरंत ॥  
बादस्थाह अकबर सिर सेत । सेवक जननि द्रव्य बहुत देत ॥९॥  
हरसुख राय खजाना घंत । तिनके सोहै धरम घरंत ॥  
अगस्वाल गोत्री गुण नाम । सुगनचन्द्र तसु पुत्र सुजान ॥१०॥  
मदिर तिन नै रच्यो महत । जिनवर तनो धूजा लहकंत ॥

बहु विधि रचना रची तसु माहि । शोभा वरनत पार न पाहि ॥११॥  
 ताके दर्शन कर सुख राशि । प्राप्त मई रक निधि मासि ॥  
 कारन एक मयो तिहि ठाम । रहने को भाषू तसु नाम ॥१२॥  
 मर्त्री जगतसिंह को नाम । अमरचन्द्र नामा गुणधाम ॥  
 रहै बहुत सखन सुखदाय । धर्म राग शोभित अधिकाय ॥१३॥  
 मोतै अधिक प्रीति मन धरै । तिन अटकायो मै हित खरै ॥  
 ता कारण विरता तिहि पाय । सुगनचद्र के कहै सुमाय ॥१४॥  
 चारित्रसार ग्रंथ को भाष । वचन रूप यह करी सुसाख ॥  
 ठाकुरदास और इन्दराज । इन माइन के बुद्धि समाज ॥१५॥  
 मदबुद्धिते अर्थ विशेष । तहि प्रतिमास्यो होय अशेष ॥  
 सुधो ताहि नीकै ठानियो । पछिपात मत ना मानियो ॥१६॥  
 अनेकांत यह जैन सिधत । नय समुद्र वर कहि विलसंत ॥  
 गुरुवच पोत पाय भवि जीव । लहो पार सुख करत सदीव ॥१७॥  
 जयवती यह होउ दिनेश । चन्द नखत उडु वजावत शेष ॥  
 पढो पढावो मन्व्य संसार । वदो धर्म जिनवर सुखकार ॥१८॥  
 सवन एक सात अठ एक । भाष मास सित पचमि नेक ॥  
 मंगल दिन यह पूरण करी । नादो विरधो गुण गण भरी ॥१९॥  
 दोहा—सुभ चितक लु लेखका दयाचंद यह जानि ।  
 लिख्यो ग्रंथ तिनि नै एहै वाचो पढो सुहसानि ॥

विशेष—ग्रंथ को एक प्रति और है लेकिन अपूर्ण है ।

१६३. चिद्विलास-दीपचन्द्र—पत्र संख्या-५० । साहज-१२<sup>३</sup>×५<sup>३</sup> इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म ।  
 रचना काल-स० १७७६ फाल्गुण बुदी ५ । लेखन काल-स० १७८४ वैशाख बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० ७३६ ।

१६४. चौरासी बोल—हेमराज । पत्र संख्या-१४ । साहज-११<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा-हिन्दी ।  
 विषय-धर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ८७१ ।

१६५. चौबीस दडक—पत्र संख्या-२८ । साहज-७×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म ।  
 रचना काल स० १८५४ श्रावण सुदी ६ । लेखन काल-X । पूर्ण वेष्टन न० ६४७ ।

विशेष—१४ वें पत्र के आगे बारह मात्रना तथा बार्डिस परीपह का वर्णन है । दडक में ११८ पद्य हैं ।



१६६. चौबीस दृढक—दौलतराम । पत्र संख्या—१ । साइज—७×२१ $\frac{१}{४}$  इंच । मापा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ६८५ ।

१६७. जिनगुण पञ्चसी—पत्र संख्या—२२ । साइज—११×६ इंच । मापा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ८०५ ।

१६८. जीवों की संख्या वर्णन—पत्र संख्या—८ । साइज—७×७ इंच । मापा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ११३६ ।

१६९. ज्ञान चिन्तामणि—मनोहरदास । पत्र संख्या—१० । साइज—१० $\frac{१}{२}$ ×८ $\frac{१}{२}$  इंच । मापा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—१०१७२८ माह सुदी ८ । लेखन काल—स० १८३६ । पूर्ण । वेष्टन न० ८०६ ।

१७०. ज्ञान मार्गणा—पत्र संख्या—६ । साइज—१० $\frac{१}{२}$ ×७ $\frac{१}{२}$  इंच । मापा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ३६४ ।

विशेष—मार्गणाओं का वर्णन सलेप में दिया हुआ है ।

१७१. ज्ञानानन्द श्रावकाचार—रायमल्ल । पत्र संख्या—१११ । साइज—११×८ इंच । मापा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—स० १९२६ । पूर्ण । वेष्टन न० ६४९ ।

१७२. ढाल गण—सूरत । पत्र संख्या—६ । साइज—१० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । मापा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ५०६ ।

१७३. त्रेपनक्रियाविधि—प० दौलतराम । पत्र संख्या—१०४ । साइज—११×६ इंच । मापा—हिन्दी (पद्य) । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—स० १७६५, मादवा सुदी १२ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ७७७ ।

विशेष—कवि ने यह रचना उदयपुर में समाप्त की थी ।

१७४. दशलक्षणवर्म वर्णन—पत्र संख्या—२६ । साइज—१२×८ इंच । मापा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ३७६ ।

विशेष—दश धर्मों का हिन्दी गद्य में सक्षिप्त वर्णन है ।

१७५. दर्शनपञ्चसी—आरतराम । पत्र संख्या—११ । साइज—११ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इंच । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ५०३ ।

विशेष—फुटकर सबैया भी हैं । एक प्रति धीर है जिसका वेष्टन न० ४०६ है ।

१७६. देहव्याकथन—पत्र संख्या—१६ । साइज—१०×४ $\frac{१}{२}$  इंच । मापा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ६३ ।

विशेष—देह को किस २ प्रकार से व्यथा है इसका वर्णन किया हुआ है

१७७. धर्म परीक्षा—आचार्य अमितगति । पत्र सख्या-८८ । साइज-११ $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—धर्म । रचना काल—स० १०७७ । लेखन काल—स० १७६२ पौष शुक्ला २ । पूर्ण । वेष्टन न० १८७ ।

विशेष—वृन्दावती गढ़ (वृन्दावन) में प्रतिलिपि हुई थी । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है । स० १७६२ मिति पौषमासे शुक्लपक्षे द्वितीया दिवसे वार शुक्रवार लिखितं गढ़ वृन्दावती मध्ये श्री राव बुधसिंह राज्ये नेमिनाथचैत्यालये मट्टारक श्री जगतकीर्ति आचार्य श्री शुभचंद्रने शिष्य नानकरामेन शुभं भवत् ।

ग्रंथ की एक प्रति और है जो स० १७२६ में लिखित है । वेष्टन न० १८८ है ।

१७८. धर्म परीक्षा—मनोहरदास सोनी । पत्र सख्या-१२४ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा—हिन्दी ।  
(पद्य) विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—स० १७६३ फागुण सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६६ ।

विशेष—हिन्दी में प्रतिलिपि हुई थी ।

इसी ग्रंथ की पाँच प्रतियाँ और हैं जो सभी पूर्ण हैं तथा उत्तम हैं ।

१७९. धर्मविलास—द्यानतराय । पत्र सख्या-२१६ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—स० १६४२ । पूर्ण । वेष्टन न० ७२३ ।

विशेष—द्यानतरायजी की रचनाओं का संग्रह है ।

१८० धर्मरसायन—पद्मनन्दि । पत्र सख्या-१६ । साइज-११×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म ।  
रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २७ ।

विशेष—ग्रंथ की एक प्रति और है जो सवत् १८५४ में लिखी हुई है । वेष्टन न० २८ है ।

१८१. धर्मसार चौपई—प० शिरोमणिदास । पत्र सख्या-३६ । साइज-१०×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—धर्म । रचना काल—सं० १७३२ बैसाख सुदी ३ । लेखन काल—१८३६ भाष सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन न० ८६६ ।

विशेष—प्रति सुन्दर है । इसमें हिन्दी के ७६३ छन्द हैं । रचना काल निम्न पंक्तियों से जाना जा सकता है ।

सवत् १७३२ वैशाख मास उज्ज्वल पुनि दीस ।

तृतीया अक्षय शनौ समेत भविजन को भगल सुख देत ॥

१८२. धर्मपरीक्षा भाषा—वा. दुल्लिचन्द्र । पत्र सख्या- २७२ । साइज-११×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—धर्म । रचना काल—स० १८६८ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ७८६ ।

विशेष—अंतिम पत्र नहीं है । मूल कर्ता आचार्य अमित गति हैं ।

१८३ धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार भाषा—चपाराम । पत्र संख्या—१६० । साइज—१२×११ १/२ इंच ।

भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—आचार । रचना काल—सं० १८६८ मादवा सुदी ५ । लेखन काल—सं० १८६० मादवा सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६० ।

विशेष—दीपचन्द के पौत्र तथा हीरालाल के पुत्र चम्पाराम ने सवाई माधोपुर में ग्रन्थ रचना की थी । विस्तृत प्रशस्ति दी हुई है ।

१८४ धर्मसमग्र श्रावकाचार—प० मेधावी । पत्र संख्या—४६ । साइज—११×११ १/२ इंच । भाषा—संस्कृत

विषय—आचार । रचना काल—सं० १५४१ । लेखन काल—सं० १८३७ । पूर्ण । वेष्टन न० १८६ ।

विशेष—सवाई जयपुर में मोपतिराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१८५ धर्मोपदेशश्रावकाचार—ब्र० नेमिदत्त । पत्र संख्या—३० । साइज—१० ३/४×५ इंच । भाषा—

संस्कृत । विषय—आचार । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६३३ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० १८२ ।

विशेष—चपावती दुर्ग के आदिनाथ चैत्यालय में महाराजाधिराज श्री मगवतदासजी के शासनकाल में प्रतिलिपि की गयी थी ।

१८६ प्रति न० २—पत्र संख्या—१७ । साइज—११×११ १/२ इंच । लेखन काल—सं० १६०६ माह सुदी ५ ।

पूर्ण । वेष्टन न० १८३ ।

विशेष—टोढा दुर्ग ( टोढारायसिंह ) में महाराजाधिराज श्री रामचन्द्र के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

१८७ नरक दु ख वर्णन—पत्र संख्या—३-६ । साइज—१२×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।

रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन न० ६१८ ।

१८८ नरक दु ख वर्णन—पत्र संख्या—३ । साइज—१२ १/२×५ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।

रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन न० १०४७ ।

१८९ नरक दु ख वर्णन—पत्र संख्या—६२ । साइज—६×४ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म ।

रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८१६ पौष सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१६ ।

विशेष—माया हृदारी है तथा उर्दू के शब्दों का भी कहीं २ प्रयोग हुआ है । नरकों के वर्णन के आगे अन्य वर्णन जैसे स्वर्ग, मार्गणायें तथा काल अन्तर आदि का वर्णन भी दिया हुआ है ।

१९० पद्मनन्दिपंचविंशति—पद्मनन्दि । पत्र संख्या—६७ । साइज—१० ३/४×५ इंच । भाषा प्राकृत—

संस्कृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण वेष्टन नं० ३ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१६१. प्रति न० २—पत्र संख्या—६६ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×४ इच । लेखन काल—स० १५३२ फागुन सुदी १ ।

पूर्ण । वेष्टन न० ११ ।

विशेष—स० १५३२ फागुण सुदी प्रतिपदा सोमवासरे उत्तरानक्षत्रे शुभनामजोगे श्री कुन्दकुन्दाचार्यन्वये सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री महारक श्री प्रमाचन्द्रदेवा तत्पट्टे शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे महारक श्री जिनचन्द्र देवा तत्पट्टे महारक श्री सिंह कीर्ति देवा तत् शिष्य प्रमाचन्द्र पठनाय दत्त पुण्यार्थ इच्चाकृ वशे अश्वपतिना दत्ते शुभं भवतु ।

१६२ पद्मनंदिपचचीसी भाषा—मन्नालाल खिंदूका । पत्र संख्या—२६८ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×८ इच ।

भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—सं० १६१५ । लेखन काल—सं० १६३५ भाद्रवा सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६७

१६३. परीषद् विवरण—पत्र संख्या—३ । साइज—१३×४ $\frac{३}{४}$  इच्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना

काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५४ ।

१६४ प्रतिक्रमण—पत्र संख्या—५ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इच्च । भाषा—प्राकृत—संस्कृत । विषय—धर्म ।

रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६३ ।

१६५ प्रबोधसार—महा प० यशःकीर्ति । पत्र संख्या—२८ । साइज—८×३ $\frac{३}{४}$  इच्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—प्राचार धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—स० १६२५ मगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन न० १७६ ।

विशेष—रचना में ४७८ पद्य हैं । प्रशस्ति अपूर्ण है जो निम्न प्रकार है—

सवत् १५२५ वर्षे मार्गसुदी १५ श्री मूलसंधि बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये स० श्री जिनचन्द्र देवास्तत् शिष्य स० श्री हेमकीर्ति देवा तस्योपदेशात् जैसवालान्वये इच्चाकृ वशे सा० " . . . . .

१६६. प्रश्नोत्तरोपासकाचार—बुलाकीदास । पत्र संख्या—१४३ । साइज—१२×५ इच । भाषा—

हिन्दी (पद्य) । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—स० १७८८ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६४ ।

विशेष—प० नरसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

१६७. प्रायश्चित्तसमुच्चय—नदिगुरु । पत्र संख्या—१०० । साइज—१०×५ $\frac{३}{४}$  इच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८६६ श्रावण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० २६ ।

१६८. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार—सकलकीर्ति । पत्र संख्या—६२ । साइज—११×५ इच्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—आचार । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८४ ।

१६९. प्रति न० २—पत्र संख्या—१०८ । साइज—११×५ इच । लेखन काल—स० १६३२ भाद्र सुदी ५ ।

पूर्ण । वेष्टन नं० १६० ।

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

मन्मथरेस्मिन् विक्रमादित्य १६३० वषे माघमासे शुक्लपक्षे पचम्यां तिथौ शुक्रवामरे मालवदेशे चन्देरीगढदुर्गे पाण्डनाय चैत्यालये श्री मूलमधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कु ढकु दाचार्यान्वये तदाम्नाये महात्रादवादीश्वर मडलाचार्य श्री श्री देवेन्द्रजीतिदेव । तत्पट्टे म० आचार्य श्री त्रिभुवनकीर्ति देव । तत्पट्टे म० श्री सहस्रकीर्तिदेव । तत्पट्टे मडलाचार्य श्री पद्मनदि देव । तत्पट्टे मडलाचार्य श्री यश'कीर्ति' । तत्पट्टे म० श्री ललितकीर्ति लिखित पढित रत्न पठनार्थ इदं उपाय-काचार ग्रन्थ लिखित ।

२००. प्रति न० ४३—पत्र संख्या-१२२ । साइज-११×४ $\frac{३}{४}$  इच । लेखन काल-स० १६४८ वैशाख बुदा ६ । पूर्ण । वेष्टन न० १६१ ।

विशेष—सहारनपुर नगर बादशाह श्री अकबर जलालुद्दीन के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

इस ग्रन्थ की मण्डार में ५ प्रतियाँ और हैं जिनमें ० प्रतियाँ अपूर्ण हैं ।

२०१. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार—सकलकीर्ति । पत्र संख्या-६२ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×५ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन न० १८४ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है प्रथम पत्र नवीन है ।

२०२. प्रति न० २—पत्र संख्या-७२ । साइज-११×५ इच । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० १८४ ।

२०३. पुरुषार्थसिद्धयुपाय—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-३८ । साइज-१४×८ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६२७ वैशाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० ६३ ।

विशेष—इसका दूसरा नाम जिन प्रवचन रहस्य कोश भी है । प्रति संस्कृत टीका सहित है तथा टीका का नाम त्रिपाठी है । संस्कृत पद्यों पर टीका लिखी हुई है ।

२०४. पुरुषार्थसिद्धयुपाय—पण्डित टोडरमलजी । पत्र संख्या-१११ । साइज-११×७ $\frac{३}{४}$  इच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-स० १८२७ । लेखन काल-स० १६३८ माघ सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६६ ।

विशेष—ग्रन्थ की २ प्रतियाँ और हैं लेकिन वे दोनों ही अपूर्ण हैं ।

२०५. ब्रह्मविलास—भगवतीदास । पत्र संख्या-११६ । साइज १० $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$  इच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-१७५५ । लेखन काल-१८८६ । अपूर्ण । वेष्टन न० ७२६ ।

विशेष—मैय्या भगवतीदास की रचनाओं का संग्रह है । विलास की एक प्रति और है वह अपूर्ण है ।

२०६. वाईस परीषद् वर्णन—पत्र संख्या-६ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इच । रचनाकाल-× । लेखन काल-स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन न० ६६० ।

विशेष—ग्रन्थ गुटका साइज है ।

२०७ भगवती आराधना भाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र संख्या—५३४ । साइज—११×७<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १९०८ मादवा सुदी २ । लेखन काल—सं० १९०८ माघ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६० ।

२०८. मालामहोत्सव—विनोदीलाल । पत्र संख्या—३ । साइज—११×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८९८ चैत्र सुदी २० । पूर्ण । वेष्टन नं० ५५६ ।

२०९ मूलाचार प्रदीपिका—भट्टारक सकलकीर्ति । पत्र संख्या—९१ । साइज—११<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×१०<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८४३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८ ।

विशेष—त्रय में बारह अधिकार हैं । सालिगराम गोधा ने स्वपठनार्थ जयपुर में ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

२१० प्रति नं० २—पत्र संख्या—१३७ । साइज—१०×५ इंच । लेखन काल—सं० १९८१ पौष सुदी २ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति सं० १९८१ वर्षे पोषमासे द्वितीयाया तियो सोमवासरे अर्धे वीजापुर वास्तव्ये मेदपाट ज्ञातीय च्योति श्री बलिराज सुत लीलावर केन पुस्तिकां लिखितां । श्री मूलसधे ब्रह्म श्री राजपाल तत् शिष्य त्र० कर्मश्री पठनार्थ ।

२११ मूलाचार भाषा टीका—ऋषभदास । पत्र संख्या—२२७ । साइज—११×७ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १८८८ कार्तिक सुदी ७ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८२ ।

विशेष—वट्टेकर स्वामी की मूल पर आधारित बसुनदि की आचार वृत्ति नाम का टीका के अनुसार भाषा हुई है ।

प्रारम्भ—त्रदौ श्री जिन सिद्धपद आचारिज उवभाय ।

मातु धर्म जिन मारती, जिन गृह चैत्य सहाय ॥१॥

वट्टेकर स्वामी प्रणमि, नाम बसुनंदि सूरि ।

मूलाचार विचार के माखौ लखि गुण भूरि ॥२॥

अन्तिम पाठ—बसुनदि सिद्धान्त चक्रवर्ति करि रची टीका है सो चिरकाल पर्य त पृथ्वी विषे तिष्ठहु । जैसी है टांका मर्व अर्थनि की है सिद्धि जातै । बहुरि कैमी है समस्त गुणनि की निधि । बहुरि ग्रहण करि है नीति जानै ऐसो जो आचारज कहिये मुनिनि का आचरण ताके सूक्ष्म भावनि की है अनुवृत्ति कहिये प्रवृत्ति जातै । बहुरि विख्यात है अठारह दोष रहित प्रवृत्ति जाकी ऐसा जो जिनपति कहिये जिनेश्वर देव ताके निदोष वचनि करि प्रसिद्ध । बहुरि पाप रूप मल की दूर करण हारी । बहुरि सुन्दर ।

२१२ मोक्ष पैडी—बनारसीदास । पत्र संख्या—३ । साइज—१०<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६४ ।

- विशेष—एक प्रति और है ।

२१३. मोक्षमार्ग प्रकाश—पत्र सख्या—१६० । साइज—१३ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—  
हन्दी ( दू टारी ) । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० २ ।

विशेष—प्रति सजोधित की हुई है ।

२१४. प्रति नं० २—पत्र सख्या—२०७ । साइज—१०×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन  
न० ७११ ।

विशेष—यह प्रति स्वयं पं० टोडरमलजी के हाथ की लिखी हुई है । इसके अतिरिक्त अथ की २ प्रति और है  
लेकिन वे भी अपूर्ण हैं ।

२१५. मोक्षसुख वर्णन—पत्र सख्या—१३ । साइज—११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना  
काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन न० ८७० ।

२१६. यत्याचार—वसुनदि । पत्र सख्या—६७ से २०७ । साइज—१५×६ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८६५ चैत्र सुदी ६ । अपूर्ण । वेष्टन न० ६८६ ।

विशेष—अमरचन्द्र दीवान के पठनार्थ अर्थ की प्रतिलिपि की गयी थी ।

२१७. रत्नकरणश्रावकाचार—आ० समतभद्र । पत्र सख्या—१० । साइज—८ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—  
संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—स० १६०० भाद्रपद सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० ७१ ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी । श्रावकाचार की ३ प्रतियाँ और हैं ।

२१८. रत्नकरणश्रावकाचार टीका—प्रभाचन्द्र । पत्र संख्या—५२ । साइज—१०×५ इञ्च । भाषा—  
संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ७४० ।

विशेष—प्रारम्भ के २५ पत्र फिर से लिखवाये हुये हैं । टीका की एक प्रति और है ।

२१९. रत्नकरणश्रावकाचार—सदासुख कासलीवाल । पत्र संख्या—४७६ । साइज—१२ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$   
इञ्च । भाषा—हिन्दी । रचना काल—सं० १९२० चैत्र सुदी १४ । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन न० ७७६ ।

विशेष—प्रति उत्तम है । अथ की २ प्रतियाँ और हैं । दोनों ही अपूर्ण हैं ।

२२०. ब्रतोद्योतन श्रावकाचार—अभ्रदेव । पत्र संख्या—१७ । साइज—१०×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८३५ आषाढ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न० ८६४ ।

२२१. वृहद् प्रतिक्रमण—पत्र सख्या—३७ । साइज—११ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म ।  
रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७४० आषाढ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न० १४७ ।

विशेष—मुनिभुवनमूषण ने बाली में प्रतिलिपि की थी ।

२२२. श्रद्धान निर्णय—पत्र सख्या-२८ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३८४ ।

विशेष—ज्ञानावाह्य ओसवाल कोट्यारी के पठनार्थ तेरह पंथियों के मंदिर में प्रतिलिपि की गई । धार्मिक चर्चाओं का समग्र है । ग्रंथ की एक प्रति और है ।

२२३. श्रावकक्रियावर्णन—पत्र सख्या-१६ । साइज-११×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५५० ।

२२४. श्रावक-दिनकृत्य वर्णन—पत्र सख्या-३-८ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६३२ ।

विशेष—प्रति दिन करने योग्य कार्यों पर प्रकाश डाला गया है ।

२२५. श्रावकधर्म चर्चनिका—पत्र सख्या-१ । साइज-७ $\frac{1}{2}$ ×३१ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६८४ ।

विशेष—स्वामी कातिकेयानुमेता में से श्रावक धर्म का वर्णन है ।

२२६. श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र ( छाया युक्त )—पत्र सख्या-२ से ३६ । साइज-६ $\frac{1}{2}$ ×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६८२ ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है संस्कृत में भी अर्थ दिया हुआ है ।

२२७. श्रावकाचार—स्वामी पूज्यपाद । पत्र सख्या-५ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १७१ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२२८. श्रावकाचार—वसुनन्दि । पत्र संख्या-३५ । साइज-११×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६३० । चैत्र सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० १७३ ।

विशेष—ग्रंथ की प्रतिलिपि मोजमावाद ( जयपुर ) में हुई थी । ग्रंथ की एक प्रति और है वह अपूर्ण है ।

२२९. श्रावकाचार—पद्मनन्दि । पत्र सख्या-६६ । साइज-११×४ $\frac{3}{4}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १७२ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२३०. श्रावकाचार—पत्र सख्या-२७ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार शास्त्र ।



रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १७४ ।

विशेष—अथ पर निम्न शब्द लिखे हुये हैं जो प्रायद वाद के हैं—ये आवकाचार उमावामि का बनाया हुआ नहा है कोई जैन धर्म का टोही का बनाया हुआ है । भूटा होणा सावत है ।

२३१ श्रावकाचार—पत्र संख्या-११ । साइज-१० १/४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—आचार शास्त्र ।  
रचना काल-× । लेखन काल-स० १७३६ । पूर्ण । वेष्टन न० १७४ ।

२३२ श्रावकाचार—अमितगति । पत्र संख्या-६६ । साइज-११ १/४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६१८ । पूर्ण । वेष्टन न० १८१ ।

२३३ श्रावकाचार—गुणभूषणाचार्य । पत्र संख्या-१२ । साइज-११ १/४ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—आचार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७६७ वैशाख शुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न० १७० ।

२३४ पौडशकारण भावना वर्णन—पत्र संख्या-८० । साइज-११ १/४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३५८ ।

विशेष—दण्डन वर्म का भी वर्णन है ।

२३५ मम्मेटगिखरमहात्म्य—दीक्षित देवदत्त । पत्र संख्या-५८ । साइज-८ १/४ इंच । भाषा—  
संस्कृत । विषय—धर्म । रचना काल-स० १७८५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५०२ ।

२३६ मम्मेटगिखरमहात्म्य—मनसुप्रसागर । पत्र संख्या-१६५ । साइज-११ १/४ इंच ।  
भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५५८ ।

विशेष—जोहाचार्य विरचित 'तीर्थ महात्म्य' में मम्मेटाचल महात्म्य की भाषा है । महात्म्य की एक प्रति और  
है जो अधूरी है ।

२३७ सम्यक्त्व पच्चीसी—भगवतीदास । पत्र संख्या-८८ । साइज-११ १/४ इंच । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६६५ ।

२३८. सम्यक्प्रकाश—डालूराम । पत्र संख्या-१ । साइज-११ १/४ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।  
विषय—धर्म । रचना काल-स० १८७१ चैत्र शुदी १५ । लेखन काल-स० वैशाख शुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन न० ८४४ ।

२३९ मधोधपचासिका—रङ्गधू । पत्र संख्या-३ । साइज-११ १/४ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—  
धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १० ।

विशेष—गाथाओं की संख्या ८६ है । अंतिम गाथा निम्न प्रकार है—

सावण मासम्भिक्या, गाहा वधेण विरइ य सुणह ।  
कहियं समुच्चयत्व, पइडिञ्जत च सुहवोह ॥४६॥

२४०. संबोधपंचासिका—द्यानतराय । पत्र संख्या-४ । साइज-८×६ $\frac{१}{२}$  इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-  
धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६१५ ।

२४१. संबोध सत्तरो सार " । पत्र संख्या-५ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×४ इ च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-धर्म । रचनाकाल-× । लेखन काल-स० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन न० २०६४ ।

विशेष—पत्र ४-५ में सम्यक्त्व फल वर्णित है । भाषा पुरानी हिन्दी है ।

सत्तरी में ७० पद्य हैं । अन्तिम पद निम्न प्रकार है—  
जे नरा. ध्यानज्ञानं च स्थिरचित्तोऽर्ष्यप्राहकाः ।  
क्षीयते अष्टकर्माणि सारसबोधसत्तरी ॥७०॥

२४२. सागारधर्माभृत—प० आशावर । पत्र संख्या-५१ । साइज-१२×५ इ च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-आचार शास्त्र । रचना काल-सं० १२६६ पौष शुदी ७ । लेखन काल-स० १६२५ कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन  
न० १८० ।

२४३. सामायिक महात्म्य—पत्र संख्या-५ । साइज-७ $\frac{१}{२}$ ×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म ।  
रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६६५ ।

२४४ सारसमुच्चय—कुलभद्र । पत्र संख्या-१६ । साइज-१०×८ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-  
धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १५४५ कार्तिक शुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६ ।

विशेष—सषी श्री छाजू अग्रवाल ने ग्रंथ लिखवाया था । तथा श्री मैरौवक्स ने प्रतिलिपि की थी ।

सारसमुच्चय का दूसरा नाम ग्रंथसार समुच्चय भी है । इसमें ६३० श्लोक हैं ।

प्रारम्भ—

देवदेव जिन नत्वा भवोद्भवविनाशन ।  
वदयेहं देशना काचित् मतिहीनोऽपि भक्तिततः ॥१॥  
ससारे पर्यटन् जतुर्वहुयोनि-प्रमाकुलो ।  
शरीरं मानस दुःख प्राप्नोतीति दारुणं ॥२॥

अन्तिम पाठ—

अथ तु कुलभद्रेण भवविच्छिन्ति-कारण ।  
दृष्टो बालरवभावेन ग्रंथः सारसमुच्चयः ॥३२६॥  
ये भक्त्या भावयिष्यन्ति, भवकारणनाशन ।

अचिरैर्गोवामनेन, सुप्त प्राप्स्यति जाग्रतं ॥३०७॥

माससमुच्चयमेतेष पठति समाहिता ।

ते स्वप्नेनेत्र कालेन पठ याम्यर्यनामयं ॥३०८॥

नम परममथ्यान विघ्ननाशनहेतवे ।

महाशुभ्याण्यमपत्ति कागिगोरिष्टनेमये ॥३०९॥

इति सारसमुच्चयार्यो ग्रंथ समाप्त ।

२४७ सारसमुच्चय—दौलतराम । पत्र मर्या-१८ । साङ्ग-६३×६ इत्र । मापा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०८२ ।

विशेष—सारसमुच्चय के अतिरिक्त पूजाओं का संग्रह है । सार समुच्चय में १०८ पद्य हैं । अतिम पद्य निम्न प्रकार है—

मार समुच्चं गृह ऋषो गुर आम्ना परवान ।

आनठ सुत दौलति नै मनि ऋरि श्री मगवान ॥१०८॥

२४८ सुगुरु शतक—जिनदाम गोवा । पत्र मर्या-७ । साङ्ग-१५×३ इत्र । मापा-हिन्दी । विषय-धर्म । रचनाकाल-स० १८०० । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०९ ।

विशेष—१०१ पद्य हैं ।

## विषय—अध्यात्म एवं योग शास्त्र

२४७. अध्यात्मकमल मार्त्तण्ड—राजमन्ल । पत्र मर्या-१२ । साङ्ग-१०<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इत्र । मापा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६३१ फाल्गुण सुत्री ११ । पूर्ण । वेष्टन न० १०३ ।

विशेष—स० १६८२ में नदतीति ने अर्गलपुर ( आगरा ) में प्रतिलिपि की थी । ग्रंथ ४ अध्यायों में पूर्ण होता है ।

२४८. अध्यात्म वारहगुडी—दौलतराम । पत्र मर्या-६७ । साङ्ग-६३×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इत्र । मापा-हिन्दी (पद्य) । विषय-अध्यात्म । रचना काल-स० १८६८ । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ३८७ ।

२४६. अष्टपाहुड—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सख्या-६ से ५७ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×५ इच । भाषा-प्राकृत ।  
विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६३ ।

विशेष—ग्रंथ की २ प्रतियाँ और हैं लेकिन वे दोनों ही अपूर्ण हैं ।

२५०. अष्टपाहुड भाषा—जयचन्द्र झावडा । पत्र सख्या ८१ से १२३ । साइज-११×८ इच । भाषा-  
हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-स० १८६७ । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ८१० ।

विशेष—ग्रंथ की एक प्रति और है लेकिन वह भी अपूर्ण है ।

२५१ आत्मसबोधन काव्य—रङ्गू । पत्र सख्या-२८ । साइज-११×४ $\frac{१}{२}$  इच । भाषा-अपभ्रंश ।  
विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६१६ द्वितीय श्रावण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० २४ ।

विशेष—अलवर नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२५२. आत्मानुशासन—आचार्य गुणभद्र । पत्र सख्या-२३ । साइज-१०×४ $\frac{१}{२}$  इच । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७७० मादवा सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० ३८ ।

विशेष—साह ईसर अजमेरा ने बून्दी नगर में प्रतिलिपि की थी । ग्रंथ की २ प्रतियाँ और हैं ।

२५३. आत्मानुशासन टीका—टीकाकार प० प्रभाचन्द्र । पत्र संख्या-७१ । साइज-१०×४ $\frac{१}{२}$  इच ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचनाकाल-× । लेखन काल-स० १५८१ चैत्र बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० ३३ ।

विशेष—पत्र ३८ तक फिर से प्रतिलिपि की हुई है, नवीन पत्र है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है —

स० १५८१ वर्षे चैत्र बुदी ६ गुरूवासरे घटपालीनाम नगरे राउ श्री रामचन्द्रराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसधे नद्या-  
म्नाये वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये मट्टारक श्री पञ्चनदि देवा तत्पट्टे मट्टारक श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे  
म० श्री जिनचन्द्र देवा तत्पट्टे म० श्री प्रभाचन्द्र देवा तदान्नाये खडेलवालावये साह गोत्रे चतुर्विधदानवितरण कल्पवृक्ष  
साह काधिल तद्भार्या कावलदे तयो पुत्रा. त्रय प्रथम साह गृजर, द्वितीय सा० राधै जिनचरणकमलचचरीकान् दान पूजा  
समुद्यतान् परोपकारनिरतान् प्रस्वस्थ चिन्तान् सम्यक्त्व प्रतिपालकान् श्री सर्वज्ञोक्त धर्मरैजितचैतसान् कुटुम्ब साधारकान  
रत्नत्रयालंकृत दिव्य देहान् अहारामयशास्त्रदानसमुन्नितान् त्रयो साह वच्छराज तद्भार्या पातत्रता पद्मा तस्या पुत्र परम  
भावक साह पचाइशु तद्भार्या प्रतापदे तत्पुत्र साह दूलह एतेषां मध्ये सा० वच्छराज इदं शास्त्र लिखायित सत्पात्राय मुान श्री  
माघनन्दिने दानं कर्मज्ञयार्थं । गौरवश सेठ श्री खेऊ तस्य पुत्र पदारय लिखितं ।

२५४. आत्मानुशासन भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सख्या-५६ । साइज १०×७ इच । भाषा-  
हिन्दी गद्य । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ७१०

विशेष—प्रति स्वयं प० टोडरमलजी के हाथ की लिखी हुई है । इस प्रति के अतिरिक्त = प्रतियाँ और हैं ।

उनमें से तान प्रतियां श्रपूर्ण हैं ।

२५५. आत्मावलोकन—दीपचन्द्र कासलीवाल । पत्र संख्या—६४ । साइज—११×१४ इंच । भाषा—हिंदी । विषय—अध्यात्म । रचना काल—स० १७७७ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ७६१ ।

२५६ आराधनासार—देवसेन । पत्र संख्या—१६ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$  इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ३५ ।

विशेष—मरुत में सवित् टिप्पण दी हुई है । दो प्रतियां और हैं ।

२५७ चार ध्यान का वर्णन । पत्र संख्या—२३ । साइज—६×६ $\frac{1}{2}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—योग । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण वेष्टन न० ५३७ ।

२५८ चौरासी आसन भेद । पत्र संख्या—११ । साइज—८×४ $\frac{1}{2}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । रचना काल—X । लेखन काल—स० १७८८ । पूर्ण । वेष्टन न० १३६ ।

विशेष—पं० लूणकरण के शिष्य पं० खीवसी ने प्रतिलिपि की ।

२५९ ज्ञानार्णव—आचार्य शुभचन्द्र । पत्र संख्या—१२८ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—योग शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन न० ३० ।

विशेष—पं० श्री कृष्णदास ने प्रतिलिपि कराई थी । प्रथ की २ प्रतियां और हैं ।

२६०. ज्ञानार्णव भाषा—जयचन्द्र छावड़ा । पत्र संख्या—३६६ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$  इंच । भाषा—हिंदी । विषय—योग । रचना काल—स० १८६६ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ४०० ।

२६१ ज्ञानार्णव भाषा । पत्र संख्या—१६ । साइज—१३×८ इंच । भाषा—हिंदी । विषय—योग । रचना काल—X । लेखन काल—X । श्रपूर्ण । वेष्टन नं० ५१६ ।

विशेष—प्राणायाम प्रकरण का ही वर्णन है ।

२६२ द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र संख्या—४४ । साइज—११×१४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ८२८ ।

विशेष—प्राकृत भाषा में गाया दी हुई है और फिर उन पर हिन्दी गद्य में अर्थ लिखा हुआ है ।

२६३. द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र संख्या—१ से ५ । साइज—१०×४ $\frac{1}{2}$  इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१६ ।

२६४. द्वादशानुप्रेक्षा । पत्र संख्या—६ । साइज—११×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६११ ।

२६५. परमात्मप्रकाश—योगीन्द्र देव । पत्र संख्या—२५१ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ७६५ ।

विशेष—ब्रह्मदेव कृत सस्कृत टीका तथा दौलतरामकृत भाषा टीका सहित है ।

योगीन्द्रदेव कृत श्लोक संख्या—३४३, ब्रह्मदेव कृत सस्कृत टीका श्लोक संख्या ४६००, तथा दौलतराम कृत भाषा श्लोक संख्या ६=६० प्रमाण है । दो प्रतियों का मिश्रण है । अंतिम पत्रों वाली प्रति में कई जगह अक्षर काटे गये हैं ।

२६६. प्रति न० २—पत्र संख्या—२४० । साइज—१२×५ इञ्च । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ७६६

२६७ प्रति न० ३—पत्र संख्या—२१६ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । लेखन काल—स० १=६२ । पूण । वेष्टन न० ७६७ ।

२६७ प्रति न० ४—पत्र संख्या—१७६ । साइज—१२ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इच । भाषा—अपभ्रंश । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २०३ ।

विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है । टीका उत्तम है । टीकाकार का नामोल्लेख नहीं मिलता है । इन प्रतियों के अतिरिक्त ग्रंथ की ४ प्रतियाँ और हैं ।

२६८ परमात्मपुराण—दीपचन्द्र । पत्र संख्या—१ से ३६ । साइज—१०×४ $\frac{३}{४}$  इच । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन न० ७६८ ।

विशेष—ग्रन्थ का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—अथ परमात्म पुराण लिख्यते ।

दोहा—परम अखण्डित ज्ञानमय गुण अनत के धाम ।

अविनासी आनन्द अग लखत लहै निज ठाम ॥१॥

गद्य—अचल अतुल अनत महिम मण्डित अखण्डित त्रैलोक्य शिखर परि विराजित अनोपम अवाधित शिव दीप है । तामें आत्म प्रदेश असख्य देस है । सो एक एक देस अनत गुण पुरुषन करि व्यापत है । जिन गुण पुरुषन के गुण परणति नारी है । तिस शिवदीप को परमात्म राजा है ताके चेतना परिणति राणी है । दरसण ज्ञान चरित्र ए तीन मत्री हैं । मय्यक्त्व फोजदार है । सब देसका परणाम कोटवाल है । गुण सत्ता मन्दिर गुण पुरुषन के है । परमात्म राजा का परमात्म सत्ता महल बणया तह । चेलना परणति कामिनी सो केलि करते अर्तेदिय अवाधित आनन्द उपजै है ।

अन्त में ( पृष्ठ ३६ )—“परमात्म राजा एक है परणति शक्ति साविकाल में प्रगट और और होने की है परिवर्तन वन काल में व्यक्त रूप परणति एक है सो ही वस राजा को रमावै है । जो परणति वर्तमान की को राजा भोगवे है सो परणति समय मात्र आत्मीक अनत सुख दे करि विलय जाय है । परमात्म में लीन होय है ।

२६६. प्रवचनसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र संख्या—८ रो ४४ । साहज—१६×७३ इंच । भाषा—  
प्राकृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६८८ ।

२७०. प्रवचनसार भाषा—हेमराज । पत्र संख्या—३५ । साहज—१०३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी  
( पद्य ) । विषय—अध्यात्म । रचना काल—सं० १७०६ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१८ ।

विशेष—पद्य संख्या ४३८ है ।

२७१. प्रति नं० २—पत्र संख्या—११० । साहज—१२×८ इंच । रचना काल—सं० १७०६ माघ सुदी ५ ।  
लेखन काल—सं० १७११ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२७ ।

विशेष—श्री नन्दलाल अमवाल ने प्रतिलिपि कराई थी ।

सं० १७११ वर्षे आश्विन मासे शुक्ल पक्षे शुक्रवासरे श्री अकबरशाह मध्ये पातशाह श्री शाहे जहान विजय  
राज्ये श्वेताम्बर कासीदासेन अमवाल सातीय साह श्री नन्दलाल पठनार्थ । सं० १७६१ शाह छाजूराम बज के पठनार्थ  
खरीदी थी ।

प्रथ की ४ प्रतियां थीं हैं ।

२७२. प्रवचनसार भाषा—घुन्दावन । पत्र संख्या—१५३ । साहज—१३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी  
( पद्य ) । विषय—अध्यात्म । रचना काल—सं० १६०५ वैसाख सुदी ३ । लेखन काल—सं० १६२७ । पूर्ण । वेष्टन  
नं० ७२६ ।

विशेष—हीरालाल गगवाल ने लखन नगर में प्रतिलिपि कराई थी ।

२७३. मृत्युमहोत्सव भाषा—दुलीचन्द । पत्र संख्या—१५ । साहज—१२×७३ इंच । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५३८ ।

२७४. योगसार—योगीन्द्र देव । पत्र संख्या— १३ । साहज—११×५३ इंच । भाषा—अपभ्रंश ।  
विषय—योग । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६२१ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६ ।

२७५. प्रति नं० २—पत्र संख्या—१० । साहज—१०३×७३ इंच । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१

विशेष—गाथाओं पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । गाथा सं० १०८ । ४ प्रतियां थीं हैं ।

२७६. योगसार भाषा—बुधजन । पत्र संख्या—८ । साहज—१०×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
अध्यात्म । रचना काल—सं० १८६५ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २८२ ।

२७७. योगीरासा—पाण्डे जिनदास । पत्र संख्या—३ । साहज—१३३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२४ ।

२७८. वैराग्य पञ्चोसी—भैया भगवतीदास । पत्र संख्या—४ । साइज—७×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—अध्यात्म । रचना काल—स० १७५० । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ५५६ ।

२७९. वैराग्य शतक . . . । पत्र संख्या—११ । साइज—१०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—  
अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८१६ वैशाख सुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १४४ ।

विशेष—जयपुर में नाथूराम के शिष्य ने प्रतिलिपि की थी । गाथाओं पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।  
१०३ गाथायें हैं ।

प्रारम्भिक गाथा निम्न प्रकार है —

ससारंमि असारे णत्थि सुह वाहि वेयणापउरे ।

जाणतो इह जीवो णऊणह जिणदेसिय धम्मं ॥१॥

२८०. षट्पाहुह—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र संख्या—६२ । साइज—६ $\frac{1}{2}$ ×४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—  
अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—स० १७३६ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० ६२ ।

विशेष—साह कारीदास आगरे वाले ने स्वपठनार्थ धर्मपुरा में प्रतिलिपि की । अक्षर सुन्दर एवं मोटे हैं । एक पत्र  
में ४-४ पंक्तियाँ हैं ।

८१ प्रत नं० २—पत्र संख्या—३४ । साइज—११×५ इञ्च । लेखन काल—स० १७४४ । पूर्ण । वेष्टन  
न० ८६७ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । अथ की २ प्रतियाँ और हैं ।

२८२. समयसार कलशा—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र संख्या—४५ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । भाषा—  
संस्कृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६०२ श्रावण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३ ।

विशेष—संस्कृत में कहीं २ संकेत दिये हुए हैं । अथ की दो प्रतियाँ और हैं ।

२८३. समयसार टीका—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र संख्या—६४ । साइज—१२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—स० १७८८ भाद्रवा सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

प्रशस्ति—सषत्सरे षसुनागमुनीदुभिते १७८८ भाद्रपद मासे शुक्ल पक्षे चतुदशी तिथौ ईसरदा नगरे राज्ये श्री  
अजितसिंहजी राज्य प्रवर्तमाने श्री चन्द्रप्रमुचैत्यालये श्रीमूलसंघे बलात्कार गणे सरस्वती गण्डे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये अंवावत्याः  
भट्टारकजित श्रीसुरेद्रकीर्तिस्तत्पट्टे म० श्रीजित् श्रीजगतकीर्ति तत्पट्टस्थः स्वर्गाभीर्यक्षमाशुषानिर्जितसागरेसादि पद्मार्थ स्वपञ्चातरिता-  
गर्मात्रोषे म० शिरोमणि भट्टारक जित श्री १०८ श्रीमद्देवेन्द्रकीर्तिस्तेनेयं समयसारटीका स्वशिष्य मनोहर कषानार्थ पठनाय



तत्त्वबोधिनी सुगम निजबुद्ध्या पूर्व टीकामवलोक्य विहिता । बुद्धिर्माद्भिः बोधनीया प्रमादात् वा अल्पबुद्ध्या पत्रहीनाधिक भव भवेत् तत् शोधनीय पाचनेयं कृता मया किं बहुकथनेन वाचकानां पाठकानां मगलावली समवो भवेत् श्री जिनप्रमप्रसत्ते ।

२८४ प्रति नं० २—पत्र संख्या-१२७ । साइज-१०×६ इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२ ।

विशेष—संघ ही दीवान श्योजीराम ने अपने पुत्र कुंवर अमरचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी । श्योजीराम दीवान के मन्दिर जयपुर में प्रतिलिपि हुई ।

२८५. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-१६ । साइज-१३×७ इञ्च । लेखन काल-सं० १८६६ आसोज बुदी ४ पूर्ण । वेष्टन नं० ४५ ।

विशेष—संघही दीवान अमरचन्द पठनार्थ पिरगदास महुआ के ने प्रतिलिपि की ।

२८६ प्रति नं० ४—पत्र संख्या-१०० । साइज-१०×५½ इञ्च । लेखन काल-शक सं० १८०० । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७ ।

विशेष - सं० ख ख वसुधन्दुमिते वर्षे शाके भाष मासे शुक्ल पक्षे तिथौ द्वितीयायां गुरुवारि अनेकवनवापीकृप-तडाग जिन चैत्यालयादि विराजमाने बहुविख्याते सकलनगरभ्राम मट वादीनां शेखरीमूते पाति साह थी मुहम्मदशाह तत् सेवक महाराजाधिराज महाराजा श्रीईश्वरसिंहराजय प्रवर्तमाने सवाईजैपुरनामनगरे तत्र श्री पार्श्वनाम चैत्यालये सोनी गोत्रे साह थी प्रागदास जी कारापिते । श्री मूलसवे नधाम्नाये बलात्कार गणे सरस्वति गच्छे थी । कुन्दकृ द्वाचार्यावये मट्टारकजित श्री १०८ श्री महेन्द्रकीर्त्तिजी तस्य शासनधारी ब्रह्म थी अमरचन्द्रस्तत् शिष्य प० श्री जयमल्लस्तत् शिष्य प० मनोहरदास तत् शिष्य प० श्री छौत्रमलस्तत् शिष्य प० श्री हीरानन्दस्तत् शिष्य गुणगरिष्ठ बुद्धिवरिष्ठ सकलतर्क भीर्मासा अष्टसहस्री प्रमुखादीगुणानां व्याख्याने निपुण पंडितोत्त पंडित जितधीचोखचद्रजीकर्य शिष्य सुव्रामेण स्वशयेन स्वपठनार्थं ज्ञानावरणीकर्मक्षयर्ध लिपिकृता ।

२८७. प्रति नं० ५—पत्र संख्या-३६ । साइज-१०×४½ इञ्च । लेखन काल-सं० १७२१ पौष सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८ ।

विशेष—सा० जोधराज ने प्रतिलिपि कराई थी ।

२८८. समयसार नाटक—बनारसीदास । पत्र संख्या-१०८ । साइज-१०½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-सं० १६६३ । लेखन काल-सं० १८६७ आषाढ बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७४६

२८९ प्रति नं० २—पत्र संख्या-१६४ । साइज-८½×५½ इञ्च । लेखन काल-सं० १७०० कार्तिक सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७५६ ।

विशेष—श्रीमानुसात्म पठनार्थ लिखित । आमेर में प्रतिलिपि हुई । १४० पत्र के आगे बनारसीदास कृत अन्य पाठ हैं । (मुद्रका)

२६०. प्रति न० ३—पत्र सख्या-७६ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । लेखन काल-स० १७०३ सावन सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६७ ।

विशेष—सवत् १७०३ वर्षे श्रावणसितनतुर्दशीतिथौ श्रीमूलसधे वलात्कारगणै सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यो नव्ये स० श्री चद्रकीर्त्तिजी म० श्री नरेन्द्रकीर्त्तिजी तदाम्नाये सेन्या गोत्रे साह महेस भार्या धर्मा तथा इदं समयसार नाम नाटक लिख्य आचार्य श्री सकलकीर्त्तिये प्रदत्तं ।

विशेष—समयसार नाटक को स्पष्टार में १६ प्रतियां और हैं ।

२६१. समयसार भाषा—राजमल्ल । पत्र सख्या-२६६ । साइज-११×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिंदी गद्य । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—स० १७४३ पौष बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६४ ।

विशेष—इति श्री समयसार टीका राजमल्लि भाषा समाप्तैय ।

२६२ प्रति न० २—पत्र सख्या-२७५ । साइज-११×४ इंच । लेखन काल-स० १७४८ अषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६६ ।

२६३. प्रति न० ३—पत्र सख्या-२०२ । साइज-१२×६ इंच । लेखन काल-स० १८२० । पूर्ण । वेष्टन न० = १३ ।

विशेष—नैणसागर ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी । पुष्टे पर बहुत सुन्दर बेल बूटे हैं ।

२६४ समयसार भाषा—जयचन्द्र झावडा । पत्र सख्या-३२० । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिंदी । विषय—अध्यात्म । रचना काल—स० १८६४ । लेखन काल—स० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन न० ७२० ।

२६५ समाहितत्र भाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र सख्या-१२० । साइज-१२×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—गुजराती । विषय—योग । रचना काल—X । लेखन काल—स० १७६३ कार्तिक सुषी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० ७८६ ।

विशेष—६ प्रतियां और हैं । म थ की लिपि देवनागरी है ।

२६६ समाधितन्त्र भाषा । पत्र सख्या-१७२ । साइज-११×७ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—योग । रचना काल—X । लेखन काल—स० १६३३ । पूर्ण । वेष्टन न० = ४६ ।

विशेष—चाकसू में लिपि हुई थी ।

२६७ समाधितत्र भाषा । पत्र सख्या-२० । साइज-११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—योग । रचना काल—X । लेखन काल—स० १६३६ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० ७६६ ।

२६८ समाधिमरण । पत्र सख्या-२८ । साइज-८ $\frac{३}{४}$ ×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ११३४ ।

२६६. समाधिमरण . । पत्र संख्या-१६ । साइज-११×१५ इंच । मापा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ७८७ ।

३००. समाधिमरण भाषा । पत्र संख्या-२० । साइज-६½×४½ इंच । मापा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८३४ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० ७८८ ।

३०१. समाधिमरण भाषा . . . । पत्र संख्या-१६ । साइज-११×१५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८७५ ।

३०२. समाधिशातक—आ० समन्तभद्र । पत्र संख्या-१३ । साइज-१२½×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-योग । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १४६ ।

विशेष—हिन्दी में पद्यों पर अर्थ दिया हुआ है ।

३०३. स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामीकार्तिकेय । पत्र संख्या-२८७ । साइज-१२×५½ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४८ ।

विशेष—प्रति म० शुभचन्द्रकृत टीका सहित है । टीका संस्कृत में है । प्र'ग की ३ प्रतियाँ श्रीर है ।

३०४. स्वामीकार्तिकेयानुप्रेक्षा भाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र संख्या-१५० । साइज-११×५ इंच । विषय-अध्यात्म । रचना काल-सं० १८८३ श्रावण, सुदी ३ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०३ ।

३०५. प्रति न० २—पत्र संख्या-११६ । साइज-१०×७½ इंच । लेखन काल-स. १८६३ श्रावण सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०४ ।

## विषय-न्याय एवं दर्शन शास्त्र

३०६. अष्टसहस्री—आचार्य विद्यानन्दि । पत्र संख्या-२६७ । साइज-११½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रचनाकाल-× । लेखन काल-सं० १६७७ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३ ।

विशेष—जयपुर में घासीलाल शर्मा ने प्रतिलिपि की थी ।

३०७. तर्कसंग्रह—अश्वभट्ट । पत्र संख्या-५ । साइज-११×४½ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १५१ ।

विशेष—सांगानेर में प० नगराज ने प्रातर्लिपि की थी । ग्रन्थ की एक प्रति और है ।

३०८. देवागमस्तोत्र—समंतभद्र । पत्र संख्या-११ । साइज-६ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २८७ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

३०९. देवागमस्तोत्र भाषा—जयचन्द्र छाबडा । पत्र संख्या-८४ । साइज-११×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-न्याय शास्त्र । रचना काल-स० १८६६ चैत्र बुदी १४ । लेखन काल-स० १९८४ पौष बुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन न० ४९१ ।

३१०. नयचक्र भाषा—हेमराज । पत्र संख्या-१७ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल-स० १७२६ । लेखन काल-स० १८६३ । पूर्ण । वेष्टन न० ३८३ ।

३११. न्यायदीपिका—यति धर्म भूषण । पत्र संख्या-३७ । साइज-११×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २०१ ।

विशेष—ग्रन्थ की एक प्रति और है ।

३१. न्यायदीपिका भाषा—पन्नालाल । पत्र संख्या-१०३ । साइज-१२×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-न्याय शास्त्र । रचनाकाल-स० १९३५ मगसिर सुदी ६ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३९८ ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति का अन्तिम भाग निम्न प्रकार है:—

अन्तिम पाठ—

अर्थ क्षेत्र अधि दूँदाहहु में जयपुर अदभुत नगर महा ।  
ताके अधिपति नीति नुपण अति रामसिंह नृप नाम कहा ॥  
संज्ञी पद में रायवहादुर जीवनसिंह सुनाम लहा ।  
ताको गृह मति सची मावह पन्नालाल सु धर्म चहा ॥  
आवक धर्मी उत्तम कर्मा, है मधी जिन वचनन के ।  
नाम सदासुख नाशित सब दुख दोष मिटावन के ॥  
तास निकट जिन श्रुत निति प्रति सुनत सुनत मन समता पाय ।  
न्याय शास्त्र को रहिस ग्रहण हित न्यायदीपिका हमें पदाय ॥  
तास वचनिका विशद करन कौ आनद हृदय पदायो है ।  
फरी वीनती त्रिभुवन गुरू सैं अर्थ समस्त लखायो है ॥  
फतेलाल जित पंडित वर अति धर्म प्रीति को धारक है ।  
शब्दागम तैं तथा न्याय तैं अर्थ समर्थन कारक है ॥

तिनके निकट त्रिशद फुनि कीनो, अर्थ विकल्प निवारन की ।  
 फरी घचनिका स्व पर हित की पढी मव्य अम टारन की ॥  
 विक्रम नृप के उगणीसै पर तीस पांच सत चीना है ।  
 मंगसिर शुक्ला नवमी शशि दिन ग्रन्थ सम्पूरन कीना है ॥

चोपई—श्री जिन सिद्ध सूर उग्रभाय सर्व साधु हे मंगलदाय ।

तिनके चर्या कमल उरलाय, नमन करै निति शीश नवाय ॥

३१३. परोक्षामुख—आचार्य माणिक्यनदि । पत्र संख्या—७ । साइज—१०×२ $\frac{3}{4}$  इंच । मापा—संस्कृत ।

विषय—दर्शन । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४ ।

३१४. परीक्षामुख भाषा—जयचन्द्र छात्राड्डा । पत्र संख्या—११७ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×७ $\frac{1}{2}$  इंच । मापा—

हिन्दी । विषय—दर्शन । रचना काल—स० १६२७ थाण्ण सुदी २ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४६ ।

३१५. प्रमेयरत्नमाला—अनन्तचौर्य । पत्र संख्या ४४ । साइज—११×८ इंच । मापा—संस्कृत । विषय—

दर्शन शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८ ।

विशेष—माणिक्यनदि कृत परीक्षामुख की टीका है ।

३१६. मितिभाषिणीटीका—शिवादित्य । पत्र संख्या—१७ । साइज—१०×४ $\frac{1}{2}$  इंच । मापा—संस्कृत ।

विषय—न्याय शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण वेष्टन नं० १५३ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

प्रारम्भ की दूररा पद्य.—

त्रिदोशादीन् नमस्कृत्य माधवारय सरस्वती ।

शिवादित्यकृतेऽटीकां करोति मितभाषिणि ॥०॥

३१७. सप्तपदार्थी—श्रीभावविद्येश्वर । पत्र संख्या—८ । साइज १० $\frac{1}{2}$ ×४ । मापा—संस्कृत । विषय—

न्याय । रचना काल—X । लेखन काल—स० १६८३ काश्याण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८३ ।

विशेष—प० हर्ष ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । अंतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

अंतिम—यमनियमस्वाध्यायधारणासमाविधोरणी मथानयनपाशुपताचार्य णी भावविद्येश्वरविरचिता वाग्निघा  
 त्रिलासत्रिधित्रवाद्यत्वस्वार्थपरायचमत्कारम्पाश्चर्यमया परापरन्यायवैशेषिकमहाशास्त्रसमृद्धरणशालिन विरचिता सप्तपदार्थी  
 समाप्ता ॥

३१८. स्याद्धादमंजरी—मल्लिपेण । पत्र संख्या—३४ । साइज—१३×५ $\frac{1}{2}$  इंच । मापा—संस्कृत । विषय—

दर्शन शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४० ।

३१६. स्याद्वादमंजरो—मल्लिषेण । पत्र संख्या-५६ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$  । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । टीका काल-शक सं० १२१४ । लेखन काल-सं० १७६७ माह सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७१ ।

विशेष—उदयपुर में प्रतिलिपि हुई । मल्लिषेण उदयप्रमसूरि के शिष्य थे ।

### विषय-पूजा एवं प्रतिष्ठादि अन्य विधान

३२०. अकृत्रिम चैत्यालयपूजा—चैनसुख । पत्र संख्या-६४ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विषय-पूजा । रचना काल-सं० १६३० । लेखन काल-सं० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७८ ।

विशेष—पूजा की एक प्रति और है ।

३२१. अकृत्रिमचैत्यालयपूजा—पं० जिनदास । पत्र संख्या-३६ । साइज-८ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-

संस्कृत । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८१२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८६ ।

विशेष—लक्ष्मीसागर के शिष्य पं० जिनदास ने रचना की थी ।

३२२. अकृत्रिमचैत्यालयपूजा " " । पत्र संख्या-१२३ । साइज-१२ $\frac{३}{४}$ ×८ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी ।

रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७२ ।

३२३. अढाईद्वीपपूजा—डालूराम । पत्र संख्या-१२४ । साइज-१२×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । रचना काल-सं० १८५६ । लेखन काल-सं० १६८७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७३ ।

विशेष—ग्रंथ का मूल्य पंद्रह रुपया साठे पांच आना लिखा हुआ है ।

३२४. अढाईद्वीपपूजा " " । पत्र संख्या-३१६ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।

रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८५२ । फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२७ ।

विशेष—ग्रंथ के पृष्ठ पर १२ तीर्थंकरों के चिन्हों के चित्र हैं । चित्र सुन्दर हैं ।

३२५. अढाईद्वीपपूजा—विश्वभूषण । पत्र संख्या-१०६ । साइज-१०×६ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६०६ श्रावण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१५ ।

३२६. अंकुरारोपणविधि—इन्द्रनन्दि । पत्र संख्या-६१ । साइज-१२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-

विधि विधान । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८१ ।

३२७. अभिषेकपाठ . । पत्र संख्या-३१ । साहज-११×५ इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ८८८ ।

३२८. अष्टाहिकापूजा " . । पत्र संख्या-२५ । साहज १२×८ इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७६ ।

३२९. अष्टाहिकापूजा—द्यानतराय । पत्र संख्या-२३ से ३० । साहज-११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ६३० ।

विशेष—१—२० तक के पत्र नहीं हैं ।

३३०. अष्टाहिकात्रतोद्यापनपूजा . । पत्र संख्या-१८ । साहज-११×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ३३६ ।

३३१. आदिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र संख्या-६ । साहज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इच्च । भाषा-हिन्दी । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४८ ।

विशेष—प्रारम्भ में हिन्दी में दर्शन पाठ है ।

३३२. आदिनाथपूजा—पत्र संख्या-७ । साहज-७×६ इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३३ ।

३३३. इन्द्रध्वजपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र संख्या-२४ । साहज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । अर्पूर्ण । वेष्टन नं० ३२५ ।

विशेष—रुचिकगिरि उच्चार दिगचैत्यालय की पूजा तक पाठ है ।

३३४. कमलचन्द्रायणव्रतपूजा . । पत्र संख्या-३ । साहज-१३×६ $\frac{३}{४}$  इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ४५६ ।

३३५. कर्मदहनपूजा . । पत्र संख्या-१५ । साहज-६×८ इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५६ ।

३३६. कर्मदहनपूजा . . । पत्र संख्या-२० । साहज-८ $\frac{३}{४}$ ×६ इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ६०७ ।

३३७. कर्मदहनपूजा . ' । पत्र संख्या-५२ । साहज-१३×६ $\frac{३}{४}$  इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ४७४ ।

३३८. कर्मदहनपूजा—टेकचन्द । पत्र संख्या-२७ । साहज-११×५ $\frac{३}{४}$  इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन न० ४६० ।

विशेष—इस पूजा की ५ प्रतियां और हैं ।

३३६. कर्मदहनपूजा । पत्र संख्या-१६ । साइज-१०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५० ।

३४० कर्मदहनव्रतपूजा । पत्र संख्या-११ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६३४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६२ ।

विशेष—पूजा मन्त्र सहित है । एक प्रति और है ।

३४१. कर्मदहनव्रतमन्त्र । पत्र संख्या-१० । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६१ ।

३४२. गणधरवल्लयपूजा—सकलकीर्ति । पत्र संख्या-६ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२४ ।

३४३ गिरनारक्षेत्रपूजा । पत्र संख्या-४६ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६३८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४६ ।

विशेष—प्रतिलिपि कराने में तीन रुपये साठे पाच आने लगे थे ऐसा लिखा हुआ है ।

३४४. चतुर्विंशतिजिनपूजा । पत्र संख्या-११३ । साइज-११×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४० ।

३४५ चतुर्विंशतिजिनकल्याणकपूजा—जयकीर्ति । पत्र संख्या-५३ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६८४ चैत्र सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४१ ।

विशेष—सं० १६८४ वर्षे चैत्र सुदी ७ सोमे वहली नगरे श्री आदिनाथचैत्यालये श्रीमत्काष्ठासुधे नदीतटगच्छे विधागणे मठारक श्री रामसेनान्वये तदनुक्रमेण म० भुवनकीर्ति तत्पट्टे म० श्री रत्नभूषण, म० श्री जयकीर्ति, आचार्य श्री नरेन्द्रकीर्ति, उपाध्याय श्री नेमकीर्ति, ब्र० श्री कृष्णदास, पूरकमल ब्रह्म श्री हरिजी ब्र० वद्धमान, ब्र० वीरजी, प० रहीदास लिखित

३४६. चतुर्विंशतिजिनपूजा—घृन्दाघन । पत्र संख्या-६६ । साइज-११×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६३५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१८ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

३४७. चतुर्विंशतिजिनपूजा—सेवाराम । पत्र संख्या-६३ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १८५४ । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४१६ ।



विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है । २ प्रतियाँ और हैं ।

३४८. चतुर्विंशतिजिनपूजा—रामचन्द्र । पत्र संख्या—६१ । साइज—११×६३ इंच । मापा—हिन्दी ।  
विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२० ।

विशेष—तीन प्रतियाँ और हैं ।

३४९. चतुर्विंशतितीर्थकरपूजा । पत्र संख्या—४५ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×५ इंच । मापा—सरस्वत ।  
विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३८ ।

३५०. चन्दनपट्टीघृतपूजा । पत्र संख्या—४ । साइज—१०×५ इंच । मापा—सरस्वत ।  
विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २७७ ।

३५१. चतुर्विधसिद्धचक्रपूजा—भानुकीर्ति । पत्र संख्या—२१६ । साइज—७ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$  इंच । मापा—  
रुद्रत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६३० । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३२ ।

विशेष—वृहद् पूजा है । अक्षकार तथा लेखक दोनों की प्रशस्ति है ।

म० भानुकीर्ति ने साधु तिहुणपाल के निमित्त पूजा की रचना की थी । साधु तिहुणपाल ने ही इस पूजा की  
प्रतिलिपि करवायी थी ।

३५२. चारित्रशुद्धिविधान—भ० शुभचन्द्र । पत्र संख्या—६४ । साइज ११ $\frac{1}{2}$ ×५ । मापा—सरस्वत ।  
विषय—विधि विधान । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २६२ ।

विशेष—'१२३४ व्रतों का विधान' यह भी इस रचना का नाम है ।

३५३. प्रति नं० २ । पत्र संख्या—२ से ३६ । साइज १० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$  इंच । लेखन काल—सं० १६८४ कार्तिक  
बुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ५१० ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । जाप्य दिये हुए हैं ।

प्रशस्ति—संवत् १६८० वर्षे कार्तिक बुदी अष्टमी वृहस्पतिवारे लिखितं प० गोपाल कर्मज्ञयार्यं पात्री (क्षत्री)  
सुल्लिकावार्ह सोना पद्मा इदं प्लं श्री पार्श्वनाथचैत्यालये दुवल्लयापत्तने ।

३५४. चौबीसतीर्थकरजयमाला—पत्र संख्या—८ । साइज—१३×५ । मापा—हिन्दी । विषय—पूजा ।  
रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६५७ वैसाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४६ ।

३५५. चौसठऋद्धिपूजा—स्वरूपचन्द्र । पत्र संख्या—३३ । साइज—१२×८ इंच । मापा—हिन्दी ।  
विषय—पूजा । रचना काल—सं० १६१० श्रावण सुदी ७ । लेखन काल—सं० १६६६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१२ ।

विशेष—२ प्रतियाँ और हैं ।

३५६. जलगालनक्रिया—ब्रह्म गुलाल । पत्र संख्या-५ । साइज-८×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-विधान । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८१६ वैशाख बुदी । पूर्ण । वेष्टन न० १००६ ।

विशेष—रुडमल मोंसा ने नारनोल में प्रतिलिपि की थी ।

३५७ जिनसहस्रनामपूजा—धर्मभूषण । पत्र संख्या-६३ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३०६ ।

३५८ जिनसहस्रनामापूजा भाषा—स्वरूपचन्द्र विलाला । पत्र संख्या-८२ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-स० १६१६ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३८१ ।

३५९ जिनसहिता—पत्र संख्या-७ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-× । लेखन काल-स० १५६० सावण सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६५ ।

विशेष—संवत् १५६० वर्षे श्रावण सुदी ५ श्री मूलसधे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये मङ्गारक श्री पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे म० शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० जिनचन्द्रदेवा. तत् गिण्य मुनि श्री रत्नकीर्ति मुनि श्री हेमचन्द्र तदाम्नाये खडेलवाला वये सेठी गोत्रे सा० ताह मार्या पर्दा तत्पुत्र साह नील्हा मार्या सुहागिणि इदं शास्त्र सत्पानाय दत्त । इति जिन सहितायां त्रिमानहोम शान्तिहोम गृहहोम विधि समाप्तमिति ।

नवीन गृह प्रवेश आदि के अत्रसर पर होम विधि आदि दी हुई है ।

३६० तीनलोक पूजा—टेकचन्द्र । पत्र संख्या-४०४ । साइज-१२×११ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६२८ सावन बुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न० ४६८ ।

विशेष—अथ का मूल्य २७।) लिखा है ।

३६१. तीसचौबीसीपूजा भाषा—वृन्दावन । पत्र संख्या-८५ । साइज-१२ $\frac{३}{४}$ ×८ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-स० १८७६ माघ सुदी ५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४१२ ।

३६२ तीसचौबीसीपूजा भाषा । पत्र संख्या-५ । साइज-१०×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-स० १६०८ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४१० ।

विशेष—लघु पूजा है ।

३६३. तेरहद्वीपपूजा । पत्र संख्या-४२ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६१६ । पूर्ण । वेष्टन न० ४१७ ।

३६४. दशलक्षणजयमाल—रङ्गू । पत्र संख्या-८ । साइज-६ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७ ।

विशेष—संस्कृत में अर्थ दिया हुआ है । तीन प्रतियाँ और हैं ।

३६५. दशलक्षणजयमाल—भाव शर्मा । पत्र सख्या-६ । साइज-१०×५ इंच । मापा—मसृत्त ।  
विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ३४५ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

३६६. दशलक्षणजयमाल । पत्र सख्या-२ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । मापा—मसृत्त ।  
विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ४८१ ।

३६७. दशलक्षणपूजा—सुमंतिसागर । पत्र सख्या-११ । साइज-१०×५ इंच । मापा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७१६ । पूर्ण । वेष्टन न० ३४७ ।

३६८. दशलक्षणपूजा । पत्र सख्या-१४ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । मापा—संस्कृत । विषय—  
पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ४३० ।

विशेष—पूजा में केवल जल चढ़ाने का मंत्र प्रत्येक स्थान पर दिया है । अन्त में ब्रह्मचर्य धर्म वर्णन की जयमाल  
में आचार्यों का नाम भी दिया गया है ।

३६९. दशलक्षणब्रतोद्यापन पूजा । पत्र सख्या-३७ । साइज-११×५ इंच । मापा—हिन्दी ।  
विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८२६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४८ ।

३७०. द्वादशांगपूजा । पत्र सख्या-६ । साइज-७×६ इंच । मापा—हिन्दी । विषय—पूजा ।  
रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११४३ ।

३७१. देवगुरुपूजा । पत्र सख्या-३ । साइज-१२×४ $\frac{३}{४}$  इंच । मापा—हिन्दी । विषय—  
पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ११४७ ।

३७२. देवपूजा । पत्र सख्या-७ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । मापा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ४८४ ।

३७३. देवपूजा । पत्र सख्या-२ से १४ । साइज-११×५ इंच । मापा—संस्कृत । विषय—  
पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ६५२ ।

३७४. देवपूजा । पत्र सख्या-८ । साइज-१२×५ इंच । मापा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ८३६ ।

३७५. देवपूजा । पत्र सख्या-५ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । मापा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८२ ।

३७६. देवपूजा । पत्र संख्या-७ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।  
रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८३ ।

३७७. देवपूजा । पत्र संख्या-५ । साइज-६×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।  
रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८४ ।

३७८. धर्मचक्रपूजा—यशोनदि । पत्र संख्या-२३ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२६ ।

विशेष—प० खुशालचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३७९. नन्दीश्वरपूजा । पत्र संख्या-३ । साइज-११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-  
पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४२ ।

विशेष—जयमाला प्राकृत भाषा में है ।

३८०. नन्दीश्वर उद्यापन पूजा । पत्र संख्या-६ । साइज ११ $\frac{३}{४}$ ×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८३४ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४३ ।

विशेष—पत्रों के चारों ओर सुन्दर वेलें हैं ।

३८१. नन्दीश्वरजयमाला टीका । पत्र संख्या-१६ । साइज-६×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-प्राकृत  
हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८४१ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १४६

विशेष—श्री अमीचन्द ने जीवनेर के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी ।

३८२. नन्दीश्वरविधान । पत्र संख्या-२३ । साइज-१०×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-  
पूजा । रचनाकाल-× । लेखन काल-स० १६०६ आषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०४ ।

विशेष—विजंलाल लुहाडिया ने प्रतिलिपि कर बघीचन्दजी के मन्दिर चढाई थी ।

३८३. नन्दीश्वरव्रतविधान । पत्र संख्या-५० । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×१२ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।  
विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५०० ।

विशेष—पूजा का नाम पञ्चमेरू पूजा भी है ।

३८४. नवग्रहनिवारणजिज्ञासुपूजा । पत्र संख्या-७ । साइज-७ $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६७ ।

३८५. नांदीमंगलविधान । पत्र संख्या-२ । साइज-११×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-विधि विधान । रचनाकाल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६६ ।

३८६ नित्यपूजासंग्रह । पत्र संख्या-११८ । साइज-११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इच । मापा-हिन्दी  
संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० ६०१ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है ।

३८७ नित्यपूजा । पत्र संख्या-४१ । साइज-१०×५ इच्च । मापा-संस्कृत । विषय-पूजा ।  
रचना काल-X । लेखन काल-स० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७०६ ।

३८८. नित्यपूजा । पत्र संख्या-३७ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×५ इच्च । मापा-संस्कृत । विषय-पूजा ।  
रचना काल-X । लेखन काल-स० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७०७ ।

विशेष—प्रतिदिन की जाने वाली पूजाओं का संग्रह है ।

३८९ नित्यपूजा । पत्र संख्या-२१ । साइज-१३×५ इच्च । मापा-प्राकृत । विषय-पूजा ।  
रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ५३५ ।

३९० नित्यपूजापाठ । पत्र संख्या-३० । साइज-६ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इच्च । मापा-संस्कृत । विषय-  
पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १९५९ । पूर्ण । वेष्टन न० ५७० ।

३९१ नित्यपूजासंग्रह । पत्र संख्या-३१ । साइज-११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इच्च । मापा-संस्कृत । विषय-  
पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ८५९ ।

३९२. निर्वाणपूजा । पत्र संख्या-२ । साइज-६×७ इच्च । मापा-संस्कृत । विषय-पूजा ।  
रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ११२८ ।

३९३ निर्वाणक्षेत्रपूजा । पत्र संख्या-२२ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×८ इच्च । मापा-हिन्दी । विषय-  
पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ४४५ ।

३९४ निर्वाणक्षेत्रपूजा-स्वरूपचन्द्र । पत्र संख्या-३३ । साइज-१२ $\frac{१}{२}$ ×५ इच्च । मापा-हिन्दी । विषय-  
पूजा । रचना काल-स० १९१९ कार्तिक बुदि १३ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ८४९ ।

विशेष—२ प्रतियाँ शीर हैं ।

३९५. पद्मावतीपूजा । पत्र संख्या-८ । साइज-१०×२ $\frac{१}{२}$  इच्च । मापा-संस्कृत । विषय-पूजा ।  
रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १०५० ।

३९६ पंचकल्याणकपूजा—पं० जिनदास । पत्र संख्या-५३ । साइज-१२×५ $\frac{१}{२}$  इच्च । मापा-संस्कृत ।  
विषय-पूजा । रचना काल-स० १९४२ फागुण सुदी ५ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४० ।

३९७. पंचकल्याणकपूजा—सुधासागर । पत्र संख्या-२६ । साइज-१२×५ इच्च । मापा-संस्कृत ।

विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ३४२ ।

३६८. पंचकल्याणकपूजा—पत्र संख्या—३६ । साहज—११X५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—सं० १६३८ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ४६७ ।

३६९. पंचकुमारपूजा—जवाहरलाल । पत्र संख्या—३ । साहज—१० $\frac{३}{४}$ X४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६४ ।

४००. पंचपरमेष्ठीपूजा—यशोनन्दि । पत्र संख्या ११४ । साहज—६X६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५१ ।

विशेष—तीन प्रतियां और हैं ।

४०१. पंचपरमेष्ठीपूजा—डालूराम । पत्र संख्या—३५ । साहज—१०X५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—सं० १८६० । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५३ ।

विशेष—महात्मा सदासुखजी ने माधोरामपुरा में प्रतिलिपि की थी । पूजा की ६ प्रतियां और हैं ।

४०२. पंचमंगलपूजा—टेकचन्द । पत्र संख्या—२१ । साहज—११X५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६३४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४५८ ।

४०३. पंचमेरुपूजा—टेकचन्द । पत्र संख्या—४३ । साहज—११X७ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—सं० १६१० । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७७ ।

४०४. पंचमेरुपूजा—भूधरदास । पत्र संख्या—४ । साहज—११X५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६६ ।

विशेष—धानतराय कृत अष्टाहिका पूजा भी है ।

४०५. प्रतिष्ठासार संग्रह—वसुनन्दि । पत्र संख्या—१३५ । साहज—१२X५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१६ ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । ग्रन्थ का प्रारम्भिक भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ —विद्यानुवादसन्सूत्राद्वाग्देवीकल्पतस्तथा ।

चन्द्रप्रक्षिप्तिसंज्ञाच्च सूर्यप्रक्षिप्तिग्रन्थतः ॥४॥

तथा महापुराणार्था छावकाप्ययनश्रुतान् ।

सारं संगृह्य चक्ष्येह प्रतिष्ठासार संग्रहे ॥५॥

ह वसुनन्दि नामा आचार्य इं सो प्रतिष्ठासार संग्रह नामा जो ग्रंथ ताहि कहू गो—कहा करिकै सिद्ध अरिहंत

शेष जो वद्धमान पर्यन्त जिन प्रवचन कहतां शास्त्र गुरु कहतां सर्व साधु यातौ नमस्कार करि कै कैसे छहैं वे सिद्ध, सिद्ध भयो है आत्म स्वरूप जिनकै ।

४०६. पल्यविधानपूजा—रत्ननंदि । पत्र संख्या-६ । साइज-१३×६ $\frac{१}{२}$  इञ्च । मापा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३१ ।

विशेष—पूजा की एक प्रति और है ।

४०७. पार्श्वनाथ पूजा । पत्र संख्या-३ । साइज-१३×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । मापा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४१ ।

४०८ पुष्पांजलिब्रतोद्यापन । पत्र संख्या-११ । साइज-६×६ $\frac{१}{२}$  इञ्च । मापा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४२ ।

विशेष—बृहत् पूजा है ।

४०९. पूजनक्रियावर्णन—बाबा दुलीचन्द । पत्र संख्या-३० । साइज-१२×७ $\frac{१}{२}$  इञ्च । मापा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५१८ ।

४१०. पूजासंग्रह । पत्र संख्या-१०० । साइज-७ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । मापा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६६ ।

विशेष—चतुर्विंशति तथा अयं नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है । पूजा संग्रह की तीन प्रतियां और है ।

४११. पूजासंग्रह । पत्र संख्या-३८ । साइज-१२×६ $\frac{१}{२}$  इञ्च । मापा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०२ ।

विशेष—इसमें देव पूजा तथा सरस्वती पूजा है ।

४१२ पूजासंग्रह । पत्र संख्या-६ । साइज-१२×८ इञ्च । मापा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८१४ ।

विशेष—नित्य नियम पूजा, दशलक्षण, रत्नप्रय, सोलहकारण, पंचमेरु तथा नन्दीश्वर द्वीप पूजाएं हैं । पूजा संग्रह की ४ प्रतियां और है ।

४१३. पूजासंग्रह । पत्र संख्या-२७१ । साइज-६×६ इञ्च । मापा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१७ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक ३७ पूजाएं तथा निम्न पाठ है—

(१) तत्त्वार्थ सूत्र (२) स्वयंभू स्तोत्र (३) सहस्रनामस्तोत्र ।

४१४. पूजा समग्र । पत्र संख्या-३३ । साइज-१३×६ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४३२ ।

विशेष—इसमें पल्यविधान, सोलहकारण, कंजिका व्रतोद्यापन आदि पूजायें हैं ।

४१५. पूजासमग्र । पत्र संख्या-२६ । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३३७ ।

सुखसपत्तिपूजा, जिनशुणसपत्तिपूजा, लघुमुक्तावलीपूजा का समग्र है ।

४१६. ३ क्षामरपूजा—उद्यापन—श्री भूषण । पत्र संख्या-२४ । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८७८ वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० ३४६ ।

४१७. रत्नत्रयजयमाल । पत्र संख्या-२ । साइज-१२×५ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा-हिन्दी ( गद्य ) । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८८७ ।

४१८. रत्नत्रयजयमाल । पत्र संख्या-३ । साइज-६×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८६८ ।

४१९. रत्नत्रयपूजा । पत्र संख्या-१० । साइज-११×६ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४२१ ।

४२०. रत्नत्रयपूजा । पत्र संख्या-५ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा-संस्कृत । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० १०४३ ।

४२१. रत्नत्रयपूजा भाषा—द्यानतराय । पत्र संख्या-२२ । साइज-११×५ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ४३६ ।

४२२. रत्नत्रयपूजा भाषा । पत्र संख्या-३६ । साइज-११×७ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १९३७ मादवा सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न० ४१४ ।

४२३. रत्नत्रयपूजा भाषा—पत्र संख्या-३ से ५४ । साइज १०×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १९३७ कार्तिक सुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन न० ४२५ ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं । एक प्रति और है किंतु वह भी अपूर्ण है ।

४२४ रोहिणीव्रतोद्यापन—कृष्णसेन तथा केसवसेन । पत्र संख्या-३१ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २६३ ।



४२५. लब्धिविधानउद्यापनपूजा । पत्र संख्या-७ । साइज-८×६ इंच । भाषा-संस्कृत ।

रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५३४ ।

४२६. घृहत्शांतिकविधान । पत्र संख्या-१३ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-विधान । रचना काल-× । लेखन काल-सं० ११११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४० ।

विशेष—मुघलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४२७. विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा । पत्र संख्या-७ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-

हिन्दी । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८६८ ।

४२८. विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा—जौहरीलाल । पत्र संख्या-४६ । साइज-१४ $\frac{३}{४}$ ×८ $\frac{३}{४}$  इंच ।

भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १६४६ श्रावण सुदी १४ । लेखन काल-सं० १६७१ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०८ ।

४२९. विमलनाथपूजा । पत्र संख्या-१ । साइज-८×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६२ ।

४३०. विमलनाथपूजा । पत्र संख्या-११ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६८ ।

४३१. शांतिकपूजा । पत्र संख्या-३ । साइज-१३×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-

पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८४ ।

४३२. शास्त्रपूजा—दानतराय । पत्र संख्या-३ । साइज-१३×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६२ ।

४३३. श्रुतोद्यापनपूजा । पत्र संख्या-८ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-

पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१५ ।

विशेष—लिपि बहुत सुन्दर है ।

४३४. षोडशकारणमङ्गलपूजा—आचार्य केशवसेन । पत्र संख्या-५० । साइज-११×५ इंच ।

विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८७८ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३३ ।

४३५. षोडशकारणश्रुतोद्यापनपूजा—म० ज्ञानसागर । पत्र संख्या-३२ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$  इंच ।

भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३४ ।

४३६. षोडशकारणजयमाल । पत्र संख्या-१०८ । साइज-११×७ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी ।

विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७७ ।

विशेष—रत्नत्रयजयमाल (नथमल) तथा दशलक्षजयमाल मी हैं ।

४३७. षोडशकारणजयमाल—रङ्गू । पत्र संख्या—२२ । साइज—११X५ इञ्च । भाषा—प्राकृत ।

विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८७६ मादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५ ।

विशेष—महात्मा लालचन्द ने इसी मन्दिर में प्रतिलिपि की थी । गाथाओं पर संस्कृत में उल्या दिया हुआ है । एक प्रति और है ।

४३८. षोडशकारणजयमाल । पत्र संख्या—७ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ X५ इच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३४ ।

विशेष—रत्नत्रय तथा दशलक्ष जयमाल मी है ।

४३९. षोडशकारणजयमाल । पत्र संख्या—२० । साइज—१० $\frac{३}{४}$ X४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३० ।

विशेष—दो प्रतियाँ और हैं ।

४४०. षोडशकारणपूजा । पत्र संख्या—१६ । साइज—११X७ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३६ ।

४४१ षोडशकारणपूजा । पत्र संख्या—२ । साइज—११ $\frac{३}{४}$ X५ इच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८२ ।

विशेष—प्रति एक और है ।

४४२. सम्मोदशिखरपूजा—रामचन्द्र । पत्र संख्या—७ । साइज—११ $\frac{३}{४}$ X५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७१ ।

४४३. सम्मोदशिखरपूजा । पत्र संख्या—३१ । साइज—८ $\frac{३}{४}$ X६ $\frac{३}{४}$  इच । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १९२४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४२ ।

४४४. सरस्वतीपूजा । पत्र संख्या—१० । साइज—५X१० इच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११२३ ।

विशेष—अन्य पूजाएँ मी हैं ।

४४५. सरस्वतीपूजा भाषा—पञ्जाबाल । पत्र संख्या—६ । साइज—१४X८ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय-पूजा । रचना काल-स० १६२१ अग्रेष्ठ सुदी ५ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ४०६ ।

४४६. सहस्रगुणपूजा—भ० धर्मकीर्ति । पत्र संख्या-७३ । साइज-१२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १७६५ वैसाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न० ३४८ ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

४४७. सहस्रनामगुणितपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र संख्या-१०४ । साइज-८×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १७१० कार्तिक शुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० ३२८ ।

४४८. सिद्धचक्रपूजा—धानतराय । पत्र संख्या-६ । साइज-१२×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ५३२ ।

विशेष—एक प्रति श्रीर है ।

४४९. सुगन्धदेशमीपूजा । पत्र संख्या-८ । साइज-१२×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ६२६ ।

४५०. सोलहकारणपूजा—टेकचन्द । पत्र संख्या-७० । साइज-१०×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १६३५ मादवा शुदी १० । पूर्ण । वेष्टन न० ११५८ ।

विशेष—दो प्रतियाँ श्रीर हैं ।

४५१. सोलहकारणपूजा । पत्र संख्या-१३ । साइज-११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ४३५ ।

विशेष—धानतराय कृत रत्नत्रय, दशलक्षण, पचमेक तथा अट्टई द्वीप की पूजा भी है ।

४५२. सोलहकारणपूजा—धानतराय । पत्र संख्या-५ । साइज-६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ४३६ ।

विशेष—दशलक्षण पूजा भी है ।

४५३. सोलहकारण भावना । पत्र संख्या-१४ । साइज-११×५ इंच । भाषा-हिन्दी (पंथ) । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ८२७ ।

४५४. सोलहकारण जयमाल । पत्र संख्या-२ । साइज-८×७ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ११५७ ।

विशेष—एक प्रति श्रीर है ।

४५५. सोलहकारण विशेष पूजा । पत्र संख्या-१२ । साइज-११×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ३३५ ।

४५६. सौख्यत्रतोद्यापन—अक्षयराम । पत्र संख्या-१४ । साइज-६×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन न० २७४ ।

विशेष—जयपुर में श्योजीलालजी दीवान ने प्रतिलिपि कराई ।

### विषय-पुराण साहित्य

४५७ आदिपुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र संख्या-३४६ । साइज-१२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-X । लेखन काल-स० १७८६ मंगसिर सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन न० १३३ ।

विशेष—तीन तरह की प्रतियों का मिश्रण है । आचार्य पद्मकीर्ति के शिष्य छाजू ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है ।

४५८. आदिपुराण—भ० सकलकीर्ति । पत्र संख्या-२०६ । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण । रचना काल-X । लेखन काल-स० १८६० आसोज बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन न० १३२ ।

विशेष—श्री मोतीराम लुहाडिया ने प्रतिलिपि कराई थी । १ से १३१ तक के पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं । एक प्रति और है ।

४५९. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-२४२ । साइज-१२×६ इंच । लेखन काल-स० १६७६ चैत सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २५३ ।

विशेष—चपावती ( चाकसू ) में प्रतिलिपि हुई थी ।

४६०. आदिपुराण भाषा—दौलतराम । पत्र संख्या-६०६ । साइज-१२×७ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । रचना काल-स० १८२४ । लेखन काल-स० १८५५ मंगसिर सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ६५३ ।

विशेष—४ प्रतियाँ और हैं लेकिन वे अपूर्ण हैं ।

४६१. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-२०१ से २३१० । साइज-१० ३/४×७ इंच । लेखन काल-स० १८२४ आसोज बुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन न० ७१३ ।

विशेष—प्रति स्वयं ग्रन्थकार के हाथ की लिखी हुई प्रतीति होती है, नगह नगह संशोधन हो रहा है ।

४६२. उत्तपुराण—गुणभद्राचार्य । पत्र संख्या—३२४ । साहज—१२×७<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इक्ष । मापा—१६८० ।  
विषय—पुराण । रचनाकाल—X । लेखन काल X । पूर्ण । वेष्टन न० २५८ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

४६३. उत्तरपुराण—खुशालचन्द । पत्र संख्या—५४४ । साहज—१२<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×६<sup>३</sup>/<sub>२</sub> इक्ष । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—पुराण । रचना काल—स० १७६६ । लेखन काल—स० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन न० ६४७ ।

विशेष—दूसरी २ प्रतियां और हैं और वे दोनों ही पूर्ण हैं ।

४६४. नेमिनथपुराण—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र संख्या—१७४ । साहज—११×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इक्ष । मापा—संस्कृत ।  
विषय—पुराण । रचना काल—X । लेखन काल—स० १६४४ मादवा सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२८ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है । ३ प्रतियां और हैं । ग्रन्थ का दूसरा नाम हरिवंश पुराण भी है ।

४६५. पद्मपुराण भाषा—खुशालचन्द । पत्र संख्या—३४४ । साहज—१०<sup>३</sup>/<sub>२</sub>×५ इक्ष । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—पुराण । रचना काल—सं० १७८३ । लेखन काल—स० १८५२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६३ ।

विशेष—एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है ।

४६६. पद्मपुराण भाषा—पं० दौलतराम । पत्र संख्या—२ से ४१७ । साहज—१५×६<sup>३</sup>/<sub>२</sub> इक्ष । मापा—  
हिंदी । रचना काल—सं० १८२३ । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६४० ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं लेकिन वे भी अपूर्ण हैं ।

४६७. पाण्डवपुराण—बुलाफीदास । पत्र संख्या—२०२ । साहज—११×६<sup>३</sup>/<sub>२</sub> इक्ष । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—पुराण । रचना काल—स० १७५४ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ६४४ ।

विशेष—एक प्रति और लेकिन वह अपूर्ण है ।

४६८. पाण्डवपुराण—भ० शुभचन्द्र । पत्र संख्या—२६५ । साहज—११<sup>३</sup>/<sub>२</sub>×५ इक्ष । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पुराण । रचना काल—स० १६०८ । लेखन काल—स० १७६७ वैशाख सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११८ ।

विशेष—ईसराज खंभेलवाल की स्त्री लाही ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाकर प० गोरधनदास को भेंट की थी ।

४६९. पुराणसारसंग्रह—भ० सकलकीर्ति । पत्र संख्या २११ । साहज—१२×५<sup>३</sup>/<sub>२</sub> इक्ष । भाषा—  
संस्कृत । विषय—पुराण । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८२३ चैत सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन न० २५६ ।

४७०. भरतराज दिग्विजय वर्णन भाषा—पत्र संख्या—५६ । साहज—१२×५<sup>३</sup>/<sub>२</sub> इक्ष । भाषा—हिन्दी  
गद्य । विषय—पुराण । रचना काल—X । लेखन काल—स० १७३८ आसोज सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८० ।

विशेष—जिनसेनाचार्य प्रणीत आदि पुराण के २६ वें पर्व का हिन्दी गद्य है । गद्य का उदाहरण निम्न प्रकार है ।

हे देव तुम्हारा विहार के समय जाणु कर्म रूप बैरी को तर्जना फहता डर करतो संतो ऐसी महा उद्धत सबद करि दिसा का मुख पूरया है । जानै ऐसी परगट नगरा को टंकार सबद मगवान के विहार समय पग पग के विषै हो रहै । ( पत्र सख्या ३३ )

४७१. वर्द्धमानपुराण भाषा—पं० केशरीसिंह । पत्र सख्या—२०३ । साइज—११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इंच ।

भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । रचना काल—स० १८७३ फागुण सुदी १० । लेखन काल—स० १८७४ चैत वदी १४ । अपूर्ण । वेष्टन न० ६७८ ।

विशेष—७५ से ९४ तक पत्र नहीं हैं । ग्रन्थ का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—जिनेश विश्वनाथाय नतगुणसिंघवे ।

धर्मचक्रमृते मूर्द्धा श्रीमहावीरस्वामिने नमः ॥१॥

श्री वर्द्धमान स्वामी कू हमारौ नमस्कार हौ । कैसेक हैं वर्द्धमान स्वामी गणधरादिक के ईस हैं, अर ससार के नाथ हैं अर अनन्त गुणन के समुद्र हैं, अर धर्म चक्र के धारक हैं ।

गद्य का उदाहरण—

अहौ या लोक विषै ते पुरुष धन्य हैं ज्यां पुरुष न का ध्यान विषै तिष्ठताचित्त उपसर्ग के सैकडेन करिहू किंचित् मात्र ही विक्रिया कू नहीं प्राप्ति होय है ॥७॥ तहां पीछे वह रूद्र जिनराज कू अचक्षाकृति जाणि करि लब्जायमान मयायका आप ही या प्रकार जिनराज की स्तुति करिबे कू उद्यमी होता भया ।

अन्तिम प्रशस्ति—

नगर सवाई जयपुर जानि ताकी महिमा अधिक प्रवानि ।  
जगतसिंह जह राज फरेह गोत कुछाहा सुन्दर देह ॥६॥  
दक्ष देस के आवे नहां, मांति मांति की वस्ती तहां ।  
जहा सरावग बसै अनेक कैईक के घट मांही विवेक ॥७॥  
तिन में गोत छावडा मांहि, धालचद् दीवान कहाह ।  
ताके पुत्र पांच गुणवान, तिन में दोष बिल्यात महान् ॥८॥  
जयचद् रायचद् है नाम स्वामी धर्मवती कीने काम ।  
राजकाज में परम प्रवीन, सधर्म ध्यान में बुद्धि सुचीन ॥९॥  
सध चलाय प्रतिष्ठा करी, सब जग में कीर्ति विस्तरी ।  
श्रीर अधिक उत्सव करि कहा रामचंद संगही पद लहा ॥१०॥  
त दीवान जयचद् के पांच, सबकी धरम करम में सांच ।

तव रुचि उपजी यह मन माहि, वीर चरित की भाषा नाहि ॥१२॥  
 जो याकी अब भाषा होय, तौ यामै समुझै सहु कोय ।  
 यह विचार लखिकै बुधिवान, पंडित केशरीसिंह महान ॥१३॥  
 तिन प्रति यह प्रार्थना करी, याकी कतौ वचनिका खरी ।  
 तब तिन अर्थ कियो विस्तार, अथ संस्कृत के अनुसारी ॥१४॥  
 यह खरडो कीनी तब तिनै, ताकी महिमा को कवि मनै ।  
 पुनि व्याकरण बोध बुधिवान, वसतपाल साहववा जान ॥१५॥  
 तानै याको सोघन कीन, मूलग्रंथ अधुसारी सुवीन ।  
 बुधि अनुसारी बचनिका मयी, ताकू गुरजन हसियो नहीं ॥१६॥

× × × × ×

दोहा—सवत अष्टादश सतक, और तहत्तर जानि ।

सकल पत्र फायुष मली, पुण्य नक्षत्र महान ॥११॥

सक्रवार शुभ द्वादसी, पूरण मयौ पुराण ।

वाचै सुनै छ मन्वजन, पावै गुण अमलान ॥१२॥

इति श्री महारक सकलकीर्ति विरचिते “श्री बद्धमान पुराण संस्कृत ग्रंथ की देस भाषा मय की वचनिका पंडित केशरीसिंह कृत संपूर्ण” । मिती चैत बुदी १४ शनिवार सं० १८७४ का मैं अथ लिख्यौ ।

४७२. बद्धमानपुराणसूचनिका । पत्र संख्या-१० । साइज-१०×५ इंच । भाषा-हिन्दी ।  
 विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७६ ।

४७३. बद्धमानपुराण भाषा । पत्र संख्या-७ । साइज-११×७ इंच । भाषा-हिन्दी ।  
 विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८४६ ।

४७४. शान्तिनाथपुराण—अश्राग । पत्र संख्या-६८ । साइज-१०×४ इंच । भाषा-संस्कृत ।  
 विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८३४ अषाढ सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२६ ।

४७५. शान्तिनाथपुराण—सकलकीर्ति । पत्र संख्या-१६६ । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।  
 विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १३० ।

विशेष—अथ संख्या श्लोक प्रमाण ४३७५ है । एक प्रति और है ।

४७६. हरिवंशपुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र संख्या-३५५ । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।  
 विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११६ ।

विशेष—प्रति नवीन है । २ प्रतियाँ और हैं ।

४७७. हरिवंशपुराण—पं० दौलतराम । पत्र सख्या-५३० । साइज-११×६३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । रचना काल-सं० १८२६ । लेखन काल-सं० १८३४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६४ ।

विशेष—रूपचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी । दो प्रतियाँ और हैं ।

४७८. हरिवंशपुराण—खुशालचन्द्र । पत्र सख्या-१६१ । साइज-११३×५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पुराण । रचना काल-सं० १७८० बैशाख सुदी ३ । लेखन काल-सं० १८३१ फागुण सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६४५ ।

विशेष—तीन प्रतियाँ और हैं ।



### विषय-काव्य एवं चरित्र

४७९. उत्तरपुराण—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र सख्या-३२४ से ८३८ । साइज-१०×५३ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-काव्य । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १५५७ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११७ ।

विशेष—३२४ से पूर्व आदि पुराण है ।

प्रशस्ति—सं० १५५७ कार्तिकमासे शुक्लपक्षे पूर्णमास्यां तिथौ शुकदिने अथो श्री घनौघेन्द्रगे श्री चन्द्रप्रसे चैत्यालये श्री मूलसवे भारतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवाः तत्पट्टे म० श्री देवेन्द्रकीर्ति देवाः तत्पट्टे म० श्री विद्यानन्दिदेवा तत्पट्टे म० श्री मल्लिभूषण देवाः तस्य शिष्य म० महेन्द्रदत्त, नेमिदत्त तैः मेट्टारकै श्री मल्लिभूषणाय महापुराण पुस्तकं प्रदत्त ।

४८०. कलावतीचरित्र—भुवनेकीर्ति । पत्र संख्या-४ । साइज-१०३×४३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६५ ।

४८१. गौतमस्वामीचरित्र—आचार्य धर्मचन्द्र । पत्र सख्या-३२ । साइज-१२×६३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १६२२ । लेखन काल-सं० १८०२ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१३ ।

४८२. चन्द्रप्रभचरित्र—कवि दामोदर । पत्र संख्या-१२३ । साइज-१२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १३१ ।



विशेष—१२३ से आगे के पत्र नहीं हैं । प्रति नवीन है । ग्रन्थ की पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति मङ्गलसूत्रिभूषण तत्पट्टे गच्छे मट्टारक श्री धर्मचन्द्र शिष्य कवि दामोदर त्रिरचिते श्री चन्द्रप्रमचरित्रे चन्द्रप्रमकेवलज्ञानोत्पत्ति वर्णनो नाम द्वाविंशतितम सर्गः ।

४८३ चन्द्रप्रमचरित्र—वीरनदि । पत्र सख्या-११२ । साइज-११×५ इञ्च । मापा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८६६ माघ बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० २३० ।

विशेष—फतेहलाल साह ने प्रतिलिपि कराई थी । काव्य की १ प्रति और है ।

४८४ चेतनकर्मचरित्र—भैया भगवतीदास । पत्र सख्या-१५ । साइज-१०×५ इञ्च । मापा-हिन्दी (पद्य) । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १७३२ ज्येष्ठ बुदी ७ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३७० ।

विशेष—ग्रन्थ की ३ प्रतियाँ और हैं ।

४८५. जम्बूस्वामीचरित्र—महाकवि वीर । पत्र सख्या-११४ । साइज-१२×४ इञ्च । मापा-अपभ्रंश । विषय-काव्य । रचना काल-स० १०७६ माह सुदी १० । लेखन काल-सं० १६०१ असाढ़ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० २२६ ।

विशेष—ग्रन्थकार एवं लेखक प्रशस्ति दोनों पूर्ण हैं । राजाधिराज श्री रामचन्द्रजी के शासनकाल में टोढागढ़ में आदिनाथ चैत्यालय में लिपि की गई थी ।

खडेलवाल वशीतन साह गोत्र वाले सा० हेमा भार्या हमीर दे ने प्रतिलिपि करवाकर मंडलाचार्य धर्मचन्द्र को प्रदान की थी । लेखक प्रशस्ति निम्न है ।

सवत् १६०१ वर्षे आषाढ सुदी १३ मौमवासरे टोढागढवास्तव्ये राजाधिराजरावश्रीरामचन्द्रविजयराज्ये श्री आदिनाथचैत्यालये श्री मूलस वे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये मट्टारक श्री पद्मनन्दि देवास्तत्पट्टे म० शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे म० प्रमाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मङ्गल श्री धर्मचन्द्रदेवा तदाग्नाये खडेलवालान्वये साह गोत्रे जिनपूजापुरन्दरान गुयाश्रेयोत्पतिः साह महसा तद् भार्या सुहागर्दे तत्पुत्र साह मेघचन्द्र द्वि० कौजू । साह मेघचन्द्र भार्या मायाकन्दे द्वितीय नवलादे । तत्पुत्र साह हेमा द्वि० साह हीरा तृतीय साह छाजू । साह हेमा भार्या हमीर दे तत्पुत्र चि० भीखा । साह हीरा भार्या हीरादे । साह कौजू भार्या कौतुकर्दे तत्पुत्र साह पदारथ द्वि० खीवा । सा० पदारथ भार्या पारमदे तत्पुत्र सा० धनपाल । साह खीवा भार्या खिवसिरी तत्पुत्र हूंगरसी एतेषा मध्ये सा० हेमा भार्या हमीर दे एतत् जम्बूस्वामीचरित्र लिखाय रौहिणीव्रत उद्योतनार्थं मङ्गलाचार्या श्री धर्मचन्द्राय प्रदत्तं ।

४८६ जम्बूस्वामीचरित्र—ब्र० जिनदास । पत्र सख्या-३१ । साइज-११३×४ इञ्च । मापा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २२७ ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है । एक प्रति और है ।

४८७. जम्बूस्वामीचरित्र - पांडे जिनदास । पत्र संख्या-३० । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी ( पद्य ) । विषय-चरित्र । रचना काल-स० १६४२ मादवा बुदी ५ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५८० ।

विशेष—अकबर के शासनकाल में रचना की गई थी । दो तरह की लिपि है ।

४८८. जिनदत्तचरित्र - गुणभद्राचार्य । पत्र संख्या-४८ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८२५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२० ।

विशेष—प० नगराज ने प्रतिलिपि की थी । २ प्रतियाँ और हैं ।

४८९. जिणयत्तचरित्त (जिनदत्तचरित्र)—पं० लाखू । पत्र संख्या-२८० । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १२७५ । लेखन काल-स० १६०६ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२१ ।

विशेष—सं० १६०६ मंगसिर सुदी ५ आदित्यवार को रणथमौर महादुर्ग में शान्तिनाथ जिन चैत्यालय में सलेमशाह आलम के शासन के अर्न्तगत खिदिरखान के राज्य में पाटनी गोत्र वाले साह श्री दूल्हा ने प्रतिलिपि करवाकर आचार्य ललित कीर्ति को भेंट की थी ।

४९०. गायकुमारुचरिए ( नागकुमारचरित्र )—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र संख्या-६६ । साइज-८ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-काव्य । रचना काल-X । लेखन काल-स० १५१७ वैसाख सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१२ ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १५१७ वर्षे वैसाख सुदी ५ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे मट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे मट्टारक श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टालकार मट्टारक श्री जिनचन्द्र देवा । शिचणी वार्ह मानी निमित्ते नागकुमार पंचमी कथा लिखाप्य कर्मव्य निमित्ते प्रदत्त ।

४९१ प्रति नं० २ । पत्र संख्या-६० । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । लेखन काल-सं० १५२८ श्रावण बुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३४ ।

प्रशस्ति—सवत् १५२८ वर्षे श्रावण बुदि १ बुधे श्रवणनक्षत्रे सुमनामायोगे श्री नयनवाह पत्तने सुरत्राय अलाव-दीनराज्यप्रवर्धमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये मट्टारक श्री पद्मनन्दि देवा तत्पट्टे म० श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे मट्टारक जिनचन्द्रदेवा तत् शिष्य जैनन्दि आत्म कर्म क्षयार्थ निमित्ते इद गायकुमार पंचमी लिखापितं । खडेलवाल वशोत्पन्न पहाड्या गोत्र वाले अरजन भार्या केलूई ने प्रतिलिपि कराई ।

४९२. द्विसंधानकाव्य सटीक—मूलकर्ता-धनंजय, टीकाकार नेमिचन्द्र । पत्र संख्या-१६६ । साइज-१४×६ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १४ ।

अंतिम पुष्पिका—इति निरवधविद्यामंडनमंडितपडितमंडलीमंडितस्य पटतकचक्रवर्तिनः श्रीमत्त्रिनयचन्द्र-  
पडितस्य सुरोरतेवासिनो देवनदिनाम्न शिष्येण सफलकलोद्भवचारुचातुरीचक्रिकाचक्रेण नेमिचन्द्रेण विरचितायाद्विसंधान  
कविर्धनंजयस्य राघव पंडरीयापरानमकाव्यस्य पदकौमुदीनां दधानायां टीकायां श्रीरामव्यावर्थां नाम अष्टादश सर्ग ।

टीका का नाम पदकौमुदी है ।

४६३. धन्यकुमार चरित्र—संकलकीर्त्ति । पत्र संख्या—४६ । साइज—११ ३/४ इंच । मापा—संस्कृत ।  
विषय—काव्य । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६५६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३७ ।

प्रशस्ति—संवत् १६५६ वर्षे कार्तिक शुदी ७ रविवारसे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलाकारगणे श्री कुन्दकृदा  
चार्यान्वये भट्टारक जशकीर्तिदेवा तत्पुत्रे मट्टारक श्री ललितकीर्तिदेवा तत् शिष्य “ब्र०” श्रीपाल स्वयं पटनार्य गृहीत । लिखित  
चन्देरीगढ़दुर्गे वास्तव्य अक्षर पातिसाहि राज्ये प्रवर्तते ।

४६४. धन्यकुमार चरित्र—ब्र०नेमिदत्त । पत्र संख्या—३० । साइज—१० ३/४ इंच । मापा—संस्कृत ।  
विषय चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ०३८ ।

विशेष—प्रारम्भ के पत्र जीर्ण हैं ।

४६५. धन्यकुमार चरित्र—खुशालचन्द । पत्र संख्या—५० । साइज—१०×५ इंच । मापा—हिन्दी  
(पद्य) । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१६ ।

विशेषा—तीन प्रतियाँ और हैं ।

४६६. प्रद्युम्नचरित्र—पत्र संख्या—१६० । साइज—६×५ इंच । मापा—हिंदी । विषय—चरित्र । रचना  
काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११११ ।

४६७. प्रद्युम्नचरित्र—पत्र संख्या—३४ । साइज—११ ३/४ इंच । मापा—हिन्दी (पद्य) । विषय—चरित्र ।  
रचना काल—सं० १४११ भाद्रवा शुदी ५ । लेखन काल—सं० १६०५ आसोज शुदी ३ मंगलवार । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१२ ।

विशेष—प्रद्युम्न चरित्र की रचना किसी अम्रवाला व धुने की थी । रचना की मापा एवं शैली अच्छी है । रचना का  
आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारंभ—सारद विष्णु मति कवितु न होइ, सरु आखरु णवि बूभई कोइ ।

सीस धार पणमई सरसुती, तिहि कहुँ बुधि होइ कत हुती ॥१॥

सबु को सारद सारद करइ, तिस कउ अतु न कोऊ लहई ।

जिणवर मुखह छुणि गाय वाणि, सा सारद पणवहु परियाणि ॥२॥

अठदल कमल सरोवर वासु, कासमीर पुरल (हु) निकासु ।

इस चदीकर लेटाणि देइ, कवि सघार सरसई पमयोई ॥३॥

सेत वस्त्र पदमवतीर्ण, करह अलावणि वाजहि वीण ।  
 आगम जाणि देहु बहुमती पुणु दुह जे पणवई सरस्वती ॥४॥  
 पदमावती दड कर लेई, जालामुखी चकेसरी देई ।  
 अत्रमाइ रोहिणी जो सार, सासण देवी नवइ सधार ॥५॥  
 जिणसासण जो विघने हरेई, हाथ लकुटि लै ऊमो होई ।  
 भवियहु दुरिउ हरइ असरालु अगिवांगीउ पणउ खिन्नपाल ॥६॥  
 चउवीसउ स्वामी दुख हरण, चउवीस के जर मरण ।  
 जिण चउवीस नउ धरि मोउ, करउ कवितु जइ होइ पसाउ ॥७॥  
 रिषभु अजितु समउ तहि मयउ, अभिनंदनु चउत्थउ वरुयउ ।  
 समति पदमु प्रभु अवर सुपासु, चदप्पउ आठमउ निकासु ॥८॥  
 सुविधु नवउ सीतलु दस मयउ, अरु अयेसु ग्यारह जयउ ।  
 वासुपुजु अरु विमल अनतु, धमु सति सोलहउ पइ पइ त ॥९॥  
 कु थु सतारह अरु सु अत्यार, मल्लिनाथ एगुयासी वार ।  
 मुणिसुन्नत नमिनेम बावीस, पासु वीरु महुदेहि असीस ॥१०॥  
 सरस कथा रसु उपजई घणउ, निसुणहु चरित पजूसह तणउ ।  
 सवतु चौदहसौ हुइ गये, ऊपर अधिक ग्यारह मये ।  
 मादव दिन पचइ सो सारु, स्वाति नचत्र सनीश्चर वार ॥१२॥

मध्यभाग—प्रद्युम्न रुक्मणी के यहां आपहुचे हैं किंतु यह प्रकट न हो पाया कि रुक्मणी का पुत्र आगया ।  
 पुत्र आगमन के पूर्व कहे हुए सारे संकेत मिल गये हैं किंतु माता पुत्र को देखने के लिये अधीर हो रही है —

षण षण रूपिणि चढइ अवास, षण षण सो जोवइ चौपास ।  
 मोस्यो नारद कखउ निरुत, आज तोहि घर आवइ पूत ॥३८४॥  
 जे मुनि वयण कहे प्रमाण, ते सवई पूरे-सहिनाण ।  
 च्यारि आवते दीठे फले, अरुआचल दीठे पीयरे ॥३८५॥  
 सूकी बापी मरी सुनीर अपय जुगल मरि आये पीर ।  
 तउ रूपिणि मन विमउ मयउ, एते ब्रह्मचारि तहां गयउ ॥३८६॥  
 नमस्कार तव रूपिणि करइ, धरम विरधि खूडा उचरइ ।  
 करि आदरु सो विनउ करेइ, कणय सिघासणु वैसणु टेहु ॥३८७॥  
 समाधान पूछई समुझइ, वह भूखउ २ बिललाई ।  
 सखी बूलाइ जयाइ सार, जैवण करहु म लावहु वार ॥३८८॥

जीवण करण उठी तखिणी, सुदरी मयण्ण अमी यमीणी ।  
नाञ्ज न घुण्ण चूल्हि धु धाण्ण, वाह भूण्ण २ चिल्लाण्ण ॥३८६॥

अतिम—महसामी कउ कीयउ वरणाण्ण, तुम पञ्जन पायउ निरवाण्ण ।  
अगरवाल की मेरी जात, पुर अगरो ए छुहि उतपाति ॥६७५॥  
सधण्ण जण्णी गुणवद उर धरिउ सा महाराज घरह अचतरिउ ।  
एरुअ नगर वसते जानि, सुग्याउ चरित मद् रचिउ पुराणा ॥६७६॥  
सावय लोय वसहि पुर माहि, दह लक्ष्या ते धम्म फाण्ण ।  
दस रिस मान्ण दुतीया भेउ भावहिं चित्तहं जीयेसरु डेट ॥६७७॥  
एहु चरितु जो वाचह कोह, सो नर रवर्ग देवता होह ।  
हणु वद् धम्म खपह सो देव, मुकति वरंग ण माण्ण एण्ण ॥६७८॥  
जो फुण्णिसुण्ण मनह धरि माउ, असुम कर्म ते दूरिहि जाह ।  
जो र बलाण्ण माण्णुमु कवण्ण, ताहि फहु तू सद् देव परदमण्ण ॥६७९॥  
अह लिखि जो रि रिवयाण्ण साधु, सो सुर होह महा गुणरथु ।  
जो र पढावह गुण फिउ निलउ, सो वर पावह कवण्ण मलउ ॥६८०॥  
एहु चरितु पु न मळारु, जो वरु पढह सु नर महसारु ।  
ताहि परदमण्ण सुही फल देह, सपति पुत्र अवरु जसु होह ॥६८१॥  
हउ धुधि हीणु न जाण्णी केण्णु, अघर मातह गुणउ न भेउ ।  
पडित जण्णह न्णु फर जोडि हीणा अधिक जया लावहु खोडि ॥६८२॥

॥ इति परदमया चरित समाप्तः ॥

४६८. पार्श्वपुराण—भूधरदास । पत्र संख्या—१०५ । सादज—१०<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×५ इत्य । माया—हिन्दी (पद्य) ।  
विषय—काव्य । रचना काल—स० १७८६ । लेखन काल—स० १८६३ । पूर्ण । वेष्टन न० ६४७ ।

विशेष—१६ प्रतियां धौर है ।

४६९. प्रीतिकरचरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र संख्या—२५ । सादज—१०<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×५ इत्य । माया—संस्कृत ।  
विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन न० २१० ।

विशेष—अथ प्रशस्ति अपूर्ण है ।

४७०. बाहुवलिदेव चरिए (बाहुवलि देव चरित्र)—पं० धनपाल । पत्र संख्या—२६७ । सादज—  
११<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इत्य । माया—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । रचना काल—स० १४५४ वैसाख सुदी १३ । लेखन काल—स० १६०२  
श्रावाह सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० २५२ ।

विशेष—ग्रथकार व लेखक प्रशस्ति पूर्ण है । लेखक प्रशस्ति का अन्तिम भाग इस प्रकार है—

. एतेषां मध्ये दृढाहड देशे कछुवाहा राज्यप्रवर्तमाने अमरसर नगरेतिनामस्थितो धनधाय चैत्यचैत्यालयादि सोभालकृत तत्रैव राज्य पदाश्रितो राजश्री सृजा उधरणयो राज्ये वसन सघही लाखा तेनेद वाहुवलि चरित्र लिखाप्य ज्ञानपात्र आचार्य धर्मायदत्तं ।

५०१. भद्रवाहुचरित्र—आचार्य रत्ननदि । पत्र संख्या-४३ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । मापा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-स० १७०० । पूर्ण । वेस्टन न० २५० ।

विशेष - एक प्रति और है ।

५०२. भद्रवाहुचरित्रभाषा—किशानसिंह । पत्र संख्या-२०२ । साइज-११×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । मापा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-स० १७८० । लेखन काल-X । पूर्ण । वेस्टन न० ६०८ ।

विशेष—पत्र ५५ के बाद निम्न पाठों का समूह है जो सभी किशानसिंह द्वारा रचित हैं—

विषय-सूची	कर्ता	रचना सवत्
एकानली व्रत कथा	किशानसिंह	X
श्रावक मुनि गुण वर्णन गीत	"	X
चौबीस दडक	"	१७६४
चतुर्विंशति स्तुति	"	X
णमोकर रास	"	१७६०
जिनमक्ति गीत	"	X
चेतन गीत	"	X
गुरुमक्ति गीत	"	X
निर्वाण कांड भाषा	"	१७८३ संग्रामपुर में रचना की
चेतन लौरी	"	X
नागश्री कथा ( रात्रि मोजन त्याग कथा )	"	१७७३
लब्धि विधान कथा	"	१७८२ आगरे में रचना की गयी थी

५०३. भविसपत्तपचमीकहा—धनपाल । पत्र संख्या-१३१ । साइज-११×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । मापा-अपभ्रंश । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेस्टन न० २१७ ।

श्लोक संख्या ३३०० ।

विशेष—ग्रथ की ३ प्रतियाँ और हैं । दो प्राचीन प्रतियाँ हैं ।

५०५. अधिमयत्तचरित्र—( अधिष्यदत्तचरित्र ) श्रीधर । पत्र संख्या-१८८ । साहज-११५×४ इंच । मापा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६६१ चैत्र सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० २१४ ।

विशेष—राजमहल नगर में प्रतिनिधि दृष्टि थी । प्रथम श्लोक संख्या १५०७ प्रमाण है ।

५०५. प्रति नं० २ —पत्र संख्या-८१ । साहज-११×४ इंच । लेखन काल-सं० १६८६ चैत्र सुदी ११ पूर्ण । वेष्टन न० २१५ ।

प्रशस्ति—संवत् १६८६ वर्षे चैत्र सुदी ११ मंगलवार अंशवती नगरे नेमिनाथ चैत्यालये श्री मूलसिंघे नद्याम्नाये बलाकारगणे सरस्वतीगण्डे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये म० श्री पद्मनन्दिदेवा, तत्पट्टे मट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० श्री धर्मचन्द्रदेवा, तत्पट्टे मट्टारक कलितकीर्तिदेवाः समस्त गोष्ठि अंशवती . . . . . अश्लवालात्रये भावमा गोष्ठे इदं शास्त्रं घटापितं ।

५०६. प्रति नं० ३—पत्र संख्या-७७ । साहज-११×४ इंच । लेखन काल-सं० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २१६ ।

विशेष—कहीं ० कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं ।

प्रशस्ति—संवत् १६०६ वर्षे वैशाख मासे ऋण पक्षे द्वादशी तिथी शुद्ध-वासरे अश्लवा नक्षत्रे श्री मूलसिंघे गढ रणस्तंभ शास्त्रागरे सरस्वतीगण्डे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये म० श्री पद्मनन्दि देवा तत्पट्टे म० श्री शुभचन्द्र देवा, तत्पट्टे मट्टारक जिन-चन्द्र देवा, तत्पट्टे म० प्रभाचन्द्र देवा तत्पट्टे म० श्री धर्मचन्द्र देवा तत्पट्टे मट्टारक कलितकीर्तिदेवाः समस्त गोष्ठि अश्लवालात्रये भावमा गोष्ठे इदं शास्त्रं लिखाय म० श्री धर्मचन्द्राय घटापितं कल्याणं घटोद्यापनाय ।

५०७. भोजचरित्र—पाठक राजवल्लभ । पत्र संख्या-८८ । साहज-११×४ इंच । मापा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३५ ।

विशेष—प्रथम श्लोक अतिम पाठका निम्न प्रकार है—

श्री धर्मघोषगण्डे श्री धर्मसूरि संतानं रमाधी पट्टे श्री महीतिलक सूरि शिष्य पाठक राजवल्लभ कृते भोज चरित्रे समाप्त । सं० १६०७ वर्षे फागुण मासे शुक्ल पक्षे मत्स्य्यां तिथी शुक्रवाररे अश्लवालात्रये भावमा गोष्ठे इदं शास्त्रं लिखाय म० श्री धर्मचन्द्राय घटापितं कल्याणं घटोद्यापनाय ।

५०८. महीपालचरित्र—मुनिचारित्र भूपण । पत्र संख्या-५४ । साहज-१०५×४ इंच । मापा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचनाकाल-X । लेखन काल X । पूर्ण । वेष्टन नं० २११ ।

विशेष—श्लोक संख्या-६१५ प्रमाण प्रथम है ।

५०९. यशस्विलकचम्पू—सोमदेव । पत्र संख्या-५६ । साहज-१२५×४ इंच । मापा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६३ ।

विशेष—८ पेज तक टीका दे रखी है ।

५१० यशोधरचरित्र—सोमकीर्ति । पत्र संख्या-१७ । साइज-११×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० २४२ ।

विशेष—१७ से आगे पत्र नहीं है ।

५११. यशोधरचरित्र—ज्ञानकीर्ति । पत्र संख्या-६१ । साइज-१४×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-चरित्र । रचना काल-स० १६६६ माघ सुदी ५ । लेखन काल-स० १६६४ वैशाख शुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न० २४१

विशेष—महाराजा मानसिंहजी के शासन काल में मौलमावाद में प्रतिलिपि हुई थी ।

५१२. यशोधरचरित्र—वासवसेन । पत्र संख्या-२-३५ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७५६ मादवा सुदी १ । अपूर्ण । वेष्टन नं० २४० ।

विशेष—प्रथम पत्र चहो है । पं० पेमराज ने प्रतिलिपि की थी ।

५१३ यशोधरचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र संख्या-३४ । साइज-१२×५ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २३६ ।

विशेष—चार प्रतिर्या और हैं ।

५१४. यशोधरचरित्र—परिहानन्द । पत्र संख्या-३४ । साइज-११×६ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) ।  
विषय-चरित्र । रचना काल-स० १६७० । लेखन काल-स० १८३६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१८ ।

विशेष—आदि अत माग निम्न प्रकार है—

भारम्भ—सुमर देव अरहत महत, गुण अति अगम लहै को अंतु ।  
जाकै माया मोह न मान, लोकालोक प्रकासक ज्ञान ॥  
जाकै राग न मोह न खेद, चित्तिपति रक न जाके भेद ।  
राधे हरप न विरचै चक्कु, सुमरत नाम हरै अध चक्कु ॥  
अलख अगोचर अंतुक अंतु, मगलघारि मुकति कौ फन्तु ।  
गुण वारिध सो रसना एक, अलप बुद्धि अर तुच्छ विवेक ॥  
छै कर जोडि नऊ सरस्वती, बहै बुद्धि उपजै शुभ मती ।  
जिन वानौ मानी जिन आनि, तिनकौ घचन चढ्यो परवान ॥  
विबुध विहगम नब घन वारि, कवि कुल केलि सरोवर मार ।  
भव सागर तू तारन भाव, कुनय क्रुरग सिंघनी भाव ॥  
बे नर सुन्दर ते नर वली, जिनका पुहमि कथा बहु चली ।



जिनकी तै साद वर दीयो, सुखसुरितासु अमल जल पीयो ॥  
 सुमरि सुमार गुण ज्ञान गंभीर, बढै सुमति अथ घटहि सरि ।  
 जिनमुद्रा जे धारण धीर, मव आताप बुभावन नीर ॥  
 तिनके चरण चित्त महि धरै, चिर अनुसार कवित उचरै ।  
 गुरु गणधर सुमरो मन माहि, विघन हरन करि षरि तूँ छाह ॥८॥  
 नगर आगरो बसै सुवासु, जिहपुर नाना भोग विलास ।  
 वसीह साहु बहु धनी असखि, वनजहि वनज सागर हिनखि ॥  
 गुणी लोग छतीसौँ कुरी, मथुरा मडल उत्तम पुरी ।  
 और बहुत को करै बछाउ, एक जीम को नाहीं दाउ ।  
 नृपति नूरदीसाह सुजान, अरि तम तेज हर नमो मान ॥

मध्य माग—सुनिरी माइ कहीं हो एह, जो नर पावै उत्तम देह ।  
 सत पढित सज्जन सुखदाइ, सब हित करहि न कोपै राह ॥  
 जो धौलै सो होइ प्रमान, जह बैठे तह पावै मान ।  
 बैर भाग मन धरै न कोइ, जो देखै ताको सुख होइ ॥७४॥  
 यह सब जानि दया को अग, उत्तम कुल अरु रूप अनग ।  
 दीरघ आव परै ता तनी, सेवहि चरन कमल बह गुनी ॥७५॥

अन्तिम माग—संवत् सोलह सै अधिक सत्तरि सावण मास ।  
 सुकल सोम दिन सप्तमी कही यथा मृदु मास ॥  
 अग्रवाल वर वंस गोसना गाव को ।  
 भोग्यल गोत प्रसिद्ध चिह्न ता ठाव को ॥  
 माता चदा नाम, पिता मैरु मन्यो ।  
 परिधानद कही मनमोद अग न गुन ना गन्यो ॥५६॥

इति श्री यशोधर चौपई समाप्ता ।

सवत् १८३६ का मैं घटती पाना पुरी कियो पुस्तक पहिली लिख्यो छै । पुस्तक लूटि मैं थार्यो सो यो निद्धरावलि  
 देर यो गाजी का बाणा का पचा बाचै पछै त्याह मध्य जीवानी पुन्य होयसी ।

५१५. यशोधरचरित्र—खुशालचन्द्र । पत्र संख्या-४१ । साहज-६५/५६ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-  
 चरित्र । रचना काल-सं० १७०१ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६१४ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

५१६. यशोधरचरित्र टिप्पण . . . . . । पत्र संख्या-२६ । साइज-११×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०६० ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं जीर्ण है, पत्र गल गये हैं । चतुर्थे संघि तक है ।

५१७. यशोधर चौपई—अजयराज । पत्र संख्या १२ से ५१ । साइज-६ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । रचना काल-स० १७६२ कार्तिक वृदी २ । लेखन काल-सं० १८०० चैत वृदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६६ ।

विशेष—चूहढमल पाटनी बस्ती वाले ने आमेर में प्रतिलिपि कराई थी ।

५१८. बड्ढमाणकहा (वद्धमान कथा)—नरसेन । पत्र संख्या-२७ । साइज-११×४ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १५८४ । पूर्ण । वेष्टन न० २६१ ।

विशेष प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८४ वर्षे चैत्र सुदी १४ शनिवारे पूर्वानुत्तरे श्री चंपावतीकोटे राणा श्री श्री श्री संग्रामस्य राज्ये, राइ श्री रामचन्द्र राज्ये, श्री मूलसधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्यान्वये मट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे मट्टारक श्री शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे मट्टारक श्रीजिनचन्द्र देवा, प्रमाचन्द्रदेवा ॥ श्री खडेलवालान्वये अजमेरा गोत्र साह लोल्हा मार्या धनपइ तस्य पुत्र साह प्यौराज मार्या रतना तस्य पुत्र शान्तु तस्य मार्या सातिश्री तस्य पुत्र स्यौर द्वितीय साह चापा मार्या सोना तस्य साह होला तस्य मार्या

।

५१९. वड्ढमाणकव्व ( वद्धमानकाव्य )—पं० जयमित्रहल । पत्र संख्या-२ से ५६ । साइज-६ $\frac{१}{२}$ ×४ इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-स० १५५० वैशाख सुदी ३ । अपूर्ण । वेष्टन न० १३८ ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५५० वर्षे वैशाख सुदी ३ रोहिणी शुभनाम योगे श्री गैणोली पत्तने राजाधिराज अरिमानमर्दनराजश्री चापादेव राज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये म० श्री पद्मनन्दिदेवाः तत्पट्टे म० शुभचन्द्र देवा तत्पट्टे म० जिनचन्द्र देवा तत् शिष्य मुनि श्री रत्नकीर्ति देव . . . ।

५२०. वद्धमानचरित्र—सकलकीर्ति । पत्र संख्या-१२४ । साइज-११×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १२६ ।

५२१. वरागचरित्र—वद्धमान भट्टारक देव । पत्र संख्या-६० । साइज-११ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६३१ फागुण शुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० २४७ ।

विशेष—सांगानेर में महाराजाधिराज भगवतसिंहजी के शासनकाल में खडेलवालवशोत्पन्न भीसा गोत्र वाले साह

नानग आदि ने प्रतिलिपि कराई थी ।

विशेष—२ प्रतियाँ और हैं ।

५२०. विदग्धमुखमडन—धर्मदास । पत्र संख्या—२२ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । मापा—संस्कृत ।  
विषय—काव्य । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८२६ चैत्र सुदी ३ सोमवार । पूर्ण । वेष्टन न० १५२ ।

विशेष—नगराज ने प्रतिलिपि की थी ।

५२३. षट्कर्मोपदेशमाला—अमरकृति । पत्र संख्या—८६ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । मापा—प्रपञ्च श  
विषय—काव्य । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १४५६ । पूर्ण । वेष्टन न० १६८ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है—

लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६५६ वर्षे चैत्र बुदी १३ शनिवासरे शतमिखानचने राजाधिराज श्रीमाण्विजयराज्ये भीलोडा ग्रामे  
श्री चन्द्रप्रम चैत्यालये श्री मूलक्षिपे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याचये मट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तपट्टे  
मट्टारक श्री शुमचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० सिषकीर्ति देवास्तत् शिष्य ब्रह्मचारी रामचन्द्राय हृ वड जातीय  
श्रेष्ठी हारा मार्या ईजा सुत श्रुतश्रेष्ठी देवात भ्रातृ श्रेष्ठी नाना मार्या ह्वी द्वतीय मार्या रूपी तयो' सुत श्रुतश्रेष्ठी लाला  
मार्या वान् तत् भ्रातृ श्रेष्ठी वेला मार्या वीली पट्कर्मोपदेश शास्त्र लिखाय प्रदत्तं ।

५२४ शालिभद्र चौपई—जिनराज सूरि । पत्र संख्या—१४ । साइज—१०×४ इंच । मापा—हिन्दी ।  
विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १६१८ । लेखन काल—सं० १७६४ मादवा सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन न० १०७५ ।

५२५. श्रीपालचरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र संख्या—५५ । साइज—१२×४ $\frac{३}{४}$  इंच । मापा—संस्कृत ।  
विषय—चरित्र । रचना काल—सं० १५८६ आषाढ सुदी ६ । लेखन काल—सं० १८२१ सावन बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० २२५ ।

विशेष—मालवा देश में पूर्वाशा नगर में आदिनाथजी के मन्दिर में अथ रचना हुई थी ।

छाजूलालजी साह के पिता शिवजीलालजी साह ने ज्ञानावरणीचयार्थ श्रीपाल चरित्र की प्रतिलिपि कराई थी ।  
एक प्रति और है ।

५२६. श्रीपालचरित्र—कवि दामोदर । पत्र संख्या—५७ । साइज—११×४ $\frac{३}{४}$  इंच । मापा—प्रपञ्च श ।  
विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६०६ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० २२४ ।

५२७. श्रीपालचरित्र—दौलतराम । पत्र संख्या—४६ । साइज—८ $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । मापा—हिन्दी । विषय—  
चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६०७ । पूर्ण । वेष्टन न० ५२० ।

विशेष—आराधना कथा कोष में से कथा ली गई है ।

५२८. श्रेणिकचरित्र—भ० विजयकीर्ति । पत्र संख्या-२५० । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १८२० । लेखन काल-सं० १८८० । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१५ ।

५२९. श्रेणिकचरित्र—जयमित्रहल । पत्र संख्या-६० । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा-अपभ्रंश ।

विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० २३६ ।

५३०. श्रीपालचरित्र—परिमल्ल । पत्र संख्या-१३६ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८८० । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०४ ।

विशेष—५ प्रतिया और हैं ।

५३१. श्रीपालचरित्र . . . । पत्र संख्या-३५ । साइज-१३×६ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य ।

विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८५९ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२७ ।

विशेष—मथ के मूलकर्ता भ० सफलकीर्ति थे । २ प्रतिया और हैं ।

५३२. सीताचरित्र—कवि बालक । पत्र संख्या-१६१ । साइज-९ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) ।

विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १७१३ । लेखन काल-सं० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०३ ।

विशेष—चंपावती ( चाकम् ) में प्रतिलिपि हुई थी । सीता चरित्र की मण्डार में ५ प्रतिया और हैं ।

५३३. सिद्धचक्रकथा—नरसेनदेव । पत्र संख्या-३८ । साइज-१०×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा-अपभ्रंश ।

विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १५१५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७८ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १५१५ वर्षे ज्येष्ठ सुदी १५ रवौ नैणवाहपत्तने सुरत्राण अलावदीन राज्ये श्री मूलसधे बलात्काराणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा' तत्पट्टे जिनचन्द्रदेवा तस्य शिष्यं मुनि अनंतवृत्ति लंबकंबुका-  
न्वये जदप्रसे काकलिमरच्छगोत्रे साह सीधे मार्या दीपा तस्य पुत्र साह सान्हरि मार्या जसवरूप नाराइण लघु भ्राता कान्ह पतेपु  
मध्ये नाराइण पठनार्थं लिखापित ।

५३४. सुदर्शनचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र संख्या-३८ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० २३२ ।

५३५. सुदर्शनचरित्र—विद्यानंदि । पत्र संख्या-५० । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६०५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २३३ ।

विशेष—टोक निवासी गंगवाल गोत्र वाणे सा० राजा ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

५३६. हरिवंशपुराण—महाकवि स्वयंभू । पत्र संख्या-१ से ४०६ । साइज-१३×५ इञ्च । भाषा-

अपभ्रंश । विषय-काव्य । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १५८२ फागुण बुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२३ ।

विशेष—प्रति का जीर्णोद्धार हुआ है । पुराण की श्रान्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इय रिट्टोमिचरिय धवलइयासिय सयभुएवउच्चरण तिहुयणसयंभुइए समाणिय क्हकिचि ह्रिवस ॥ गुरुपत्रवा-  
समयं सुयणयाणुक्रम जहाजायासयेमिकदुदहश्राहिय संधियो परिसम्मतित्तो ॥६॥ सधि १११२ ॥ इति हरिवंस पुराण समाप्त ॥६॥  
प्रय संख्या सहस्र १००० पूर्वोक्त ॥ ६ ॥

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

मवत् १५८२ वर्षे फाल्गुण शुद्धी १३ त्रयोदशीदिवसे शुक्रवासरं श्रवणनक्षत्रे शुभजोगे चपावतीगठनगरे महाराज  
श्री रामचन्द्रराज्ये श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसधे नंदाप्राये बलाकारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्त्रये मट्टारक श्री  
पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे मट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे मट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे मट्टारक श्री प्रमाचन्द्रदेवा तदाप्राये  
खडेलवाला-वये साहगोत्रे जिनपूजापुरदरान बहुशास्त्रपरिर्मलित सुदरो, जिनचरणारविन्द पट्पदनीतिशास्त्रपरिगत, विशदजिनशासन-  
समुद्धारणधीर, पचाणुप्रतपालनैकधीर, सम्यक्त्वालकृतशरीरामेढामेढरत्नत्रयराघनाग्रिपचामक्रियाप्रतिपालक गंकाघट्टदोपरहित  
संवेगाद्यगुणयुक्ति दुस्वितजनविश्राम, परम भावक साह काधिल, मार्या कावलदे प्रया पुत्रा । द्वितीय पुत्र जिनचरणकमलचचरीकान्,  
दानपूजाश्रयान् इव समुद्यतान् परोपकारनिरतान् प्रशस्तचित्तान् सम्यक्त्वगुणप्रतिपालकान् श्री सर्वज्ञोक्तिधमानरंजितचेतसान्  
कुट्ट वमाधुरधरान् रत्नत्रयालकृतदिव्यदेहान् आहारभोजनशास्त्रदानमदाकिनीय पूरितचित्तान् श्रावकाचारप्रतिपालननिरतान् सा राघो  
साधो (साध्वी) मार्या रैनदे तस्य चतुर्थ पुत्रः द्वितीय पुत्र. जिणत्रिवचैत्यविहारउद्धरणधीरान् चतुर्विधसघमनोरथपूर्णान्, वि-तामणि  
गुण - सपूर्णान् बहुलक्षणलचित्तदिव्यदेहान् स्वजनानदक्षारी देवशास्त्रश्रुत्या (या) भक्तिवतान् त्रिकालसामायिकपूत  
प्रतिपालकान् परमासाधनपुरन्दर, निजकुलगगनघोतनदिवाकर व्रतनियमसजमरत्नत्रयत्वाकर कृष्णालिप्रस्तरत्तमूलखडन चतुर्विध-  
मुखदडन, निजकुलकमलविकासनैकमार्त्तण्डान्, मार्गस्थकल्पवृक्षान् सरस्वतिऋठामरणान् त्रेपनक्रियाप्रतिपालकान् एतान्  
गुणसयुक्तान् परम आनक विनयवतं साधु सा० हाथु मार्या श्रीमती इव साध्वी हरिपदे तस्य द्वौ पुत्रौ प्रथम पुत्र जिणशासन-  
उद्धरणधीर राजप्रागभारवितरणप्रवीण सा० पासा मार्या द्वौ प्रथम लाठी द्वितीय बाली तस्य पुत्र विरजीव बालधवल सा० हरराज ।  
सा० हाथु द्वितीय पुत्र देवशुरूशास्त्रशासनविनयवंत सा० आशा मार्या हकारटे । सा० राघो-तृतीय पुत्र सा० दासा मार्या  
सिंदूरी तस्य द्वौ पुत्रौ प्रथम पुत्र सा० मविसी मार्याभावलदे द्वितीय पुत्र सा० नानू सा० कादू । सा० दासा तस्य द्वितीय पुत्र  
सा० धर्मसा मार्या दारादे । सा० राघो चतुर्थ पुत्र सा० घाट तस्य मार्या राणी घाटं पुत्र द्वौ, सा०  
हेमराज मुनिमाघनदाय दत्त म् ।

५३७. होलिकाचरित्र—छीतर ठोलिया । पत्र संख्या-५ । साइज-१०×५ इंच । भाषा-हिन्दी ।  
विषय-कथा । रचना काल-सं० १६६० फाल्गुण सुदी १५ । लेखन काल-सं० १८७८ । पूर्ण । वेष्टन न० ५७० ।

५३८ होलीरैणुकाचरित्र—जिनदास । पत्र संख्या-३१ । साइज-११ ३/४×५ ३/४ इंच । भाषा-मसूत ।  
विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७५६ । पूर्ण । वेष्टन न० ६०८ ।

विशेष—पांडे जसा ने स्वयं प्रतिलिपि की थी ।

## विषय—कथा एवं रासा साहित्य

५३६ अष्टाह्निकाकथा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सख्या-१० । साइज-१० १/२ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० २७५ ।

विशेष—कथा की रचना जालक की प्रेरणा से हुई थी । कथा की तीन प्रतियाँ और हैं ।

५४० आदित्यवारकथा—भाऊ कवि । पत्र सख्या-१७ । साइज-१० १/२ × ४ १/२ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । रचनाकाल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १०६६ ।

५४१ आदित्यवारकथा—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सख्या-४६ । साइज-१० १/२ × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । रचना काल—स० १७४४ । लेखन काल—स० १८४६ । पूर्ण । वेष्टन न० ६६६ ।

विशेष—कामा में प्रतिलिपि हुई थी । पत्र २० से सूत्र की चारहखड़ी दी हुई है ।

५४२. कवलचन्द्रायणव्रतकथा । पत्र सख्या-६ । साइज-१० १/२ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कथा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ५६७ ।

५४३. कर्मविपाकरास—ब्र० जिनदास । पत्र सख्या-१७ । साइज-१० ३/४ × ४ ३/४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—रासा साहित्य । रचना काल—X । लेखन काल—स० १७७६ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६६ ।

विशेष—भाषा में गुजराती का बाहुल्य है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सवत् १७७६ वर्षे कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे एकादशी गुरुवासरे श्री रत्नाकर तटे श्री खमातवदरे गौसाई कान्हड-  
गिरेण लिखिनेमिद पुस्तक ब्र० सुमतिसागर पठनार्थ ।

५४४ गौतमपृच्छा । पत्र सख्या-३५ । साइज-१० × ४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

कथा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १०४८ ।

विशेष—

प्रारम्भ—वीरजिनं प्रणम्यादौ बालानां सुखबोधकां ।

श्रीमद् गौतमपृच्छायाः क्रियते वृत्तिमदभुतां ॥१॥

नमि ऊण तित्यनाह जाणतो तहय गोयमो मयवं ।

अबुहाण बोहणत्थ धम्माधम्मफलं वुच्छे ॥२॥

नत्वा तीर्थनाथ जाणन् तथा गौतम मगव ।

धवोधान् बोधनार्थं धम्माधम्मफलं अपच्छे ॥३॥

अन्तिम पाठ—पाठक पद संयुक्तै कृता चैयं कथानिका ।

श्रीमद् गौतमपृच्छा सुखमासुराबोधका ॥

लिखत चेला हमार विजय ।

इति गौतमपृच्छा सपूर्णं ।

५४५. चन्दनपट्टिघृतकथा—विजयकीर्ति । पत्र सख्या-६ । साइज-११<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×६<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इञ्च । मापा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-५ । लेखन काल-सं० १६६० । पूर्ण । वेस्टन नं० ४०१ ।

विशेष—ईश्वरलाल चादवांड ने प्रतिलिपि कराई थी ।

५४६. चन्द्रहंसकथा—टोकम । पत्र सख्या-४४ । साइज-११<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×४ इञ्च । मापा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-सं० १७०८ । लेखन काल-सं० १८१२ । पूर्ण । वेस्टन नं० ४७६ ।

विशेष—रचना के पद्यों की संख्या ४५० है । रचना का प्रारम्भ और अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है ।

प्रारम्भ—श्रींकार श्रपार गुण, सब ही अक्षर आदि ।

सिद्ध होय ताको जप्या, आखिर एह अनादि ।

जिन वाणी मुख उचरे, श्रीं सबद सरुप ।

पंडित होय मति वीसरो, आखिर एह अनूप ॥२॥

अन्तिम पाठ—सामरि रथौ दश कोसा गांव, पूर्व दिशा कालख है ठाम ॥४४०॥

ता माहै व्यापारी रहै, धर्म कर्म सो नीति की कहै ।

देव जिनालय है तिहां मलौ, थावग तिहां क्या सामलो ॥४४१॥

विधि सौ पूजा करै जिन तनी, मन में प्रीति सु राखे घणी ।

भगदू तहांतणो हुजदार, वंस लुहाख्या में पिरदार ॥४४२॥

भोज राज साहिव को नांव, देई बढाई सौयों गांव ।

सब सौ प्रति चलावै साह, दोष न करै कटै मन माहि ॥४४३॥

पुत्र दोह ताकै घरि मला सुजाणि, पिता हुकम करै परवान ।

कालु और नराईनदास, ईहगातणीय जोव आस ॥४४४॥

माई वधु कुटंब परिवार, विधि सौ करै सवन की सार ।

साहमी तणौ धिनौ अति करै, सति वचन मुख उचरै ॥४४५॥

जितौ मलाई है तिहि माहि, एक जीम वरणन नही जाई ।

सब ही को दिल लीया हाधि, जिमै वैठि आपनै सावि ॥ ४४६

अेसी जुगति खैचियो मार, जाणै ताको सब संसार ।

सवत थाठ सतरासै वर्ष, करता चौपई हुवो हर्ष ॥ ४४७ ॥

पडित होइ हसो मति कोई, बुरा मला आखरू जो होइ ।  
 जेठमास अर पख अधियार, जाणै दोईज अररविवार ॥ ४४६ ॥  
 टीकम तणी बीनती एहु, लघु दीरघु सवारै छु लेह ।  
 सुणत कथा होई जे पास, हो तिन कै चरण को दास ॥  
 मनधर कृपा एह जो कहै, चंद्र हस जोमि मुख लहै ॥  
 रोग विजोग न व्यापै कोई, मनधर कथा सुनै जै सोई ॥ ४५० ॥  
 ॥ इति चन्द्रहस कथा संपूर्ण ॥

सवत् १८१२ वर्षे शाके १६७७ आषाढकृष्णा तिथौ ६ बुधवासरे लिपि कृत ॥ जोसी स्यौजीराम ॥  
 लिखापित धर्ममूर्ति धरमात्मा साह जो श्री डालूराम ॥

४४७. चित्रसेनपद्मावतीकथा—पाठक राजवल्लभ । पत्र संख्या-१६ । साइज-६३×४३ इंच ।  
 भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७६२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७४ ।

४४८ दर्शनकथा—भारामल्ल । पत्र संख्या-६८ । साइज-८×६३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-  
 कथा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६२७ आषाढ बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ५८४ ।

विशेष — एक प्रति और है ।

४४९ दानकथा—भारामल्ल । पत्र संख्या-३६ । साइज-११×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-  
 कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६८ ।

विशेष—मूल्य १।।। लिखा हुआ है ।

४५०. नागश्रीकथा (रात्रिभोजनत्यागकथा)—ब्र० नेमिदत्त । पत्र संख्या-२८ । साइज-११×४३ इंच ।  
 भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६७४ फाल्गुन बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६८

विशेष—वार्हे तेजश्री वैजवाड में प्रतिलिपि कराई । पहला पत्र वाद का लिखा हुआ है । एक प्रति और है ।

४५१. नागश्रीकथा (रात्रि भोजन त्याग कथा)—किशनसिंह । पत्र संख्या-२० । साइज-११×५३ इंच ।  
 भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-सं० १७५३ सावन सुदी ६ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६० ।

विशेष—३ प्रतियां और हैं ।

४५२ नागकुमारचरित्र—नथमल विलाला । पत्र संख्या-१०३ । साइज-११३×५३ इंच । भाषा-  
 हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । रचना काल-सं० १८३७ माघ सुदी ५ । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६१३ ।

विशेष —अन्तिम पत्र नहीं है ।



५५३. निशिभोजनत्यागकथा—भारामल्ल । पत्र संख्या-२० । साइज-८×६ $\frac{१}{२}$  इञ्च । मापा-हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १९२७ श्रावण बुढी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० ५८५ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

५५४ नेमिन्याहलो—हीरा । पत्र संख्या-११ । साइज-१३×४ इञ्च । मापा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-स० १८८८ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ११५० ।

विशेष—इसमें नेमिनाथ के विवाह की घटना का विस्तृत वर्णन है—पारचय निम्न प्रकार है—

साल अठारसैं परमाय, तापर अडतालीस वखाण । पोप कृष्णा पांचै तिया आणि, वारग्रहरपति मन में घाय ॥८०॥  
बू दी को छै महा सुयान, ती में नेम जिनालय जान । ती मध्ये पडत वर भाग, रहै कवीश्वर उपमा गाय ॥८१॥  
ताको नाउ जिनण की ढाम, महा बिचरण रहत उदास । सखि हीरो छै ताको नाम, ती करया नेम गुण गान ॥८२॥  
इति श्री नेमि व्याहलो सपूर्ण । लिखत-चम्पाराम । छन्द-सख्या ८२ है ।

पत्र ५ से आगे वीनती सम्भ्राय, रतन साहजत, हानचौपडसम्भ्राय, माणकचन्द कृत, यूलेट के श्रुपम देव का पद-तथा पेमराज कृत राजल्ल पञ्चीनी-और है ।

५५५. नेमिनाथ के दश भव । पत्र संख्या-४ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । मापा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन न० ५७५ ।

५५६ पुण्याश्रवकथाकोप—दौलतराम । पत्र संख्या-२९६ । साइज-११×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । मापा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-स० १७७७ भाद्रवा बुढी ५ । लेखन काल-सं० १८८८ । पूर्ण । वेष्टन न० ५९३ ।

विशेष—श्लोक संख्या ८००० है । अथ महात्मा हरदेव लेखक से लिया था । ४ प्रतियाँ और हैं ।

५५७. 'पुरन्दर चौपई - त्र० मालदेव । पत्र संख्या-१४ । साइज-९ $\frac{१}{२}$ ×८ इञ्च । मापा-हिन्दी । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ८६८ ।

विशेष—

अन्तिम पद्य—सीलवढी सवि घम से त्रत पाली रे ।

शत्रुघ्न कोठ प्रधान । सी०

रतनागरी कछु पाईये । चिंता रतन समान । सी० ॥ ७३ ॥

माव देव सूरी गुण नीलो । त्र० । वड गछ कमल दिखंद ॥ सी० ॥

तासु सीस इम कहइ । त्र० । मालदेव आणद ॥ सी० ॥ ७४ ॥

'अग्रया मील तो जे कछो । त्र०' अनुमोदीजै तेय । सी०

जो विरुद्ध किंपी कछो त्र० । मीछा दुक्कट तेय । सी० ॥ ७५ ॥

५५८. राजाचन्द्र की चौपई

। पत्र संख्या-५१ । साइज-५×१० इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-कथा । रचना काल-५ । लेखन काल-स० १८१२ आरण बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० ६६८ ।

विशेष—प्रारम्भ के पत्र नहीं हैं । पत्र ३५ से फुटकर पद्य हैं ।

५५९. राजजलपच्चीसी

। पत्र संख्या-७ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-

कथा रचना काल-५ । लेखन काल-५ । अपूर्ण । वेष्टन न० ५३९ ।

विशेष—७ से आगे पत्र नहीं है ।

५६०. व्रतकर्थाकोशभाषा—खुशालचन्द्र

। पत्र संख्या-६७ । साइज-१२<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×६ इञ्च । भाषा-

हिन्दी (पद्य) । विषय-कथा । रचना काल-स० १७८३ । लेखन काल-५ । अपूर्ण । वेष्टन न० ५६२ ।

विशेष—निम्न कथायें हैं ।

( १ ) जेष्ठजिनवरव्रतकथा ( २ ) आदित्यवारव्रतकथा ( ३ ) सप्तपरमस्थानव्रतकथा ( ४ ) मुकुट सप्तमीव्रतकथा ( ५ ) अक्षयनिधिव्रतकथा ( ६ ) षोडशकारणव्रतकथा ( ७ ) मेघमालाव्रतकथा ( ८ ) चन्दनषष्ठीव्रतकथा ( ९ ) लब्धि विधानव्रतकथा ( १० ) पुरन्दरकथा ( ११ ) दशलक्षणव्रतकथा ( १२ ) पुष्पाजलिव्रतकथा ( १३ ) आकाशपचमीव्रतकथा ( १४ ) मुक्तावलीव्रतकथा ( १५ ) निर्दोषसप्तमीव्रतकथा ( १६ ) सुगंधदशमीव्रतकथा ।

५६१. रोहिणी कथा

। पत्र संख्या-९ । साइज-५<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा ।

रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन न० १०५१ ।

५६२. वैताल पच्चीसी

। पत्र संख्या-६-९२ । साइज-७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) ।

विषय-कथा । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । अपूर्ण । वेष्टन न० ६७५ ।

विशेष—अवस्था जीर्ण है । आदि तथा अन्तिम पाठ नहीं हैं । छठी कथा का प्रारम्भ निम्न प्रकार है ।

अथ छठी वारता लिखंत ॥ तब राजा वीर विक्रमादीत फेरि जाये सीस्यौ के रूख जाये चटयौ अर अतंग ने उतारि करि ले चलयौ ॥ तब राह में अतंग वैताल बोल्यो ॥ हे राजा रात्रि को समौ राह दुरि ॥ पैडौ कटे ःही ॥ कथा बारता कह्यास्यो राह कटे सो हु येक कथा कहूँ छूँ ॥ तु सुणि ॥

५६३. शनिश्चरदैव की कथा

। पत्र संख्या-१३ । साइज-६<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-कथा । रचना काल-५ । लेखन काल-स० १८५२ माघ सुदी २ । अपूर्ण । वेष्टन न० १०३६ ।

विशेष—सेवाराम के पठनार्थ नन्दलाल ने प्रतिलिपि कारवाई थी ।

५६४. शीलकथा—भारामल्ल

। पत्र संख्या-३३ । साइज-७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-

कथा । रचना काल-५ । लेखन काल-१९८५ । पूर्ण । वेष्टन न० ६०० ।

विशेष—स० १८८६ की प्रति की नकल है। कापी साइज है। दो प्रति और हैं।

५६५. शीलतरंगिनीकथा—अखैराम लुहाडिया। पत्र संख्या—८२। साइज—६×६ $\frac{१}{२}$  इंच। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—कथा। रचना काल—X। लेखन काल—स० १८०५ माघ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन न० ६०१।

विशेष—आरतराम गगवाल ने प्रति लिपि की थी।

५६६ सप्तपरमस्थान विधान कथा—श्रुतसागर। पत्र संख्या—६। साइज—१२×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। रचना काल—X। लेखन काल—स० १८३० वैशाख बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन न० ६८।

विशेष—प० गुलाबचन्द ने प्रतिलिपि की। संस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ भी हैं। एक प्रति और है।

५६७ सप्तव्यसन कथा—आ० सोमकीर्ति। पत्र संख्या—७६। साइज—१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। रचना काल—स० १५२६ माघ सुदी १। लेखन काल—स० १७८१। पूर्ण। वेष्टन न० १६७।

५६८ सम्यक्त्वकौमुदी—मुनिधर्मकीर्ति। पत्र संख्या—१२ से ६२। साइज—१२×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। रचनाकाल—X। लेखन काल स० १६०३ श्रावण सुदी ५। अपूर्ण। वेष्टन न० १३६।

विशेष—किशनदास अग्रवाल ने प्रतिलिपि कराई थी। शंकरदास ने प्रतिलिपि की थी।

५६९. सम्यक्त्वकौमुदी कथा भाषा—। पत्र संख्या—४०। साइज—६ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$  इंच। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—कथा। रचना काल—X। लेखन काल—X। अपूर्ण। वेष्टन न० ५८३।

विशेष—४० से आगे पत्र नहीं है।

५७०. सम्यक्त्वकौमुदी कथा—जोधराज गोदीका। पत्र संख्या—५६। साइज—१०×६ इंच। भाषा—हिन्दी (पद्य)। विषय—कथा। रचना काल—स० १७२४ फाल्गुन बुदी १३। लेखन काल—स० १८३० कार्तिक बुदी १३। पूर्ण। वेष्टन न० ५८२।

विशेष—हरीसिंह टोंग्या ने चन्द्रावती के रामपुरा में प्रति लिपि की। एक प्रति और है।

५७१. सम्यग्दर्शन के आठ अंगों की कथा—। पत्र संख्या—६। साइज—१०×४ $\frac{१}{२}$  इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। रचना काल—X। लेखन काल—X। पूर्ण। वेष्टन न० २८०।

५७२. सुगन्धदशमीव्रत कथा—नयनानन्द। पत्र संख्या—८। साइज—१०×४ $\frac{१}{२}$  इंच। भाषा—अपभ्रंश। विषय—कथा। रचना काल—X। लेखन काल—स० १५२४ मादवा बुदी ६ आदित्यार। पूर्ण। वेष्टन न० ५८१।

विशेष—इति सुगन्धदशमी दुजिय संधि समाप्ता।

५७३ सिद्धचक्रव्रत कथा—नथमल। पत्र संख्या—११। साइज—१२×७ इंच। भाषा—हिन्दी।

विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ५२१ ।

५७४. हनुमंत कथा—ब्र० रायमल्ल । पत्र संख्या-७१ । साइज-११×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा-हिन्दी ।

विषय-कथा । रचना काल-स० १६१६ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ६०६ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।



### विषय-व्याकरण शास्त्र

५७५. जैनेन्द्र व्याकरण—देवनन्दि । पत्र संख्या-४६५ । साइज-११×५ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० २०८ ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । प्रारम्भ के ३० पत्र जीर्ण हैं । एक प्रति और है वह भी अपूर्ण है ।

५७६. प्रक्रियारूपावली—पं० रामरत्न शर्मा । पत्र संख्या-८६ । साइज-११×५ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय व्याकरण । रचनाकाल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १५ ।

५७७. महीभट्टी—भट्टी । पत्र संख्या-२ से २८ । साइज-१०×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० ७०० ।

५७८. शब्दरूपावली . . . . . । पत्र संख्या-५६ । साइज-६ $\frac{१}{२}$ ×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७०४ ।

५७९. सारस्वतप्रक्रिया—अनुभूति स्वरूपाचार्य । पत्र संख्या-४६ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-स० १६६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०३ ।

विशेष—एक प्रति और है ।



## विषय-कोश एवं छन्द शास्त्र

५८०. अमरकोश—अमरसिंह । पत्र संख्या-२५ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-  
कोष । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १३४ ।

५८१. एकाक्षर नाममाला—सुधाकलश । पत्र संख्या-८८ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-कोष । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १५६ ।

५८२. छन्दरत्नावली—हरिराम । पत्र संख्या-२६ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-  
छन्द शास्त्र । रचना काल-स० १७०८ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६११ ।

विशेष—कुल २११ पद्य हैं—

अंतिम—प्रथम छन्द रत्नावली सारथ याको नाम ।

मूचन भरती तैं मयो कहै दाश हरिराम ॥२११॥

इति श्री छन्द रत्नावली संपूर्ण ।

रार्गर्नमनिधोचंद कर सो समतं सुमजानि ।

कायुष बुदी त्रयोदशो मांजुलिखी सो जानि ॥

५८३. छन्ददर्शतर्क—कवि वृन्दावन । पत्र संख्या-३१ । साइज-८ $\frac{1}{2}$ ×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-  
छन्द शास्त्र । रचना काल-स० १८६८ माघ बुदी २ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०३ ।

५८४. नाममाला—धनजय । पत्र संख्या-१६ । साइज-१०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोष ।  
रचना काल-× । लेखन काल-स० १८६१ चैत बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १३७ ।

विशेष—स्त्रीवसिंह के शिष्य खुशालचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

५८५. रूपदीपविगल—जैकृष्ण । पत्र संख्या-१० । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-  
छन्दशास्त्र । रचना काल-स० १७७६ मादवा सुदी २ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७३ ।

विशेष—रचन का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—सारद माता तुम बड़ी बुधि देहि दर हाल ।

पिगल की छाया लियै वरतु वावन चाल ॥१॥

गुरु गणेश के चरण गहि द्वियै धारके विष्णु ।

कृ वर भवानीदास का जगत करै जै किष्ण ॥२॥

रूप दीप परगट करूं भाषा बुद्धि समान ।  
 बालक कू सुख होत है उपजे अक्षर ज्ञान ॥३॥  
 प्राकृत की बानी कठिन भाषा सुगम प्रतिच ।  
 कृपाराम की कृपा सूं कंठ करै सब शिष्य ॥४॥  
 पिगल सागर सम कक्षो छंदा भेद अपार ।  
 लघु दीर्घ गण अगण का बरतूं सुद्धि विचार ॥५॥

अंतिम— दोहा—गुण चतुराई बुधि लहै मला कहै सब कोइ ।  
 रूप दीप हिरदै धरै सो अक्षर कवि होय ॥

सोरठा—निज पुहकरण न्यात तिस में गोत कटारिया ।  
 सुनि प्राकृत सों बात तैसे ही भाषा करी ॥

दोहा—बावन बरनी चाल सब, जैसी उपजी बुद्धि ।  
 भूल भेद जाको कक्षो, करो कवीश्वर सुद्ध ॥  
 सवत सत्रहसै बरसै और छहचार पाय ।  
 मादों सुदी दुतिया गुरू मयो अंभ सुखदाय ॥५६॥

॥ इति रूपदीप पिगल समाप्त ॥

५८६. श्रुतबोध—कालिदास । पत्र सख्या-५ । साहज-६×५३ इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्द  
 शास्त्र । रचना काल-५ । लेखन काल-स० १८६८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०१ ।



### विषय-नाटक

५८७. ज्ञानसूर्योदय नाटक—वादिचन्द्रसूरि । पत्र सख्या-२६ । साहज-११×४३ इच्च । भाषा-  
 संस्कृत । विषय-नाटक । रचना काल-स० १६४८ माघ सुदी ८ । लेखन काल-सं० १६८८ जेष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन  
 नं० १६५ ।

त्रियेय—मधुन नगर में प्रथम रचना हुई । जोगी रावो ने मौजमाबाद में प्रति लिपि की ।

५८८. ज्ञान सूर्योदय नाटक भाषा—पारसदास निगोत्या । पत्र संख्या—४८ । साइज—१० १/२ × ७ १/२ इंच । भाषा—हिन्दी । त्रियेय—नाटक । रचना काल—म० १६१७ । लेखन काल—म० १६३६ । पूर्ण । वेष्टन न० ८०२ ।

५८९ प्रबोधचन्द्रोदय—मल्ल काव्य । पत्र संख्या—२५ । साइज—८ × ६ । भाषा—हिन्दी । त्रियेय—नाटक । रचना काल—म० १६०१ । लेखन काल—४ । पूर्ण । वेष्टन न० ८६६ ।

त्रियेय—इस नाटक में ६ अंक हैं तथा मोह विवेक युद्ध कराया गया है । अतः म विवेक की जीत है । चनासी-दास जी के मोह विवेक युद्ध के समान है । रचना का आदि अन्त भाग इस प्रकार है—

प्रारम्भिक पाठ—अमिनटन परमाय्य कीयो, अरु हँ गलित ज्ञान रस पीयो ।  
नाटिक नागर चित्त मैं बस्यो, ताहि देख तन मन हुलस्यो ॥१॥  
कृष्ण मट्ट करता है जहाँ, गंगा सागर भेटे तहाँ ।  
अतुमै को घर जानें सोइ, ता सम नाहि विवेकी कोई ॥२॥  
निन प्रबोधचन्द्रोदय कीयो, जानां दीपक हाय ले दीयो ।  
कर्ण सूर सपात्रे स्वाड, कायर और करै प्रतिवाड ॥३॥  
इन्दी उडर परायन होइ, कवहुँ पे नहीं रीझी मोइ ।  
पच तत्र अग्रगति मन धारयो, तिहि माप नाटक विस्तारयो ॥४॥

काम उजाच—जो रवि तू कृष्णि है मोहि, ब्योरो समं पुनःऊ तोहि ।  
वै निमात मेंया हूँ मेरे, ते सब पुनन लार्ग तेरे ॥  
पिता एक माता हूँ गाउँ, यह ब्योरो आगे समभाऊ ।  
ज्यो राघो अरु लक्ष्मि राऊ, यो हम उन भयो सुध को चाऊ ॥

विवेक—  
श्री विवेक मैं याहूँ वरार्द, महाबली मनि कदा न जाई ।  
याय आश्रय बेगि बुलाया, तारो कहीनमीठ पठायी ॥  
तव वहूँ गयो मोहूँ के पाया, बोलन लार्ग वचन उटायी ।  
मथुरादासनि रति जो काज, मागे ते प्रिया गो जीजै ।  
गद विवेक कही समभार्द, ए रीझार तुम छोडो मारै ।  
नीच नटा देखे जेने, महापुरुष के दिष्टे ते ते ॥  
या रतुन न मतायो कही, पञ्चिम गुगमान को जाही ।  
न्याय विचार कही यो जाना, अतिम जोर न अग ममाता ॥

अतिम पाठ—

पुरुष उवाच—तव आकास मयो जेकारा, और समै मिटि गयो विचारा ।  
 पुरुष प्रकट परमेश्वर आहि, तिसौं विवेक जानियो ताहि ॥  
 अथ प्रभु मयो मोखि तन धरिया, चन्द्र प्रबोध उटै तव करिया ।  
 सुमति विवेकरु सरधा सांति, काम देव कारन कीं कांति ॥  
 इनकी कृपा प्रसन्न मन मुयो, जोहो आदि सोइ फिरि हुवो ।  
 विष्णु मक्ति तेरे पर सारा, कृत कृत मयो मिल्यो अनुवारा ॥  
 अथ तिह संग रहेगो एही, हौं मयो ब्रह्म विसरीयो देही ।  
 विष्णु मति तू पहुँची आइ, कीयो अनद जु सदा सहाइ ॥  
 अरु चिरकाल के मनोरम पूजे, गयो शत्रु साल है दूजे ।  
 जो निरवधि वासना होइ, तातै प्यारा औरन कोइ ॥  
 अद्वैत राज अनैम पदलयो, अचित्तै चितवत अचित मयो ।  
 जा सिर ऊपर सनक सनदा, अरु वसिष्ठ वेदै ताहि वदा ।  
 कृष्ण मट्ट सोइ रम गाया, मथुरादास सारु सोई वाता ॥  
 वदे गुरु गोविन्द के पाइ, सति उनमान कथा सो गाइ ।

इति श्री मन्लरुवि विशिचते प्रबोधचन्द्रोदय नाटके षष्ठ्यां अक समाप्त ।

५६०. मदनपराजय भाषा—स्वरूपचन्द्र विलाला । पत्र सख्या—६३ । साइज—११×७ $\frac{1}{2}$  इञ्च ।  
 भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । रचना काल—स० १९१८ मगसिर सुदी ७ । लेखन काल—स० १९१८ । अपाठ सुदी ७ ।  
 पूर्ण । वेष्टन न० ४०१ ।

विशेष—सवत शत उगणीस अरु अधिक अठारा माहि ।

मार्गशीर्ष सुदी सप्तमी दीतवार सुखदाहि ॥

तादिन यह पूरण करयो देश वचनिका माहि ।

सकल सघ मगल करो ऋद्धि वृद्धि सुख दाय ॥

इति मदनपराजय अथ की वचनिका सपूर्ण । स० १९१८ का मिति असाठ सुदी ७ शुक्रवार सपूर्ण ।  
 लेखन काल संभवतः सही नहीं है ।

५६१. मदनपराजय नाटक—जिनदेव । पत्र सख्या—४१ । साइज—१२ $\frac{1}{2}$ ×८ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत ।  
 विषय—नाटक । रचना काल—X । लेखन काल—स० १७८१ । माह सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० २५ ।

विशेष—वसवा नगर में आचार्य ज्ञानकीर्ति तथा प० त्रिलोकचन्द्र ने मिलकर प्रतिलिपि की ।



५६२. मोहविवेक युद्ध—बनारसीदास । पत्र संख्या-६ । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।  
विषय-नाटक । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७२ ।



### विषय-लोक विज्ञान

५६३. अकृत्रिम चैत्यालयों की रचना । पत्र संख्या-१० । साइज-११×७ इञ्च । भाषा-  
हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६६ ।

५६४. त्रिलोकसार बंध चौपई—सुमतिकीर्त्ति । पत्र संख्या-१० । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-  
हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८०७ ।

विशेष—

अंतिम — अतीत अनागत वर्तमान, सिद्ध अनंता गुणना धाम ।

मांवे भगति समर सदा, सुमति कीरति कहति अघतर कदा ॥३०॥

मूलसध गुरु लक्ष्मीचंद मुनीदत्त सपाटि घोरजचद ।

मुनिन्द ह्यानमूपण तस पाटि चंग प्रमाचन्द षदो मलरंगि ॥३१॥

सुमति कीरति सूरि वर कहिसार त्रैलोक्य सार धर्म ध्यान विचार ।

जे मणि गणि ते सुखिया भाय एयशा रूपधरो सुगति जाय ॥३४॥

५६५. त्रिलोक दर्पण कथा—खड्गसेन । पत्र संख्या-२१८ । साइज-८ $\frac{३}{४}$ ×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी  
(पद्य) । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-स० १७१३ । लेखन काल-स० १८०३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७४ ।

विशेष—यह प्रति संवत् १७३६ की प्रति से लिपि की गई है ।

५६६. त्रिलोकसार—आचार्य नेमिचन्द्र । पत्र संख्या-१८७ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा-  
प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६४६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२ ।

विशेष—टीकाकार माधवचन्द्र त्रैविद्याचार्य है । जयपुर में प्रतिलिपि हुई ।  
एक प्रति और है ।

५६७ त्रिलोकसार भाषा . . . । पत्र संख्या-२ से १० । साइज-१२ $\frac{१}{२}$ ×६ इंच । भाषा-हिन्दी ।  
विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६३५ ।

५६८. त्रिलोकसार भाषा—उत्तमचन्द्र । पत्र संख्या-२२५ । साइज-१४ $\frac{१}{२}$ ×७ इंच । भाषा-हिन्दी ।  
विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-स० १८४१ ज्येष्ठ बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० ७८१ ।

विशेष—दीवान श्योजीरामजी की प्रेरणा से ग्रंथ रचना की गयी थी जैसा कि ग्रंथ कर्ता ने लिखा है—

अंतिम दोहा—सवत् अष्टादश सत इक्तालीस अधिकाणि ।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वादशी रविवारे परमानि ॥

त्रिलोकसार भाषा लिख्यो उत्तमचन्द्र विचारि ।

भूल्यो होऊं तो कुछ लीज्यो सुकवि सुधारि ॥

दीवाण श्योजीराम यह लियो हृदय में ज्ञान ।

पुस्तक लिखाय भवणा सुखू राखो निस दिन ध्यान ॥

॥ इति ॥

ग्रंथ—प्रथम पत्र—“तहा कहिए है ।” मेरा ज्ञान स्वभाव है सो ज्ञानावरण के निमित्त तैं हीन होय मति श्रुत पर्याय रूप मया है तहा मति ज्ञान करि शास्त्र के अक्षरनि का जानना मया । बहुरि श्रुतज्ञान करि अक्षर अर्थ के वाच्य वाचक सम्बन्ध है । ताका स्मरणतैं तिनके अर्थ का जानना मया । बहुरि मोह के उदयतैं मेरे उपाधिक भाव रागादिक पाइये है ।

५६९ त्रैलोक्यदर्पण . . . । पत्र संख्या-२६ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६७८ ।

विशेष—नीच २ में चित्रों के लिए बगह छोड़ी हुई है ।

६०० त्रैलोक्यदीपक—वामदेव । पत्र संख्या-८६ । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-  
लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८१२ भाष बुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० १०० ।

विशेष—प० खुशालचन्द्र ने लालसोट में प्रतिलिपि की ।

६०१. प्रत न० २ । पत्र संख्या-६५ । साइज-११×५ $\frac{३}{४}$  इंच । लेखन काल-सं० १५०६ अषाढ सुदी ५ ।  
पूर्ण । वेष्टन न० १०१ ।

विशेष—पत्र सं० ०७ तक नवीन पत्र है इससे आगे प्राचीन पत्र हैं । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति सं० १५१६ वर्षे अषाढ सुदी ५ मौमवासरे कुंभुणू शुभ स्थाने शाक्रीपूषति प्रजाप्रतिपालक सम-  
सरवानविजयराज्ये ॥ श्रीमूलान्वये वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये ५० पञ्चनदि देवा स्तपट्टे सं० श्री गुप्त-

चन्द्र देवास्तत् पट्टालंकार पटतर्कचूडामणि मट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मुनि सहस्रकीर्ति तत्शिष्य ब्र० तिहुणा  
खडेलनाला वये श्रेष्ठ गोत्रे सं गोरना भार्या माहुस्तत्पुत्र सं० भारधोरेव सघनी पदमानद आता रुहाण्यः सं० पदमा भार्या  
पद्म श्री पुत्रा. प्रयो हेमा, गूजर, महिराज । रुहा भार्या जाजी पुत्र चोराज पूतपाल पुत्रै पचमी उद्यापन निमित्तं इदं  
त्रैलोक्यदीपकं नामा कर्मण्य निमित्तं सदस्त्रे प्रदत्तं ।



### विषय—सुभाषित एवं नीति शास्त्र

६०२. उपदेशशतक—वनारसीदास । पत्र संख्या—२५ । साइज—८×४ $\frac{1}{2}$  । भाषा—हिन्दी । विषय—  
सुभाषित । रचना काल—स०—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४५३ ।

६०३. गुलालपञ्चीसी—ब्रह्म गुलाल । पत्र संख्या—४ । साइज—१०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
सुभाषित । रचना काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७४ ।

६०४. जैनशतक—भूधरदास । पत्र संख्या—२७ । साइज—१०×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
सुभाषित । रचना काल—सं० १७८१ । पौष शुदी १३ लेखन काल—सं० १११४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४११ ।

विशेष—उत्तमचन्द्र मृशरक की भार्या ने चदाया ।

६०५. नन्दवत्तीसी—मुनि विमलकीर्ति । पत्र संख्या—११ । साइज—१०×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी ।  
(पद्य) । विषय—नीति शास्त्र । रचना काल—सं० १७०४ । लेखन काल—सं० १७५० । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१२ ।

विशेष— २ श्लोक तथा १०१ पद्य हैं ।

६०६. नीतिशतक—चाणक्य । पत्र संख्या—२१ । साइज—६×६ । भाषा—संस्कृत । विषय—नीति शास्त्र ।  
रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११३० ।

६०७. बुधजन सतसई—बुधजन । पत्र संख्या—११ । साइज—८ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
सुभाषित । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४३ ।

६०८ भावनात्राणन . । पत्र संख्या-३ । साइज-१३×६ । माषा-हिन्दी ( पद्य ) । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ११३६ ।

विशेष—हेमराज ने प्रतिलिपि की थी

६०९. रेखता—बक्षीराम । पत्र संख्या-६ । साइज-६×३३ इञ्च । माषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । रचना काल × । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ११४२ ।

विशेष—स्फुट रचनाएं हैं ।

६१०. सद्भाषितावली भाषा . . . । पत्र संख्या-३० । साइज-१२३/४×४३/४ इञ्च । माषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ७०६ ।

विशेष—लेखक की मूल प्रति ही है, प्रांत सशोधित है । पद्य संख्या ५०५ है । ग्रंथ के मूल कर्ता म० सकलकीर्ति हैं ।

६११. सुबुद्धप्रकाश—थानसिंह । पत्र संख्या-१४६ । साइज-१०३/४×६३/४ इञ्च । माषा-हिन्दी (पद्य) विषय-सुभाषित । रचना काल-१०१=४७ फागुण बुदी ६ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८३० ।

रचना का आदि अन्त माग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ केवल ज्ञानानन्द मय परम पूज्य अरहत ।

समोसरण लक्ष्मी सहित राजै नयूं महत ॥१॥

अष्ट कर्म अरि निष्ट कर अष्ट महागुण पाय ।

सिद्धि ह्मष्ट अष्ट धरा लही सिद्ध पद जाय ॥२॥

पचसार आचार मुखि गुण छत्तीस निवास ।

सिसा दिक्षा देत है आचारज शिव वास ॥३॥

अन्तिम पाठ—श्रीमति सांति सुनाथ जी सांति करौ निति आप ।

विषन हरौ मंगल करौ तुम त्रिभुवन के वाप ॥६०३

सांति सुमुद्रा रात्ररी सांति चित्त करि तोहि ।

पूजौ बदी भाव सौ खेम कुसल करि मोहि ॥६०४॥

देस प्रजा भूपति सकल ईत मीत करि दूर ।

सुख संपति धन धाम जस क्रिया भाव रख पूर ॥६०६॥

फागुन वदि षष्ठी सुगुर ठारसत सैताल ।

पूर्य ग्रंथ सुसांति रखि विषै कियौ गुनमाल ॥६०६॥

पटिमी धुनिसी वाचसी करसी चरचा सार ।

मन वंछित फल पायसी तिनकौ करौ जुहार ॥६०७॥

इति श्री सद्युद्धि प्रकास भाषा बध जिनमेषक मानगिह धिरचित्त मपूर्णा ।

कवि अचरथा चर्णन—भरत क्षेत्र में देस दृढारि । तामे बन उपवागि रगाल ॥  
 नदी घावडी कृप तटाग । तार्को देखत उपजे गग ॥  
 कुकट उडि वैठे जिहि ठाम । यो रामधरतां तामे गाम ॥  
 धन फन गोधन पूरत खोग । तपसी चौमासे दे जोग ॥  
 ता गधि अचावति पुरसार । चौगिरदां परमत अधिगार ॥  
 वस्ती तल उपरि साधनी । ज्यौ दाटिम वीजन तै वनी ॥  
 ताको जैसिंध नामा भूप । सुरज वस विपै ॥ अनूप ॥  
 'यायवंत युधिवंत विसाल । परजापालक दीन दयाल ॥  
 दाता सुर तेज जिग मान । ससि अहला दीज्यौ जसरवानि ॥  
 हय गय रथ सिवकादि अपार । अत मर्था प्रोदित परिवार ॥  
 हदि सौ विमो कुबेर मदार । बहु समूह तिगा बहुवार ॥  
 प हत कवि भाटादि विसेव । पट दरमन सचही हो गेय ॥  
 अपनै अपनै धर्म सुचलै । बोज काहू पै नहीं मिलै ॥४१॥  
 पण सिव धर्मा भूपति जान । मन्त्री जैनी मुसि अधिकादि ॥  
 जैनी सिव के धाम उतग । सिखर धुजा छन फलस सुचग ॥  
 राग दोष आवस मै नाहि । सबकै श्रान्ति भाव अधिकादि ॥  
 सव हो मूपन मे सिरदार । छापती चलि इन अनुसार ॥  
 दुतिय पुरी सांगावति जानि । दक्षिण दिसि पट कोप प्रमान ॥  
 पुरी तले सरिता मनुहार । नाम सुरसती सुध जलधार ॥४४॥  
 नगर लोक धनवान अपार । विविध भाति करि है व्योहार ॥  
 ऊचे सिखर फलस धुज जहां । पंच जैन मन्दिर हैं तहां ॥  
 धर्म दया सज्जन गुन खीन । जैनी वहीत वरी परवीन ॥  
 वस खण्डेलवाल मम गोत । ठेल्या धनु परिवारी गोत ॥  
 यारौ वास हमारौ सही । हेमराज दादो मम फही ॥  
 पुनि अनुसारि सवल घर मध्य । सामग्री दापै सब रिद्धि ॥

दोहा—बडी मलूक सुचद सुत, दूजौ मोहन राम ।  
 लूणकर्ण तीजौ कक्षौ चौथौ साहिब राम ॥  
 सबकै सुत पुत्री घना मोहन राम सुतात ।  
 मेरौ जन्म सांगावति माहिं मयी अवदात ॥

अवावति सांगावति नगर बीच जै भूप ।  
 आप बसायौ चाहि करि जैपुर नाम अनूप ॥  
 सूत बंध सबही किये हाट सुघट बाजार ।  
 मिंदर कोटि सुकांगरे दरवाजे अधिकार ॥  
 सतखमौ छु बनाइयो, अपनै रहनै काज ।  
 विंन महल रचना करी, घाग ताल महाराज ॥  
 साहूकार बुलाइया लेख भेज चहु देस ।  
 हासिल वाथ्यौ न्याय जुत लोभ अधिक नहि लेस ॥  
 सुखी मये सबही जहां अधिक चलयौ व्योपार ।  
 सांगावती आवावती उजरी तब निरधार ॥१४॥  
 आय बसै जैपुर चिगे कोन्है घर अरु हाटि ।  
 निज पुनि के अनुसार तै सुखित मयौ सब ठाठ ॥१५॥  
 षोडश संवत्सर मयौ सब ही कौ सुख धात ।  
 जैसिंह लोकांतर गयौ पिछली सुनि अब बात ॥  
 सब ईसर मुख भूपती ईसर सिद्ध सु नाम ।  
 अति उदार प्राक्रम बढौ सब ही कौ आराम ॥  
 न्यायवत सबही सुखी डड मूल कछु नाहि ।  
 काहू कौ दीन्है नहौं चुगलाचार न रहाय ॥  
 काल दोष तै नीच जन समराखि बछवारि ।  
 तीन वण के ऊच जन तिनूकौ मानधराय ॥  
 आप हठी काहू तनी मानी नाहीं बात ।  
 पिछले मत्र थकी जिके कियौ भूप को घात ॥

अडिल्ल —

दखिणी लियौ बुलाय गांव बाहिर रहे ।  
 मिल कै जाहि दिवान दाम देने कहे ॥  
 लघु भ्राता माधव कू वेगि मिलाय कै ।  
 लेख भेजियौ राज करौ तुम आय कै ॥  
 माधव आगै सिव धरमी मुखियौ मयो ।  
 जैन्यासी करि द्रोह वच मैं लै लियौ ॥  
 देव धर्म गुरु श्रुत कौ विनय विगारियौ ।  
 कीयौ नाहि विचारि पाप विस्तारियौ ॥

दोहा— भूप अरथ समभ्यो नर्हा मत्री के वसि होय ।  
दड सहर में नाखियों दुखी मये सब लोय ॥  
त्रिविध माति धन घटि गयो पायो बहुत क्लेस ।  
दुखी होय पुर कौ तजो तव ताकौ पर देस ॥

सौरठा— मरथपुर में आय कछु काल बैठे रहे ।  
पुनि जयपुर में जाय त्रिणज गणि रहवो करै ॥  
माधन के दरवार त्रिणज कियो सुख सौ रहे ।  
आगे सुनि चित धारि मायो को जो वारता ॥६५॥

आडल्ल— दुखी रोग धन हीन होय परगति गयो ।  
जासु पुत्र पृथ्वी हरि राजा पद थयो ॥  
हंसा करि लघु आप वृतांत सु लैगयो ।  
अनुजराज परतापसिध पीछै मयो ॥  
मिवमत जिनमत देवधन विप्र अतिथि जो कोय ।  
मदण कियो वसि लौम तै पाप पुण्य नहिं जोय ॥  
ई' अयाय के जोग तौ दुखी लोग हम जोय ।  
हो उदाम पुर छौडियो मुख इ छन्दा उर होय ॥

सौरठा -- जाटी बंस विमाल नगर करोरी को पती ।  
नाम मूप गोपाल, विणज हमारो थो सदा ॥  
पीछै तुरछमपाल बैठ्यो वास इहां कर-थो ।  
राख्यो मान विमाल, हाटि सुषट उद्यम थियो ' ।  
मानिकपाल नरेस तुरसमपाल सुषट लर्यो ।  
मद कपाय महेस, राग दाम मध्य रत है ॥  
जाके शत्रु न कोय, सबसौ मिलि राज सु करै ।  
रैत खुसी कछु जोय, थिरता पातै इन करी ॥  
पिता रसो इहि थान, हम जैपुर में ही रहे ।  
सगु आता सुत जानि, तिन व्योपार क्रियो घने ॥  
नैन सुम्ह है नाम, नानिग राम सु तनुज है ।  
बहु स्यानी अभिराम, राजदुवार में प्रगट है ॥  
गल्यातर में तात, गयो सु टीकौ करण को ।

आये तव तै आत, इहां रहे थिरता करी ॥७५॥  
 देवल साधरमी जहां पूजा धर्मक थान ।  
 पर्यन खान सुपान की, थिति सर्गति विद्वान ॥  
 औसी अछ-था रूप जो कीजे सुबुधि प्रकास ।  
 भाषामय अर बहु रहसि रहैसि यामै भासि ॥७७॥  
 नैना को लघु आत, नाम गुलाव सु जासु को ।  
 अत सुनि के हरषात सुबुधि दैन कौ अतु रच्यौ ॥

६१०. सुभाषित । पत्र संख्या-६ । साइज-१५ इंच । विषय-सुभाषित । रचना काल-५ ।  
 लेखन काल-५ । अपूर्ण । वेष्टन न० ११५४ ।

६१३. सुभाषितरत्नावलि—भ० सकलकीर्ति । पत्र संख्या-१८ । साइज-२०×४ इंच । भाषा-  
 संस्कृत । विषय सुभाषित । रचनाकाल-५ । लेखन काल स० १५८० वैसाख सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० १६७ ।

बीच २ में नये पत्र मी लगे हैं ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है —

विशेष—सवत् १५८० वर्षे वैसाख सुदी ६ गुरौ श्री टोडानप्रमद्ये राजाधिराजमुकुटमणिसूर्यसेनराज्ये श्री  
 सोलकी वंशे श्री प्रमाचन्द्र देवा तदाम्नाये खडेलवालान्वये वाकुलीवालगोत्रे साह नेमदास तस्य भार्या सिंगारदे तत्पुत्र  
 पासा तस्य भार्या दुर्गतय पुत्र साह जैला तस्य भार्या गौरादे तत्पुत्र गिरराज । इदं शास्त्रं लिखापितं चाई माता  
 कर्म क्षयनिमित्त ।

विशेष—सात प्रतियां और हैं । सभी प्रतियां प्राचीन हैं ।

६१४ सुभाषितार्णव । पत्र संख्या-२ से ४८ । साइज-२२×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।  
 विषय-सुभाषित । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन न० ५० ।

विशेष—प्रति प्राचीन हैं । संस्कृत में संकेत भी दिये हुए हैं । पत्र २३ वां बाद का लिखा हुआ है ।

६१५ सुभाषितावलि भाषा । पत्र संख्या-७८ । साइज-६ इंच । भाषा-हिंदी ।  
 विषय-सुभाषित । रचनाकाल-५ । लेखन काल-५ । अपूर्ण । वेष्टन न० १०२४ ।

विशेष—६७६ पद्यों की भाषा है अन्तिम पत्र नहीं है ।

प्रारम्भ—

श्री सरवज्ञ नमू चितलाय, गुरु सुगुरु निरग्रथ सुभाय ।

जिन वाणी ध्याउ निरकार, पदा सहाई भवि गण्य तार ॥१॥



ग्रन्थ सुमापित जिन वरुणयौ, ताको अरुण कछु इक लग्यौ ।  
निज पर हित कारणि गुण खानि, भावू मापा सृणहु धुजान ॥  
सोख एक सदगुरु की सार, सुणि धारौ निज चित्तमभारि ।  
मनुषि जनम सुख कारण पाय, एवी क्रिया करहु मन लाय ॥३॥

६१६. सूक्तिमुक्तावली - सोमप्रभसूरि । पत्र संख्या-१४ । साइज-१-४३ इच्च । मापा-संस्कृत ।  
विषय-सुमापित । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ३०८ ।

विशेष- ८ प्रतियां श्रीर हैं ।

६१७ सूक्ति संग्रह । पत्र संख्या-२० । साइज-११×५ इच्च । मापा-संस्कृत । विषय-  
सुमापित । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १४५ ।

विशेष-जैनैतर ग्रन्थों में से सूक्तियों का संग्रह है ।

६१८. हितोपदेशवत्तीसी-बालचन्द्र । पत्र संख्या-३ । साइज-६×४ इच्च । मापा-हिन्दी । विषय-  
सुमापित । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० ५६३ ।



## विषय-स्तोत्र

६१९. अकलंक स्तोत्र " " । पत्र संख्या-५ । साइज-८३×४ इच्च । मापा-संस्कृत । विषय-  
स्तोत्र । रचना काल-४ । लेखन काल-सं० १६२६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५६ ।

६२० अकलकाष्टक भाषा-सदासुख कासलीवाल । पत्र संख्या-१६ । साइज-११×५ इच्च ।  
मापा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-सं० १६१५ श्रावण सुदी ७ । लेखन काल-सं० १६३५ माघ सुदी ७ । पूर्ण ।  
वेष्टन नं० ५०५ ।

६२१. आराधना स्तवन-चाचक विनय सूरि । पत्र संख्या-५ । साइज-१०३×४ इच्च । मापा-  
हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-सं० १७२६ । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०४ ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री विजयदेव सूरिंद पटधर, तीरथ जग मह इण्डि जगि ।  
 तप गच्छपति श्री विजयप्रससूरि सूरि तेजइ भगमगइ ॥२॥  
 श्री हीर विजय सूरी सीस वाचक श्री कीर्तिविजय सुर गुरु समो ।  
 तस सीस वाचक विनय विणयइ, धरयो जिन चौबीस मो ॥३॥  
 सइ सत्तर संवत् उगणसीयइ रही राते रचउ मास ए ।  
 विजय दसमी विजय कारया कौउ गुण अम्यासए ॥४॥  
 नरमव अराधना सिद्धि साधन छकृत लीला विलासए ।  
 निर्जरा हेत इठवन रचिउ नामइ पुण्य प्रकासए ॥५॥

६२२. आलोचना पाठ ..... । पत्र संख्या-१ से २२ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-प्राकृत ।  
 विषय-स्तवन । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । एक एक प्रति और है ।

६२३. इष्टछत्तीसी .. । पत्र संख्या-८ । साइज-६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-  
 स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६३ ।

६२४. इष्टछत्तीसी—बुधजन । पत्र संख्या-६ । साइज-१२×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र ।  
 रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५२३ ।

६२५. ऋषिमंडलस्तोत्र—गौतम गणधर । पत्र संख्या-७ । साइज-८×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत ।  
 रचना काल-X । लेखन काल-स० १६२५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६० ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६२६. एक सौ आठ (१०८) नामों की गुणमाला—द्यानत । पत्र संख्या-३ । साइज-८×४ $\frac{३}{४}$  इंच ।  
 भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-स० १६२५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६८ ।

६२७. एकीभावस्तोत्र—वादिराज । पत्र संख्या-६ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत ।  
 विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० २६४ ।

विशेष—सचिप्त संस्कृत टीका सहित है । ६ प्रतियाँ और हैं ।

६२८. कल्याणमन्दिरस्तोत्र—कुमुदचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-६ । साइज-१२×६ इंच । भाषा-  
 संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-स० १८६४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६७ ।

विशेष—टोंक में प्रतिलिपि हुई थी । अत में शान्तिनाथ स्तोत्र भी है । ७ प्रतियाँ और हैं ।

६२६. कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा—बनारसीदास । पत्र संख्या ११ से २६ । साइज— $८ \times ५ \frac{१}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । रचना काल— $\times$  । लेखन काल—सं० १८८० ज्येष्ठ शुदी १३ । अपूर्ण । वेष्टन न० ६८० ।

विशेष—नानूलाल वज ने प्रतिलिपि की १६ से २६ तक पत्र नहीं हैं । २७ से २६ तक सोलह कारण पूजा अयमाल है ।

६३०. कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा—अखेरराज । पत्र संख्या—७ से २६ । साइज  $६ \times ४$  इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—स्तोत्र । रचना काल— $\times$  । लेखन काल— $\times$  । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११०५ ।

६३१. चौबीस महाराज की विनती—रामचन्द्र । पत्र संख्या—७ । साइज— $१० \frac{३}{४} \times ७ \frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । रचना काल— $\times$  । लेखन काल— $\times$  । पूर्ण । वेष्टन न० ४०५ ।

६३२. ज्वालामालिनी स्तोत्र । पत्र संख्या—८ । साइज— $८ \times ४ \frac{१}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल— $\times$  । लेखन काल— $\times$  । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५७ ।

६३३. जिन दर्शन । पत्र संख्या—३ । साइज— $६ \frac{३}{४} \times ४$  इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल— $\times$  । लेखन काल— $\times$  । पूर्ण । वेष्टन न० ५२७ ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

६३४. जिनपजरस्तोत्र—कमलप्रभ । पत्र संख्या—३ । साइज— $८ \times ४ \frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल— $\times$  । लेखन काल—सं० १६२५ । पूर्ण । वेष्टन न० ६५६ ।

६३५. जिनसहस्रनाम—जिनसेनाचार्य । पत्र संख्या—१२ । साइज— $११ \times ६ \frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल— $\times$  । लेखन काल— $\times$  । पूर्ण । वेष्टन न० ४७६ ।

विशेष—लक्ष्मीस्तोत्र भी दिया हुआ है । दो प्रतियाँ और हैं ।

६३६. जिनसहस्रनाम—पं० आशाधर । पत्र संख्या—८ । साइज— $१० \frac{३}{४} \times ५$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल— $\times$  । लेखन काल—सं० १८४६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७८६ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६३७. जिनसहस्रनाम टीका—पं० आशाधर ( मूल कर्ता ) टीकाकार श्रुतसागर सूरि । पत्र संख्या—१२१ । साइज— $१० \times ५ \frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल— $\times$  । लेखन काल—सं० १८०४ पौष सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२ ।

विशेष—प्रति सुन्दर पत्र शुद्ध है ।

६३८. जिनसखताम भाषा—वनारसीदास । पत्र संख्या—७ । साइज—१२×२३ इंच । माषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । रचना काल—सं० १६६० । लेखन काल—सं० १६७४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६० ।

६३९. जिन स्तुति । पत्र संख्या—५ । साइज—१२×५ इंच । माषा—हिन्दी गद्य । विषय—स्तवन । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६३७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८८५ ।

६४०. दर्शन दशक—चैनमुख । पत्र संख्या—२ । साइज—१२×८ इंच । माषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४२ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६४१. दर्शन पाठ । पत्र संख्या—४ । साइज—१२×५ इंच । माषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५७७ ।

विशेष—दर्शन विधि भी दी है ।

६४२. निर्वाणकाण्ड गाथा । पत्र संख्या—१२ । साइज—४×४ इंच । माषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६० ।

विशेष—गुटका साइज है । तीन प्रतियाँ और हैं ।

६४३. निर्वाणकाण्ड भाषा—भैया भगवतीदास । पत्र संख्या—२ । साइज—८×६ इंच । माषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८२८ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४६ ।

६४४. पद व भजन संग्रह । पत्र संख्या—७६ । साइज—१२×७ इंच । माषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६३ ।

विशेष—जैन कवियों के पदों का संग्रह है ।

६४५. पद व भजन संग्रह । पत्र संख्या—२०६ । साइज—१२×५ इंच । माषा—हिन्दी । विषय—पद संग्रह । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६२ ।

विशेष—निम्न रागिनियों के भजन हैं—

राग मैत्र,	मैत्री,	रामकली,	ललित,	सारंग,	विलावल,	टोडी,
पत्र — १-६	१६-२२	२३-४०	४१-४६	५०-७१	७२-१०६	१०६-११०
पूरवी,	मल्हार,	ईमण,	सोरठ,	आसावरी,		
११५-११८	११६-१३१	१३१-१६०	१६६-२०४	२०६		

इनके अतिरिक्त नेमिदशमवर्णन भी दिया हुआ है ।

६४६. पद संग्रह . . . . . । पत्र संख्या-४ । साइज-८×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद ( स्तवन ) ।  
रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८४४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५४ ।

६४७. पद संग्रह . . . . . । पत्र संख्या-४७ । साइज-७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन ।  
रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७६८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१३ ।

६४८. पद संग्रह . . . . . । पत्र संख्या-१ से ६ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-  
स्तवन । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६३३ ।

६४९. पद संग्रह . . . . . । पत्र संख्या-२ ( लंबा पत्र ) । साइज-१५ $\frac{३}{४}$ ×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।  
विषय-स्तवन । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६८२ ।

विशेष—किशनदास तथा धानतराय के पद हैं ।

६५०. पद संग्रह—ब्रह्मदयाल । पत्र संख्या-८ । साइज-४ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-  
स्तवन । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६१ ।

६५१. पद संग्रह . . . . . । पत्र संख्या-१ । साइज-१४×२७ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन ।  
रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६७ ।

विशेष—लंबा पत्र है ।

६५२. पद संग्रह . . . . . । पत्र संख्या-१७ । साइज-६ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन ।  
रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६८ ।

६५३. पद संग्रह . . . . . । पत्र संख्या-३५ । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन ।  
लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १११७ ।

६५४. पद संग्रह . . . . . । पत्र संख्या-१४ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन ।  
लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १११४ ।

६५५. पद्मावती अष्टक श्रुति . . . . . । पत्र संख्या-१६ । साइज-१२×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६३ ।

विशेष—स्तोत्र संस्कृत टीका सहित है ।

६५६. पद्मावतीस्तोत्र . . . . . । पत्र संख्या-६ । साइज-८ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-  
स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५४ ।

६५७. पद्मावतीस्तोत्र । पत्र संख्या-४ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र ।  
रचना काल-× । लेखन काल-स० १७०७ । पूर्ण । वेष्टन न० १०६७ ।

६५८. पंचमंगल—रूपचन्द्र । पत्र संख्या-२ से १२ । साइज-६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-  
स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६६२ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६५९. पार्श्वनाथ स्तोत्र । पत्र संख्या-१० । साइज-८×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-  
स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५५४ ।

६६०. पार्श्व लघु पाठ । पत्र संख्या-३ । साइज-१०×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-  
स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०५६ ।

६६१. बडा दर्शन । पत्र संख्या-६ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-  
स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५०७ ।

विशेष—पत्र ३ से आगे रूपचन्द्र कृत पंच मंगल पाठ हैं ।

६६२. विनती समग्र । पत्र संख्या-५ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र ।  
रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ११३५ ।

६६३. विनती—किशनसिंह । पत्र संख्या-१ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र ।  
रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०१५ ।

६६४. भक्तामर स्तोत्र—मानतुंगाचार्य । पत्र संख्या-१२ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६७४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४८६ ।

विशेष—१० प्रतियां और हैं ।

६६५. भक्तामरस्तोत्र भाषा—हेमराज । पत्र संख्या-१० । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी ।  
विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५२५ ।

६६६. भक्तामर स्तोत्र सटीक—मानतुंगाचार्य टीकाकार । पत्र संख्या-४ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचनाकाल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २६६ ।

विशेष—श्वेताम्बरीय टीका है, ४४ पद्य हैं तथा टीका हिन्दी में है ।

एक प्रति और है जिसमें मंत्र आदि भी दिये हुए हैं

६६७. भक्तामर स्तोत्र टीका" . . . . . । पत्र संख्या-१२ । साइज-८ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इच । मापा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ६४६ ।

विशेष—१० से आगे पत्र नहीं है ।

६६८. भक्तामरस्तोत्रवृत्ति—प्रहारायमल्ल । पत्र संख्या-४५ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$  इच्च । मापा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-स० १६६७ अषाढ सुदी ५ । लेखन काल-स० १६८२ । पूर्ण । वेष्टन न० ६४७ ।

विशेष—आचार्य भुवनकीर्ति के लिए चारपुर में लालचन्द ने यह पुस्तक प्रदान की ।

६६९. भूपालचतुर्विंशति—भूपाल कवि । पत्र संख्या-६ । साइज-१०×४ इच्च । मापा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २८२ ।

विशेष—१ प्रति और है ।

६७०. भगलाष्टक . . . . . । पत्र संख्या-२ । साइज-१३×४ $\frac{३}{४}$  इच्च । मापा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ११४५ ।

६७१. लघु सामायिक पाठ . . . . . । पत्र संख्या-१ । साइज-१०×५ इच्च । मापा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०४४ ।

६७२. लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मनदि । पत्र संख्या-२ । साइज-९×५ इच्च । मापा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ११२१ ।

६७३. विपापहारस्तोत्र—धनंजय । पत्र संख्या-६ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$  इच्च । मापा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २६६ ।

विशेष—तीन प्रतियाँ और हैं, जिनमें एक संस्कृत टीका सहित है ।

६७४. विपापहारस्तोत्र भाषा—अचलकीर्ति । पत्र संख्या-५ । साइज-८×४ $\frac{३}{४}$  इच्च । मापा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५४४ ।

६७५. बृहद्शान्ति स्तोत्र . . . . . । पत्र संख्या-१४ । साइज-१०×४ इच्च । मापा-संस्कृत प्राकृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३०१ ।

विशेष—प्रारम्भ में भयहार स्तोत्र, अजित शान्ति स्तोत्र, व भक्तामर स्तोत्र है ।

६७६. वीरतपसज्जमाय" . . . . . । पत्र संख्या-२ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$  इच्च । मापा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०५८ ।

भाषा गुजराती है । ६५ पद्य है

प्रारम्भ में ३४ पद्य में कुमति निघटिन श्रीमधर जिनस्तवन है।

६७७. शान्तिस्तवनस्तोत्र । पत्र संख्या-३ । साइज-८३×४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५३ ।

६७८. सरस्वतीस्तोत्र—विरंचि । पत्र संख्या-२ । साइज-१०×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२६ ।

विशेष—सारस्वत स्तोत्र नाम दिया हुआ है । ब्रह्मांड पुराण के उत्तर खंड का पाठ है ।

६७९. स्तोत्र पाठ संग्रह । पत्र संख्या-८० । साइज-११×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०० ।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है—

(१) निर्वाण काण्ड	—
(२) तन्त्रार्थ सूत्र	उमास्वामि
(३) भक्ततामर स्तोत्र	मानतु गाचार्य
(४) लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव
(५) जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य
(६) मृत्यु महीत्सव	—
(७) द्रव्य संग्रह गाथा	नेमिचन्द्राचार्य
(८) विषापहार स्तोत्र	धनजय

६८०. स्तोत्र संग्रह । पत्र संख्या-२१ से ६५ । साइज-११×५३ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-स्तोत्र । लेखन काल-सं० १६२६ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६२४ ।

६ स्तोत्रों का संग्रह है ।

६८१ स्तोत्र । पत्र संख्या-८ । साइज-१२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७२ ।

विशेष—अक्षर मोटे हैं तथा प्रति प्राचीन है ।

६८२. स्वयंभूस्तोत्र—समंतभद्र । पत्र संख्या-४ । साइज-११×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० २६७ ।

विशेष—विसर्जन पाठ भी है । दो प्रतियां धौर हैं ।



६८३ समतभद्रस्तुति ( बृहद् स्वयम्भू स्तोत्र )—समतभद्र । पत्र संख्या-१४ । साइज-११५×५३ इक्ष । मापा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २१४ ।

६८४ साधु वचना । पत्र संख्या-८ । साइज-१०३×४ इक्ष मापा-हिन्दी ; विषय-स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७६१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०७३ ।

६८५ सामायिक पाठ । पत्र संख्या-२९ । साइज-७×५ इक्ष । मापा-प्राकृत-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४ ।

विशेष—गुटका साइज है तथा निम्न समूह और है

निरजन स्तोत्र—पत्र संख्या ३

सामायिक—पत्र संख्या

चौबीस तीर्थकर स्तुति—पत्र संख्या-२४ से २५

निर्वाण काण्ड गाथा—पत्र संख्या-२७ से २८

६८६. सामायिक पाठ । पत्र संख्या-६१ । साइज-११×४ इक्ष । मापा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-पौष वदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० १४८ ।

विशेष—जोशी श्रीपति ने प्रतिलिपि की थी ।

६८७. सामायिक पाठ मापा-त्रिलोकेश्वरी । पत्र संख्या-६४ । साइज-६×५ इक्ष । मापा-हिन्दी विषय-स्तोत्र । रचना काल-स० १८३२ वैशाख शुदी १८ । लेखन काल-स० १८४४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८२० ।

ग्राम्म—श्री जिन वदों भाव धरि जा प्रमाद शिव बोध ।

जिन वाणी धरु जैन गुह वदों मान निरोध ॥

सामायिक टीका करी प्रमावद मुनिराज ।

संस्कृत वाणी जो निपुण ताहि के वो काज ॥२॥

जो व्याकरण बिना लहे सामायिक को अर्थ ।

सो मापा टीका करु अल्पमती जन अर्थ ॥३॥

अन्तिम—घटरासे और वत्तीस संवत् जाणो विमवा वीम ।

मास मली वैशाख वस्त्राण किमन पद्म चोदसि तिथि जाण ॥

शुक्रवार शुभ वेला योग पुर अजमेर वमै मवि लोण ।

मूल सघ नघाम्नाय बलात्कार गण है सुखदाय ॥

गच्छ सरदा अन्वयसार कुन्दकुन्द मुनिराज विचार ।

श्री भट्टारक कीर्ति निधान विजयकीर्ति नामै गुण खान ॥  
तिन इह भाषा टीका करी प्रमाचन्द टीका अनुसरी ।

दोहा—संस्कृत शब्द नहीं लिख्यौ सब धानक इण माहि ।  
किहौ किहा लिखियो काठन घण्टी वधाई नाहि ॥  
यू मावारथ सूचिनी इह टीका को नाम ।  
जाणों बांचो उर घरो ज्युं सीभै शिव काम ॥  
प्रमाचन्द की मति कहां किहां हमारी बुद्धि ।  
रवि की कान्ति किहौ किहां अर दीपक की शुद्धि ॥  
पै हम मति माफिक करी इण में अर्थ विरुद्ध ।  
जो प्रमाद बस होय सो सुमति कीजिये शुद्ध ॥

सोरठा—भाषा टीका एह कीई जिनेसर मक्ति बसि ।  
जो चाहो शिव गेह इण को पाठ करो सदा ॥६॥

इति श्रीमद्भट्टारक श्री तिलोकेन्द्रकीर्ति विरचिता सामायिक टीका भावार्थसूचिनी नाम्नी सिद्धमगमत् ।

गद्य का उदाहरण—मलो है पार्श्व कहता सामधि जैह को औसा हे सुपार्श्वनाथ भगवन् आप जय जय कहता बार बार जयवता रहो ।  
आपनै म्हारौ बारवार नमस्कार होवो । ( पत्र ३८ )

६८८. सामायिक वचनिका—जयचन्द छावड़ा । पत्र सख्या-६० । साइज-१२×६ ३/४ इंच । भाषा-  
हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४०५ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६८९. सिद्धिप्रियस्तोत्र—देवनन्दि । पत्र सख्या-३ । साइज-११×५ ३/४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-  
स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५६ ।

विशेष—तीन प्रतियाँ और हैं जिसमें एक हिन्दी टीका सहित है ।



## विषय-संग्रह

६६०. गुटका न० १। पत्र संख्या-१४४। साइज-१०×७ इंच। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। लेखन

काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ३१८।

मुख्यतया निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय सूची <sup>०</sup>	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
षट्पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	—
धाराधनासार	देवसेन	”	—
तन्त्रसार	देवसेन	”	—
समाधि शतक	पूज्यपाद	संस्कृत	—
त्रिसगीसार	नेमिचन्द्र	प्राकृत	—
श्रावकाचार दोहा	लक्ष्मीचन्द्र	”	—

६६१. गुटका न० २। पत्र संख्या-१२६। साइज-८ $\frac{1}{2}$ ×६ इंच। भाषा-प्राकृत-संस्कृत। लेखन

काल-स० १=१५ माघ सुदी ५। पूर्ण। वेष्टन न० ३१६।

विशेष—पूजा पाठ तथा सिंदूरप्रकरण आदि का संग्रह है। करौली में पाठ संग्रह किये गये थे। श्री राजाराम के पुत्र मौजीराम लुहाडिया ने प्रति लिखवाई थी।

६६२. गुटका न० ३। पत्र संख्या-६८। साइज-६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-चर्चा। लेखन

काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ३६०।

विशेष - धार्मिक चर्चाओं का संग्रह है।

६६३ गुटका नं० ४। पत्र संख्या-१६६। साइज-८ $\frac{1}{2}$ ×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-सिद्धान्त।

लेखन काल-×। अपूर्ण। वेष्टन न० ३७३।

विशेष—अष्टकर्म-प्रकृति वर्णन तथा तीनलोक वर्णन है।

६६४ गुटका न० ५। पत्र संख्या-१८१। साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×७ इंच। भाषा-हिन्दी-संस्कृत। लेखन

काल-स० १=६५। पूर्ण। वेष्टन न० ४३३।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
पार्श्व पुराण	मूधरदास	हिन्दी	पत्र १-७२
चौबीस तीर्थ कर पूजा	रामचन्द्र	"	७३-१२६
देवसिद्धपूजा एव	—	हिन्दी	१२६-१८१
अन्य पाठ संग्रह	—	"	

६६५. गुटका नं० ६ । पत्र संख्या-१५२ । साहज-७×६ ३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । रचना काल-× ।  
लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३७ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
चाणक्य नीति शास्त्र	चाणक्य	संस्कृत	×
वृन्दविनोद सतसई	वृन्द	हिन्दी	७१० पद्य हैं ।
विहारी सतसई	विहारी	हिन्दी	७०६ पद्य हैं ।
कोकसार	आनंद कवि	हिन्दी	४४४ पद्य हैं ।

६६६. गुटका नं० ७ । पत्र संख्या-१५२ । साहज-६ १/२×६ ३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन  
काल-सं० १७६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

मत्तामर आदि पञ्च स्तोत्र	—	संस्कृत
तत्त्वार्थ सूत्र	उमास्वाति	"
सुदर्शनरास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी
भविष्यदत्त चौपई	"	"

६६७. गुटका नं० ८ । पत्र संख्या-१८७ । साहज-८ ३/४×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन  
काल-सं० १७२७ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४८ ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है—

प्रवचनसार भाषा	हेमराज	हिन्दी	
पद	रूपचन्द्र	"	
परमार्थ दोहा शतक	"	"	लेखन काल १७२६
पञ्च भगल	"	"	

भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	”	
चिन्तामणि मान ब्रावणी	मनोहर कवि	”	२० पद्य है । अपूर्ण
कलियुग चरित	—	”	१० पद्य हैं ।

६६८, गुटका नं० ६ । पत्र संख्या-१३८ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८१२ पूर्ण । वेष्टन नं० ४४६ ।

विशेष—सामायिक पाठ हिन्दी टीका सहित तथा अन्य पाठों का संग्रह है ।

६६६ गुटका नं० १० । पत्र संख्या-४४ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८८४ अपाठ सुदी ८ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४५० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

७००, गुटका नं० ११ । पत्र संख्या-२६४ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी-प्राकृत । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५१ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंग	संस्कृत	—
कल्याणमदिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	”	—
कर्मकाण्ड गाथा	नेमिचन्द्र	प्राकृत	—
द्रव्यसंग्रह गाथा	”	”	—
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वाति	संस्कृत	—
नमः माला	—	”	—
चौरासी बोल	हेमराज	हिन्दी	—
निर्वाण काण्ड	—	प्राकृत	—
स्वयंभू स्तोत्र	समतमद्र	संस्कृत	—
परमानन्द स्तोत्र	—	”	—
दर्शन पाठ	—	”	—
वरुणाष्टक	—	”	—
पार्श्वस्तोत्र	पद्मप्रमदेव	”	—
पार्श्वेस्तोत्र	—	”	—
चौबीस तीर्थकर पूजा	रामचंद्र	हिन्दी	—
पूजा संग्रह	—	” संस्कृत	—

स्तुति

हिन्दी

पदसंग्रह—रूपचन्द्र, दीपचन्द्र, टेकचन्द्र, हर्षचन्द्र, धर्मदास, मूधरदास और बनारसीदास आदि कवियों के हैं ।

७०१. गुटका नं० १२ । पत्र सख्या-७२ । साइज-१०×७ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । रचना काल-X ।

लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० ४८६ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

७०२. गुटका नं० १३ । पत्र सख्या-६४ । साइज-६×६ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-स०

१८४२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५८८ ।

विशेष—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
चौबीस ठाणा चर्चा	—	हिन्दी	
कुद्रेत्र स्वरूप वर्णन	—	"	
मोक्षपैठी	बनारसीदास	"	

७०३. गुटका नं० १४ । पत्र सख्या-४३ । साइज-७×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।

अपूर्ण । वेष्टन नं० ५८६ ।

विशेष—पूजा संग्रह, कल्याणमन्दिर स्तोत्र समयसार नाटक भाषा-(बनारसीदास) आदि पाठों का संग्रह है ।

७०४. गुटका नं० १५ । पत्र सख्या-२६२ । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-स० १७५६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३५ ।

सूची	कर्त्ता का नाम	पत्र	भाषा	विशेष
श्रीपात्तरास	ब्रह्मरायमल्ल	१-२६	हिन्दी	रचनाकाल १६३० आषाढ सुदी १३
प्रद्युम्नरास	"	२६-४४	"	१६२८ मादवा सुदी २
नेमीश्वररास	"	४४-५६	"	१६१५ आषाढ सुदी १३
सुदर्शनरास	"	५६-७६	"	१६२६ वैशाख सुदी ७
शीलरास	विजयदेव सूरि	७६-८८	"	—
घठारह नाता का वर्णन लोहट		८८-९२	"	—
धर्मरास	—	९२-११४	"	—
रविवार की कथा	माऊ कवि	१०४-११३	"	—
अध्यात्म दोहा	रूपचन्द्र	११३-११७	"	१०३ दोहे हैं ।

सीताचरित्र	कविबालक	११७-२३७	”	—
पुरन्दर चौपई	मालदेव सूरि	०३७-२५६	”	लेखनकाल १७५६
योगसार	योगचन्द्र	२५७-२६२	”	—

७०५. गुटका नं० १६ । पत्र संख्या-३७६ । साइज-६×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३१ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

जिनसहस्रनाम पूजा	धर्मभूषण	संस्कृत	पत्र १-१५६
समवशरण पूजा	लालचंद		
	विनोदीलाल	हिन्दी	१५७-३७६
			रचना काल-१=३४

७०६. गुटका नं० १७ । पत्र संख्या-२० से ४१० । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६३६ ।

मुख्य पाठों का संग्रह निम्न प्रकार है—

रचना का नाम	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
पथीगीत	झीहल	हिन्दी	
परमात्म प्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	
वनारसी विलास के कुछ अंश	वनारसीदास	हिन्दी	
सीताचरित्र	कवि बालक	”	रचना काल १७१३
पद संग्रह	—	”	विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है
मांगी तु गीतीर्थ वर्णन	परिखाराम	”	
दोहा शतक	हेमराज	”	अध्यात्म, २० का० सं० १७२५ कार्तिक सुदी ६, १०१ पद्य हैं ।
दोहा शतक	रुपचन्द्र	”	अध्यात्म १०२ पद्य हैं ।
सिन्दूर प्रकरण	वनारसीदास	”	
भक्तामर स्तोत्र टीका	अख्यराज श्रीमाल	”	स्तोत्र अंतिम पद्य हेमराज कृत है ।
सवोध पचासिका	त्रिभुवनचंद	”	
अणुव्रत की जखड़ी	—	”	
अकृत्रिम चैत्यालय की	जयमाल	”	
पद—चेतन यो घर नार्हीं तेरो	मनराम	”	

पद—जिय तैं नर भवि यों ही खोयो	मनरास	हिन्दी	
रोगापहार स्तोत्र	"	"	
पद—सुख घडी कब आवली नहीं हो हर्षकीर्ति		"	१२ अतरे हैं ।
ससार मभार—			

७०७. गुटका नं० १८ । पत्र संख्या—१६४ । साइज—७×६ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।

पूर्ण । वेष्टन न० ६३७ ।

विषय—सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा	चनारसीदास	हिन्दी	—
भक्तामर भाषा	हेमराज	"	—
कर्म बत्तीसी	अचलकीर्ति	"	१० का० १७७७ पाना नगर में रचना की गयी थी ।
ज्ञान पञ्चीसी	चनारसीदास	"	—
मेघ कुमार गीत	पूनी	"	—
सिन्दूर प्रकरण	चनारसीदास	"	—
चनारमी विलास के पद एवं पाठ	"	"	—
जम्बूस्वामी पूजा	पाडे जिनराय	"	ले० का० १७४६ पौष सुदी १०

विशेष—जबलपुर में प्रतिलिपि की गई थी ।

विशेष—१२० पत्र से आगे की लिपि पढ़ने में नहीं आता ।

७०८ गुटका नं० १९ । पत्र संख्या—२० । साइज—२×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण ।

वेष्टन न० ८०४ ।

विशेष—जीवों की संख्या का वर्णन है ।

७०९ गुटका नं० २० । पत्र संख्या—१३५ । साइज—६½×१० इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—सं० १७८८ ।

पूर्ण । वेष्टन न० ८३८ ।

सिम्न पाठों का संग्रह है—

समयसार नाटक	चनारसीदास	हिन्दी	रचना काल सं० १६६१
चनारसी विलास	"	"	—
कर्म प्रकृति वर्णन	"	"	—



७१० गुटका न० २१ । पत्र संख्या-२४१ । साइज ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-सं० १८१७ माघ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८५८ ।

निम्न पाठों का संग्रह है ।

चौदह मार्गणा चर्चा	—	हिन्दी	विशेष
स्वर्ग नर्क और मोक्ष का वर्णन	—	”	
अंतर काल का वर्णन	—	”	
जिन सहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	

७११. गुटका न० २२ । पत्र संख्या-३१ । साइज-६ $\frac{1}{2}$ ×७ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६५ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

७१२. गुटका न० २३ । पत्र संख्या-१२ । साइज-८×५ $\frac{1}{2}$  इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८६४ ।

विशेष—सम्मेद शिखर पूजा एवं रामचन्द्र कृत समुच्चय चौबीसी पूजा संग्रह है ।

७१३. गुटका न० २४ । पत्र संख्या-३४ । साइज-६ $\frac{1}{2}$ ×८ $\frac{1}{2}$  इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८७० ।

विशेष—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा
दशलक्षण जयमाल	—	हिन्दी
मोक्ष पैठी	भनारसीदास	”
सबोध पचासिका	धानत	”
पंचमंगल	रुपचन्द्र	”
पद	परमानन्द	”
योगसार	योगीन्द्र देव	अपभ्रंश

७१४. गुटका न० २५ । पत्र संख्या-२५३ । साइज-६×५ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत-प्राकृत । विषय-संग्रह । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७१ ।

विशेष—गुटके में लगभग ३३ से अधिक पाठों का संग्रह है जिनमें मुख्य निम्न पाठ है—

नाम अथ	कर्ता	भाषा	विशेष
नेमीश्वर जयमाल	मडारी नेमचंद	अपभ्रंश	पत्र १५
गीत	बूचा	हिन्दी	पद्य ४
नेमीश्वर गीत	वीन्हव	हिन्दी	पत्र २०
शातिनाथ स्तोत्र	गुरुमद्र	संस्कृत	सरल संस्कृत में है।
} गुरुमद्र की जगह गुणमद्र भी नाम मिलता है। स्तोत्र सुन्दर हैं।			
जिनवरस्वामी बीनती	सुभतकीर्ति	हिन्दी	
मुनिपुत्रताउपेक्षा	प० योगदेव	अपभ्रंश	
हसा भावना	ब्रह्म अजित	हिन्दी	पत्र १६० तक कुल ३७ पद्य हैं
भेष कुमार गीत	पूनो	हिन्दी	पत्र २१४
जोगीरासा	जिणदास	"	"
ग्यारह प्रतिमात्रणन	नि कनकामर	"	२१६
पद—रेमन काहे के मूलि रखो	झीहल	"	२१६
विपया वन भाये			४ पद्य हैं
नेमिराजमति बेलि	ठक्कुसी	"	२२६
जिण लाहू गीत	ब्रह्मराइमल	"	२२६
पचेद्रिय बोल	ठक्कुसी	"	२२७
सां मनोरथमाला	साह अचल	"	२२३
विच्छुचर अणुपेहा	—	अपभ्रंश	२१०
भरतेश्वर वैराग्य	—	"	२४१
रोष ( क्रोध ) वर्णन	गोगम	"	२४२
आदित्यवार कथा	मारु	हिन्दी	—
पट्टावलि मद्रवाहु से पञ्चनदि तक	—	संस्कृत	—

७१५ गुटका न० २६। पत्र संख्या—२७६। साइज—५५ इंच। भाषा—हिन्दी। लेखन काल—स० १७१८। पूर्ण। वेष्टन न० ६७२।

विषय सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
पंचमगतिवेलि	हर्षकीर्ति	हिन्दी	रचना काल—म० १६८३। लेखन काल स० १७५४। मधुपुरा में ब्रह्ममल ने प्रतिलिपि की थी। अतः इसका नाम चहुँगतिवेलि भी दिया है।

समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी	रचना काल सं० १६६३ । ने वा. सं० १७५४ ।
वृष्ण रूपमणी केलि	पृथ्वीराज राटौंड	हिन्दी	रचना काल सं० १६५४ । ले० काल सं० १५५४ ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

३ नुसखे — हिन्दी

(१) शिलाजीत शुद्ध करने की विधि ।

(२) फोड़े फु सियों की औषध ।

(३) घोड़ा कें जहनाद' रोग की औषध ।

सिद्धरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी	रचना काल सं० १६६१ लेखन सं० १७१२ ।
--------------	-----------	--------	--------------------------------------

विशेष—राजभिह ने मधुपुरा में प्रतिलिपि की थी ।

७१६. गुटका नः २७ । पत्र मरुया—३८६ । सांज—११×६ इंच । मापा—हिं दी प्राकृत । पूर्ण । वेष्टन

नं० ६७३ ।

क्रिय-सूची	करी	मापा	विशेष
आराधनासार	नवसेन	प्राकृत	११२ गाथा है ।
सबोधपंचासिका	"	"	१० "
परमात्मप्रकाश दोहा	योगी प्रदीप	अपभ्रंश	३४१ "
योगसार	"	"	१०८ पद्य है ।
सुष्य दोहा	—	प्राकृत	७६ "
द्वादशातुप्रेक्षा	सदमीच द	"	८७ "
नयमाला ६ ग्रह	—	"	—
समयसार	बनारसीदास	हिन्दी	—
बना साविलस	"	"	ले० का० सं० १७०३ मगसिर बुदी ६
त्रिलोकसार चौपाई	सुम तिकीरि	"	रचनाकाल सं० १६२७

प्रारम्भ—सुमतिनाथ पंचमी जिनराय । सरसति सदयुर संवत्पाय ॥

त्रिलोकमार चौपाई कह्यु । तेहि विचार सुषी तन्हें सह्यु ॥॥

अलोककास माहि छै लोक । अधोमध्य उह्य छै योक ॥

इ द्रव्ये मयी लोककास । अलोक माहि केवल आकाम ॥॥

घन घनोदधि तनु आधार । घातें वेधै त्रिणि प्रकार ॥  
छाल वेद्यौ तर वर जेम । लोकाकास कहै छ जेम ॥३॥

अ' तम—श्री मूलसध शुक्र लक्ष्मीचन्द । सास पाटि धीरचन्द मुण्दिद ॥  
ज्ञानभूषण तसु पाटि चंग । प्रमाचद धादो मनरेग ॥५७॥  
सुमतिकीर्त्ति सरोवर कहिसार । त्रिलोकसार धर्म ध्यान विचार ॥  
जे मणै गुणै ते सुखिय थाय । रयण भूषण धरि मुगति जाई ॥५८॥  
धीर वदन विनिगते बाक । सुणता पायि ससारा चाक ॥  
भावक जन सबि ज्यौ जोय । सुमतिकीर्त्ति सुख सागर होय ॥५९॥  
सिंहपुरी वंसी शृंगार । दान सोल तप भावन अपार ॥  
साहता माइ सिंघाधिपसार । कुञ्जरजी कुयेर अर दातार ॥६०॥  
सवत सोलनि ससावीस । भाष शुक्ल नै वारसि दिस ॥  
कोदादी रचिये ए सार । मवि भगत भावो भाभार ॥६१॥

इति श्री त्रिलोकसार धर्मध्यान विचार चउपई वद्ध रासा समाप्ता ।

मान बावनी	मनोहर	हिंदी	१२ पद्य हैं ।
लघु बावनी	”	”	”
जोगी रासो	जिणदास	”	४० पद्य हैं ।
द्वादशानुप्रेक्षा	—	”	—
निर्वाण कांड गाथा	—	प्राकृत	—
द्वादशानुप्रेक्षा	श्रीधू	हिन्दी	—
चेतन गीत	जिणदास	”	५ पद्य हैं ।
उदर गीत	धीहल	”	४ पद्य हैं ।
दंभी गीत	”	”	६ पद्य हैं ।
पंचेद्रिय नेलि	ठकुरसी	”	रचना काल स० १५८५ कार्तिक सुदी १३
थिरचर जखडी	जिणदास	”	
गुण गाथा गीत	नरझ वद्धमान	”	१७ पद्य
जखडी	रूपचन्द	”	—
परमार्थ गीत	”	”	—
जखडी	दरिगाह	”	—
दीहा शतक	रूपचन्द	”	१०१ पद्य हैं ।

सुदर्शन जयमाल	—	प्रास्त	—
दशार्थ जयमाल	—	,	—
मेघकुमार गीत	पूनी	हिंदा	०१ पद्य
पंच कल्याणक पाठ	रूपचन्द्र	”	—
द्वादशालुप्तैवा	—	”	—

७१७ गुटका न० २८ । पत्र सख्या-२६० । साहज-६३×६३ इक्ष । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८०३ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न० ६७४ ।

विशेष—पूजाश्रौं तथा पदों का गृह्य समग्र है । बनारसीदास दृष्ट मन्त्रा मीं है जो अज्ञात रचना है ।

७१८. गुटका न० २९ । पत्र सख्या-२७ । साहज ६३×५३ इक्ष । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८४१ । अपूर्ण । वेष्टन न० ६७६ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा
पद	जगजोवन	हिन्दी
नेमिनाथ का व्याहला	नाथ	”
निर्वाण काण्ड भाषा	भगवतीदास	”
पद	मनराम	”
साधुश्रौं के आहार के समय ४६ दोषों का वर्णन	भगवतीदास	रचना काल सं० १७१०

विशेष सतीप राम अजमेरा सांगानेर वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

७१९. गुटका न० ३० । पत्र सख्या-२५१ । साहज-८×६ इक्ष । भाषा-हिन्दी । लेखन काल- $\times$  । पूर्ण । वेष्टन न० ६७७ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
समयसार	बनारसीदास	हिंदा	
बनारसी विलास	”	”	
पंचमगल	रूपचन्द्र	”	
योगी रासी	जिणदास	”	

७२० गुटका न० ३१ । पत्र सख्या-७५ । साहज-१०३×७ इक्ष । भाषा-हिन्दी ( पद्य ) । लेखन काल- $\times$  । पूर्ण । वेष्टन न० ६८६ ।

विषय—सूची	कर्ता का नाम	पत्र संख्या
वार्षिक प्रिया	कवि सुखदेव	१-१७ रचना काल सं० १७६० लेखन काल सं० १६६५

विशेष—इसमें ३२१ पद्य हैं । व्यापार सम्बन्धी बातों का वर्णन किया गया है ।

रुनेहसागर लीला	वक्ती हंसराज	१८ से ७०
----------------	--------------	----------

विशेष—वार्षिक प्रिया का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—सिध श्री गनेसाय नमः श्री सरसते नमः जातुकी बलमाइ नमः अथा लिखते वनक प्रिया ॥

चौपई—गुर गने [ स ] कहै सुखदेव, श्री सरसती वतायो मेव ।

वनिक प्रिया वनिक वाच्यौ, दिया उजियार हाथ कै द्यौ ॥१॥

दोहा—गोला पूरव पच विसे वारि विहारीदास ।

तिनके सुत सुखदेव कहि, वनिक प्रिया प्रकास ॥२॥

वनिकनि को वनिक पिया, भडसारि कौ हेत ॥

आदि अत श्रोता सुनो, मतो मत्र सौ देत ॥३॥

माह मास कातक करे, संवतु सौधे साठ ।

मते याह के जो चले कवहू न आवै घाट ॥४॥

चौपई—फायुन देव दलशु आइयौ सकल वस्तु सुरपति चाह्यौ ॥

चार मास इहिरेहै आइ पुन पताल सूता हो जाइ ॥५॥

मध्य भाग—अथा जेठ वस्तु लीत्रे को विचार ।

दोहा—तीन लोक दमऊ दिसा, सुरनर एक विचार ।

जेठै वस्तु विक्रात है पावस की दरकार ॥१४०॥

घटै घटी सो घटि गई, वस्तु वैच पतकार ।

विक्री कौ दिन वाहरौ कीजे वाच विचार ॥१४१॥

जेठी विक्री जेठ की सब जेठन मिल माख ।

सकल वस्तु पानी मई जौ पानी लौ राख ॥१४२॥

चौपई—ग्रीष्म ऋतु वरसै लछिमी वैच वस्तु न आवै कमी ।

यहि मत जौ न मान है कौइ, वीधै सारै व्याज गये सोइ ॥१४३॥

जेठै वस्तु न धरिये धाइ, अपनै होइ तौ बेचो जाइ ।

साहु सन्हारै रहियौ वाकी, जलके वरसै दुलभ गहकी ॥१४४॥

अन्तिम भाग—

दोहा—देखीं सुनी सो मै कही, मत्रा जो मति मान ।

जानी जाति जो न सब को धागै की जान ॥३१७॥

चौपई — मती हथियाक हाथ लै जोर, साहु सुमजन करत कष्ट मोर ।

मारगहान हर मन मानियों, दिल कुसाट हरष न वानियों ॥३१८॥

कवि सोधे संवत्सर साठ, इह मत चलै परै नहि घाट ।

इहि मति अन्तु पेट भर खाई, एही चीरन को पहराई ॥३१९॥

दोहा—वनक प्रिया मैं सुम असुम सबही गयो चताइ ।

जिहि जैसी नीकी लगै तैसी की जो जाइ ॥३२०॥

सत्रह सै सत्रह वरस सवत्सर के नाम ।

कवि करता सुखदेव कह लेखक मायाराम ॥३२१॥

इति वनिक प्रिया सपूर्ण समाप्ता ।

मादौ सुदी १२ शुक्रवासरे १० १८५५ मृकाम छिरारी लिखत लाला उदैतसिध राजमान छिरारी वारे जो वाचै वाको राम राम ।

दोहा—लिखी जथा प्रत देखकें कहि उदेत प्रधान ।

जो वाचै श्रवननि सुनै ताको मोर प्रनाम ॥

७२१ गुटका नं० ३२ । पत्र संख्या—१६८ । साइज—६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी—संस्कृत—प्राकृत ।

लेखन काल—X । पूर्ण । वेन्टन न० ६८७ ।

विषय—सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
सधु सहस्रनाम	—	संस्कृत	पूर्ण
योगीरासी	जिणदास	हिन्दी	”
कल्याणमन्दिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	”
” भाषा	—	हिन्दी	अपूर्ण
वैराग्य गीत	देवीदास नन्दन गणि	”	पूर्णा
पद संग्रह	जिणदास	”	” जेठ चदी १३
			सं० १६७१ में लाहौर में रचना तथा लिपि हुई ।
द्रव्य संग्रह	धा० मेसिचन्द्र	प्राकृत	”
			लेखन काल सं० १६६६
द्वादशानुशेखा	—	प्राचीन हिन्दी	

धर्मतरुगीत	जिणदत्त	हिन्दी	पूर्ण
( भव तरु सौंचै हो मालिया	.. )		
पद	रूपचन्द	हिन्दी	”
( जिय पर सौं कत प्रीति करीरे )			
पद संग्रह			
आदिनाथजी की आरती	बालचन्द	हिन्दी	”
			लेखन काल १७६६
नेमिनाथ मगल	—	हिन्दी	”
बीस तीर्थकरों की जयमाल	—	”	”

विशेष—“पद संग्रह जिणदत्त” का नाम “जिणदत्त विलास” भी दिया है ।

७२२. गुटका नं० ३३ । पत्र संख्या-४१ । साइज-३×३ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।  
पूर्ण । वेष्टन नं० ६८८ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा
जिनदर्शन	—	संस्कृत
संबोध पंचासिका	धानतराय	हिन्दी
पंच मगल	रूपचन्द	”

७२३. गुटका नं० ३४ । पत्र संख्या-७ । साइज-४×६ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-X ।  
अपूर्ण । वेष्टन नं० ६८९ ।

विशेष—नित्य पूजा का संग्रह है ।

७२४. गुटका नं० ३५ । पत्र संख्या-२१ । साइज-६×५ ३/४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।  
अपूर्ण । वेष्टन नं० ६९४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

७२५. गुटका नं० ३६ । पत्र संख्या-४६ । साइज-४×४ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-  
सं० ३७३६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६९५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

संबोध पंचासिका	गोतम स्वामी	प्राकृत	संस्कृत टीका सहित है ।
पृथ्वीमाव स्तोत्र	बादिराज	संस्कृत	”



७२६. गुटका नं० ३७ । पत्र संख्या-१८८ । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।  
अपूर्ण । वेष्टन नं० १००१ ।

विशेष—केवल पूजाओं का संग्रह है ।

७२७. गुटका नं० ३८ । पत्र संख्या-१४० । [साइज-७ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-  
सं० १८२३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १००२ ।

ग्रन्थ-नाम	कर्ता का नाम	भाषा	२० का० सं०	ले० का०	विशेष
यशोधर चरित्र भाषा	सुरालचन्द्र	हिन्दी	१७६१	सं० १८२३	
विशेष—छीतरमल सेठी ने प्रतिलिपि की ।					
चौबीस तीर्थंकरों के नांव गांव वर्णन		हिन्दी	—	सं० १८२३	
विशेष—नरहेड़ा में प्रतिलिपि हुई ।					
पटू द्रव्य चर्चा	—	हिन्दी	—	सं० १८२३	
विशेष—छीतरमल सेठी ने नरहेड़ा में प्रतिलिपि की ।					
तीन लोक के चैत्यालयों का वर्णन	—	हिन्दी	—	—	
निश्चय व्यवहार दर्शन	—	”	—	सं० १८२३	
विशेष—छीतरमल सेठी वासी लूण्टका ने लाडखार्यों के रामगढ में खेतसी काला की पुस्तक से उतारी ।					
कविता पृथ्वीराज चौहाणका	—	हिन्दी	—	—	

महाराज प्रथीराज लेण परधान पठायो ।

लेण काजि लाखीक वडम चवाण सवायो ॥

दाहिर्मेक वासि लाख अखु मालिन लीना ।

देखि स्यंघ गाढरी कोट का आरम्भ कीना ॥

ग्यारा सौ पंदरोत्तरै गढ नागौर अजीत गिर ।

सुम लगन तीज वैसाख सुदि नीव देय थाप्यो नगर ॥

ऐसी अष्ट उपासना खान पान पैरान ।

ऐसा जो मिलियो सही तो मिलिन वो प्रमाणा ॥

वपापहार भाषा	अचलकीर्ति	हिन्दी	रचना काल १७१५
			नारनौल में रचना हुई ।
भक्तामर भाषा	—	”	
इल्याण मन्दिर भाषा	बनारसीदास	”	सं० १८२३

विशेष—छीतरमल सेठी ने लिखा ।

पाशाकेवली ( श्रवजद केवली )	—	हिन्दी	—
पुण्याश्रवकथाकोश	किशनसिंह	"	रचनाकाल सं० १७७३
सम्यक्तत्वकौमुदीकथा	नोधराज गोदीका	"	—

७२८ गुटका न० ३६ । पत्र संख्या-५१ । साइज-६×६ ३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १००३ ।

विशेष—पत्र २६ तक रुपचन्द्र के पदों का संग्रह है इसके आगे जगताराम तथा रुपचन्द्र दोनों के पद हैं । करीब २०० पद एवं मजनों का संग्रह है ।

७२९ गुटका न० ४० । पत्र संख्या-१९ । साइज-६×६ ३/४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १८२३ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० १००४ ।

विशेष—मृगीसंवाद वर्णन है । २५७ पद्य संख्या है । रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

आदि पाठ—सकल देव सारद नमो प्रणमो गौतम पाय ।

कथा करूँ रलियामणी सद्गुरु तथौ पसाय ॥१॥

जंबू द्वीप सुहामणौ, महिधर मेर चतंग ।

नहिये दक्षिण दिसि मलौ, मरत क्षेत्र सुचंग ॥२॥

अन्तिम पाठ—एषि समै आयौ केवली, बंधा चरण वचन मुनि भणी ।

तीनि प्रदख्यणा दीधी सार, धरम उपदेस सुण्यौ तिण वार ॥३५६॥

दोहा—दोइ मेद धरमा तथा मुनी श्रावक करि हेत ।

मन वच काया पालता, दोइ लोक सुख देत ॥२५७॥

इति श्री मृगीसंवाद चौपइ कथा संपूरण । लिखित सेवाराम राघोदास ख्याधू । पोथी पंडित रायचन्द्रजी सिख प० षोखचन्द्रजी वासी टौक का की सू देउरा ख्यौधूका मये । मिति जेठ सुदी २ सोमवार संवत् १८२३ का ।

७३० गुटका न० ४१ । पत्र संख्या-२३४ । साइज-६×५ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १००५ ।

विशेष—मुख्य २ पाठों का संग्रह निम्न प्रकार है ।

विषय सूची	वर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
नवतत्व वर्णन	—	प्राकृत	हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।

पद संग्रह	—	हिन्दी	{ श्वेताम्बर जैन कवियों के पद हैं ।
ज्ञान सूखड़ी	शोमचन्द्र	"	रचनाकाल सं० १७६७
सक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचाय	संस्कृत	—
कन्यायामन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"	—
रामा वत्सी	समयसुन्दर	हिन्दी	—
शत्रु ज्योद्धार	पं० मानमेरु का शिष्य नयसुन्दर	"	सं० १७७० वैशाख सुदी ६

७३१. गुटका नं० ४२ । पत्र संख्या-६० । साइज ६×१३ इंच । माया-हिन्दी । लेखन काल-X ।

पूर्ण । वेष्टन न० १००७ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा
पद	धानतराय	हिन्दी
पद	रूपचन्द्र	"
पद	रामदास	"
जखड़ी	रूपचन्द्र	"
सक्तामरस्तोत्र माया	गगाराम पांड्या	"

विशेष—इसमें संस्कृत की ४८ वीं काव्य का ४७ वें पद्य में निम्न प्रकार श्रुतवाद है ।

हे जिन तुम्हारे गुण कथन, पहलु माल,  
भक्ति प्रतीति भावधरि कै बनाई है ।  
प्रेम की सुदधि नाना वरन सुमन धरि,  
गुणगण उत्तम अनेक सुखदाई है ॥  
जेई भव्य जन कठ धरि है उछाह करि,  
फुलकित अग हूँ के आनद सो गार्ई है ॥  
तेई मानतु ग करि सुकति बधू सो हेत,  
गगन सरित राम सोमा सुख धाई है ॥

हुक्का निषेध	भूधरमल्ल	हिन्दी
विनती (प्रभु पाइ लागू करू सेव थारी)	जगतराम	गुजराती, लिपि हिन्दी ।
विषापहारस्तोत्र माया	अचलकीर्ति	हिन्दी रचना काल सं० १७१५
		नारनोल
पद-मै पायो दुख अपार वसि, ससार में-	धानतराय	हिन्दी

पद	दीपचन्द्र	हिन्दी
पद	हरीसिंह	"
पद—डोरी थे लगावो जी	नाथू	"
प्रभुजी के नांव सू		
अक्षरमाला	मनराम	"
दश क्षेत्रों की चौबीसी के नाम	—	"
१५ प्रकार के पात्र वर्णन	—	"
पद	किशोरदास	"

७३२. गुटका न० ४३ । पत्र सख्या-४२० । साइज-८ $\frac{1}{2}$ ×८ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—  
१० १७८२ । पूर्ण । वेस्टन न० १००८ ।

विषय—सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
श्रेणिक चरित्र की कथा	—	हिन्दी गद्य	अपूर्ण
प्रीत्यंकर चौपई	नेमिचन्द्र	हिन्दी पद्य	लेखनकाल स० १७८२ पूर्ण

विशेष—तुलसीराम चांदवाढ ने पांडे रुपचन्द्र की पुस्तक से स० १७८२ सावन सुदी १५ में पलवल में प्रतिलिपि की । पोथी बिजैराम मौसा की ।

नेमीश्वररास (हरिवंश पुराण) नेमिचन्द्र " १. का. स. १७६६ ले. का. स. १७८२

विशेष—सं० १७७६ की प्रति से बिजैराम मौसा ने प्रतिलिपि की थी । १३०८ पद्य है । प्रथम प्रशस्ति विस्तृत है ।

चन्द्रराजा की चौपई — १ का. सं० १६०३ फागुन सुदी २ ले. का. सं० १७८२

विशेष—आमानपुरी (गिरनार के पश्चिम दिशा में) के राजा चन्द्र की कथा है । बिजैराम मौसा ने मथुरा में प्रतिलिपि की थी । इसका दूसरा नाम चंदन मलियागिरि कथा भी है । कथा बड़ी है ।

विशेष—चंद राजा की चौपई का आदि अंत भाग निम्न प्रकार है—

प्रारम्भ—बोहा—सिधि सुवृधि दातार तुव गौरी नद कुमार । चद कथा आरम्भ किय सुमति देहि अपार ॥१॥

ब्रह्म सुता सरस्वती तुव हस चढी अति रूढ । तुव पसाय वाणी विमल होय मया मति मूढ ॥२॥

चौपई—प्रथम समरौहु सरजन हार, षौ जिन थंम रथ्यौ गढ गीरनारि ।

मेरु समौ दीसै सिरधार, तिहुँ लोक तिहि कौ वीसतार ॥३॥

समरी संकर दोय कर जोति, सुमरी मुर तेतीसो कोटि ।  
 सदगुर कैहू लागी पाय, मुलौ अखिर धौ सगुभाय ॥५॥  
 सोलावर तीरतीरै, जाणि, चंद क्या ज्यौ चरै परमाणी ।  
 मै म्हारी मति साब कहू, अखिर मात्र पदा सो लहु ॥५॥

दोहा—आगुण मास वसंत रिति, इतिया छरु शुभ रिति ।

चंद क्या आरम्भ कीयो धुरी वृधि नुरंत ॥६॥

आमानपुरी अवि दिसि पश्चिम दिसा गिरनारी ।

वेह सजोग अयो रच्यो चंद परमला नारी ॥७॥

अन्तिम—अरघ रेख अचपला जोगि । तीजी आर परमला भोग ।

याकै सत्य सारथा सब कान, बिलसै चंद आपणी राज ॥

॥ इति श्री राजा चंद बीपई संपूर्ण ॥

बीस विरहमान तथा । तीस चौबीसी के नाम ।	—	हिन्दी	पूर्ण
तीन खोरु कयन	—	”	पत्र सं० २३२ से ३६५ तक
बेक्ति के विषे कयन ( चतुर्गति की बेक्ति )	हर्षकीर्ति	”	पूर्ण
कर्म हिन्दोलया	—	”	—
विशेष—इस गुटके की प्रतिलिपि महाराम च		शे की पुस्तक में जेपुर में सं० १७६४ में हुई थी ।	
सम्पत्त्व के आठ अंगो का क्या महित वर्णन		” गद्य	—
चेतनशिष्या गीत	—	” पद्य	—
पद-ठट्टु तेरो मुख देवुं	टोहर	”	—
नामि निर्नदा			

७३३. गुटका नं० ४४ । पत्र संख्या-२५ । साइन-४५३ इन्च । मापा-हिन्दी । लेखन काल-X ।  
 पूर्ण । वेष्टन नं० १००६ ।

विशेष—नरक दोहा पूर पद संग्रह है ।

७३४. गुटका नं० ४५ । पत्र संख्या-२५ । साइन-४५४ इन्च । मापा-हिन्दी । लेखन काल-X ।  
 पूर्ण । वेष्टन नं० १०१० ।

विशेष—विनती संग्रह है ।

७३५ गुटका नं० ४६ । पत्र संख्या-२५ । साइज-११×५<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।

पूर्ण । वेष्टन नं० १०१२ ।

विशेष—शिखर विलास, निर्वाणकण्ठ एव आदिनाम पूजा हैं ।

७३६. गुटका नं० ४७ । पत्र संख्या-३८ । साइज-८<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखनकाल-स० १८८१

पूर्ण । वेष्टन नं० १०१३ (क) ।

विशेष—पूजा संग्रह है ।

७३७ गुटका नं० ४८ । पत्र संख्या-१६६ । साइज-७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत-प्राकृत ।

लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन १०१३ (ख) ।

विशेष—पूजाओं, यशोधरचरित्र रास (सोमदत्तसूरि) तथा स्तोत्रों का संग्रह है ।

७३८ गुटका नं० ४९ । पत्र संख्या-१६७ । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । लेखन काल-

स० १७६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१३ (ग) ।

विशेष मुख्यतः नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है ।

७३९. गुटका नं० ५० । पत्र संख्या-२०० । साइज-५<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन

काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१४ ।

विशेष—कल्याण मन्दिर स्तोत्र को सिद्धसेन दिवाकर कृत लिखा है । स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है ।

अजयराज पाटण्णी कृत पत्र १३१ पर एक रचना संवत् १७६३ की है जो पाक शास्त्र सम्बन्धा है । रचना का आदि अत माग निम्न प्रकार है ।

प्रारंभ—श्री जिनजी की कहु रसोई । ताकी सुणत बहुत सुख होइ ॥

तुम रूसो मत मेरे चमना । खेलौ बहुविधि घरके अगना ॥

देव अनेक बहोत खिलावै । माता देखि बहुत सुख पावै ॥२॥

मध्यमें—छिमक चणा क्रिया आत मला । हलद मिरच दे घृत में तला ॥

मेसी रोटी अधिक ब्याई । आरोगो त्रिभुवन पति राई ॥२४॥

अन्तिम—अजैराज इह क्रियो बखाण । भूल चूक मति हनौ मुजाण ॥

रुवत सत्रासै जेणानै । जेठ मास पूरणा हनै ॥५३॥

जिनजी का रमोई में सब प्रकार के व्यजनों एवं मौजनों के नाम गिनाये हैं। भगवान की बस लीला का अच्छा वर्णन किया है। मौजन के बाद वन विहार आदि का वर्णन भी है।

रमोई वर्णन दो जगह दिया हुआ है। एक में ३६ पद्य हैं वह अपूर्ण हैं। दूसरे में १३ पद्य हैं तथा पूर्ण हैं।

पद—मेवग पर महर क्यो जिनराड	अजयराज	१० अंतरे हैं। पत्र १०५-१०३
मेव कुमार गात	पूनी	०१ पद्य हैं।
शांतिनाथ जयमाल	अजयराज	६ पद्य हैं।
पद—प्रभु हस्तनागपुर जनम जाण		
॥ श्री जिनपूज सुहावणी	॥	१४ पद्य हैं।
॥ मन मनरकट चनेक आतम जपवाटे ।	॥	१५ पद्य हैं।
चौबीस तार्थकर स्तुति	॥	२० पद्य हैं।
अहो सिवगामी खेले हां मुानजन राचि सुव राजम पाग सुहावणी	॥	७ पद्य
धाल्य वर्णन	॥	४ पद्य
श्री सिरियांस सरल गुण धार	॥	८ पद्य
नदीश्वर पूजा	॥	६ पद्य
आदिनाथ पूजा	॥	— पूर्ण
चतुर्विंशति तीर्थकर पूजा	॥	
पार्श्वनाथजी का सालिहा	॥	रचना सं० १७६३ ज्येष्ठ सुदी १५
पचमेरु पूजा	॥	
महावीर, नेमांश्वर आदि सभी	॥	—
तीर्थकरों के पद्य		—
भिद्र स्तुति	॥	—
वीमतीर्थकरों की जयमाल	॥	—
श्रद्धा	॥	—

७४०. गुटका नं० ४१। पत्र संख्या—०६६। साहज—६३५६ इक्ष। माया—हिन्दी—मंस्कृत। लेखन काल—सं० १७०३ कार्तिक सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन नं० १०१७।

विषय—सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
आयुर्वेद के लुसखें	—	हिन्दी (पद्य)	—
८५ शिला की वार्ते	—	॥	—
राम गति की केलि	हर्षकिर्ति	॥ (पद्य)	रचना काल सं० १६८३

चेतन शिवा गीत	किशनसिंह	हिन्दी	—
णमोकार सिद्ध	अजयराज	"	—
पद	ऋषभनाथ	"	—
( मोहि त्यारो जी सरणे तुम आश्यो )			
षधावा	—	"	—
( जहा जन्मे हो स्वामी नामकुमार )			
राष्ट्रल पञ्चीसी	लालचंद त्रिनोदीलाल	"	—
पद	विश्व भूषण	"	—
( जिख जपि जिण जपि जीयडा )			
विनती	पूनी	हिन्दी	—
सहेलीगीत	सुंदर	"	—
विनती	कनककीर्ति	"	—
भंगल	विनोदीलाल	"	—
ज्ञान चिन्तामणि	मनोहरदास	"	कुल १२८ पद्य हैं ।
पंच परमेश्ठी गुण	—	हिन्दी गद्य	—
सूतक भेद	—	"	—
जोनी राधा	जिणदास	" पद्य	४१ पद्य हैं ।
धर्मरासा	—	"	—
सुदर्शन शील रासो	म० रायमल्ल	"	—
जम्बूस्वामी चौपई	जिणदास	"	—
विशेष—जिणदास का पूर्ण परिचय दिया हुआ है । जयचंद साह ने लिपि की थी ।			
श्रीपाल रासो	म० राइमल्ल	"	—
विशेष—जयचंद साह ने चाकसू में स० १८३२ में प्रतिलिपि की ।			
विषाणहार भाषा	अचलकीर्ति	हिन्दी	—

७४१. गुटका नं० ५२ । पत्र संख्या-१८८ । साइज-६×६ इंच । भाषा-प्राकृत अपभ्रंश । लेखन काल-स० १५७० । पूर्ण । वेष्टन नं० १०१८ ।

ग्रन्थ-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
मुनिमुद्रतासुभेदा	प० योगदेव	अपभ्रंश	१५८५ वै० बुदी १३
योगमार दोहा	योगीन्द्रदेव	"	



उपासकाधार	पूज्यपाद	संस्कृत	
परमात्मप्रकाश दोहा	योगीन्द्रदेव	अप्रम श	
पट्पाहुळ सटीक	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	
आराधनासार	देवसेन	"	टीका सहित है ।
समयसार गाथा	कुन्दकुन्दाचार्य	"	"
ज्ञानसार गाथा	—	"	

७४३. गुटका न० ५३ । पत्र संख्या-११३ । साइज-६ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{3}{4}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२० ।

विशेष—प्रथम संस्कृत में पद्य स्तोत्र आदि हैं फिर उनकी भाषा की गई है ।

७४४. गुटका नं० ५४ । पत्र संख्या-३२ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२२ ।

विशेष—देवनागरी कृत विनती संग्रह है ।

७४५. गुटका न० ५५ । पत्र संख्या-३८ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२१ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजा पाठों का संग्रह है ।

७४६. गुटका नं० ५६ । पत्र संख्या-४३ । साइज-६ $\frac{1}{2}$ ×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२३ ।

विशेष—चारों गति दुःख वर्णन, राबल पञ्चमीसी, जोगी रासो, अठारह नाता का चौदाव्या के अतिरिक्त वृन्द, दीपवन्द, विश्वमूषण, पुनी, रामदास, अजयराम, मूधरदास के पद भी हैं ।

७४७. गुटका न० ५७ । पत्र संख्या-१६० । साइज-७×५ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखनकाल-९० १७६० ज्येष्ठ शुदी = । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२५ ।

विशेष—मठारक जगतकीर्ति के शिष्य डालूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
प्रथम रासो	न० रायमल्ल	हिंदी	रचना सं० १६२८
नेमिकुमार रासो	"	"	" १६१५
सुदर्शन रासो	"	"	" १६३३
हनुमत कथा	"	"	" १६१६

७४८. गुटका न० ५८ । पत्र सख्या-५८ । साइज-६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२६ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम ।	भाषा ।
तीर्थमाला स्तोत्र	—	संस्कृत
जैन गायत्री	—	"
पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	प्राचीन हिन्दी
पद	अजयराम	हिन्दी
कदका बचीसी	"	"
पद सम्रह	"	"
सिन्दूर प्रकरण	बनारसीदास	"
परमानन्द स्तोत्र	—	संस्कृत

७४९. गुटका न० ५९ । पत्र सख्या-५७ । साइज-५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२७ ।

विषय-सूची ।	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
चैराग्य पञ्चीसी	भगवतीदास	हिं दी	—
चेतन कर्म चरित्र	"	"	रचनाकाल स० १७३६
वज्रदन्त चक्रवर्ति की भावना	—	"	—
स्फुट पद	—	"	—

७५० गुटका न० ६० । पत्र सख्या २८० । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२८ ।

विशेष—मुख्यतः पूजाओं का सम्रह है ।

७५१. गुटका न० ६१ । पत्र सख्या-२१९ । साइज-६×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिं दी । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०२९ ।

विशेष—मुख्यतः पूजा सम्रह है । कुछ जगताराम कृत पद सम्रह भी है ।

७५२. गुटका न० ६२ । पत्र सख्या-३४ । साइज-६×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३० ।

विशेष—स्तोत्र सम्रह भाषा पत्र निर्वाणकाण्ड भाषा आदि हैं ।

७५३ गुटका नं० ६३ । पत्र संख्या-३० । साइज-४×४ $\frac{१}{२}$  इंच । माया-हिन्दी । लेखन काल-स० १८१६ । पूर्ण । वेष्टन न० १०३१ ।

विशेष - शनिश्चर देव की कथा है ।

७५४ गुटका नं० ६४ । पत्र संख्या-५७ । साइज-६×२ $\frac{३}{४}$  इंच । माया-हिन्दी । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० १०३२ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	माया	विशेष
चरवाशतक	धानतराय	हिंदी	
दाल गण	—	”	६३ पद्य
स्तुति	धानतराय	”	

७५५ गुटका नं० ६५ । पत्र संख्या-२१० । साइज-६×४ $\frac{१}{२}$  इंच । माया-प्राकृत-संस्कृत । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० १०३३ ।

विशेष—पद्ममूर्ति पाठ, आराधनाभार, जिनसहस्रनाम स्तवन आशाधर कृत, तथा अन्य स्तोत्र संग्रह है ।

७५६ गुटका नं० ६६ । पत्र संख्या-७४ । साइज-६ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । माया-हिन्दी । लेखन काल-स० १८८० आषाढ शुदी १ । पूर्ण । वेष्टन न० १०३४ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	माया	विशेष
जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी	रचना काल स० १७८२
धर्मविश्वास	धानतराय	”	—

७५७ गुटका नं० ६७ । पत्र संख्या-१११ । साइज-५ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । माया-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-४ । पूर्ण । वेष्टन न० १०३५ ।

विशेष— स्तोत्र संग्रह है ।

७५८ गुटका नं० ६८ । पत्र संख्या-४६ से १४३ । साइज-७ $\frac{३}{४}$ ×२ $\frac{३}{४}$  इंच । माया-हिन्दी । लेखन काल-स० १८१० मंगसिर सुदी १५ । अपूर्ण । वेष्टन न० १०३७ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	माया	विशेष
बिहारी सतसई	बिहारीलाल	हिन्दी	अपूर्ण
नागदमन कथा	—	”	पूर्ण

आदि अतः भाग निम्न प्रकार है—

भारम्भ—वलतो सारद वरणउ, सारद पूरो पसाय ।  
 पवाडो पन्नग तण्यौ जादुपति कीर्णो जाय ॥  
 प्रमु आणये पाहीया देत वडा चादन्त ।  
 केइ पाखण पौदीया केई पय पान करत ॥

अन्तिम—सुण्यौ सुण्यौ समवाद नद नदम अहि नारी ।  
 समभा पार संभार हूवो द्रोपत अनहारी ॥

अनत अनंत के ससु अह वधाई रमीयो स्वरत राधा रमण दहू कर मुज काली दवरा ।  
 त्रिमुवन सुण्यण महि रख तन गमण'तास आबो गमण ॥

७५६. गुटका नं० ६६ । पत्र संख्या-४० । साइज-६×४ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-X ।  
 पूर्ण । वेष्टन नं० १०३८ ।

विशेष—मत्तामर स्तोत्र एवं तत्वार्थ सूत्र हैं ।

७६०. गुटका नं० ७० । पत्र संख्या-६४ । साइज-७ $\frac{1}{2}$ ×६ इंच । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । लेखन  
 काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३६ ।

विशेष—कर्म प्रकृति गाथा-नेमिचन्द्राचार्य कृत एव द्रव्य संग्रह तथा स्तोत्र संग्रह हैं ।

७६१. गुटका नं० ७१ । पत्र संख्या-७१ । साइज-५ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$  इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं०  
 १८३४ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०४० ।

विशेष—पद संग्रह, मत्तामर स्तोत्र भाषा चौपई बंध ऋद्धि मंत्र मूलमंत्र गुण संयुक्त षट् विधान सहित हैं ।

७६२. गुटका नं० ७२ । पत्र संख्या-२०६ । साइज-६×५ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-X ।  
 पूर्ण । वेष्टन नं० १०७६ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है अवस्था जीर्ण है ।

७६३. गुटका नं० ७३ । पत्र संख्या-६३ । साइज-६ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$  इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन  
 काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०७७ ।

विशेष—पूजा पाठों का संग्रह है । कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

७६४. गुटका नं० ७४ । पत्र संख्या-१० । साइज-६×५ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-X ।  
 अपूर्ण । वेष्टन नं० १०७८ ।

विशेष—पूजा तथा पद संग्रह है ।

७६५ गुटका नं० ७५ । पत्र संख्या-३५ । साइज-६ $\frac{1}{2}$ ×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।

पूर्ण । वेष्टन नं० १०८० ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

७६६ गुटका नं० ७६ । पत्र संख्या-६२ । साइज-६ $\frac{1}{2}$ ×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन

काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८१ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
चतुर्विंशति त्रिन स्तुति	पद्मनाब्दि	संस्कृत	
बहुरारि त्रिनेन्द्र जयमाल	—	”	
स्वयम्भू स्तोत्र	श्री० समन्तमद्र	”	
द्रव्य संग्रह	—	प्राकृत हिन्दी	
तपोद्योतन अधिकार सत्तावनी	—	संस्कृत	

७६७. गुटका नं० ७७ । पत्र संख्या-६० । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।

पूर्ण । वेष्टन नं० १०८३ ।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखों का संग्रह है ।

७६८. गुटका नं० ७८ । पत्र संख्या-६४ । साइज-६×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । विषय

लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०८४ ।

फुटकर कवित्त	—	हिन्दी	अपूर्ण
कवित्त	कवि पृथ्वीराज	”	संगीत संबन्धी कवित्त है ।
कवित्त	गिरधर	”	—
कवित्त खण्ड ( कमी )	—	”	६ कवित्त है ।
श्रीर खुरशी के			
सर्वसुखजी के पुत्र अमयचन्द्रजी	—	”	जन्म स० १९१०
की पुत्री-की जन्म पत्नी (चाँदवाई)			
चिट्टी चाँदवाई की सर्वसुखजी आदि की		”	स० १९१९
दसोत्तरा ( पहेलियाँ )	—	”	२५ पहेलियाँ उत्तर सहित है ।
पहेलियाँ	—	”	” ”
दोहे	वृन्द	”	अपूर्ण
कुँडलियाँ ( गणित प्रश्नोत्तर )	—	”	पूर्ण

कृष्ण द्रोहे तथा कुटिलिया	शिखरदास-	हिन्दी.	अपूर्ण
कवित्त	खेमदास	"	"
भावों का कथन	—	"	अपूर्ण
छह दाता	धानंतराय	"	लेखनकाल सं० १६१६
			चंदो के पठनार्थ ने लिखा गया था।
मध्यमलोक चैत्यालय वर्णन	—	"	—
बघाई	बालक-अष्टीचन्द	"	पूर्ण
जखडी	भूधरदास	"	"
उपदेश जखडी	रामकृष्ण	"	"

७६६. गुटका नं० ७६। पत्र संख्या-७५। साइज-१०×८ इंच। भाषा-संस्कृत प्राकृत। लेखन काल-X। अपूर्ण। वेष्टन नं० १०८५।

विशेष—गुणस्थान चर्चा, कर्म प्रकृति वर्णन, तथा तीर्थंकरों के कल्याणकों के दिनों का वर्णन है। कल्याणक वर्णन अपत्रंश में हैं। रचनाकार मनसुख हैं।

७७०. गुटका नं० ८०। पत्र संख्या-३१। साइज-८×६ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० १०८६।

विशेष—नवलराम, जगतराम, हरीसिंह, भूधरदास, धानतराय, मलजी, धखतराम, जोषा आदि के पदों का संग्रह है।

७७१. गुटका नं० ८१। पत्र संख्या-६६। साइज-६½×६ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० १०८७।

विशेष—पदों का संग्रह है। इसके अतिरिक्त परमार्थ जखडी तथा जोगी रासा मी है। भूधरदास, जगतराम, धानतर, नवलराम, भुधजन आदि के पद हैं।

७७२. गुटका नं० ८२। पत्र संख्या-६०। साइज-६×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० १०८८।

विशेष—जिन सहस्र नाम भाषा, प्रश्नोत्तर माला, कवित्त, एवं बनारसी विलास आदि हैं।

७७३. गुटका नं० ८३। पत्र संख्या-६०। साइज-६×४½ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० १०८९।

विशेष—पदों का संग्रह है।

७७४. गुटका नं० ८४ । पत्र संख्या-३४ । साहज-६३×८ इन्च । मापा-हिन्दी । लेखन काल-X ।  
पूर्ण । वेष्टन नं० १०६० ।

विशेष—षट् द्रव्य आदि की चर्चा, नरक दुःख वर्णन, द्वादशानुप्रेषा आदि हैं ।

७७५. गुटका नं० ८५ । पत्र संख्या-१४ से १४६ । साहज-६×५ इन्च । मापा-हिन्दी-संस्कृत ।  
लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०६१ ।

विशेष—सामान्य पाठों के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं । बीच के बहुत से पत्र नहीं हैं ।

७७६. गुटका नं० ८६ । पत्र संख्या-१३१ । साहज-६×४ इन्च । मापा-संस्कृत । लेखन काल-X ।  
पूर्ण । वेष्टन नं० १०६२ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पाठों का संग्रह है ।

७७७. गुटका नं० ८७ । पत्र संख्या-१४ । साहज-१०३×४ इन्च । मापा-हिन्दी । विषय-संग्रह ।  
लेखन काल-X । वेष्टन नं० १०६३ ।

विशेष—किसी चर्चाओं का संग्रह है ।

७७८. गुटका नं० ८८ । पत्र संख्या-५८ । साहज-६×४ इन्च । मापा-हिन्दी । विषय-संग्रह ।  
लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६४ ।

विषय-सूची	कर्ता	मापा	विशेष
दीतवार कथा	माऊ	हिन्दी	१५७ पद्य
शानीश्वर देव की कथा	—	” (गद्य)	ले० का० सं० १७६८ चैत सुदी ३
तारातंबोळ की वार्ता	—	”	—
पार्श्वनाथ स्तवन	—	”	—
बिनती	—	”	—
नेमशील वर्णन पद	—	”	ले० का० सं० १८११

७७९. गुटका नं० ८९ । पत्र संख्या-६६ । साहज-६×६ इन्च । मापा-संस्कृत हिन्दी । लेखन  
काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६५ ।

विशेष—गुटके में पूजा संग्रह तथा स्वर्ग नरक का वर्णन दिया हुआ है ।

७८०. गुटका नं० ९० । पत्र संख्या-११० । साहज-५×३ इन्च । मापा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन  
काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६६ ।

विषय-सूची	का नाम	भाषा	विशेष
श्रवणद केवली	—	हिन्दी	
महाभारत स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	
” भाषा	हेमराज	हिन्दी	
कल्याणमन्दिर स्तोत्र	कुमदचन्द्र	संस्कृत	
अध्यात्म काग	—	हिन्दी	
साधु बंदना	धनारसीदास	”	
बारहमासना	—	”	
संवोधपंचासिका	—	प्राकृत	
स्तोत्रसंग्रह	—	संस्कृत	

७८१. गुटका नं० ६१। पत्र संख्या-२०४। साइज-६×५ १/२ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १७८६। अपूर्ण। बेष्टन नं०/१०६८।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
कंसलीला	—	हिन्दी	४६ पद्य है।
भोरम्बज लीला	—	”	१५ पद्य है।
महादेव का व्याहली	—	”	लेखनकाल १७८७
भक्तमाल	—	”	
सुदामा चरित	—	”	” १७८७
गंगायात्रा वर्णन	—	”	
कछवाहा राजाओं की वंशावली	—	”	
तारातंबोल की वार्ता	—	”	
नासिकेतोपाख्यान	नंददास	”	” १७८६
महामारत कथा	खालिदास	”	
देहली के राजाओं की वंशावलि	—	”	” १७८८
चरित	—	”	

७८२. गुटका नं० ६२। पत्र संख्या-१३१। साइज-८×६ इंच। भाषा-संस्कृत-हिन्दी। विषय-संग्रह। लेखन काल-४। पूर्ण। बेष्टन नं० १०६८।



विषय—सूची	कर्ता	भाषा	विरोध
अजितशान्ति स्तोत्र	उपाध्याय मेरुनदन	हिन्दी	३२ पद्य
सीमधरस्वामी स्तवन	उपाध्याय भगतिलाम	”	१८ पद्य
पार्श्वनाथस्तोत्र	जिनराज सूरि	संस्कृत	—
विघ्नहरस्तोत्र	—	प्राकृत	१४ गाथा
भक्तामरस्तोत्र	मानतुंग	संस्कृत	—
शनिश्चरस्तोत्र	दशरथ महाराज	”	—
पार्श्वनाथ जिनस्तवन	—	”	ले० का० स० १७१६ पौष नदी २
जिनकुशल सूरि का सुन्दर चित्र है और चित्रकार जग जीवन है।			
धर्मण पार्श्वनाथ स्तवन	कुशललाम	हिन्दी	राजरंगगणि ने लिपि की थी। १८ पद्य
चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन	जिनरंग	”	१५ पद्य
राष्ट्र के बोरहे मासा	पदमराज	”	४ पद्य अपूर्ण
श्री जिनकुशल सूरि स्तुति	उपाध्याय जयसागर	”	१५ पद्य पूर्ण
पार्श्वनाथ स्तवन	रंगवल्लभ	”	६
आदिनाथ स्तवन	विजय तिलक	”	२१ पद्य
श्री अजितशान्ति स्तोत्र	—	प्राकृत	३६ गाथा
भयहर पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	”	२१ गाथा पूर्ण
सर्वाधिष्टायक स्तोत्र	—	”	२६ गाथा
कोकसार	ध्यानंद कवि	हिन्दी	—
नैणसी ( नैनसिंहजी )	—	”	सं० १७२६
के व्यापार का प्रमाण			
पार्श्वनाथ स्तोत्र	कमल लाम	”	७ पद्य
” लघुस्तोत्र	समयराज	”	पूर्ण
सखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन	—	”	—
चिंतामणि पार्श्वनाथस्तोत्र	भुवनकीर्ति	”	—
पार्श्वनाथ स्तोत्र	मनरग	”	—
”	जिनरंग	”	—
श्रद्धभदेव स्तवन	—	”	रचनाकाल स० १७००
पद्मनाथी-पार्श्वनाथ स्तवन	पदमराज	”	लेखनकाल स० १७२०

पार्श्वनाथ स्तवन	विजयकीर्ति	हिन्दी	पूर्णा
महावीरस्तवन	जिनवल्लभ	संस्कृत	पूर्णा ३० श्लोक
प्रतिमास्तवन	राजसमुद्र	हिन्दी	
चतुर्विंशति जिनस्तोत्र	जिनर गसूरि	”	
वीस विरहमान स्तुति	प्रेमराज	”	
पंचपरमेष्ठि मंत्र स्तवन	”	”	
सोलहसती स्तवन	”	”	
प्रबोध बावनी	जिनर ग	”	रचना सं० १७३१, ५४ पद्य हैं ।
दानशील संवाद	समयसुन्दर	”	पूर्णा
प्रस्ताविक दोहा	जिनर गसूरि	”	

इसका दूसरा नाम “दूहा बंध बहुचारी” भी है । ७२ दोहा हैं । लेखनकाल स० १७४५ । बापना नयगसी के पठनार्थ कृष्णगढ़ में प्रतिलिपि हुई थी ।

अख्यराज बाफना के पुत्र की कुडली — ” स० १७७२

७८३ गुटका न० ६३ । पत्र संख्या—८ से ५० तक । साहज—५३×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन न० १०६६ ।

विषय—सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
जैन रामो	—	हिन्दी	लेखनकाल स० १७६८ जेट सुदी १५

विशेष—दौलतराम पाटनी ने कश्मा मनोहरपुर में लिखा था । प्रारम्भ के १८ पद्य नहीं हैं ।

सिद्धिप्रिय स्तोत्र	वेचनदि	मस्कृत २६ पद्य, इसे लघु स्वयम्भू स्तोत्र भी कह
तीर्थकर बीनती	करुणाणकीर्ति	हिन्दी रचनाकाल सं० १७२३ चैत शुदी ३
१८	विश्वपूष्य	”
पच मंगल	रूपचन्द्र	” अपूर्ण

विशेष—प्रारम्भ के ७ पत्र तथा ६, १० और १२ वा पत्र नहीं हैं । ५४ से आगे पत्र खाली हैं ।

७८४. गुटका नं० ६४ । पत्र संख्या—२६ । साहज—५×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ११०० ।

विशेष—

नारदखडी	धरत	हिन्दी	पत्र स० १ से १६
बाईस परीषद	—	”	१७-२६ अपूर्ण

७८५ गुटका नं० ६५ । पत्र सख्या-२० । साइज-१५×७ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-५ । अपूर्ण ।  
वेष्टन नं० ११०१ ।

विशेष—कोई उल्लेखनाय पाठ नहीं है ।

७८६ गुटका नं० ६६ । पत्र सख्या-१६४ । साइज-६×४ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखनकाल-५ ।  
पूर्ण । वेष्टन नं० ११०२ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
श्रावकनी सञ्ज्ञाय	जिनहर्ष	हिन्दी	—
अजितशक्ति स्तवन	—	”	—
पचमी स्तुति	—	संस्कृत	—
चतुर्विंशतिस्तुति	समयसुन्दर	हिन्दी	—
गौडीपार्श्वस्तवन	—	हिन्दी	—
बारहखट्टा	—	—	अपूर्ण
वैराग्य शतक	मर्तृहरि	संस्कृत	लेखनकाल स० १७७३

विशेष—साम्राजपुर में प्रतिलिपि हुई थी । प्रति हिन्दी टीका सहित है, टीकाकार इन्द्रजीत है ।

अंतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—इति श्री सकलमौलिमण्डनमनिश्रीमधुकरनृपतितनुज श्रीमद्दिन्द्रजीतविरचितार्या  
त्रिविक्रदीपकायां वैराग्यशत समाप्तं ।

नाकौडा पार्श्वनाथ स्तवन :	समयसुन्दर	हिन्दी	पूर्ण
पद (अखियां आज पवित्र मई मेरी) मनराम		हिन्दी	—

७८७. गुटका नं० ६७ । पत्र सख्या-१० । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-५ ।  
पूर्ण । वेष्टन नं० ११०३ ।

विशेष—पद, चन्द्र गुप्त के सोलह स्वप्न (भावमद्र) जखडी, सोलह कारण भाषना ( कनककीर्ति ) संग्रह है ।

७८८ गुटका नं० ६८ । पत्र सख्या-६४ । साइज-१५×७ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन  
काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०४ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजा संग्रह है ।

७८९. गुटका नं० ६९ । पत्र सख्या-६५ । साइज-१५×७ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखनकाल-५ ।  
पूर्ण । वेष्टन नं० ११०५ ।

विशेष—नित्य पाठ पूजा आदि का संग्रह है।

७६० गुटका न० १०० । पत्र संख्या—२८ । साइज—६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०७ ।

विशेष—पद व स्तोत्रसंग्रह है।

७६१. गुटका न० १०१ । पत्र संख्या—२०० । साइज—६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०८ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
आदित्यवार कथा	माऊ	हिन्दी	
चतुर्विंशति स्तुति	शुभचन्द्र	"	
श्रीपाल स्तोत्र	—	"	
पद संग्रह	—	"	
त्रेसठ शलाका पुरुषों का वर्णन	म० कामराज	"	कामराज का परिचय दिया हुआ है।
श्रीपाल स्तुति	कनकवर्ति	"	
अजित जिननाथ की विनती ( मोई प्यारो लागैजी )	चन्द्र	"	पूर्ण

७६२ गुटका नं० १०२ । पत्र संख्या—१७७ । साइज—६×६ इंच । भाषा—संस्कृत—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११०९ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों के अतिरिक्त मुख्य निम्न पाठ हैं—

नाम	कर्ता	भाषा	विशेष
आदित्यवार कथा	माऊ	हिन्दी	—
श्रीपाल दर्शन	—	"	—
षट्माल वर्णन	श्रुतसागर	"	पूर्ण

प्रारम्भ—दोहा—प्रथम जिनेसुर धंद करि मगति भाव उर लाय ।

फरु वर्णन षट्माल कछु ।

चौपाई—एक समै श्री वीर जियाद, धिपलावल आये गुण व द ।

श्री जिनजी के अतिसै माय, सब जीवन को बैर पलाय ।

पटरित वन ते फल फुलत मये, माली लखि इचरज लहये ।  
समोसरख कि महमा माल, ऐसे मन चित्तै बनपाल ।

भॉतिम—ए पटमाल परण महान, पुरि वरन कियो गुणधाम ।  
तिन वाणि सुणि वरणन कियो, और व्याकरणा नहि देखियो ।  
तैसे धर्ज कणि मोती विधियो सुतसिषलता पै गम कियो ।  
तैसे बुधि जन वाणि माल वरण कियो माया गुण माल ॥

दोहा—देस काठहड विरजि में अदनस्य राजान ।  
ताकै पुत्र है मलो सूरिजमल गुणधाम ॥  
तेज पुज रवि है मलो, न्याय नीति गुणवान ।  
ताको सुजस है जगत में, तपै दूसरो मान ॥  
तिनह नगर जु बसाइयो, नाम मरतपुर तास ।  
सा राजा समकटिष्टि है मला, परवि न्यारि उपवास ॥  
जिन मदिर तह बणत है, जिन मरुम प्रकास ।  
इन्द्र पुरि अमिराम है सोमा सुरग निवास ॥  
ताहा नगर को चौधरि, विवहरि वेणुदास ।  
तिनकै मदर उपरो, श्री जिन अंदिर अवास ॥  
श्री जिन सेवग है मलो श्री जिनहि को दास ।  
वाह के वार गोत्र है मलो, हम मया जिणदास ॥  
वाहि समिपै आय करि वर्ण कियो हर विलास ।  
बासि सांगानेर को जाति जु अमवाल ॥  
मुगिल गीत उदोत है सगही रामसव को नाल ।  
उतर दिसम बैराठि है नम मलो, काहलो करू बखान ॥  
पांडव से पुनिबान नर बिखो कादियो आन ।  
ताहि नगर को वाणिकवर संगही पदारण जानि ॥  
वाकै पैंसो अरुमि को ऐ दोष जिये आनि ।  
माहचन्द्र मटारण मच्छे सुरचंद्र कै पाट ॥  
कासटासगा गच्छ में व्रत थया अठाट ।  
निज गुरु सु विनति करि, पाप हरण के काजि ॥  
स्वामी तुम उपदेश दोह, तारै धर्म जिहाज ।

तब गुरुमुख बाधि खिरी, सुयो नात गुणवान ॥  
 सिध घेत्र बंदन करो, पुरि वर्म टान ।  
 तब गुरु के उपदेस तै चतुरविधि सग ठानि ॥  
 सजन आता संग ले आये उजत मिलान ।  
 जिन बाईस भों पूजि करि, मली भगति वर आनि ।  
 अष्ट ड्रव्य ले निरमला हरे करम वसु खानि ।  
 चतुर सग निज आहार दे अंग प्रमावना सार ॥  
 सर्व सग की भगति सुं भयो सुं जै जै कार ।  
 सब आता निज हेत करि, घरौ ज संगहि नाम ॥  
 तातै संगहि कहत सध नहि कियो पतेसटा धाम ॥  
 सबत अठारा सै मला ऊपरि एकाइस जानि ।  
 जेठ सुकल पंचमि मली श्रुतसागर बखाणि ॥  
 सुवाति नषिन्न है मलो व्रत हौ रविवार ।  
 फकिरचंद उपदेस तै रच्यो माल विस्तार ॥  
 हमारो मित्र है सही जाति खु पलिवाल ।  
 वह वसतु हैं हींडोया में अनै रहै भरतपुर रसाल ॥  
 तिनसु हम मेलो मयो शुभ उदै कै काल ।  
 उनहि का संजोग तै करि भाषा षटमाल ॥

इति षटमाल वर्णन सपूर्ण • विलास अमवाल बाचै तीने छहार वच्या ।

७६३. गुटका नं० १०४ । पत्र संख्या-६४ । साइज-५×४ ३/४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १११२ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

७६४. गुटका नं० १०५ । पत्र संख्या-१३ से १० । साइज-६×४ ३/४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १११३ ।

७६५. गुटका नं० १०६ । पत्र संख्या-११६ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १११५ ।

विशेष—पद संग्रह है ।

७६६. गुटका नं० १०७ । पत्र संख्या-४५ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-स० १८०१ । पूर्ण । वेष्टन नं० १११६ ।

७८७ गुटका न० १८८ । पत्र संख्या-१६० । साइज-६X४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह ।  
लेखन काल-X । प्रथम । केन्द्रीय न० १११८ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठ हैं—

शीर्षक की श्रुति		हिन्दी	पूर्ण
राष्ट्रपत्रसोम	सलचन्द विनोदीलाल	"	"
उपदेश पत्रसोम	ननारसीदास	"	"
काँपटसोम	कनकशक्ति	"	"
पद तथा आलोचना पाठ	—	"	"
पद	हरीसिंह	"	"
पत्रसंगम	रूपचंद	"	अपूर्ण
विनती-बदू या जिनरार्ड	कनकशक्ति	"	" ले० का० १७८० आर्यादा चाँदबाब ने प्रतिलिपि की ।
क्याण्डमदिर भाषा	ननारसीदास	"	पूर्ण
भगदी	—	"	"
विचार कथा	—	"	"

७८८. गुटका न० १८९ । पत्र संख्या-२४० । साइज-८X६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन  
काल-X । पूर्ण । केन्द्रीय न० १११९ ।

विशेष—सोम तथा पदों का संग्रह है । अगर बहुत मोटे हैं । एक पत्र में तीन तथा चार पक्तियाँ हैं ।

७८९. गुटका न० १९० । पत्र संख्या-७२ । साइज-६X४ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन  
काल-X । पूर्ण । केन्द्रीय न० ११२० ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

महाविद्य पाठ	—	संस्कृत
संस्कृत भाषा के दोष	—	"
सुख कर्मा	—	"
सोम संग्रह	—	"

८००. गुटका न० १९१ । पत्र संख्या-१३ । साइज-६X४ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन  
काल-X । पूर्ण । केन्द्रीय न० ११२१ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

सम्रह ]

८०१ गुटका नं० ११२ । पत्र संख्या-८ । साइज-७X६ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-X ।

पूर्णा । वेष्टन नं० ११२६ ।

विशेष—दर्शन तथा पार्श्वनाथ स्तोत्र आदि हैं ।

८०२ गुटका नं० ११३ । पत्र संख्या-४ । साइज-१४X८ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्णा ।

वेष्टन नं० ११४० ।

विशेष—सिद्धाष्टक, १२ अनुप्रेक्षा-डालूराम कृत, देवाष्टक, पद-डालूराम, गुरु अष्टक आदि हैं ।

८०३. गुटका नं० ११४ । पत्र संख्या-१० । साइज-४X४ । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-X । अपूर्णा ।

वेष्टन नं० ११४८ ।

विशेष—दर्शन शास्त्र पर सम्रह है ।

८०४. गुटका नं० ११५ । पत्र संख्या-५ । साइज-५X४ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्णा ।

वेष्टन नं० ११४६ ।

विशेष—बीस तीर्थंकर नाम व निर्वाण काल है ।

८०५. गुटका नं० ११६ । पत्र संख्या-२०८ । साइज-६X४ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्णा ।

वेष्टन नं० ११५५ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
चैत्री विधि	अमरमणिक	हिन्दी	—
पार्श्व भजन	सहजकीर्ति	”	
पंचमी स्तवन	समयसुन्दर	”	
पोसा पडिकम्मण उठावना विधि	—	”	
चउवीस जिनगणधर वर्णन	सहजकीर्ति	”	
बीस तीर्थंकर स्तुति	”	”	
नन्दीश्वर जयमाल	—	”	
पार्श्व जिन स्थान वर्णन	सहजकीर्ति	”	
सीमधर स्तवन	—	”	
नेमिराजमति गीत	जिनहर्ष	”	
चौबीस तीर्थंकर स्तुति	—	”	
सिद्धचक्र स्तवन	जिनहर्ष	”	



८०१ गुटका न० ११२ । पत्र संख्या-८ । साइज-७×६ । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-X ।

पूर्णा । वेष्टन न० ११२६ ।

विशेष—दर्शन तथा पार्श्वनाथ स्तोत्र आदि हैं ।

८०२ गुटका नं० ११३ । पत्र संख्या-४ । साइज-१४×८ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्णा ।

वेष्टन नं० ११४० ।

विशेष—सिद्धाष्टक, १२ अतुप्रेक्षा-डालूराम कृत, देवाष्टक, पद-डालूराम, गुरु अष्टक आदि हैं ।

८०३. गुटका नं० ११४ । पत्र संख्या-१० । साइज-४×४ । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-X । अपूर्णा ।

वेष्टन नं० ११४८ ।

विशेष—दर्शन शास्त्र पर संग्रह है ।

८०४. गुटका नं० ११५ । पत्र संख्या-५ । साइज-५×४ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्णा ।

वेष्टन नं० ११४९ ।

विशेष—बीस तीर्थकर नाम व निर्वाण काल है ।

८०५. गुटका न० ११६ । पत्र संख्या-२०८ । साइज-६×४ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्णा ।

वेष्टन नं० ११५५ ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
चैत्री विधि	अमरमणिक	हिन्दी	—
पार्श्व मजन	सहजकीर्ति	"	
पचमी स्तवन	समयसुन्दर	"	
पोसा पडिकम्मण उठावना विधि	—	"	
चउवीस जिनगणधर वर्णन	सहजकीर्ति	"	
बीस तीर्थकर स्तुति	"	"	
नन्दीश्वर जयमाल	—	"	
पार्श्व जिन स्थान वर्णन	सहजक सिं	"	
सीमधर स्तवन	—	"	
नेमिराजमति गीत	जिनहर्ण	"	
चौबीस तीर्थकर स्तुति	—	"	
सिद्धचक्र स्तवन	जिनहर्ण	"	

गुह विनती	—	हिन्दि
मुवाहु रिपि सधि	माणिक सूरि	”
अगोपांग फुरकन वर्णन	—	”
ब्रह्मचर्य नव वाडि वर्णन	पुण्यसागर	”
लघु स्नपन विधि	—	”
अष्टाहिका स्नपन विधि	—	”
सुनि माला	—	”
वेत्रपाल का गीत	—	”

८०६. गुटका न० ११७ । पत्र संख्या-२० से ३१ । साइज-१०×४३ । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X  
अपूर्ण । वेष्टन 1० ११८४ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
नूरुद्दी शकुनावली	नूर	हिन्दी	अपूर्णा
आयुर्वेद के सुसुखे	—	”	”
वायगोला का मन्त्र तथा अन्नक मारण विधि	—	”	”
नूरुद्दी शकुनावली	नूर	”	”
विशेष—मार्गद्वय में लिखा है ।			
मातृका पाठ	—	”	
मन्त्र स्तोत्र	—	”	
आयुर्वेद के सुसुखे	—	”	

८०७. गुटका नं० ११८ । पत्र संख्या-५३ से ८६ । साइज-६×५३ इंच । भाषा-प्राकृत-हिन्दी ।  
लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११८५ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	वर्ष
समाधि मरण	—	प्राकृत	५३ से ६२ पत्र तक
मोडा	हर्षकीर्ति	हिन्दी	६४ से ६७ पत्र तक

प्रारम्भ - राग सोरठी:-

म्हारे रै मन मोटा नू तो गिरनार-या उठि थाररे ।  
नेमित्री स्यो यु कहियो राजमती दुखल ये सौसे ॥म्हारे०॥

अतिम—मोक्ष गया जिण राजह प्रभु गढ गिरनारि मभार रै ।

राजल तौ सरपति हुवौ स्वामी हर्षकीर्ति सुकारौ रै ॥ म्हारो० ३० ॥

॥ इति मोडो समाप्ता ॥

मक्ति वणन

—

प्राकृत

६८ से ६५ तक

पद

—

हिंदी

६६ पत्र पर

प्रारम्भ—जय अरहत सत भगवत देव तू त्रिभुवन भूप ।

८०८. गुटका न० ११६ । पत्र सख्या-२० । साइज-८×६ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-४ ।

पूर्णा । वेष्टन न० १२१६ ।

विषय—सूची

कर्तो

भाषा

विशे

पद

महमद

हिन्दी

—

प्रारम्भ—भूलो मन ममरा रै काँई ममै ।

अतिम भाग—महमद कहै वसत बोरीये ज्यो क्यू आवै साथी ।

लाहा आपण उगाहीलें लेखो साहिब हाथी ॥

सवैया

बनारसीदास

हिन्दी

नववाडसञ्जाय

जिनहर्ष

”

विशेष—अतिम—रूप कूप देखि करि रे माँहि पडै किम अघ ।

दुख माणै जाणै नही हो कहै जिनहरप प्रबंध ॥

सुगुण रे नारि रूप न जोइये रे ॥ १० ॥

इति नववाडसञ्जाय सपूर्णा ।

राजुल बारहमासा

—

हिन्दी

अपूर्णा ।

पार्श्वनाथ स्तुति

भावकुशल

मुजराती

पूर्णा

अतिम—मवि मवि दीज्यो देव सेव इक ताहरी ।

धिर सिर तुम्ह भी आण आस ए माहरी ॥

पदम सुन्दर उवभाय पसाय गुण मरी ।

भाव कुशल भरपूर सुख सपति घरी ॥

इति पार्श्व जिन स्तुति ॥

सखेश्वर पार्श्वनाथ स्तुति

रामविजय

पूर्ण

ले० का० स० १७६० चैत सुदी ५

अतिम—सेव्यो श्री जिनराज । आपै अत्रिचल राज ॥

रामविजय भणीए । सु प्रसन तूँ वणीए ॥

इति श्री सखेश्वर पार्श्वनाथ जिन स्तुति । इमें लिखिता भाव कुशलेन । श्री केमरि वाचन कृते ॥

नद छत्तीसी

—

सस्कृत

अपूर्ण

८ गार ले० का० स० १७६३ पौष नदी ०

विशेष—केवल १७ से ३६ तक पद्य है । वार्द केमर के पठनाथ लिपि की गई थी ।

नेमिनाथ वारहमासा

हिंदी

( गु० ) १४ पद्य है ।

विशेष—रागमरा राजीमती लिखो सजम मार ।

कहे जाण सैहर जसुमालीया सुगत मंभार ॥१४॥

वियोग ८ गार का अच्छे वर्णन है ।

बुधराम

हिन्दी

अपूर्णा

विशेष—प्रारम्भ के पद्य गल गये हैं ।

अतिम—गांठि गरय मत लूखो खाय ।

भूखो मत चालै सियालै । जीमर मत चालै उन्हालै ॥

वांमण होय अण्हायो ।

कापय हो पर लेखो भूले । ए तित्तु क्खि हीनै तोलै ॥१२०॥

एह बुधसार तणोर विचार । आलन आवै दण ससार ॥

सयौ पालय रोपम युता । राज करो पसार संशुता ॥२१०॥

॥ इति बुधरास सपूर्ण ॥

तमाखू की जयमाल

आणद मुनि । -

हिन्दी

पूर्ण

विशेष—प्रारम्भ —प्रीतम सेती वीननै प्रमदा गुण विज्ञान ।

मोरा लाल मन मोहण पके चितै तू समाल ॥ चतुर सुजाण ॥

अनिम—दया धरम जाणी करी सेवो सदगुरु साध मोरा लाल ।

आणद मुनि इम उच्चरे जग माही जस वाध मोरा लाल ॥

चतुर तमाखु परिहरौ ।

॥ इति तमाखू जयमाल सपूर्ण ॥

॥ लिखत आणद हीरा ॥

८०६. गुटका न० १२० । पत्र सख्या-२२ । साइज-५ $\frac{३}{४}$ ×७ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-

अपूर्ण । वेष्टन न० १२१७ ।

विशेष—जीवों की सख्या का वर्णन दिया हुआ है ।

८१० गुटका न० १२१ । पत्र सख्या-५६ । साइज-६×८ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।

पूर्ण । वेष्टन न० १२१८ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
कक्का बत्तीसी	अजयराज	हिन्दी	
पद	वारी हो शिव का लोभी	"	
नारी चरित्र	—	"	
मनुष्य की उत्पत्ति	—	"	
पद	दीपचद	"	
श्री जिनराजै ज्ञान तथै अधिकार ॥			
विनती	अजयराज	"	
श्री जिन रिखव महत गाऊ ॥			
उपदेश बत्तीसी	राज	"	

८११ गुटका न० १२२ । पत्र सख्या-३५ । साइज-४ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिंदी । रचना काल-X ।

लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० १२१९ ।

विशेष—मृत्तिसागर सेठ की कथा है । पद्य सख्या १८१ है । प्रारम्भ में मात्र जत्र भी दिये हुए

८१२. गुटका न० १२३ । पत्र सख्या-८६ । साइज-८ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।

पूर्ण । वेष्टन न० १२२० ।

विशेष—गुणस्थान की चर्चा एव नवल तथा भूधरदास के पद और खडेलवाल गोत्रोत्पत्ति वर्णन ।

८१३. गुटका न० १२४ । पत्र सख्या-५० । साइज-६ $\frac{३}{४}$ ×८ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।

पूर्ण । वेष्टन न० १२२१ ।

निम्न पाठों का संग्रह है —

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
राञ्जल पञ्चीसी	त्रिनोदीलाल	हिन्दी	
नेमिकुमार बारहमासा	—	"	

नेमि राजमति जखडी हेमराज ”

जखडी का अतिम—नीस दिन अरु निरधारजी ।

हेम मणे जीन जानिये । ने पाँ भय पार जी ॥

दिल्ली में प्रतिनिधि हुई थी ।

तिलोकचंद पटवारी गोधा चाफरू ग्रामे ने सं० १७८२ में प्रतिनिधि की थी ।

फल पासा (फल चिंतामणि) तीर्थंकरों की जयमाल एवं पार्श्वनाथ की भिनती आदि ग्रंथ ।

८१४. गुटका न० १२५ । पत्र संख्या—२२ । साइज—६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।  
अपूर्ण । वेस्टन न० १०२२ ।

विषय—सूची	रुत्ती	भाषा	विशेष
जिनराज स्तुति	वनव भक्ति	हिन्दी (गुजराती)	ने० का० सं० १७५६ कागुण सुदी ६ सागानेर में प्रतिनिधि हुई ।
चिंतामणि स्तोत्र	—	”	—
पार्श्वनाथ स्तोत्र	—	”	२० का० सं० १७०६ आषाढ सुदी ५ । ने० का० सं० १७६०
नेमोश्वर लहरी	—	हिन्दी	—
पंचमेक पूजा	विश्वभूषण	”	—
अष्ट विधि पूजा	सिद्धराज	”	—
आदित्यवार कथा (छोटी)	—	”	—
फुटकर कविता—	—	”	—
ज्ञान पञ्चोत्ती	अनासीदास	”	—
मक्तिभगल	”	”	—
नित्यपूजा	—	हिन्दी	पूर्व
जिनस्तुति	रूपचन्द	”	”
आदीश्वरजी का बधावा	फल्याणकार्ति	”	”
सम्यक्त्वी का बधावा	—	”	अपूर्ण

८१५. गुटका न० १२६ । पत्र संख्या—१०२ । साइज—६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—  
सं० १७०४ आषाढ सुदी ५ । अपूर्ण । वेस्टन न० १२२४ ।

विशेष—पूजाओं के अतिरिक्त निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
कल्याणमन्दिर स्तोत्र भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	
सहेली सबोधन	—	"	
बडा कक्का	मनराम	"	
ज्ञानचिंतामणि	मनोहर	"	

८१६ गुटका नं० १२७। पत्र संख्या-२२। साइज-६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-५।  
पूर्ण। वेष्टन नं० १०२६।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
कर्म प्रकृति वर्णन भाषा	—	हिन्दी	—
चौबीस तीर्थकर पूजा	अजयराज	"	ले० का० स० १८१३ अषाढ बुदी २
ध्यान बत्तीसी	बनारसीदास	"	
पद	दीपचंद	"	
जोगीरासा	जिनदास	"	
जिनराज विनती	—	"	१४ चरण हैं।

८१७. गुटका नं० १२८। पत्र संख्या-१००। साइज-६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-५।  
अपूर्ण। वेष्टन नं० १२२८।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
कक्का बत्तीसी	गुलाबराज	हिन्दी	ले० का० स० १८०३ कार्तिक सुदी ५
विशेष—हीरालाल ने प्रतिलिपि की।			
सबोध पचासिका भाषा	विहारीदास	"	२० का० १७५८ कार्तिक बुदी १३।
विशेष—विहारीदास आगरे के रहने वाले थे।			
आदिनाथ का बधावा ( बाजा बाजीशा घणा जहा जनम्या हो प्रसु रीखबकुमार )			
पंच भगल	रूपचन्द	"	
पद ( भस्तग आजि हो पवित्र मोहि मयो )		"	
आठ द्रव्य की भावना	जगराम	"	
जैन पच्चीसी	नवलराम	"	
पद संग्रह	जोधराज बनारसीदास आदि के पद हैं।		
चार भित्तों की कथा	अजयराज	"	२० का० १७२१ जेठ सुदी २३। ले० का० स० १८२१ अषाढ बुदी ६।

वज्रनामि चक्रवर्ति की

भूधरदास

हिन्दी

वैराग्य भावना

८१८. गुटका न० १२६ । पत्र संख्या-१६ । साइज-८ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।  
अपूर्ण । वेष्टन नं० १२३० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

८१९. गुटका न० १३० । पत्र संख्या-७३ से ११४ । साइज-५ $\frac{३}{४}$ ×३ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी ।  
लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२३२ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं का संग्रह है । प्रारम्भ के ७१ पत्र तथा ७४, ७५ पत्र नहीं हैं ।

८२०. गुटका नं० १३१ । पत्र संख्या-१६ । साइज-६×३ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन  
काल-स० १६३६ मादवा सुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२३१ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है । जयपुर नगर स्थित चैत्यालयों की सूची दी हुई है ।

८२१. गुटका न० १३२ । पत्र संख्या-१६६ । साइज-६ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन  
काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२३६ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा, साधु चरना, सक्तामर भाषा आदि पाठ हैं बीच में कहीं २ पत्र नहीं हैं ।

८२२. गुटका नं० १३३ । पत्र संख्या-६७० । साइज-४ $\frac{३}{४}$ ×२ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन  
काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १२३८ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
आदि:यत्रार कथा	मारु	हिन्दी	—
चतुर्दशी कथा	हरिकृष्ण पाण्डे	"	—
पंच मंगल	रुपचन्द्र	"	—
नित्य पूजा पाठ	—	संस्कृत	—
जिन वाणी स्तुति	—	"	—
रूपन पूजा, चैत्रपाल पूजा आदि नैमित्तिक पूजा-संग्रह भी है ।			

८२३. गुटका नं० १३४ । पत्र संख्या-१७० । साइज-६×३ $\frac{३}{४}$  । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण ।  
वेष्टन नं० १०३६ ।



विषय—सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
नेमीश्वर त्रिनती	—	हिन्दी	७ पद्य हैं।
पुरय पाप जग मूल पञ्चीसी भगवतीदास		"	२७ पद्य हैं।
४६ दोष रहित आहार वर्णन	—	"	—
जिन धर्म पञ्चीसी	भगवतीदास	"	अपूर्ण
पद संग्रह	जगताराम	"	—
पद	शोभाचन्द्र	"	—
( भज श्री शिव जिनिंद कूँ )			
पद	जिणदास	"	—
( जैन धर्म नहीं कीना नरदेही पाई )			
पद	जीवनराम	"	—
(अश्वसेन राय कुल मडन उग्र वश अवतारी)			
सप्त व्यसन कवित्त	—	"	—
जिनके प्रभु के नाम की भई हिये प्रतीति ।			
विस्तराय ते नर भजे नरक वास भयभीत ॥			
सोलह स्वप्न (स्वप्न बत्तीसी) भगवतीदास		"	—
विशेष—अन्तिम—निज दौलत पावै मया हरै दोष दुख रास ॥			
भरत चक्रवर्ती के १६ स्वप्नों का वर्णन है ।			
पद	कृष्ण गुलाब	"	—
( समरि जिनद समरना है निदान )			
छहढाला	बुधजन	"	ले० का० सं० १=१७३
शभूराम ने प्रतिलिपि की थी ।			
ननद मौजार्ह	आनंदवर्धन	"	—
का भगडा			
चतुर्विंशति स्तुति	बिनोदीलाल	"	—
पद संग्रह	बनारसीदास एवं भूषरदास	"	—
बाईस परोषह	भूषरदास	"	—
भरखा चउपह	अजयराज	"	—
बारहखडी	—	"	—

८२४ गुटका नं० १३५ । पत्र संख्या-७८ । साइज-६ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$  इंच । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १२६० ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
दर्शन सार	देवसेन	प्राकृत	५२ गायत्रे है ।
त्रिलोक प्रज्ञप्ति	—	"	१२६ "
सामुद्रिक श्लोक	—	संस्कृत	—
सोलह कारण पायडी	—	"	२० श्लोक हैं ।
सप्त ऋषि पूजा	—	"	—
राज पट्टावली	—	"	—
राजाधों के बंसों की पट्टावलि संवत् ८२६ से १६०२ तक की दी हुई है ।			
सञ्जन चित्रा वल्लभ	मल्लिषेयाचार्य	"	—
त्रिलोक प्रज्ञप्ति	—	प्राकृत	—

विशेष—गुटके के अन्त के ४ पृष्ठ आधे फटे हुये हैं ।

८२५ गुटका नं० १३६ । पत्र संख्या-१६८ । साइज-७×६ । भाषा-हिन्दी-संस्कृत-प्राकृत । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १२४१ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
आदित्यवार कथा	मारु	हिन्दी	१५८ पद्य हैं ।
सावना बचीसी	अमितिगति	संस्कृत	—
अनादिनिघन स्तोत्र	—	"	—
कर्म प्रकृति वर्णन	—	"	—
१८८ प्रकृतियों का वर्णन है तथा ८ गुणस्थान तक सात मोहनीय की प्रकृतियों का व्यौरा भी है ।			
त्रिमुन्न विजयी स्तोत्र	—	संस्कृत	—
गुणस्थान जीव संख्या	—	हिन्दी	—
समूह वर्णन			

७ वें गुणस्थान से १४ वें गुणस्थान तक एक समय में कितने जीव अधिक से अधिक व कम से कम हो सकते हैं इसका व्यौरा है ।

चौबीस ठाणा चर्चा	—	हिन्दी	—
वेपटशलाका पुस्तों की नामावलि	—	"	—

परमानन्द स्तोत्र	—	संस्कृत	—
नेमीश्वर के दश मन्त्रांतर	ब्रह्म० धर्मरुचि	हिन्दी	—
अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है ।			
वू दी गढ मे भासज कीधी मथिसी जे नर नारी जो ।			
श्री संघ मगल कारणि कीधी मयौ धर्मरुचि ब्रह्मचारीजी ॥			
निर्वाण काण्ड गाथा	—	प्राकृत	—
लघु सहस्र नाम	—	संस्कृत	—
विषाणहार स्तोत्र	धनजय	”	—
ब्रह्मा कल्याण	—	हिन्दी	—
तीर्थकरों के गण जमादिक कल्याणों की तिथियाँ दी हैं ।			
पल्य विधान	—	”	—
गुरुभक्ति स्तोत्र	—	प्राकृत	—
णमोकार महिमा	—	हिन्दी	—
पल्य विधान कथा	—	संस्कृत	—

८२६. गुटका नं० १३७ । पत्र सख्या-८४ । साइज-६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इन्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।  
पूर्ण । वेष्टन न० १२८२ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
पंच मगल	रूपचन्द्र	हिन्दी	—
तीन चौबीसी एवं बीस तीर्थकरों की नामावलि	—	”	—
त्रिनती संग्रह	—	”	—
वारह भावना	भूधरदास	”	—
वज्रनाभि चक्रवर्त्ती	—	”	—
की वैराग्य भावना			

८२७. गुटका नं० १३८ । पत्र सख्या-६ से ४१ । साइज-६×४ $\frac{३}{४}$  इन्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत ।  
लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १२४३ ।

विषय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
पूजा संग्रह	—	संस्कृत	—
विशेष—देव पूजा बीस विरहमान सिद्ध पूजा आदि का संग्रह है ।			
समुच्चय चौबीस तीर्थकर पूजा अजयराज		हिन्दी	पूर्ण

पंचमेरु पूजा	—	हिंदी	अपूर्ण
तीन चौबीस तीर्थ करों की नामावलि	—	”	पूर्ण
समुच्चय चौबीस तीर्थ कर जयमाल	—	”	—

८२८. गुटका न० १३६ । पत्र संख्या-२३ से ७० । साइज-६ ३/४ X ६ १/४ । भाषा-मस्कृत-हिंदी । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० १२४४ ।

त्रिपय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
पञ्चावती पूजा	—	संस्कृत	अपूर्ण
चंद्रप्रभस्तुति	—	हिन्दी	पूर्ण
( चन्द्रप्रभु जिन प्रयागज्यौ । मवि हो चंद्रप्रभु जिन प्रयागज्यौ ॥ टेक			
पंच ब्यात्रा	—	”	—
आदिनाथ स्तुति	—	”	अपूर्ण
आरती विनती	—	”	ते० का० म० १७७७ मंगसर सुदी ४
पद	—	”	ते० का० सं० १७७४ जौय बुदी १०
विनती	—	”	—
पूजा	—	”	—
दर्शनपाठ	—	संस्कृत	—
भक्तामर स्तोत्र	मानतुंगाचार्य	”	—
सीख गुरुजनों की	—	हिन्दी	—
कल्याणमंदिर भाषा	बनारसीदास	”	ते० का० म० १७६५ आसोज सुदी ४
देवपूजा	—	”	ते० का० सं० १७६६ आश्विन बुदी २

विशेष—गुलामचन्द पाटनी की पोथी है । सांगानेर में प्रतिलिपि की गई थी ।

८२९. गुटका न० १४० । पत्र संख्या-१० से १२० । साइज-१४ X ६ इंच । भाषा-हिंदी-संस्कृत । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० १२४५ ।

त्रिपय-सूची	कर्त्ता	भाषा	विशेष
समयसार भाषा	बनारसीदास	हिंदी	—
भक्तामर स्तोत्र एवं पूजा	—	संस्कृत	—

सिद्धि प्रिय स्तोत्रे	देवनन्दि	संस्कृत	—
क्व्याणमदिर स्तोत्र	कुमुदचद्र	"	—
विषापहार स्तोत्र	धनजय	"	—
नेमीश्वरगीत	जिनहर्षा	हिन्दी	—
जखडी	अनतकीर्ति	"	रचना काल सं० १७५० भादवा सुदी १०
नेमीश्वर राजमति गीत	विनोदीलाल	"	—
मेघकुमार गीत	पूनी	"	—
मुनिवर स्तुति	—	"	—
ज्येष्ठजिनवर कथा	—	"	—

गुटके के प्रारम्भ के ६ पत्र नहीं हैं ।

८३०. गुटका न० १४१ । पत्र संख्या-१२ । साइज-७×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-४ ।  
अपूर्ण । वेष्टन न० १२५३ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

८३१. गुटका न० १४२ । पत्र संख्या-१५ से ४८ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी ।  
लेखन काल-स० १८११ । अपूर्ण । वेष्टन न० १२५४ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
पार्श्वनाथ जयमाल	—	संस्कृत	—
कलिकुंड पूजा	—	"	—
चिंतामणिपूजा	—	"	—
शान्ति पाठ	—	"	—
सरस्वती पूजा	—	"	सं० क्र० सं० १८११ जेठ बुदी १
चेत्रपाल पूजा	—	"	—
महावीर विनती	—	हिन्दी	—

विशेष—चौदनगांव के महावीर की विनती है । इसमें २१ अतरे हैं । अन्य पाठ भी हैं ।

८३२. गुटका नं० १४३ । पत्र संख्या-६० । साइज-४ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन  
काल-सं० १८१३ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२५५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

(१) निर्वाण काण्ड, भक्तामर माया, पंच मंगल, कल्याण मन्दिर यादिव स्तोत्र ।

(२) ४८ यत्र विधि सहित दिए हुए हैं एवं उनके फल भी दिये हुए हैं । ये भक्तामर स्तोत्र के यत्र नहीं हैं ।

(३) गज करणादि की श्रौचिक, द्वितीयदेश भाषा, लाला तिलोकचंद को स० १=१० की जम कुडली भी दी

हुई है ।

(४) वक्रिन्—केई खड खड के निरदन कू जिति आयो ।

पलक में तोरि डार-या किलो जिन धारको ॥

म्हा मगरु कौऊ सुभक्त न सूर ।

राहु केत सौ गरु हौ वहीया बडे सारको ॥

मौर है हजार च्यारि असवार और ।

लगी नहीं वार जोग त्रिच्यो वजार को ॥

माधव प्रताप सेती जैपुर सवाई माफ ।

मारि कडार-यो मगज महाजना मलारको ॥

(५) नौ कोठे में त्रीस का यत्र—

				२
१	६	०	१०	
	०	३	०	
	७	०	५	५
४				

यंत्र का फल भी दिया हुआ है ।

न३३. गुटका नं० १४४ । पत्र संख्या-२२ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।  
अपूर्ण । वेष्टन न० १२१६ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

न३४. गुटका नं० १४५ । पत्र संख्या-७५ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।  
अपूर्ण । वेष्टन न० १२१७ ।

विशेष—खतराम कृत आसावरी है पद्य संख्या ३६ है ।

न३५. गुटका नं० १४६ । पत्र संख्या-३ से २७ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन  
काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० १२१८ ।

विशेष—पंच मंगल पाठ तथा चौबीस ठाणा का व्यौरा है ।

८३६. गुटका न० १४७ । पत्र संख्या-१५ से ६२ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखनकाल-सं० १८३८ आषाढ बुदी ७ । अपूर्ण । वेष्टन न० १२५६ ।

विशेष—सामान्य पाठों का समग्र है तथा सूरत भी वारह खड़ी है जिसके ११३ पद्य हैं ।

८३७. गुटका न० १४८ । पत्र संख्या-२७६ । साइज-७ $\frac{१}{२}$ ×६ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-सं० १७६६ ज्येष्ठ बुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०६० ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
हनुमत कथा	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	—
मविष्यदत्त कथा	—	”	ले० का० सं० १७२७ फाल्गुण सुदी १९
जैनरासो	—	”	—
साधु वदना	वनारसीदास	”	—
चतुर्गति वेलि	हर्षकीर्ति	”	—
अठारह नाता का चौदासा	साह लोहट	”	—
स्फुट पाठ	—	”	—

८३८ गुटका न० १४९ । पत्र संख्या-२० । साइज-६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १२६५ ।

विशेष—सामान्य पाठों का समग्र है ।

८३९. गुटका नं० १५० । पत्र संख्या-११० । साइज-५ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० १२६६ ।

विशेष—पूजाओं का समग्र है ।

८४०. गुटका न० १५१ । पत्र संख्या-१६४ । साइज-६ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी । लेखनकाल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १२६७ ।

विशेष—पद व स्तोत्रों का समग्र है ।

८४१. गुटका नं० १५२ । पत्र संख्या-१३० । साइज-६ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत-प्राकृत । लेखन काल-सं० १७६३ । पूर्ण । वेष्टन न० १२६८ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजाओं, जयमाल तथा भाऊ कवि कृत आदित्यवार ऋषि आदि का समग्र है ।

८४२ गुटका न० १५३ । पत्र संख्या-०४ । साइज- $1\frac{3}{4} \times 6\frac{1}{2}$  इंच । भाषा-हिन्दी-मसृष्ट । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १२७० ।

मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है —

मक्तामर स्तोत्र	मानतु गाचार्य	सस्कृत	—
वारह खड़ी	थीदतलाल	हिन्दी	—

प्रारम्भ—कफा केवल कृष्य मज, जत्र लग रहे शरीर ।

वहोर न औसा दाव है, ग्रान पडेगी मीड ॥१॥

' अतिम—हा हा इह भव हसत हो, हाजन हनै न कोइ ।

वेस हँस खाली गये ए छर रहे सुम जोय ॥

जे छर रहे सुम जोय होय तीनु रे पुरक ।

होनहार थी रहे सुरापन गये छ धरक ॥

सुरग अत पाताल काल ग्रह वाली ।

माइदतलाल वह साहिन पाली ॥

॥ वाराणसी मपूर्ण ॥

८४३. गुटका न० १५४ । पत्र संख्या-१७ । साइज- $6 \times 2\frac{1}{2}$  इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० १०७१ ।

विशेष—जगराम, नरल, सालिग मागचड, आदि कवियों के पद हैं तथा बनारसीदास छत कुछ कविता और सचैये मी हैं ।

८४४ गुटका नं० १५५ । पत्र संख्या-६४ । साइज- $6\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$  इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-६० १६०५ आसोज सुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन न० १२७२ ।

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
सुगु शतक	जिनदास	हिन्दी	२० का० सं० १८५० चैत बुदी ८
मोक्ष पैठी	बनारसीदास	”	—
वारह भावना	मगवतीदास	”	—
निर्वाण काण्ड भाषा	”	”	२० का० सं० १७४३ आसोज सुदी १०
जैन शतक	भूधरदास	”	२० का० सं० १७८१ पौष बुदी १३

८४५ गुटका न० १५६ । पत्र संख्या-४४ । साइज- $7 \times 7$  इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १२७३ ।



विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजादि का संग्रह एव ६३ शलाका पुरुष तथा १६१ पुरय जीवों का व्यौरा दिया हुआ है।

८४६ गुटका नं० १५७। पत्र संख्या-२३४। साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इंच। भाषा-हिन्दी-संस्कृत।

लेखन काल-X। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन न० १२७४।

रचना का नाम	कर्ता	भाषा	विशेष
समयसार वचनिका	—	हिन्दी	ले. का. सं० १६६७ चैत्र सुदी ७।

प्रशस्ति—सं० १६६७ चैत्र शुक्ल पक्षे त्रिथौ सप्तम्यां अनावती मध्ये राजा जैसिंघ प्रतापे लिखाइत सहि देव-सी जी। लिखत जोसी अखिराज प्रसिद्धा।

पद संग्रह	बनारसीदास, रूपचंद	”	—
धर्म धमाल	धर्मचंद	”	ले. का. सं० १६६६ श्रावण बुदी ८।
आत्म हिंडोलना	केशवदास	”	—
वणिजारो रास	रूपचंद	”	ले. का. सं० १६६६ श्रावण सुदी ८।
ज्ञान पच्चीसी	बनारसीदास	”	—
कर्म झर्चीसी	—	”	—
ज्ञान बत्तीसी	बनारसीदास	हिन्दी	—
चंद्रगुप्त के सोलह स्वप्न	ब्रह्मरायमल्ल	”	—
झादशालुप्रेक्षा	भालू	”	—
शुभाषितार्थव	—	संस्कृत	—

८४७. गुटका नं० १५८। पत्र संख्या-१२६। साइज-६×४ इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-X। अपूर्ण। वेष्टन न० १२७५।

विशेष—मुख्य रूप से निम्न पाठों का संग्रह है—

पूजा स्तोत्र एव पद संग्रह	—	हिन्दी	—
जिनगीत	अजयराज	”	—
शिवरमणी के विवाह	”	”	१७ पद्य हैं।

किशनसिंह, अजयराज, घानतराय, दीपचंद आदि कवियों के पदों का संग्रह है।

८४८. गुटका नं० १५९। पत्र संख्या-१५ से ६४। साइज-६×६ $\frac{३}{४}$  इंच। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-X। अपूर्ण। वेष्टन नं० १२७६।

विशेष—चन्द्रायण व्रत वधा है। पद्य संख्या १ ८ से ६३७ तक है। रुपा गद्य पद्य दोनों में ही है। गद्य का उदाहरण निम्न प्रकार है—

जदी सारा लोगा कही। आप तो जाणी प्रवीण छो। जमा चल ग्यान कुला सो तो काम की नहीं। थर पांहर सापर आदर नहीं थर जमारो अथीको घीसर होई। जीसु काइ कहवाम थाव। थर वफो तो तीखीभ लीतो छो। जीसु आपका मनम आवतो करर नै खुलाइ खोनावो ॥

८४६. गुटका नं० १६०। पत्र संख्या—१३ स १४४। साइज—६×५ इंच। भाषा—हिन्दी। लेखन काल—सं० १७२८ कार्तिक वृदी १३। अपूर्ण। वेप्टन नं० १२७७।

° निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय—सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
मट्टारक देवेन्द्रकीर्ति की पूजा	—	संस्कृत	पत्र १३ से १४
सिद्ध प्रिय स्तोत्र टीका	—	हिन्दी	१४ से ३२
योगसार	योगचंद्र	”	३२ से ४६
ले० का० सं० १७३५ चैत्र सुदी ५।			
सांगानेर में लिखा गया।			
अनिरय पचासिका	त्रिभुवनचंद	”	पत्र ४७ से ६६, ५६ पद्य है।
अष्टकर्म प्रकृति वर्णन	—	”	६० से ६८
मुनीश्वरों की जयमाला	जिणदास	”	६८ से ७२
पंचलब्धि	—	संस्कृत	७२ से ७३
धमाल	धर्मचंद	हिन्दी	७३ से ७४
जिन विनती	सुमतिकीर्ति	”	पत्र ७४ से ७८, २३ पद्य है।
गुणस्थान गीत	ब्रह्मचर्जन	”	७८ से ८१
समकित भावगा	—	”	८१ से ८४
परमार्थ गीत	रूपचंद	”	८४ से ८६
पंच बधावा	—	”	८६ से ८८
मेघकुमार गीत	पूनो	”	८८ से ८९
भक्तारम स्तोत्र भाषा	हेमराज	”	८९ से ९५
मनोरथ माला	—	”	९५ से ९६
पद	श्यामदास जिनदास आदि	”	९६ से १०१

मोह विवेक युद्ध	ननारधीदास	हिन्दी	१०१ से ११०
योगीरासो	जिनदास	"	१११ से ११३
जखडी	रूपचद	"	११४ से १२४
पचेन्द्रिय बेलि	ठक्करसी	"	१२४ से १२६
			१० का० स० १५=५
पचगति की बेलि	हर्षकीर्ति	"	१२६ से १३२
पथीगीत	धीहल	"	१३२ से १३४
पद	रूपचद	"	१३६ से १३६
द्वादशालुप्रेक्षा	—	"	१३७ से १४४

८५०. गुटका न० १६१ । पत्र संख्या-१५० । साहज- $\frac{१}{२} \times \frac{१}{२}$  इन्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० १२७८ ।

निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-सूची	कर्ता	भाषा	विशेष
सवैया	केशवदास	हिन्दी	अपूर्ण ।
सोलह घडी जिन धर्म पूजा की कन्हिराम गोधा ने लिपि की ।	—	"	—
पंच बधावा	पं० हरीचैस	"	ले. का १७७१
पार्श्वनाथ स्तुति	—	"	र. का. स १७०४ आषाढ सुदी ५ ।
पद	हर्षकीर्ति	"	१३ पद्य है ।

प्रारम्भ—जिन जपु जिन जपु जीयबा भुवण में सारोजी ।

अन्तिम—सुभ परणाम का हेत स्यो उपजै पुनि अनतो जी ।

हरष कीरतो जीन नाम सुमरणी दीनी मति चुको जी ।

जिन जपु जिन जपु जीवडो ॥

आदिनाथ जी का पद	कुशलसिंह	हिन्दी	ले. का. स १७७१
मयाचद गगवाल ने रौम्हडी में लिपि की थी ।			
नेमिजी की लहर	प० डू गो	"	—
सुगुरु सीख	मनोहर	"	—
साह हरीदास ने प्रतिलिपि की थी ।			

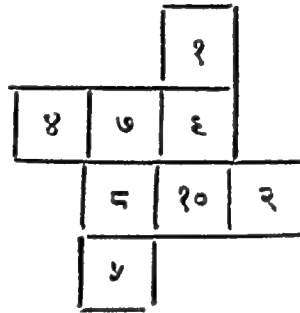
राखल पचवीसी	त्रिनीदीलाल	”	ले. का स १७६३
अठारह नाता का चौदाला	लोहट	”	—
नेमिनाथ का बारहमासा	श्यामदास गोधा	”	जे. म. १७८६ आषाढ सुदी १४ ।

अन्तिम—वाराजी मासो नेम को राजल सोलैहगी गाइ जी ।

नेम जी मुक्ती पहुतण श्यामदास गोधा उरि लावो जादुराइतो ।

इति बारहमासा सपूर्ण ।

कक्का — हि दी ले० का० सं० १७७४  
 यंत्र २० का ८ कोष्ठको क’—



बारह मावना	मगवतीदास	हि दी	ले० का० सं० १८५० मानमल ने प्रतिलिपि की थी ।
कर्म प्रकृति	—	”	—

८५१. गुटका नं० १६२ । पत्र मस्या-५१ से २१२ । साइज— $2 \times 3 \frac{1}{2}$  इंच । मापा—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १२७६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय—सूची	कर्त्ता	मापा	विशेष
माली रासा	जिणदास	हिन्दी	पत्र ६३
नेमीश्वर राजमति गीत	—	”	६५
नेमिनाथ राखल गीत	हर्षकीर्ति	”	६८

प्रारम्भ—म्हारो रै मन मोरवा गिरनारयोँ उडि दैसो रै ।

अन्तिम—मोषि गयो जिण राजह गट गिरनारि मभ्रारे ।

राजमति सुरपति हुई हरष कीरति सुख करारै ।

नेमीश्वर गीत	हर्षकीर्ति	”	६९
आचार रासा	—	”	७०

भंदेतान जयमाल	—	संस्कृत	पत्र ७२
गीत	हेमराज	हिन्दी	७२
चौबीस तीर्थंकर स्तुति के २ पद्य हैं।			
जीयडा गीत	—	”	७४

विशेष—तु मेरो पीव साजना रै हु तेरी वर नारि मेरा जीवडा ।

तुम विन बिष एक ना रहो रे लाल तुभमे प्रेम पियार मेरा जीवडा ।

काथा कामिणी वीनउ रै लाल ॥१॥

६ पद्य हैं।

पूजा संग्रह	—	संस्कृत हिन्दी	६८
श्री जिनस्तुति	श्री० तेजपाल	”	११६
श्रीजिन नमस्कार	यशोचंद	”	११७, ११ पद्य हैं।
धर्म सहेली	मनराम	”	१६३, २० पद्य हैं।
मेघकुमार गीत	पूनी	”	१६६, २१ पद्य हैं।
पद	कवि सुन्दर	”	१६७, २० पद्य हैं।
जीवकी भावना	—	”	१७२, ६ पद्य हैं।
ऋषमनाथ बेलि	—	”	१७३
नेमि राजल गीत	बुगरसी नैनाडा	”	१७५
पंचेन्द्रिय बेलि	ठक्कुरसी	”	१७६ र. का. स. १५८५
कर्म हिंडोलना	हर्षकीर्ति	”	१८१
नेमिगीत	—	”	१८४
नेमिराजमती गीत	—	”	१८६ १७ पद्य हैं।
दीतवार कथा	भारूकवि	”	—
भारह खडी	—	”	—
सीता की धमाल	लक्ष्मीचंद	”	२०२
तत्त्वार्थ सूत्र	उमास्वाति	संस्कृत	२१२

## स्फुट एवं अचशिष्ट साहित्य

८५२. अइमताकुमार रास—मुनि नारायण । पत्र संख्या—८ । साइज—१०×८ $\frac{1}{2}$  इंच । मापा—हिंदी (मध्य) गुजराती मिथित । विषय—कथा । रचना काल—भ० १६८३ । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन न० ११६१ ।

विशेष—१ तथा ५ वां पत्र नहीं है ।

अंतिम—अरिहत वाणी हृदय घापी पूरा इति निज आसए ।

श्री स्तनसीह गणि गछ नायक पाय प्रणमी तासए ॥३३॥

सवत सोल त्रिहासी था वर्षि वृधि वदि पोस मासए ।

कव्य वल्ली माहि रंगिइ रच्यउ सु दर रास ए ॥३४॥

वाचारिषि शिष्य समरचद मुनी विमल गुण आवासए ॥३५॥

८५३. अजीर्ण मजरी—पत्र संख्या—८ । साइज—६ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$  इंच । मापा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५४१ ।

८५४. अर्द्धकथानक—वनारसीदास । पत्र संख्या—६ से ३० । साइज—६×८ $\frac{1}{2}$  इंच । मापा—हिंदी पद्य । विषय—आत्म चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन न० ११६३ ।

विशेष—कवि ने स्वयं का आत्म चरित्र लिखा है ।

८५५. अर्हन् सद्सनाम—पत्र संख्या—६ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$  इंच । मापा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १२०३ ।

विशेष—चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र एवं मंत्र भी दिया हुआ है । पंडित श्री सिंघ सौभाग्य गणि ने प्रतिलिपि की थी ।

८५६. आदिनाथ के पंच मंगल—अमरपाल । पत्र संख्या—८ । साइज—६×६ इंच । मापा—हिन्द पद्य । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—स० १७७२ सावण बुदी १८ । पूर्ण । वेष्टन न० १०१० ।

विशेष—स० १७७७ में जहानाबाद के जैसिंहपुरा में स्वयं अमरपाल गंगवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

अंतिम छंद—अमरपाल को चित सदा आदि चरन ल्यो लाइ ।

मव मव मांभि उपासना रहो सद्य ही थाइ ॥

जिनवर स्तुति दीपचन्द की भी दी हुई है ।

८५७. किशोर कल्पद्रुम—शिव कवि । पत्र संख्या—१८४ । साइज—८३×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—पारु शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन न० १०१२ ।

विशेष—इति श्री महाराज नृपति किंशोरदास आज्ञा प्रमाणेन शिव कवि विरचितं अथ किशोर कल्पद्रुमे  
सिखरादि विधि वरनन नाम नवविंशत साखा समाप्ता । ६२० पद्य तक है । आगे के पत्र नहीं हैं ।

८५८ कुवलयानन्द कारिका—पत्र संख्या—८ । साइज—१२×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—रस  
अलंकार । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १०७१ ।

विशेष—एक प्रति और है । इसका दूसरा नाम चन्द्रालोक भी है ।

८५९ ग्रन्थ-सूची—पत्र संख्या— । साइज—८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सूची । रचना  
काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन न० ११५२ ।

८६० चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न—पत्र संख्या—३ । साइज—६३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—  
विविध । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ६६३ ।

विशेष—सम्राट् चन्द्रगुप्त को जो सोलह स्वप्न हुये वे उनका फल दिया हुआ है ।

८६१ चौबीस ठाणा चौपई—साह लोहट । पत्र संख्या—६२ । साइज—११½×६ इञ्च । भाषा—  
हिंदी । विषय—सिद्धांत । रचना काल—स० १७३६ मंगसिर सुदी ५ । लेखन काल—स० १७६३ फाल्गुण सुदी १४  
शाके १६२३ । पूर्ण । वेष्टन न० ४२७ ।

विशेष—कपूरचन्द ने टोंक में प्रतिलिपि की थी । प्रशस्ति में लोहट का पूर्ण परिचय है ।

रचना चौपई छन्द में है जिनकी संख्या १३०० है । साह लोहट अच्छे कवि थे जो श्री धर्मा के पुत्र थे ।  
प० लक्ष्मीदास के आग्रह से इस ग्रन्थ की रचना की गयी थी । भाषा सरल है ।

प्रारम्भ—श्री जिन नेमि जिनदचद वदिय आनंद मन ।

सिध सुध अकलक ध्यं सर मरि मयंक तेन ॥

ए अष्टादश दोष रहत उन अत्रत कोइर्य ।

ए गुण रत्न प्रकास सुजस जग उन मजोइय ॥

ए ज्ञान वहै यमृत सबै इवै साति वहै सीतधर ।

ए जीव स्वरूप दिखाय दे वहै लखावै लोक वर ॥

अंतिम—बुध सज्जन सब ते अरदास, लखि चौपई करोमत हासि ।

इनकी पारन कोऊलही, मै मोरी मति सास कही ॥१८५॥

लाख पचीस निन्याणव कोडि एक अथ बुवलीच्योनोडि ।  
सो रचना लख व्योन लाय । जंग्रग कदे धरु बनाय ॥१८१॥

८६२. जखडो—पत्र संख्या—३ । साइज—१२×१२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्फुट । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १०४६ ।

८६३. जीतकल्पाचचूरि—पत्र संख्या—५ । साइज—१०×१२ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ११६२ ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण भी दिया हुआ है ।

८६४. दस्तूर मालिका—वंशीधर । पत्र संख्या ६ । साइज १०×१० । भाषा—हिन्दी । विषय—अर्थशास्त्र । रचना काल स० १७६५ । लेखन काल—X । अपूर्ण एवं जीर्ण । वेष्टन न० १२८० ।

विशेष—इसमें व्यापार सबधी दस्तूर दिये हुए हैं ।

प्रारम्भ— जो धरत गनपति व्राते मै धरत जे लोड ।

गुन वदत इकदत के सर मुनि जन सब कोइ ॥ १ ॥

हीन अक चक घुज पग पर प्रय पाप प्रसाद ।

वसीधर वरननि कियो सुनत होय यहलाद ॥ २ ॥

जदि यदुनी लेखे धनै लेखे के करतार ।

मटकत विनि दस्तूर है अटकत नारवार ॥ ३ ॥

सूख पंथ जो अनिरिगै पहुचहि मजल ऊताल ।

रहिनीना विसराइ है सकट वकट जाल ॥ ४ ॥

पातमाहि आलम अमिल सालिम प्रबल प्रताप ।

आलम मे जाओ सबै घर घर जापत जाप ॥ ५ ॥

छत्र साल भुवपाल कौ राजन राज विसाल ।

सऊल हिन्दु उग जाल मे मनौ इन्द्रदुत जाल ॥ ६ ॥

ताके अता सोमिजे सक्तसिंघ बलवान ।

उग्रसईगा रव हके नद दीह दलवान ॥ ७ ॥

सहर सक्तपुर राज ही सब समाज सब ठौर ।

परम धरम सुकरन जहा सबै जगत सिर मौर ॥ ८ ॥

सबत सत्रासैकरा पैसठ परम पुनीत

करि वरननि यहि अर्थ को छइ चरनन करि मीत ॥ ९ ॥



अथ कपडा खरीद को दस्तर —

जिते रुपैया मोल को गज प्रत जो पट लेइ ।

गिरह एक आना तिते लेख लिखारी देइ ॥ १० ॥

आना उपर हीय गज प्रति रुपिया अक ।

तीन दाम अठ असु बट ग्रह प्रति लिखौ निसक ॥ ११ ॥

इसमें कुल १४३ तक पद्य हैं । प्रति अपूर्ण है ।

८६५ नख शिख चर्णन—पत्र सख्या-६ से १६ । साइज-२×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-शृंगार

रम । रचना काल-× । लेखनकाल-स० १८०६ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०१३ ।

विशेष—बखतरान साह ने लिखी थी ।

८६६. नित्य पूजा पाठ समग्र । पत्र सख्या-१० । साइज-११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ७०५ ।

८६७ पत्रिका—पत्र सख्या-१ । साइज-× । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-प्रतिष्ठा का वर्णन । रचना

काल-× । लेखनकाल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२६१

विशेष—स० १६२१ में जयपुर में होने वाले पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की निमंत्रण पत्रिका है ।

८६८. पद समग्र—जौहरीलाल । पत्र सख्या-२४ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी पद्य ।

विषय-पद । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२१२ ।

विशेष—२४ पदों का समग्र है ।

८६९ पन्नाशाहजादा की बात—पत्र सख्या-२० । साइज-६ $\frac{३}{४}$ ×८ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । रचना

काल-× । लेखन काल-स० १७६० आसोज सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ५५ ।

विशेष—श्राविका कुशला ने बार्ड केशर के पठनार्थ प्रतिलिपि की ।

२० से आगे के पत्र पानी में मीगे हुए हैं । इनके अतिरिक्त मुख्य पाठ ये हैं—

पद हरीसिंह

सुमति कुमति का गीत विनोदीलाल

१८७२

जोगीरासा जगदास

—

८७०. परमात्म प्रकाश—योगीन्द्रदेव । पत्र सख्या-५ से १४ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-स० १५६७ चैत्र बुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११६६ ।

विशेष—ईडर के दुर्ग में लेखक हूंगर ने प्रतिलिपि की ।

अत में यह भी लिखा है:—थीमूलसधे थी मत् हर्ण सुकार्ति न पुस्तक मिठ ॥ त्रसुपुरे ॥

८७१. पल्य विधान पूजा—रत्न नदि । पत्र सख्या—१ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×१ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेस्टन नं० १२११ ।

८७२. पाठ संग्रह—पत्र सख्या—६१ । साइज—२२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत—प्राकृत । विषय—संग्रह ।

लेखन काल—X । पूर्ण । वेस्टन नं० १०६७ ।

विशेष - आशाधर विरचित प्रतिष्ठा पाठ के पाठों का संग्रह है ।

८७३. पाठ संग्रह—पत्र सख्या—२० । साइज—१२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । रचना

काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेस्टन नं० ६८० ।

विशेष—इष्ट छत्तीसी, एकमीमाव, स्तोत्र, मत्तामर स्तोत्र, निर्वाणकांड, परज्योति, कृष्णार्ण मन्दिर-श्रीर विवापहार स्तोत्र हैं ।

८७४. पाठ संग्रह—भृगुवृत्तीदास । पत्र सख्या—३ । साइज—१०×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

संग्रह । लेखन काल—X । पूर्ण । वेस्टन नं० ६६७ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

मृदाष्टक वर्धन—

सम्यक्त्व पञ्चीसी—

वैराग्य पञ्चीसी—

२० का० नं० १७६० ।

८७५. पाठ संग्रह—पत्र सख्या—२१ । साइज—१२×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—संग्रह । रचना

काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेस्टन नं० ४७५ ।

विशेष—मत्तामर स्तोत्र, सहस्र नाम तथा तत्त्वार्थ सूत्र का संग्रह है ।

८७६. पाठ संग्रह—पत्र सख्या—१० । साइज—८×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । लेखन

काल— । पूर्ण । वेस्टन नं० ८६६ ।

विशेष—सास बहू का भगडा आदि पाठों का संग्रह है ।

८७७. बनारसी विलास—बनारसीदास । पत्र सख्या—७ से ८७ । साइज—११ $\frac{३}{४}$ ×१ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—

हिन्दी (पद्य) । विषय—संग्रह । रचना काल—X । संग्रह काल—१७०२ । लेखन काल—सं० १७०८ माघ जुदी ६ । अपूर्ण  
वेस्टन नं० ७३६ ।

विशेष—समलकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी । प्रारम्भ के २१ पत्र फिर लिखवाये गये हैं ।

८७८ प्रति नं० २ । पत्र संख्या—१३७ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । लेखन काल—स० १७०७ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६३ ।

विशेष—३ प्रतियाँ और हैं ।

८७९ बुधजन विलास—बुधजन । पत्र संख्या—१२६ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सग्रह । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७२० ।

८८० मजलसराय की चिट्ठी—पत्र संख्या—२२ । साइज—६×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—यात्रा वणन । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८४७ मादवा बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२६४ ।

विशेष—मजलसराय पानीपत वाले की चिट्ठी है । चिट्ठी के अंत में पदों का सग्रह भी है ।

८८१ रागमाला—पत्र संख्या—६ । साइज—६ $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । भाषा—संस्कृत—हिन्दी । विषय—संगीत शास्त्र रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६०६ ।

८८२ लघु क्षेत्र समास—पत्र संख्या—४६ । साइज—६ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । रचना काल—X । लेखनकाल—X । पूर्ण । जीर्ण । वेष्टन नं० ११८८ ।

विशेष—मूल अथ प्राकृत भाषा में है जो रत्नशेखर कृत है । यह इसकी टीका है ।

८८३. लीलावती भाषा—पत्र संख्या—१ से २४ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—गणित शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३४ ।

८८४. वर्द्धमानचरित्र टिप्पण—पत्र संख्या—३८ से ५१ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १४ = १ आसोज सुदी १० । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२६३ ।

विशेष—वर्द्धमानचरित्र संस्कृत टिप्पण । यह टिप्पण जयमिषहल के वृद्धमाण कव्व ( अपभ्रंश ) का संस्कृत टिप्पण है । टिप्पण का अन्तिम भाग ही अवशिष्ट है ।

८८५. व्यसनराजवर्णन—टेकचन्द्र । पत्र संख्या—१८ । साइज—१२×७ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—विविध । रचना काल—स० १८२७ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ८७४ ।

विशेष—सप्त व्यसनों का वर्णन है पद्य संख्या २५६ है ।

८८६. श्रावक धर्म वर्णन—पत्र संख्या—१० । साइज—४ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी । विशेष—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १२२३ ।

विशेष—गुटका साइज है ।

८८७ सञ्जाय—विजयभद्र । पत्र संख्या-१ । साइज-१०×४<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ११७१ ।

विशेष—इसके अतिरिक्त आनंद विमल सूरि की सञ्जाय भी दी हुई है ।

८८८ साधर्मी भाई रायमल्लजी की चिट्ठी—रायमल्ल । पत्र संख्या-१० । साइज-१०×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । रचना काल-स० १८०१ माह बुदी ६ । लेखन काल-स० १८२१ माह बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० ७०८ ।

विशेष—रायमल्लजी के हाथ की चिट्ठी है ।

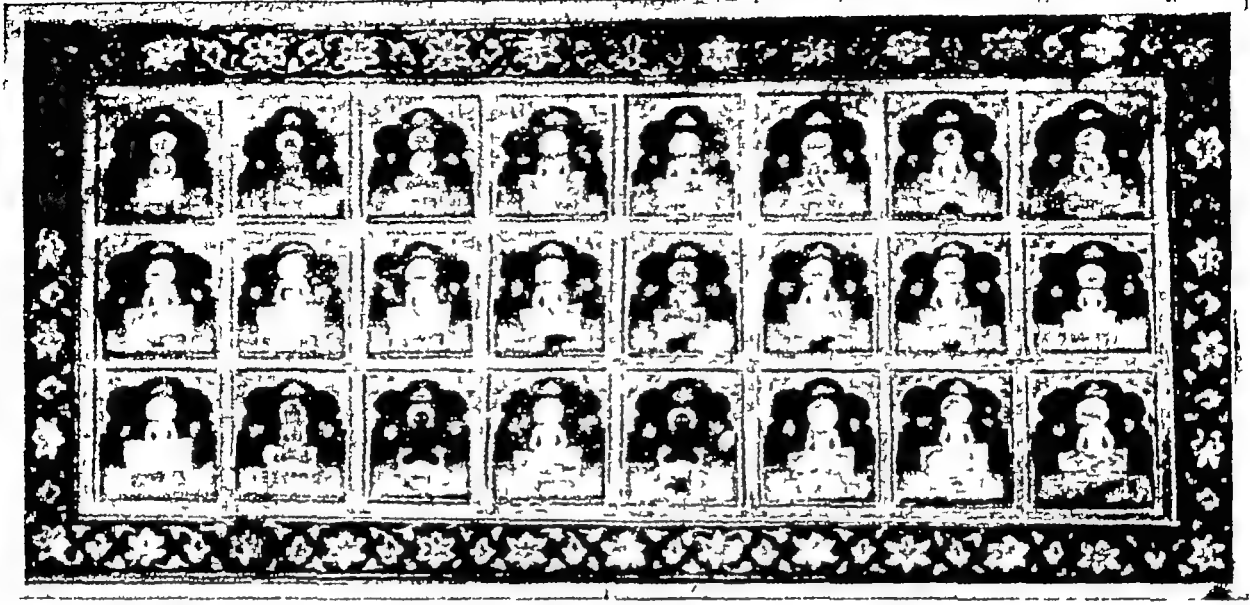
८८९ शालिभद्र सञ्जाय—मुनि लाचन स्वामी । पत्र संख्या-१ । साइज-१०×४<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तुति । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७२६ चैत्र बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन न० ११७० ।

विशेष—रामजी ने प्रतिलिपि की थी ।

८९० हरिवंश पुराण—महाकवि वधल । पत्र संख्या-२१६ से -३६ । साइज-१२×४<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण एवं जीर्ण । वेष्टन न० १२१० ।



जयपुर में ठोलियों के मन्दिर के शास्त्र भण्डार में सप्रहीत एक कलात्मक पुष्पा  
जिस पर चौबीस तीर्थङ्करों के रगीन चित्र दिये हुये हैं ।



वामृतिः पद्मम  
वदुःखाकरीचृतं  
वीजसंवनयान  
कंकारागारनि  
जांघारंयमस्त्वा  
नमिवापरोत्प  
खड्गहस्ताभ्य  
स्तत्रदुःषस्यप  
शुराशिशिः नृत्य  
स्वजनमध्यास्त

जयपुर के दिगम्बर जैन मन्दिर पार्श्वनाथ के शास्त्र भण्डार में सप्रहीत  
यशोधर चरित्र के सचित्र प्रति का एक चित्र ।



# श्री दि० जैन मन्दिर ठोलियों

के

## ग्रन्थ

### विषय—सिद्धान्त एवं चर्चा

१ आगमसंसार—मुनि देवचन्द्र । पत्र सख्या-४६ । साहज-१०×४३ इत्त । भाषा—हिन्दी गद्य ।  
विषय—सिद्धान्त । रचना काल—स० १७७६ । लेखन काल—स० १७६६ । पूर्ण । वेस्टन न० ४०४ ।

प्रारम्भ—अथ भव्य जीव नै प्रतिबोधवा निमित्तै मोक्ष मार्गनी वचनिका कहै छै । तिहा प्रथम जीव अनादि काल  
नै मिथ्याती भौ । काल लवधि पामी नै तीन करण करै छै प्रथम यथाप्रवृत्ति करण १ बीजौ अपूरव करण २ तीजौ अनिवृत्ति  
करण ३ तिहा यथा प्रवृत्ति कहै छै ।

अन्तिम—सवत् सतर छिहोतरै मन सुद्ध कायुष मास ।

मोटै कोट मरोट में वसतां सुख चौमास ॥५॥

सुविहत खतर गछ सुधिर जुगवर जिणचन्द्र सूर ।

पुण्य प्रधान प्रधान गुण पाठक गुण्ये भूर ॥६॥

तास सीस पाठक प्रवर जिन मत परमत जाण ।

भक्तिक कमल प्रतिबोधवा राज सार गुर भाण ॥७॥

ज्ञान धरम पाठक प्रवर खम दम गुण्ये आगाह ।

राज हस शुभ सकति सहज न करै सराह ॥८॥

तास सीस आगम रूची जैन धर्म को दास ।

देवचन्द्र आनद मय कीनौ ग्रन्थ प्रकाश ॥९॥

आगम सारोद्धार यह प्राकृत सस्कृत रूप ।

अथ कियो देवचन्द्र मुनि ज्ञानामृत रस कूप ॥१०॥

धर्मामृत जिन धर्म रति भविजन समकित वत ।

सुद्ध अमर पदउ लषण अथ कियो गुण वत ॥११॥

तत्व ज्ञान मय अथ यह जो स्वै वालाबोध ।

निज पर सत्ता सब लखै श्रोता लहै सुबोध ॥१२॥

ता कारण देवचन्द्र कीनी भाषा ग्रंथ ।  
 मणसी गुणसी जे मधिक लहसी ते सिव पथ ॥१३॥  
 कषक शुद्ध थोता रूची मिल ज्यो ए सयोग ।  
 तत्व ज्ञान अद्धा सहित बल काया नीरोग ॥१४॥  
 परमागम सु राचज्यो लहस्थो परमानन्द ।  
 धर्म राग गुरु धर्म सुं धरि ज्यो ए सुख वृन्द ॥१५॥  
 अथ कियो मनरंग सु सित पख फागुण मास ।  
 मौमवार अरु तीज तिथि सफल फली मन आस ॥१६॥

इति श्री आगमसार अथ सपूय । स० १७६६ वर्षे मार्गशीर्ष बुदी १२ श्रृगुवासरे त्रिभुवनगरमध्ये रावत देवीसिंह राज्ये लिपि कृत मद्रु अखैराम पठनार्थ । बाई माणा थी ।

२. आश्रवत्रिभगो । पत्र संख्या-११० । साइज-१२×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२२ ।

विशेष—पत्र २० से २५ तक सत्ता त्रिभगी तथा इसमे आगे मात्र त्रिभगी है । गुणस्थान तथा मार्गशा का वर्णन है ।

३. कर्मप्रकृति—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-२१ । साइज-१२×४ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल- । पूर्ण । वेष्टन नं० १६७ ।

विशेष—दो प्रतियाँ और हैं ।

४. कर्मप्रकृति वृत्ति—सुमतिकीर्त्ति । पत्र संख्या-४६ । साइज-१२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८५६ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७८ ।

विशेष—जयपुर में शातिनाथ चैत्यालय में प० आनन्दराम के शिष्य श्री चद्र ने प्रतिलिपि की थी ।

५. गुणस्थान चर्चा—पत्र संख्या-११० । साइज-१२×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७६० । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१३ ।

विशेष—गोमट्टसार के आधार से हैं ।

६. गुणस्थान चर्चा । पत्र संख्या-४८ । साइज-१२×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१६ ।

विशेष—गोमट्टसार के आधार से वर्णन है ।



७ गोमट्टसार ( कर्मकाण्ड )—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सख्या—४२ । साइज—१०×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—  
प्राकृत । विषय—सिद्धांत । रचना काल—X । लेखन काल—स० १७८५ । पूर्ण । वेष्टन न० २६५ ।

विशेष—संस्कृत हिन्दी टीका सहित है । केवल कर्म प्रकृति का वर्णन है ।

८ गोमट्टसार जीवकाण्ड भाषा—प० टोडरमल । पत्र सख्या—१६६ । साइज—१३×८ इच ।  
भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धांत । रचना काल—स० १८१८ । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १२८ ।

विशेष—ग्रन्थ की एक प्रति और है लेकिन वह भी अपूर्ण है ।

९ गोमट्टसार कर्मकाण्ड भाषा—हेमराज । पत्र सख्या—१०१ । साइज—११×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—  
हिन्दी ( गद्य ) । विषय—मिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—स० १७०० मगसिर सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन न० ८६ ।

विशेष—दीना ने रामपुर में प्रतिलिपि की थी ।

एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है । इस प्रति के पुट्टे पर सुन्दर चित्रकारी है ।

१० चरचा संग्रह । पत्र संख्या—१५ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—  
चर्चा ( धर्म ) । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १४७ ।

११ चर्चाशतक—द्यानतरायजी । पत्र सख्या—२८ । साइज—८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।  
विषय—चर्चा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०६ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । २ प्रतिया और हैं ।

१२ चर्चा समाधान—भूधरदासजी । पत्र संख्या—१११ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी  
गद्य । विषय—सिद्धांत । रचना काल—स० १८०६ माघ सुदी ५ । लेखन काल—स० १८१३ माघ सुदी १५ । पूर्ण ।  
वेष्टन न० १६ ।

विशेष—यति निहालचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

१३ चौबीस ठाणा चर्चा—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सख्या—३१ । साइज—११×५ इञ्च । भाषा—  
प्राकृत । विषय—सिद्धांत । रचना काल—X । लेखन काल—स० १७४१ कार्तिक जुदी १० । पूर्ण । वेष्टन न० १८६ ।

विशेष—जहानाबाद मध्ये राजा के बाजार में पंडित माया राम के पठनार्थ प्रतिलिपि ली गई । तीन प्रतियाँ  
और हैं । ये संस्कृत टिप्पणी टीका सहित हैं ।

१४ चौबीस ठाणा चर्चा—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सख्या ८ । साइज—११ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—  
प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १७३ ।

विशेष—पत्र सख्या ४ से आगे ऋतियुग की वीनती है भाषा—हिन्दी तथा ब्रह्मदेव कृत है

१७ ज्ञान क्रिया सवाद—पत्र संख्या—३ । साइज—१०×११ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चर्चा ।  
रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७८६ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० ४१७ ।

विशेष—श्लोक संख्या—१५ है । तृतीय पत्र पर धर्मचर्चा भी दी हुई है ।

१६ तत्त्वसार दोहा—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र संख्या—७ । साइज—११×८ इंच । भाषा—गुजराती  
लिपि देवनागरी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ३६५ ।

प्रारम्भ—समय सार रस सामलो, रे समरवि श्री समिसार ।

समय सार सुख सिद्धनां, सौमि सुख विचार ॥१॥

अप्या अपि आपमुं रे आपण हेति आप ।

आप निमित्त आपणो प्यातुं रहित सताप ॥२॥

अप्यार प्राण प्रीणित सदा रे निश्चय यय प्रियाण ।

सत्ता सुख वर बोधमि चैतना चुम प्राण ॥३॥

अप्यार प्राण व्यवहार श्री रे दश दीसि एह भेद ।

इ दिय वल उरसास सुं आयु तथा बहु छेद ॥४॥

अतिम—मणो मनीषण २ मक्षितमर भारि चैता चिद्रूप ।

चितता चिचि चैतन चतुर माव आवए ॥

सातु धात देहवेगलो अमल सकल सु विमल मावए ।

आत्म सरुप परुवण पटङ्गो पावन मत ।

ध्याजो ध्यानि ध्येयस्य प्याता धार मर्हत ॥६०॥

सात शिव कर ०

ज्ञान निज मान शुद्ध चिदानन्द चीततो मूकी माया मोह गेह देहए ।

सिद्ध तथा सुखजि मल हरहि आत्मा भावि शुम ए हए ॥

श्री विजय कीर्त्ति गुरु मनि धरी प्याउ शुद्ध चिद्रूप ।

भट्टारक श्री शुभचन्द्र मणि या तु शुद्ध सरुप ॥६१॥

॥ इति तत्त्वसार दूहा ॥

१७ तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—भट्टारक प्रभाचन्द्र देव । पत्र संख्या—२०६ । साइज—११×८ इंच ।  
भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन न० १७७ ।

विशेष—यह तत्त्वार्थ सूत्र की टीका है । सरल संस्कृत में है । कदौ हिन्दी भी द्रष्ट होती है । ६ अक्षरों  
तक है ।

अध्याय ८ सूत्र-३४ हिंसानुस्ते-रौद्र ध्यान कथयति तद्व्यथा प्रकार ४ भवन्ति । हिंसानद कोर्ष । जीव घात की काइ । सूली चोर सती होय, संग्रामु होय तजइ आनन्दु सुख मानइ त हिंसानन्दु होइ । रौद्र ध्यान प्रथम पद नरक कारण इति ज्ञात्वा । हिंसानद न कर्त्तव्य ।

इति तत्वाथ रत्नप्रसाकर ग्रन्थे सर्वार्थमिद्धो मुनि श्री धर्मचन्द्र शिष्य प्रमाचन्द्र देव विरचिते ब्रह्म जैयतु साधु हावदेव भावना पट्टणनिमित्ते सवरनिजरा पदार्थकथन मनुष्यत्वेन नव सूत्र विचारप्रकरण ।

बीचमें २ से ७ पत्र भी नहीं हैं ।

१८. तत्त्वार्थसार—अमृतचन्द्र सरि । पत्र संख्या-२५ । साइज-१२×१५ इञ्च । भाषा संस्कृत ।

विषय-सिद्धान्त । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन २१४ ।

प्रति प्राचीन है ।

१९ तत्त्वार्थसूत्र—उमास्वाति । पत्र संख्या-१४८ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-

सिद्धान्त । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । अपूर्ण । वेष्टन न० १०५ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२०. प्रति न० २ । पत्र संख्या-५० । साइज-८×५ इञ्च । लेखन काल-स० १८७६ चैत्र सुदी ६ पूर्ण । वेष्टन नं० १३३ ।

विशेष—सूत्रों पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है । चार प्रतियाँ और हैं किन्तु वे मूल मात्र हैं ।

२१. तत्त्वार्थसूत्र टीका ( टट्टा ) । पत्र संख्या-२५ । साइज-१३×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत

हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-५ । लेखन काल-स० १९१२ आसोज बुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन न० ७० ।

विशेष—लाला रतनलाल ने करवा शमसावाद में प्रतिलिपि की ।

२२. प्रति न० २ । पत्र संख्या-४६ । साइज-१२×८ इञ्च । लेखन काल-५ । पूर्ण वेष्टन न० ३६७ ।

प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२३. तत्त्वार्थसूत्र भाषा टीका - कनककीर्ति । पत्र संख्या-१४२ । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । रचना काल-५ । लेखन काल-स० १७४४ कार्तिक बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० ४७ ।

विशेष—कनककीर्ति ने जोशौ जगन्नाथ से लिपि कराई ।

उमा स्वाति रचित तत्त्वार्थ सूत्र पर श्रुतसागरी टीका की हिन्दी व्याख्या है । एक प्रति और है ।

२४ त्रिभगीसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-३६ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । रचना काल-५ । लेखन काल-५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३४३ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

२५ त्रिलोकासारसदृष्टि—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र संख्या—६३ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×८ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८८८ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० ६४ ।

विशेष—जयपुर में कवक हानजी ने महात्मा दयाचंद मे प्रतिलिपि कराई थी ।

२६ द्रव्यसंग्रह—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र संख्या—६ । साइज—११ $\frac{1}{2}$ ×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धांत । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण वेष्टन न० १७३ ।

विशेष—४ प्रतिया और हैं ।

२७. प्रति न० २ । पत्र संख्या—५७ । साइज—१०×४ इञ्च । लेखन काल—स० १७५० फागुन सुदी १८ । पूर्ण । वेष्टन न० २६४ ।

विशेष—हिन्दी और संस्कृत में भी अर्थ दिया है ।

२८. द्रव्यसंग्रह टीका—ब्रह्मदेव । पत्र संख्या—१११ । साइज—११×३ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धांत । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८१६ मादवा सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० १७६ ।

विशेष—शेखर प्रशास्त्र निम्न प्रकार है ।

सत्र १४१६ को मादवा सुदी १३ गुरौ दिने श्रीमधोगिनीपुरे सकल राज्य शिरोमुकुट माणिक्य मरीचिकृत चरण-कमल पाठ पाठस्य श्रीमत् परोक्ष साहे सकल साम्राज्यपुरा विश्राणस्य समये वर्तमाने श्री कुन्दकुन्दाचार्येण मूलसधे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे मष्टारक रत्नकीर्ति कथ कण्ठ मुवांमृवांणी श्री प्रमाचद्राणां तस्य शिष्य ब्रह्म नाथू पठनार्थं अत्रोत्तमान्वये गोहिल गोत्रे भरभल वास्तव्य परम श्रावक साधू साउ भार्या वीरो तयो पुत्र साउ उधम भार्या बालही तस्य पुत्र कुलधर भार्या पाणश्रही तस्य पुत्र मरुहपाली भार्या लोधा ही भरुहपाल लिखा पित रुम जयार्थ । रुनलदेव पंडित लिखितं । शुभ भवत् ।

२९ द्रव्यसंग्रह भाषा—पर्वतवर्मार्थी । पत्र संख्या—२६ । साइज—१२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी गुजराती लिपि देवनागरी । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८४३ फागुन बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन न० १८ ।

विशेष—प० केशरीसिंह ने अलावर में प्रतिलिपि की थी ।

३०. नामकमे प्रकृतियों का वर्णन—पत्र संख्या—१६ । साइज—१० $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ३६१ ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

३१. पचासिकाय टीका मूलरुर्त्ता—श्री० कुन्दकुन्द । टीकाकार अमृतचंद्र सूरि । पत्र संख्या—६५ । साइज—१३ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—प्राकृत-संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १५० ।

विशेष—२ प्रतियाँ और हैं ।

३२. पंचास्तिकाय भाषा टीका—पाडे हेमराज । पत्र संख्या—१६२ । साइज १० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—प्राकृत हिन्दो मय । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—स० १७१६ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० ३४ ।

विशेष—रामपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३३. पान्दिक सूत्र—पत्र संख्या—६ । साइज—६ $\frac{३}{४}$ ×३ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ४२४ ।

३४. भगवती सूत्र—पत्र संख्या—५७८ से ८५४ । साइज १३×६ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८५४ आसोज सुदी १ । अपूर्ण । वेष्टन नं० १६२ ।

विशेष—टन्वा टीका गुजराती, लिपि हिन्दी में है । निहालचन्द्र के शिष्य तुलसा ने किशनगढ नगर में प्रतिलिपि की थी ।

३५. भावसग्रह—पण्डित वामदेव । पत्र संख्या—३४ । साइज—११×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८५८ पौष सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६६ ।

विशेष—सवाई जयपुर में शान्तिनाथ चैत्यालय ( इसी ठोलियों के मन्दिर में ) विद्युध आनन्दराम के शिष्य श्रीचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

विशेष—एक प्रति और है ।

३६. भावसग्रह—देवसेन । पत्र संख्या—२० । साइज—११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ३० ।

३७. भावसग्रह—श्रुतमुनि । पत्र संख्या—१३ । साइज—११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—स० १५६६ माघ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० २८६ ।

विशेष—ब्रह्म हरिदास ने प्रतिलिपि की । ३ प्रतियाँ और हैं ।

३८. रत्नसंचय—विनयराज गण्ण । पत्र संख्या—१४ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—स० १७७० कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० २०७ ।

श्री विद्यासागर सूरि के शिष्य लक्ष्मीसागर गण्ण ने प्रतिलिपि की थी । पं० जीवा ब्राह्मीचाल के पठनाथ प्रतिलिपि की गई थी ।

३९. लब्धिसार टीका—माधवचन्द्र त्रैविच्यदेव । पत्र संख्या—७७ । साइज—११×७ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—सिद्धान्त । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८८४ फागुन बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० १८२ ।

४०. विशेष सत्ता त्रिभंगी . । पत्र संख्या-२६ । माहज-१२X६ इंच । भाषा-हिन्दी । त्रिभंग-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्णा । वेष्टन न० ३२३ ।

४१ सिद्धान्तसार दीपक—सकलकीर्ति । पत्र संख्या-२२८ । साहज-१०X८ इंच । भाषा-संस्कृत । त्रिभंग-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-स० १८२१ । पूर्णा । वेष्टन न० २५२ ।

विशेष—कुल १६ अधिकार हैं तथा प्रथम (श्लोक) संख्या ८८१६ है । २ प्रतियां और हैं ।

४२ सिद्धान्तसार समग्र—आचार्य नरेन्द्रसेन । पत्र संख्या-६६ । साहज-१२X६ इंच । भाषा-संस्कृत । त्रिभंग-सिद्धान्त । रचना काल-X । लेखन काल-स० १८२३ ज्येष्ठ सुदी २ । पूर्ण वेष्टन न० २६ ।

विशेष—जयपुर में चंद्रप्रभ चैलाख्य में पंडित रामचन्द्र ने माधवामह के मध्यम प्रतिलिपि की थी । श्लोक संख्या २८१६ । एक प्रति और है ।

### विषय-धर्म एवं आचार शास्त्र

४३. अनुभव प्रकाश—दीपचन्द काशलीवाल । पत्र संख्या-५५ । साहज-८X७ इंच । भाषा-हिन्दी मध्य । विषय-धर्म । रचना काल-स० १७७४ । लेखन काल-X । पूर्णा वेष्टन न० ११६ ।

४४. आचार शास्त्र . . . . . । पत्र संख्या-२० । साहज-११X८ । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्णा । वेष्टन न० २२० ।

४५. आचारसार—वीरनंदि । पत्र संख्या-१०८ । साहज-११X६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-आचार । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्णा वेष्टन न० २५१ ।

विशेष—कुल २२ अधिकार हैं। प्रारम्भ के पत्र जीर्ण हो चुके हैं।

४६. उनतीसवोल दंडक—पत्र संख्या-१०। साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$  इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। रचना काल-५। लेखन काल-५। पूर्ण। वेष्टन न० २६५।

४७. उपदेशसिद्धान्त रत्नमाला भाषा—भागचद। पत्र संख्या-४३। साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इंच। विषय-धर्म। रचना काल-सं० १६१२ आषाढ बुदी ०। लेखन काल-५। पूर्ण। वेष्टन न० ६।

विशेष—मूलग्रंथ श्री गायार्ण मी दी हुई हैं।

४८. उपासकाध्यन—आ० वसुनदि। पत्र संख्या-५५। साइज-१२×५ $\frac{३}{४}$  इंच। भाषा-परकृत। विषय-आचार। रचना काल-५। लेखन काल-सं० १८०० भाद्रवा सुदी ६। पूर्ण वेष्टन नं० ५४।

विशेष—प्रति हिंदी ग्रंथ महित है। ग्रंथ का दूसरा नाम वसुनन्दि थावकाचार भी है। एक प्रति और है।

४९. प्रति न० २। पत्र संख्या-३८। साइज-६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच। लेखन काल-सं० १५६५ चैत्र बुदी ५। पूर्ण। वेष्टन न० ३४४।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

अथ सवत्सरेस्मिन् श्री नृप विक्रमादित्यगताब्द सवत् १५६५ वर्षे चैत्र बुदी ५ आदित्यवारे श्रीकुसुजागल देशे श्री सुवर्णपत्र सुमद्रुर्गे पातिसाह हस्माकराज्यप्रवत्त माने श्री कांठासचे माधुरान्वये पुष्कारगणे भट्टारक गुणकीर्तिदेवा तत्पट्टे उभय भाषा प्रवीण भट्टारक श्री सहसकीर्तिदेवा तत्पट्टे विवेककलाकमलिनीविकाशनैकमास्कर भट्टारक श्री मलयकीर्तिदेवा तत्पट्टे वादीम-कृ मस्यलविदारणैककेसरि, भव्यांबुजविकाशनैकमात्तण्ड भट्टा० श्री गुणमद्रवृत्तिदेवा, तदाम्नाये पानू वशे गर्गगोत्रे गोधानइ वास्तव्य अनेक गुण विराजमानु साधु खरणी तस्य समुद्रइव गभीरान् मेखद्वीरान चतुर्विध दानवितरणैक श्रेयांसावतारान सरस्वती कंठा कवितान् राज्यसमा जैनसमा ५ गाहारात् परोपकारा पंडित्यु साधु गोपी तेन इदं थावकाचार लिखापित। कर्म चयार्थ।

पत्र नं० ३७ के कोने पर एक स्तंभ लगी हुई है जिसमें उर्दू में चगनदास मूलचद ंडित निस्त्रा है। ग्रंथ में कुछ परिचय ग्रंथ कर्ता का भी दिया हुआ है।

५०. एषणा दोष (खियालीस दोष)-भैया भगवतीदास। पत्र संख्या-७। साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-धर्म। रचना काल-५। लेखन काल-५। पूर्ण। वेष्टन नं० १०४।

५१. क्रियाकोष भाषा—दौलतराम। पत्र संख्या-६५। साइज-१२×५ $\frac{३}{४}$  इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-आचार। रचना काल-सं० १७६५ भाद्रवा सुदी १२। लेखन काल-सं० १८६४ भाद्रवा सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन नं० १६३।

विशेष एक प्रति और है।

५२. ग्यारह प्रतिमा वणन । पत्र संख्या-२ । साइज- $2\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$  इंच । भाषा-हिं दी । विषय-  
आचार । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५ ।

५३ चर्चासागर भाषा—पत्र संख्या-२०० । साइज- $1\frac{3}{4} \times 2\frac{1}{2}$  इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-  
धर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६२ ।

विशेष—२०० से आगे पत्र नहीं है । दो तीन तरह की लिपियाँ हैं ।

५४ चौबीसदहक—दौलतराम । पत्र संख्या-८ । साइज- $2\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$  इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-  
वर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५१२ ।

विशेष—२७ पद्य हैं । दो प्रतियाँ और हैं ।

५५. जिनपालित मुनि स्वाध्याय—विमल हर्ष वाचक । पत्र संख्या-२ । साइज- $1\frac{1}{2} \times 6$  इंच ।  
भाषा-हिंदी पद्य । विषय-वर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० २५३ ।

विशेष—

प्रारम्भ—सिरि पाम मखेसर अलनेसर मगवंत ।

पाय प्रणामि जिण पालित मुनि सत ॥१॥

अन्तिम—सत एहनीय परिजय छडय, अरुविरुषा विषयविनाडी ।

एह परमत्र ने आइ सुखिषा तेहनी कीर्ति गवाणी ॥

जगगुरु हीर यह सोहाकार श्री विजयसेन सुरिंद ।

श्री विमल हर्ष वाचक तउ सेवक भाव कहइ सानंद ॥१६॥

प्रति प्राचान है ।

५६ त्रिवर्णाचार—सोमसेन । पत्र संख्या-१३८ । साइज- $1\frac{1}{2} \times 7\frac{1}{2}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-  
आचार । रचना काल-सं० १६६७ । लेखन काल-सं० १६८२ भंसाव सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० २८७ ।

विशेष—पाटलिपुत्र ( पटना ) में प्रतिलिपि हुई । कुल १३ अध्याय है । प्र या प्र थ म० ७०० है । एक प्रति  
और है ।

५७ धर्म परीक्षा—हरिषेण । पत्र संख्या-२ से ७६ । साइज- $1\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$  इंच । विषय-धर्म । भाषा-  
अपभ्रंश । रचना काल-सं० १०८८ । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० १०१ ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है ।

५८ वर्म परीक्षा—अमितगति । पत्र संख्या-८५ । साइज- $1\frac{1}{2} \times 2\frac{1}{2}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-  
धर्म । रचना काल-सं० १०१७ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१६ ।

५९ धर्मपरीक्षा भाषा ... । पत्र संख्या-३० । साइज- $1\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$  इंच । भाषा-हिन्दी गद्य ।  
विषय-वर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०० ।



६०. धर्मरत्नाकर—जयसेन । पत्र संख्या—१२६ । साइज—१० ३/४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८६० । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०६ ।

६१. धर्मरसायन—पद्मनन्दि । पत्र संख्या—८ । साइज—११ ३/४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८७२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२८ ।

६२. धर्मसंग्रहश्रावकाचार—प० मेधावी । पत्र संख्या—५२ । साइज—११ ३/४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १५४१ कार्तिक बुदी १३ । लेखन काल—सं० १८३५ माघ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४६ ।

विशेष—कुल दश अधिकार हैं । ग्रंथ १४४० श्लोक प्रमाण है । ग्रंथकार प्रशस्ति विस्तृत है पूर्ण परिचय दिया हुआ है । श्रीचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

६३. धर्मोपदेशभावकाचार—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र संख्या—३६ । साइज—६ ५/८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८७३ फागुण बुदी १८ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६६ ।

६४. नास्तिकवाद—पत्र संख्या—२ । साइज—११ ५/८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२५ ।

६५. नियमसार टीका—पद्मप्रभमंलधार्दिनेव । पत्र संख्या—१२७ । साइज—१२ ५/८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७८५ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३१८ ।

६६. पंचससारस्वरूपनिरूपण—पत्र संख्या—६ । साइज—११ ५/८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १७३ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६७. पाखण्डदलन—वीरभद्र । पत्र संख्या—१६ । साइज—६ ५/८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १८४१ माघ बुदी ४ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४७४ ।

विशेष—पत्र २ व ४ नहीं हैं । मानवगढ़ में मंगलदास के पठनार्थ पेमदास ने प्रतिलिपि की थी ।

६८. पुरुषार्थसिद्धयुपाय—अमृतचंद्र सूरि । पत्र संख्या—१०६ । साइज—११ ५/८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ११४ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । टीका सुन्दर एवं सरल है ।

६९. पुरुषार्थसिद्धयुपाय भाषा—दौलतराम । पत्र संख्या—१२४ । साइज—१३ ५/८ इंच । भाषा—हिन्दी ग्रंथ । विषय—धर्म । रचना काल—सं० १८२७ मंगसिर सुदी २ । लेखन काल—सं० १८६६ सावन बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ५६ ।

विशेष—चिमनलाल मालपुरा वाले ने प्रतिलिपि की थी । २ प्रतियाँ और हैं ।

७०. पुरुषार्थानुशासन—गोविन्द । पत्र संख्या—६६ । साइज—१७×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८८८ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० २३ ।

विशेष—विस्तृत लेखक प्रारंभित दी हुई है । श्रीचंद ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

७१. पुष्पमाल—हेमचंद्र सूरि । पत्र संख्या—१६ । साइज—२०×४३ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ३८५ ।

विशेष—कहाँ २ गुजराती भाषा में अर्थ दिया है जोकि स० १७८६ का लिखा हुआ है प्रति प्राचीन है । इसमें कुल ५०५ गायणें दी हुई हैं । म० वाद्धा ने प्रतिलिपि की थी ।

पत्र संख्या—३ गुजराती गद्य —

रति सुन्दरी राजपुत्री नंदनपुर नद राजाई परिणी । अतिरूप पात्र साभली हरितनपुर नौ राजाई प्राण लीधी तीण इव मनादिक अशुचि पणउ दिखाला राजा प्रतिबोधउ साल राखिउ रिद्धि सुन्दरी श्रंष्टि थी व्यवहारि पत्र परिणी सम्राट् चह्दि प्रवहण्य भागउ । काष्ट प्रयोगि शन्य छीपि पहता । वीजा प्रवहणि चट्या रूपि मोहि तिण्णि मच्छदि ममई माहिला खिउ प्राचीने इह प्रवण्यन ।

७२. प्रश्नोत्तरोपासकाचार—सकलकीर्ति । पत्र संख्या—७६ स १४५ । साइज—१०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल म० १७५३ मगसिर सुदी ३३ । अपूर्ण । वेष्टन न० १७६ ।

विशेष—अलवर में प्रतिलिपि हुई थी । दो प्रतियाँ और हैं ।

७३. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार—बुलाकीदास । पत्र संख्या—१३८ । साइज—१२३×८ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—स० १७४७ वैशाख सुदी ३ । लेखन काल—स० १९५५ सावन सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० ७३ ।

विशेष—निमनलाल वडेजात्या ने अजमेर में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

७४. प्रायश्चित्तसमुच्चय चूलिका—श्री नदिगुरु । पत्र संख्या—६७ । साइज—१२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८०८ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० २१८ ।

विशेष—लालचंद टोम्या ने प्रतिलिपि करवाकर शान्तिनाथ चैत्यालय में चढाई । श्वेताम्बर मोतीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

७५. प्रायश्चित्तसंग्रह—अकलक देव । पत्र संख्या—८ । साइज—८३×४६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० २६७ ।

७६. वाईसपरीषद्—पत्र संख्या—६ । साइज—८५० ईश्व । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १०५ ।

७७. भृगवती आराधना भाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र संख्या—५७८ । साइज—११X८ इश्व । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १९०८ भाद्रवा सुदी २ । लेखन काल—सं० १९४५ आषाढ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन न० ८५ ।

विशेष—श्लोक संख्या २१६७ । एक प्रति और है ।

७८. मिथ्यात्व खंडन—वखतराम साह । पत्र संख्या—८६ । साइज—८५० ईश्व । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म ( नाटक ) । रचना काल—सं० १८२१ पौष सुदी ५ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १४८ ।

पद्य संख्या—१४२८ दिया हुआ है । एक प्रति और है ।

७९. मिथ्यात्व निषेध—बनारसीदास । पत्र संख्या—३२ । साइज—१०X७ इश्व । भाषा—हिन्दी विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १९०७ सावन सुदी १८ । पूर्ण । वेष्टन न० १५० ।

विशेष—२० पत्र से सप्त सप्तमी कथा धानतराय कृत दी हुई है ।

८०. सोक्ष्मार्गप्रकाश—प० टोडरमल । पत्र संख्या—२७७ । साइज—११X८ इश्व । भाषा—हिन्दी ( गद्य ) । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १९४८ आषाढ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० ६६ ।

८१. रत्नकरंडश्रावकाचार—प० सदासुख कासलीवाल । पत्र संख्या—४३० । साइज—११X८ इश्व । भाषा—हिंदी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १९२० चैत्र सुदी १४ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ८३ ।

विशेष—पं० सदासुखजी के हाथ के खरडे से प्रतिलिपि की गयी है ।

८२. रत्नकरंडश्रावकाचार—थानजी । पत्र संख्या—२१ । साइज—११X५ ईश्व । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १८२१ चैत्र सुदी ५ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १४१ ।

विशेष—हरदेव के मन्दिर में लिवाली नगर में फूलचंद की प्रेरणा से ग्रंथ रचना हुई थी ।

८३. रथसासार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र संख्या—१८ । साइज—८X६ ईश्व । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७६५ । पूर्ण । वेष्टन न० ४८७ ।

विशेष—बसवा नगर में महात्मा गोरधन ने प्रतिलिपि की थी । गाभा सं० १०० है । एक प्रति और है ।

८४. लाटीसहिता (भावकाचार)—राजमल्ल । पत्र संख्या—६६ । साइज—११X५ इश्व । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १६४३ । लेखन काल—सं० १८५३ आषाढ सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० २८५ ।

विशेष—स० १६४१ में बादशाह अकबर के शासनकाल में थावक इदा के पुत्र फागन ने प्रथम रचना कराई थी ।

८५ षट्कर्मोपदेशामाला—अमरकीर्ति । पत्र संख्या—१०० । साइज—११×१५ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—स० १२४७ भाद्रपद सुदी १० । लेखन काल—सं० १६४५ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० -६८ ।

विशेष—१४ अध्याय हैं । लेखक का परिचय दिया हुआ है ।

८६ षट्कर्मोपदेशामाला—भट्टारक श्री सकलभूषण । पत्र संख्या—११० । साइज—१०½×१५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १६२७ सावन सुदी ६ । लेखन काल—सं० १६८८ । पूर्ण । वेष्टन न० २०३ ।

विशेष—संवत् १४४४ वर्षे जेष्ठमासे शुक्लपक्षे नवाम्यां तिथौ रविवासरे हस्तनक्षत्रे सिधियोगे श्री रणधम दुर्गे राजाधिराजराजाधीजगन्नाथराज्ये प्रवर्तमाने श्री मल्लिनाथचैत्यालय श्री काष्ठासवे माथुरगच्छे पुष्करगणे भट्टारक श्री वैमकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक कमलकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जयसेषिदेवा । तदान्नाये धर्मबालावये गौयलगोत्रे देव्याना वडि साहजी पदारथ तस्य भार्या भावो । तस्य पुत्र ५ । प्रथम पुत्र साह श्री मवानोदास तस्य भार्या गोमा तस्य पुत्र साह खेमचन्द्र तस्य भार्या छानी तस्य पुत्र द्वय । प्रथम पुत्र मोहनदास तस्य भार्या कौजी । द्वितीय पुत्र चिरंजीव धूडो । द्वितीय पुत्र साहयान तृतीय पुत्र साह बीरदास । चतुर्थ पुत्र साह श्री रामदास तस्य भार्या माण्गोती तस्य पुत्र त्रयः । प्रथम पुत्र साह मेधा द्वितीय पुत्र चिरजीव साह चोखा तस्य भार्या पार्वती तस्य पुत्र चिरजीव देवसी तृतीय पुत्र साह नेतसी । पंचमो पुत्र रमीला । पुत्रेवा मय्ये चतुर्विधि-दानवितरणकल्पवृक्ष साह चोखा तस्य भार्या पार्वती इदं शास्त्र लिखाप्य ज्ञानावर्णाकर्ममिचितं रत्नत्रयपुन्यमिचितं ज्ञानपात्राय ब्रह्म श्री रूपाचन्दये दत्तं ॥ इति ॥

८७. षोडशकारणभावना—पत्र संख्या—१६ । साइज—११×१५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १४२ ।

८८ षोडशकारणभावना व दशलक्षण धर्म—प० सदासुख कासलीवासी । पत्र संख्या—११३ । साइज—११×१५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १३६ ।

८९ शिखरविलास—मनसुखराम । पत्र संख्या—६३ । साइज—११×१५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म । रचना काल—स० १८४५ आसोज सुदी १० । लेखन काल—स० १८८५ आषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५ ।

विशेष—शिखर महात्म्य में से वर्णन है । मनसुख ब्रह्मगुलाल के शिष्य थे ।

९० आचकाचार . . . . . पत्र संख्या—६० । साइज—१०½×१५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—स० १०३१ वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६३ ।

विशेषः—राजनगर में प्रतिलिपि हुई थी । प्रागवाट ज्ञातीय वाई अमरा ने लिखवाया था ।

६१ आवकाचार—योगीन्द्रदेव । पत्र संख्या—१४ । साइज—२१ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—अपभ्रंश ।

विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १७३ ।

विशेष—दोहा संख्या २२१ है ।

६२. संबोधपचासिका—गौतमस्वामी । पत्र संख्या—३ । साइज—२१ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—प्राकृत ।

विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८७ ।

६३ संबोधपचासिका टीका—पत्र संख्या—१३ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—प्राकृत-संस्कृत ।

विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । वेष्टन नं० ३८८ ।

६४. सयमप्रवहण—मुनि मेघराज । पत्र संख्या—४ । साइज—१०×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—धर्म । रचना काल—सं० १६६७ । लेखन काल—सं० १६८२ आषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन न० ३३६ ।

विशेष —

प्रारम्भ दोहाः—रिसह जियेसर जगतिलउ नामि नरिंद मल्हार ।

प्रथम नरेसर प्रथम जिन त्रिमोवन जन साधार ॥१॥

चक्री पचम जाणीह सोलमउ जिनराय ।

शान्तिनाथ जगि शान्तिकर नर सुर प्रणमह पाय ॥२॥

अन्तिम-राग धन्यासी—

गछपति दरिसणि अति आणंद ।

श्रीराजचंद सूरीसर प्रतपउ जा लागि हु रविचद ॥ ४६ ॥ आकाशी ॥

संयम प्रवहण मालिमगायउ नयर खम्भावत माहि ॥

संवत सोल अनह इकसठई आणी अति उछाह ॥ गछ० ॥

सरवण ऋषि गुरु साधु शिरोमणि, मुनि मेघराज तसु सीस ॥

गुण गछपति ना भावइ भाषइ पहुचह आस जगीस ॥ १५२ ॥

॥ इति श्री सयम प्रवहण संपूर्ण ॥

शुभ्राविका पुन्यप्रभाविका धर्मधूनिर्वाहिका सम्यक्त्वमूलद्रादिसत्रत ऋषीरप्रवासितोक्तभांगा शुभ्राविकामघ वाई

पठनायमे ॥

संवत् १६८१ वर्षे आषाढ मासे शुक्ल पक्षे पुष्यमादित्यवारे स्वर्ग तीर्थे लिखित ऋषि कल्याणेन ।

श्लोक संख्या २०० है ।

६५ सम्भेदशिखरमहात्म्य—दीक्षित देवदत्त । पत्र संख्या—७८ । साइज—११×१३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । रचना काल—सं० १८४६ । लेखन काल—सं० १८४८ । पूर्ण । वेष्टन नं० १६ ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

६६. सागारधर्माभूत—पं० आशाधर । पत्र संख्या—१८१ । साइज—११×१३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । रचना काल—सं० १२६६ । लेखन काल—सं० १७८७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०७ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

६७ सामायिक टीका—पत्र संख्या—३६ । साइज—१२×१३ इंच । भाषा—संस्कृत प्राकृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२१ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

६८ सामायिक पाठ—पत्र संख्या—१२ । साइज—१०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३ ।

६९. सामायिक पाठ भाषा—जयचन्द्र छावडा । पत्र संख्या—५३ । साइज—११×१३ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६०१ चैत्र सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२ ।

विशेष—३ प्रति और है ।

१००. सुदृष्टितरंगिणि—टेकचन्द्र । पत्र संख्या—४६७ । साइज—११ × ८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—सं० १८३८ सावन सुदी ११ । लेखन काल—सं० १९६२ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८६ ।

विशेष—४२ संधियाँ हैं । चंद्रलाल बज ने प्रतिलिपि की थी ।

१०१ सूक्त वर्णन—पत्र संख्या—२ । साइज—६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४४७ ।

१०२. हिनोपदेशकोचारी—श्री रत्नहर्ष । पत्र संख्या—३ । साइज—१०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३५२ ।

विशेष—किशनविजय ने विक्रमपुर में प्रतिलिपि की थी । श्लोक संख्या ७१ है ।

## विषय-अध्यात्म एवं योग शास्त्र

१०३ अष्टपाहुड भाषा—जयचद छाबडा । पत्र संख्या-१७८ । साइज-१२ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-अध्यात्म । रचना काल-X । लेखन काल-स० १९५० फागुन बुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० ६८ ।

१०४. आत्मानुशासन—गुणभद्राचार्य । पत्र संख्या-३० । साइज-११×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-X । लेखन काल-स० १७६४ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० २८६ ।

विशेष—वसवा नगर में श्री चद्रप्रम चैत्यालय में श्री नेमकर के शिष्य त्रिलोकचद ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है ।

१०५. आत्मानुशासन टीका—प्रभाचन्द्र । पत्र संख्या-९५ । साइज-९×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-X । लेखन काल-स० १९३३ $\frac{६}{८}$  आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० २८० ।

१०६. आत्मानुशासन भाषा टीका—प० टोडरमल । पत्र संख्या-१०५ । साइज-१२×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-स० १७९६ मादवा सुदी २ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ५१ ।

विशेष—राजा की मढी ( आगरा ) के मदिर में महात्मा संभूराम ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है ।

१०७ आराधनासार—देवसेन । पत्र संख्या-१३ । साइज-१०×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १५२ ।

विशेष—एक प्रति और है वह संस्कृत टीका सहित है ।

१०८ आराधनासार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र संख्या-२८ । साइज-१२ $\frac{३}{४}$ ×८ इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-अध्यात्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ८२ ।

१०९. कार्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामीकार्तिकेय । पत्र संख्या-७८ । साइज-११×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १० ।

विशेष—प्रथम ७ पत्र तक संस्कृत से संकेत दिया हुआ है ।

११०. कार्तिकेयानुप्रेक्षा भाषा-पं० जयचद छाबडा । पत्र संख्या-१४७ । साइज-११×७ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-अध्यात्म । रचना काल-स० १८६३ सावन सुदी ३ । लेखन काल-स० १९१४ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० ७२ ।

विशेष—२ प्रतियाँ और हैं ।

१११. चारित्रपाहुड भाषा—प० जयचंद झावडा । पत्र संख्या-१५ । साइज-१२×८ इंच । माया-हिन्दी गद्य । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६१ ।

११२. ज्ञानार्णव—शुभचंद्र । पत्र संख्या-१७६ । साइज-१२×५<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । माया-संस्कृत । विषय-योग । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६१८ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२५ ।

विशेष—संवत् १७८२ में कुछ नवीन पत्र लिखे गये हैं । संस्कृत में कठिन शब्दों का प्रर्थ दिया हुआ है ।

प्रति-एक प्रति और है ।

११३. दर्शनपाहुड—पं० जयचंद झावडा । पत्र संख्या-२० । साइज-१२×८ इंच । माया-हिन्दी गद्य । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३० ।

११४. द्वादशानुप्रेक्षा—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र संख्या-१२ । साइज-१०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५ इंच । माया-प्राकृत । विषय-चिंतन । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८८२ द्वि० वैसाख सुदी ७ । अर्पूर्ण । वेष्टन नं० १७३ ।

विशेष—हिन्दी संस्कृत में धाया भी दी हुई है ।

११५. द्वादशानुप्रेक्षा—आलू कवि । पत्र संख्या-१६ । साइज-८<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×४<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । माया-हिन्दी । विषय-चिंतन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५ ।

विशेष—बारह भावना के ३८ पद्य हैं । इसके अतिरिक्त निम्न हिन्दी पाठ और हैं:—

( १ ) जखडी—हरीसिंह ।

( २ ) पद ( वदू श्री अरहत देव सारद नित सुमरण हृदय धरुं )—हरीसिंह

( ३ ) समाधि मरन—धानतराय ।

( ४ ) वज्रनाभि चक्रवर्ती की वैराग्य भावना—बूधदास ।

( ५ ) वधावा—( वाजा वाजिया मला )

( ६ ) बार्हस परीपह ।

रामलाल तेरा पंथी झावडा ने दौसा में प्रतिलिपि की थी ।

११६. दोहाशतक—योगीन्द्र देव । पत्र संख्या-३ । साइज-६<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×४<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । माया-अपभ्रंश । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८२७ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १२० ।

विशेष—श्रीचंद्र ने वसवा में प्रतिलिपि की थी ।

११७. नवतत्वबालावोध—पत्र संख्या-३१ । साइज-१०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×४<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । माया-गुजराती हिन्दी । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८८५ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० १७५ ।



विशेष—हिम्मतराय उदयपुरिया ने प्रतिलिपि की थी

११८. परमात्मप्रकाश—योगीन्द्रदेव<sup>१</sup> पत्र संख्या—२० । साइज—११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—अपभ्रंश ।

विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७७८ फागुन बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० २५० ।

विशेष—वृ दावती नगरी में श्री चद्रप्रभु चैत्यालय में श्री उदयराम लक्ष्मीराम ने प्रतिलिपि की थी । संस्कृत में काठन शब्दों के अर्थ दिये हुए हैं । कुल दोहे ३४६ हैं । ० प्रति और हैं ।

११९ प्रति न० २ । पत्र संख्या—१२३ । साइज—११×४ $\frac{३}{४}$  इंच । लेखन काल—सं० १४८६ पौष बुद । पूर्ण । वेष्टन न० २४६ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । इसमें कुल ४५ अधिकार हैं । प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १४८६ वर्षे पौष बुदी ६ स्वौदिने श्री गोपगिरे तोमरवंशमहाराजाधिराजश्रीमदडोंगरसीदेवराज्यप्रवर्तमाने श्री कण्ठासधे माथुरान्वये पुष्कलगणे मङ्गरक श्री जेनेन्द्रकीर्तिदेवास्तद्गुरु शिष्य श्री पद्मकीर्तिदेवाः तस्य शिष्यश्री वादीन्द्रचूडामर्णी महासिद्धान्ती श्रीमह्म हीराख्यानमदेवा । अप्रोतकान्वये मीतलगोत्रे साधु श्री गल्हा मार्या खेमा तयो. पुत्री मौषी एक पत्नी । द्वितीय पत्नी अप्रोतकान्वये गर्ग गोत्र साधु श्री जेमवरा मार्या हरो । तयोपुत्राश्चत्वार प्रथम पुत्र देसल्लु, द्वितीय बील्हा, तृतीय आल्हा, चतुर्थ मरया, देसल मार्या रूपा. बील्हा मार्या नाथी साधु आल्हा मार्या धानी तयो पुत्राश्चत्वार, साधु श्री चदा साधु हरिचद, सा०, रता, सा०, साल्हा । श्रीवद्र पुत्रमेवा स्वधर्मत साधु श्री मर्या मार्या मौषी शीलशालिनी धर्म प्रमावनी रत्नत्रयपाराधिनी बाई जौषी आत्मकर्मक्षयार्थ इद परमात्मप्रकाश ग्रंथ लिखापित ।

इसमें ३४५ दोहा हैं । प्रथम पत्र नया लिखा गया है ।

१२० प्रवचनसार—कुन्दकुन्दचार्य । पत्र संख्या—३३ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा—प्राकृत ।

विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७६६ । पूर्ण । वेष्टन न० ३५८ ।

विशेष—पत्र ८ तक संस्कृत टीका मी दी है ।

१२१ प्रवचनसार सटीक—अमृतचन्द्र सूरि । पत्र संख्या—१०७ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । रचना काल—X । लेखन काल X । पूर्ण । वेष्टन न० ६६ ।

विशेष—अन्तिम पत्र फटा हुआ है । नीचे में ०४ पत्र कम हैं । आगरे में प्रतिलिपि हुई था । प्रति प्राचीन है

१२२ प्रवचनसार भाषा—पांडे हेमराज । पत्र संख्या—३० । साइज—११×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—अध्यात्म । रचना काल—सं० १७०६ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ४४ ।

१२३. प्रवचनसार भाषा—पांडे हेमराज । पत्र संख्या—१४२ । साइज—१३×८ इंच । भाषा—हिन्दी ( गद्य ) । विषय—अध्यात्म । रचना काल—सं० १७०६ माघ सुदी ६ । लेखन काल—सं० १६५२, आषाढ बुदी, २ । पूर्ण वेष्टन न० ६७ ।

एक प्रति और है ।

१२४. बोधपाहुड भाषा—प० जयचन्द छाबडा । पत्र संख्या-२१ । साइज-१२X= इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-ग्रन्थात्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ८४ ।

१२५. भव वैराग्य शतक—पत्र संख्या-११ । साइज-१०<sup>३</sup>/<sub>४</sub>X५ इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-ग्रन्थात्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १७३ ।

विशेष—हिन्दी में छाया दी हुई है ।

१२६. मृत्युमहोत्सव—बुधजन । पत्र संख्या-३ । साइज-८X६<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-ग्रन्थात्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १३० ।

१२७. योगसमुच्चय—नवनिधिराम । पत्र संख्या १२३ । साइज-६X४<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-योग । रचना काल-X । लेखन काल X । वेष्टन न० ८६० ।

विशेष—५० पत्र तक श्लोकों पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

१२८. योगसार—योगान्द्रदेव । पत्र संख्या-६ । साइज-११<sup>३</sup>/<sub>४</sub>X५<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा-अपभ्रंश । विषय-ग्रन्थात्म । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८७२ मंगसिर सुदी = । पूर्ण । वेष्टन न० ३२४ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

१२९. पट्टपाहुड—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र संख्या-६७ । साइज-१२X५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-ग्रन्थात्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० २८५ ।

विशेष—२ प्रतियाँ और हैं जिनमें केवल खिगपाहुड तथा शीलपाहुड दिया हुआ है ।

१३० पट्टपाहुड टीका—टीकाकार भूधर । पत्र संख्या-५२ । साइज-११<sup>३</sup>/<sub>४</sub>X५<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ग्रन्थात्म । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७५२ । पूर्ण । वेष्टन न० २४४ ।

विशेष—प्रति ट्वा टीका सहित है । यह टीका भूधर ने प्रतापसिंह के लिए बनाई थी ।

१३१ समयसार कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र संख्या-१५१ । साइज-११X६ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-ग्रन्थात्म । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८२६ मादवा सुदी १८ । पूर्ण । वेष्टन न० १० ।

विशेष—दौसा में पृथ्वीसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

अमृतचन्द्र कृत आत्मख्यति टीका सहित है । एक प्रति और है ।

१३२. समयसार कलशा—अमृतचंद्रसूरि । पत्र संख्या-५६ । साइज-११X= इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ग्रन्थात्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १२७ ।

१३३. प्रति न० २ । पत्र संख्या-११२ । साइज-१०×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २४

विशेष—आनंदराम के वाचनार्थ नित्य विजय ने यह टिप्पण लिखा था । टिप्पण टक्का टीका के सदृश है । प्रति सुन्दर है ।

१३४. समयसारनाटक—बनारसीदास । पत्र संख्या-७३ । साइज-१२×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विषय—अध्यात्म । रचना काल—स० १६६३ । लेखन काल—सं० १८०० चैत सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन न० ३२० ।

विशेष—बसवा में श्री निरमौराम के बेटा श्री मनसाराम ने फतेराम के पठनार्थ लिखी थी । ४ प्रतियां और हैं ।

१३५. समयसार वचनिका—राजमल्ल । पत्र संख्या-१६८ । साइज-११×८ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी

गद्य । विषय—अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १३ ।

१३६. समाधितंत्र भाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र संख्या-७७ । साइज-६ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—गुजराती

देवनागरी लिपि । विषय—योग । रचना काल-× । लेखन काल—सं० १७५५ फागुन बदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८३ ।

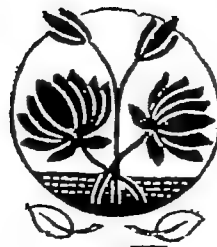
विशेष—सागपत्तन में श्री आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । एक प्रति और है ।

१३७. समाधिमरण भाषा—पत्र संख्या-१३ । साइज-१२ $\frac{३}{४}$ ×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य विषय—

अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८१ ।

१३८. सूत्रपाहुड—जयचंद छाबडा । पत्र संख्या-१५ । साइज-१२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य

विषय—अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६२ ।



## विषय-न्याय एवं दर्शन शास्त्र

१३६. आतपरीक्षा—विद्यानंदि । पत्र सख्या-६ । साइज-१०३×४४ इंच । माषा-संस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २६० ।

विशेष—पंडित, धरमू के पठनार्थ गयससाहि के राज्य में प्रतिलिपि की गई थी ।

१४० आलापपद्धति—देवसेन । पत्र सख्या-११ । साइज-१०×४४ इंच । माषा-संस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २०६ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

१४१ तर्कमग्रह-अन्नभट्ट । पत्र सख्या-६ । साइज-१०×४४ इंच । माषा-संस्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०३ ।

विशेष—मोतीलाल पाठनी ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है ।

१४२ दर्शनसार—देवसेन । पत्र सख्या-३ । साइज-११३×५ इंच । माषा-प्राकृत । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८७२ मगसिर बुदी अमावस । पूर्ण । वेष्टन नं० २१७ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

१४३. नयचक्र—देवसेन । पत्र सख्या-३३ । साइज-११३×५ इंच । माषा-संस्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८७६ फागुन बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८६ ।

श्लोक सख्या-४५३ है ।

१४४. न्यायदीपिका—धर्मभूषण । पत्र सख्या-४८ । साइज-८३×४ इंच । माषा-संस्कृत । विषय-न्याय शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८०६ द्वि० मादवा सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० २६८ ।

विशेष—देवीदास ने स्वपठनाथ लिखी थी ।

१४५. परिभाषा परिच्छेद (नयमूल सूत्र)—पचानन भट्टाचार्य । पत्र सख्या-११ । साइज-१०३×४ इंच । माषा-संस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३७ ।

अन्तिम—इति श्री महामहोपाध्यायसिद्धान्त पचानन भट्टाचार्य कृत परिभाषा परिच्छेदः समाप्त ।

१६६ श्लोक हैं प्रति प्राचीन मालूम देती हैं ।

१४६ पट्दर्शन समुच्चय—हरिभद्रसूरि । पत्र सख्या-७ । साइज-१०×४ इंच । माषा-संस्कृत । विषय-दर्शन शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २८४ ।

विशेष—६६ श्लोक हैं ।

१४७. सन्मतितर्क—सिद्धसेन दिवाकर । पत्र सख्या—८ । साइज—८×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—न्याय शास्त्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १०२ ।



### पूजा एवं प्रतिष्ठादि अन्य विधान

१४८. अक्षयनिधिपूजा—पत्र सख्या—३ । साइज—१२×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ११४ ।

विशेष—लघ्वि विधान पूजा भी दी हुई है ।

१४९. अकुरारोपण विधि—पत्र सख्या—७ । साइज—१०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन न० ३८० ।

विशेष—छटा पत्र नहीं है ।

१५०. अनतत्रतपूजा—श्री भूषण । पत्र सख्या—६ । साइज—१०×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १०० ।

१५१. अनतत्रतोद्यापन—पत्र सख्या—२० । साइज—११<sup>३</sup>×५<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६ ।

१५२. अभिषेकविधि—पत्र सख्या—३ । साइज—७<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १०५ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

१५३. अर्हत्पूजा—पद्मनादि । पत्र सख्या—५ । साइज—६×६<sup>३</sup> इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ४८ ।

१५४. अष्टक—पत्र संख्या-१ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ४३ ।

१५५. अष्टाहिकापूजा । पत्र संख्या-१० । साइज-७ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत प्राकृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १२५ ।

१५६. अष्टाहिकापूजा—पत्र संख्या-७ । साइज-६×६ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० ४८ ।

विशेष—जाप्य से आगे पाठ नहीं है ।

१५७. अष्टाहिकापूजा—शुभचंद्र । पत्र संख्या-३ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ३७ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । ब्र० श्री मेघराज के शिष्य ब्र० सवजी के पठनार्थ लिपि की गई या ।

१५८. इन्द्रध्वजपूजा—विश्वभूषण । पत्र संख्या-६६ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १८२० चैत सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० ३३ ।

१५९. कलिकुंडपाशर्वनाथपूजा—पत्र संख्या-६ । साइज-११×६ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ४८ ।

विशेष—पत्र ४ से चिन्तामणिपाशर्वनाथ पूजा भी है ।

१६०. कर्मदहनपूजा—टेकचंद्र । पत्र संख्या-१६ । साइज-१३ $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १३ ।

१६१. कौलकुतुहल—पत्र संख्या-२८४ । साइज-८×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । रचना काल-X । लेखन काल-स० १६०१ पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० १०७ ।

विशेष—यज्ञादि की सामग्री एवं विधि विधान का वर्णन है । कुल ६१ अध्याय हैं ।

१६२. गणधरवल्लयपूजा—शुभचंद्र । पत्र संख्या-१० । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ११७ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१६३. गिरनारसिद्धलक्ष्मणपूजा—हजारीमल्ल । पत्र संख्या-३६ । साइज-१२ $\frac{३}{४}$ ×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-स० १६२० आसोज सुदी १२ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ।

विशेष—हजारीमल्ल के पता का नाम हरीविसन था । ये अग्रवाल गोयल ज्ञातीय थे तथा लश्कर के रहने वाले थे कवि ने साहपुर में थाफर दौलतराम की सहायता से रचना की थी ।

१६४ चन्द्रायणव्रतपूजा—भ० देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सख्या-४ । साइज-१२३×७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १७ ।

विशेष—२ प्रतिया और हैं ।

१६५ चारित्रशुद्धिविधान ( बारहसोचौतीसविधान )—श्री भूपण । पत्र सख्या-७६ । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८१३ । पूर्ण । वेष्टन न० ३२ ।

विशेष—दक्षिण में देवगिरि दुर्ग में पार्श्वनाथ चैत्यालय में ग्रथ रचना की गयी थी । तथा जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१६६ चौबीसतीर्थकरपूजा—पत्र सख्या-५१ । साइज-२१×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ६१ ।

१६७ चौबीसतीर्थकरपूजा—सेवाराम । पत्र सख्या-४३ । साइज-१२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—स० १८५४ माह शुदी ६ । लेखन काल—स० १८६६ । पूर्ण । वेष्टन न० २८ ।

१६८ चौबीसतीर्थकरपूजा—रामचन्द्र । पत्र सख्या-५० । साइज-१०३×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८८६ चैत सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन न० १० ।

विशेष—प्रति सुन्दर व दर्शनीय है । पत्रों के चारों ओर भिन्न २ प्रकार के सुन्दर बेल बूटे हैं । स्योजीराम भावसा ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१० प्रतिया और हैं ।

१६९ चौबीसतीर्थकरपूजा—मनरंगलाल । पत्र सख्या-५१ । साइज-२२३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ८ ।

१७० चौबीस तीर्थकर पूजा—वृन्दावन । पत्र सख्या-१५१ । साइज-११×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजन । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० २० ।

विशेष—३ प्रतिया और हैं ।

१७१ चौबीसतीर्थकर समुच्चय पूजा—पत्र संख्या-८ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ७१ ।

१७२ चौमठ ऋद्धिपूजा ( गुरावली )—स्वरूपचन्द्र । पत्र संख्या—७१ । साइज—१४×३ इंच । माया—हिन्दी । विषय—पूजा । रचना काल—स० १६०० श्रावण शुदी ७ । लेखन काल—स० १६५८ । पूर्ण । वेष्टन न० २ ।

विशेष—इस प्रति की महादरजी ठोलिया ने ठोलियों के मन्दिर में चढाई थी ।

१७३. जम्बूद्वीप पूजा—जिण्णदास । पत्र संख्या—३१ । साइज—११½×५½ इंच । माया—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ३५ ।

१७४ जलहर तैला की पूजा—पत्र संख्या—४ । साइज—११×७½ इंच । माया—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० २२ ।

१७५. जिनयज्ञ कल्प ( प्रतिष्ठापाठ )—आशावर । पत्र संख्या—१२० । साइज—१०×६ इंच । माया—संस्कृत । विषय—विधि विधान । रचना काल—सं० १२८५ । लेखन काल—स० १८७५ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६६ ।

अथामय संख्या—२१०० श्लोक प्रमाण है ।

विशेष—संवद्वाणधरासृतिप्रमिते मार्गशीर्षश्रुतिष्ठा सिते लिखितमिदं पुस्तकं त्रिदुषा श्वेतांबर मुदरदासेन श्रीमञ्जयपुरे जयपत्तने ।

१७६ जैनविवाहविधि—जिनसेनाचार्य । पत्र संख्या—४४ । साइज—१२×८ इंच । माया—संस्कृत । विषय—विधान । रचना काल—X । लेखन काल—स० १६३३ । पूर्ण । वेष्टन न० १०५ ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ महित है । मायाकार पन्नालालजी दूनी वाले हैं । स० १६३३ में इसकी माया पूर्ण हुई थी ।

१७७. ज्ञानपूजा—पत्र संख्या—८ । साइज—११×४½ इंच । माया—प्राकृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ११५ ।

विशेष—श्री मूलसघ के आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

१७८ तीनचौबीसी पूजा—पत्र संख्या—२१ मे ६८ । साइज—११×४½ इंच । माया—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६७ ।

१७९. त्रिंशत्तत्तुर्विंशतिपूजा—शुभचन्द्र । पत्र संख्या—१२० । साइज—६½×८½ इंच । माया—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ६१ क ।

गुटका के आकार में है ।

१८०. तैलान्न की पूजा—पत्र संख्या—४ । साइज—१०×४½ इंच । माया—संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १०५ ।



१८१. दक्षिणयोगोन्द्र पूजा—आ० सोमसेन । पत्र संख्या-५ । साइज-११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७६४ माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० ८५ ।

विशेष—पंडित मनोहर ने प्रतिलिपि की थी ।

१८२. दशलक्ष्णत्रतोद्यापनपूजा—पत्र संख्या-५२ । साइज-६ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ११८ ।

विशेष—अन्तिम दोहा—

डारि मत दश धर्म को लुब्ध हो गृह सेव ।

राचत हर नर सर्म इत मरि परमव शिव खेव ॥

१८३. दशलक्ष्णपूजा—पत्र संख्या-३ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११० ।

विशेष—नंदीश्वर पूजा ( प्राकृत ) मी दी है ।

१८४. दशलक्ष्णपूजा—पत्र संख्या-१७ से २४ । साइज-८ $\frac{३}{४}$ ×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १२२ ।

१८५. दशलक्ष्णपूजा—अभयनादि । पत्र संख्या-१४ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१ ।

१८६. दशलक्ष्णजयमाल—भावशर्मा । पत्र संख्या-११ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७३३दि० सावन सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७१ ।

विशेष—रामनीति के शिष्य प० श्रीहर्ष तथा कल्याण तथा उनके शिष्य प० चिन्तामणि ने खेम रतनसिंह के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१८७. दशलक्ष्णपूजा जयमाल-रङ्गू । पत्र संख्या-१६ । साइज-११×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० १०८ ।

संस्कृत टिप्पण सहित है । ४ प्रतियाँ और हैं ।

१८८. द्वादशव्रतपूजा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र संख्या-१५ । साइज-१२×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७७२ माघ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ८० ।

१८९. देवपूजा—पत्र संख्या-६ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६ ।

विशेष—२ प्रतियां थीर हैं । एक प्रति हिन्दी भाषा की है ।

१६० नन्दीश्वरविधान—रत्ननंदि । पत्र संख्या—१७ । साइज—११×२ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८२७ फागुन बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन न० ४० ।

विशेष—महाराजाधिराज श्री सवाई पृथ्वीसिंहजी के राज्यकाल में वसवा नगर में श्री चंद्रप्रभ चैत्यालय में पंडित  
शानन्दराम के शिष्य ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति थीर है ।

१६१ नदूसप्तमीव्रतपूजा—पत्र संख्या—५ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १६ ।

१६२. नवग्रहअरिष्टनिवारकपूजा—पत्र संख्या—१८ । साइज—१२ $\frac{३}{४}$ ×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ६ ।

१६३. नित्यनियमपूजा—पत्र संख्या—४० । साइज—८×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।  
रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १२५ ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । ३ प्रतियां थीर हैं ।

१६४. निर्वाणक्षेत्रपूजा—स्वरूपचंद्र । पत्र संख्या—२६ । साइज—१०×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—  
पूजा । रचना काल—स० १६१६ कार्तिक बुदी १३ । लेखन काल—सं० १६३८ चैत्र सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० ८२ ।

विशेष—गणेशलाल पांड्या चाकम्बू वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५. निर्वाणकाण्डपूजा—द्यानतराय । पत्र संख्या—३१ । साइज—११×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ३४ ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड गाथा भी वही हैं ।

१६६. पद्मावती पूजा—पत्र संख्या—१३ । साइज—११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।  
रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ३७ ।

विशेष—निम्न पाठों का थीर संग्रह है—

पद्मावती स्तोत्र, श्लोक संख्या २३, पद्मावती सहस्रनाम, पद्मावती ऋच, पद्मावती पटल, थीर घंटाकरण मंत्र ।

१६७. पंचकल्याणपूजा—लक्ष्मीचंद्र । पत्र संख्या—२ स २४ तक । साइज—११×५ इंच । भाषा—  
संस्कृत । विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—स० १६०६ । पूर्ण । वेष्टन न० ८६ ।

१६८. पंचकल्याणकपूजा—टेकचंद्र । पत्र संख्या—२४ । साइज—८ $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । भाषा—हिन्दी ।  
विषय—पूजा । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६५६ अषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० ४७ ।

१६६. पंचकल्याणकपूजा पाठ—पत्र संख्या-२२ । साइज-१० $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६०० वैशाख सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० २३ ।

विशेष—चिम्नलाल मांवासा ने जयपुर में बख्शीराम से प्रतिलिपि कराई थी ।

२००. पचपरमेष्ठीपूजा—पत्र संख्या-४ । साइज-११ $\times$ ४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७३१ । पूर्ण । वेष्टन न० १११ ।

विशेष—श्लोक संख्या १०० है ।

२०१. पचपरमेष्ठीपूजा—पत्र संख्या-४८ । साइज-११ $\times$ ४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ६२ ।

२०२. पचमेरुपूजा—पत्र संख्या-७ । साइज-७ $\frac{३}{४}$  $\times$ ४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १२५ ।

२०३. पूजा एव अभिषेक विधि । पत्र संख्या-१४ । साइज-८ $\frac{३}{४}$  $\times$ ६ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी गद्य । विषय-विधि विधान । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १०६ ।

विशेष—गुटका साइज है ।

२०४. पूजापाठसंग्रह—पत्र संख्या-६८ । साइज-११ $\times$ ८ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ७३ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ आदि संग्रह है । पूजा पाठ संग्रह का ८ प्रतियां और हैं ।

२०५. बीसतीर्थकरपूजा—पन्नालाल सघी । पत्र संख्या-६२ । साइज-१२ $\frac{३}{४}$  $\times$ ८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १६३४ । लेखन काल-सं० १६५४ सावन बुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन न० ५ ।

विशेष—टोंक में फ़ौजसिंह के पुत्र पन्नालाल ने रचना की तथा अजमेर में प्रतिलिपि हुई थी । ३ प्रतियां और हैं ।

२०६. भक्तामर स्तोत्र पूजा—सोमसेन । पत्र संख्या-१० । साइज-१० $\frac{३}{४}$  $\times$ ५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७८८ कार्तिक सुदी । पूर्ण । वेष्टन नं० १०३ ।

विशेष—पंडित नानकदास ने प्रतिलिपि की थीं ।

२०७ मंडल विधान एव पूजा पाठ समग्र—पत्र संख्या—१५४ । साइज-११×६ इञ्च । भाषा—सरस्त । विषय—पूजा । लेखन काल—स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन न० १२६ ।

विशेष—निम्न पाठों का समग्र है—

नाम पाठ	कर्ता	पत्र संख्या	लग्न काल	विशेष
( १ ) जिन सहस्रनाम	आशाधर	} १ से १६	—	—
( २ ) , ,	जिनसेनाचार्य			
( ३ ) तीन चौबीसी पूजा	—	१६ से ३३	—	—
( ४ ) पंचकल्याणकपूजा	—	३४ से ५५	—	मंडल चित्र सहित
( ५ ) पंचपरमेष्ठीपूजा,	शुभचंद्र	५६ से ७७	ले० काल १८६५	—
( ६ ) कर्मदहनपूजा	शुभचंद्र	७८ से ९७	—	चित्र सहित
( ७ ) वीसतीर्थाकरपूजा	नरेन्द्रकीर्ति	९८ से १०१	—	—
( ८ ) मक्ताधरस्तोत्रपूजा	श्रीभूषण	१०२ से ११२	—	मंडल चित्र सहित
( ९ ) धर्मचक्र	रणमल्ल	११३ से १२६	—	—
( १० ) शास्त्रमंडल पूजा	ज्ञानभूषण	१३० से १३८	—	चित्र सहित
( ११ ) ऋषिमंडलपूजा	श्री० गणिनीद	१३५ से १५५	—	”
( १२ ) शांतिचक्रपूजा	—	१५६ से १६१	—	चित्र सहित
( १३ ) पद्मावतीस्तोत्र पूजा	—	१६२ से १६६	—	—
( १४ ) पद्मावतीसहस्रनाम	—	१६७ से १७३	—	—
( १५ ) षोडशकारणपूजा उद्यापन	केशव सेन	१७४ से १८८	—	—
( १६ ) मेघमाला उद्यापन	—	१८९ से २१३	—	चित्र सहित
( १७ ) चौबीसीनाममंत्रमंडलविधान	—	२१४ से २३०	—	—
( १८ ) दशलक्षणव्रतपूजा	—	२३१ से २६०	—	चित्र सहित
( १९ ) पंचमीव्रतोद्यापन	—	२६१ से २६७	—	”
( २० ) पुष्पाजलिब्रतोद्यापन	—	२६८ से २८३	—	”
( २१ ) कर्मचूरव्रतोद्यापन	—	२८३ से २९१	—	—
( २२ ) अक्षयनिधिब्रतोद्यापन	ज्ञानभूषण	२९२ से ३०५	—	—
( २३ ) पंचमासचतुर्दशी व्रतोद्यापन	म० सुरेन्द्रकीर्ति	३०६ से ३११	—	—
( २४ ) अर्घत व्रत पूजा	—	३१२ से ३४१	—	चित्र सहित

नाम	कर्ता	पत्र सं०	काल	विशेष
(२१) अर्घतत्रतपूजा	गुणचन्द्र	३४२ से ३७४	२० का० १६३०	सचित्र
(२६) रत्नत्रय पूजा	केशवसेन	३७५ से ३९६	—	—
(२७) रत्नत्रयत्रतोथापन	—	३९७ से ४१२	—	—
(२८) पल्यत्रतोथापन पूजा	शुभचन्द्र	४१३ से ४२६	—	चित्र सहित
(२९) मासांत चतुर्दशी पूजा अक्षयराम	—	४२७ से ४४४	—	चित्र सहित
(३०) षामोकार पैतीसी पूजा अक्षयराम	—	४४५ से ४५०	—	चित्र सहित
(३१) जिनगुणसपत्तित्रतोथापन	—	४५१ से ४५८	—	सचित्र
(३२) त्रेपनक्रियात्रतोथापन देवेन्द्रकीर्ति	—	४५९ से ४६६	—	सचित्र
(३३) सोरुयत्रतोथापन अक्षयराम	—	४६७ से ४८१	—	सचित्र
(३४) सप्तपरमस्थान पूजा	—	४८१ से ४८८	—	—
(३५) अष्टाहिका पूजा	—	४८९ से ५११	—	सचित्र
(३६) रोहिणीत्रतोथापन	—	५१२ से ५२४	ले० का० १८८६	—

विशेष—जयपुर में लिपि हुई थी ।

(३७) रत्नावलीत्रतोथापन	—	४२५ से ४३६	—	सचित्र
(३८) ज्ञानपञ्चीसीत्रतोथापन सुरेन्द्रकीर्ति	—	५३७ से ५४५	ले० का० सं० १८४०	—

विशेष—जयपुर में चद्रप्रभु चैत्यालय में लिपि हुई थी ।

(३९) पंचमेरुपूजा	म० रत्नचंद्र	५४६ से ५५२	—	—
(४०) आदित्यवारत्रतोथापन	—	५५२ से ५६१	—	सचित्र
(४१) अक्षयदशमीत्रतपूजा	—	५६२ से ५६५	—	—
(४२) द्वादशत्रतोथापन देवेन्द्रकीर्ति	—	५६६ से ५७६	—	—
(४३) चदनषष्ठीत्रतपूजा	—	५८० से ५८६	—	सचित्र पर अपूर्ण

विशेष—५८७ से ६०१ तक पृष्ठ नहीं हैं ।

(४४) मौनित्रतोथापन	—	६०६ से ६२१	—	—
(४५) श्रुतज्ञानत्रतोथापन	—	६२२ से ६३६	—	—
(४६) कांजीत्रतोथापन	—	६३६ से ६५४	—	—
(४७) पूजाटीका संस्कृत	—	६४५ से ६५४	—	—

इसके अतिरिक्त २ फुटकर पत्र हैं । और २ पत्रों में व्रत पजाओं की सूची दी है महत्वपूर्ण पाठ संग्रह है ।

२०८ मुक्तावलीत्रतोद्यापनपूजा—पत्र संख्या-१८ । साइज-१०×६ $\frac{१}{२}$  इत्थ । माया-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १९०२ सावन सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० १०७ ।

विशेष—चाकम् के मंदिर चन्द्रप्रभ-चैत्यालय में पंडित रताराम के शिष्य रामचरण ने प्रतिलिपि की थी ।

२०९ रत्नत्रयजयमाल—पत्र संख्या-५ । साइज-१०×४ $\frac{१}{२}$  इत्थ । माया-प्राकृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ११० ।

विशेष—संस्कृत में शिष्य दिया हुआ है । ३ प्रतियाँ और हैं ।

२१०. रत्नत्रयपूजा—पत्र संख्या-६ । साइज-११×४ $\frac{१}{२}$  इत्थ । माया-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १८६६ पौष सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० १०१ ।

विशेष—प० श्रीचंद्र ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है ।

२११. रत्नत्रयपूजा—आशाधर । पत्र संख्या-८ । साइज-१२×४ $\frac{१}{२}$  इत्थ । माया-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ९० ।

२१२. रत्नत्रयपूजा—पत्र संख्या-३४ । साइज-१२ $\frac{१}{२}$ ×३ $\frac{१}{२}$  इत्थ । माया-हिंदी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० २६ ।

२१३. रत्नत्रयपूजा—पत्र संख्या-१५ । साइज-३ $\frac{१}{२}$ ×५ इत्थ । माया-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ६३ ।

२१४. रोहिणीव्रत पूजा—केशवसेन । पत्र संख्या-९ । साइज-११×४ $\frac{१}{२}$  इत्थ । माया-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १०० ।

२१५. लब्धि विधान पूजा—पत्र संख्या-२१ । साइज-१०×४ $\frac{१}{२}$  इत्थ । माया-हिन्दी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ४१ ।

२१६. लब्धि विधान व्रतोद्यापन—पत्र संख्या-८ । साइज-१३×८ इत्थ । माया-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ८२ ।

२१७. विमलनाथ पूजा—रामचंद्र । पत्र संख्या-३ । साइज-११ $\frac{१}{२}$ ×५ इत्थ । माया-हिंदी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ४६ ।

२१८. पौडशाकारण पूजा—पत्र संख्या-८ । साइज-६×६ $\frac{१}{२}$  इत्थ । माया-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ८८ ।

विशेष—दशरुच्य पूजा भी है वह भी संस्कृत में है ।

२१६ षोडश कारण व्रतोद्यापन पूजा—आचार्य केशव सेन। पत्र सख्या-२२। साइज-१०३×४३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ४४।

२२०. शान्तिनाथ पूजा—सुरेश्वर कीर्ति। पत्र सख्या-५। साइज-११×२ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ४६।

विशेष—अत में आरती भी हैं।

छत्तानी जन आरती नित्य करो। गुरु वृषचंद सुरेश्वर कीर्ति भव दुख हरो। प्रभु के पद आरती नित्य करो।

२२१. श्रुतज्ञान पूजा—पत्र सख्या-१३। साइज-११३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ६२।

विशेष—पत्र ६ से आगे पाठों की सूची दी हुई है। हेमचन्द्र कृत श्रुत स्वंध के आधार से लिखा गया है। मडल तथा तिथि दी हुई है।

२२२. सप्त ऋषि पूजा—पत्र सख्या-८। साइज-१०३×४३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ३४।

२२३. समवशरण पूजा—ललितकीर्ति। पत्र सख्या-४। साइज-११३×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-स० १७६४ आसोज सुदी १५। पूर्ण। वेष्टन न० ६१।

विशेष—वसवा नगर में प्रतिलिपि हुई थी।

२२४. समवशरण पूजा—पन्नालाल। पत्र सख्या-६७। साइज-१२३×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-स० १६२१ आसोज सुदी ३। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ३।

विशेष—जवाहरलालजी की सहायता से रचना की गयी थी। पन्नालालजी जीवतसिंह जैपुर के कामदार थे।

२२५. सम्मेदशिखरपूजा—पत्र संख्या-१०। साइज-६×४ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ६६।

२२६ सम्मेदशिखरपूजा—नंदराम। पत्र सख्या-१२। साइज-१३×७ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-स० १६११ माघ बुदी ५। लेखन काल-स० १६१२ पौष सुदी २। पूर्ण। वेष्टन न० ११।

विशेष—रतनलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२२७. सम्मेदशिखर पूजा—जवाहरलाल। पत्र सख्या-१२। साइज-१२३×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ८३।

विशेष—एक प्रति और है।

२२८. सहस्रगुणितपूजाश्रीशुभचन्द्र । पत्र सख्या-१८ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । मापा-संस्कृत ।  
विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १६६८ । पूर्ण । वेष्टन न० १० ।

विशेष—संवत् १६६८ वर्षे शाके १५३३ प्रवर्तमाने पौष सुदी ७ महाराजाधिराज महाराज श्री मानसिंह प्रवर्तमाने अवावत्ति मध्ये ।

२२९ सहस्रनाम पूजा—धर्मभूषण । पत्र सख्या-८७ । साइज-१ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । मापा-संस्कृत ।  
विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १८७४ । पूर्ण । वेष्टन न० ७७ ।

विशेष—शान्तिनाथ मंदिर के पास जयपुर में पं० जगन्नाथ ने प्रतिलिपि की थी ।

२३०. सहस्रनाम पूजा—चैनसुख । पत्र संख्या-१८ । साइज-१ $\frac{१}{२}$ ×८ इञ्च । मापा-हिंदी ।  
विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ८ ।

विशेष—पद्य सख्या २२० है ।

२३१. साद्धद्वय द्वीप पूजा—विश्वभूषण । पत्र सख्या-२०८ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । मापा-  
संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-स० १८५७ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० ७८ ।

प्रति नं० २—पत्र सख्या-६६ । साइज-११×५ $\frac{३}{४}$  । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७९ ।

विशेष—थ्रदाई द्वीप के तीन नक्शे मा हैं उनमें एक कपडे पर है जिसका नाप २' ५'×२' ७" फीट है । नक्शे के पीछे द्वीपों का परिचय दिया हुआ है । इसके अतिरिक्त तीन लोक का नक्शा भी है ।

२३२ सिद्धक्षेत्र पूजा— । पत्र सख्या-४५ से ५० तक । साइज-१ $\frac{१}{२}$ ×४ इञ्च । मापा-हिन्दी ।  
विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । अर्पूर्ण । वेष्टन नं० ८६ ।

विषय—निर्वाणकायड गाथा भी है । ५ प्रतिया और हैं ।

२३३ सिद्धचक्र पूजा (अष्टाहिका)—नथमल विलास । पत्र संख्या-१० । साइज-१२ $\frac{३}{४}$ ×८ इञ्च ।  
मापा-हिंदी । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० १६ ।

२३४. सिद्धचक्र पूजा—सन्तलाल । पत्र सख्या-११० । साइज-१२ $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$  इञ्च । मापा-हिन्दी ।  
विषय-पूजन । रचना काल-X । लेखन काल-स० १९८६ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन न० १ ।

विशेष—ईश्वरलाल चांदवाड ने अन्नमेर वालों के चौबारे में प्रतिलिपि की थी ।

संवत् १९८७ में अष्टाहिका व्रतोत्थापन में केसरलालजी साह की पत्नी नंदलाल पीले वालों की पुत्री ने ठोलियों के मंदिर में भेट की थी ।

२३५ सिद्धपूजा—पद्मनवि । पत्र सख्या-४ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । मापा-संस्कृत । विषय-पूजा ।  
रचना काल-X । लेखन काल- आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन न० ४६ ।



विशेष—एक प्रति और है ।

२३६. सुगंधदशमीव्रतोद्यापन पूजा—पत्र संख्या-२२ । साइज-८३×६३ इञ्च । माषा-संस्कृत ।  
विषय-पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६ ।

विशेष—कंजिकान्नतोद्यापन भी है वह भी संस्कृत में है ।

२३७. सोलहकारणजयमाल—पत्र संख्या-१४ । साइज-११३×५ इञ्च । माषा-अपभ्रंश । विषय-  
पूजा । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८३५ सावन सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ७० ।

विशेष—श्रीचंद ने जयपुर में श्री शान्तिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

२३८. सौख्यकाख्यव्रतोद्यापन विधि—अक्षय्यराम । पत्र संख्या ८ । साइज-६३×४३ इञ्च । माषा-  
संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-सं० १८२० भादवा बुदी ४ । लेखन काल-सं० १८२८ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण ।  
वेष्टन नं० ११३ ।



### विषय-चरित्र एवं काव्य

२३९. ऋषभनाथचरित्र—सकलकीर्ति । पत्र संख्या-२३१ । साइज-११×४३ इञ्च । माषा-  
संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६६६ भाद्र बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० २२० ।

विशेष—मल्लहारपुर में चांदवाड गोत्र वाली वाई लाडा तत्सिष्या मागा ने प्रतिलिपि कराई थी । एक प्रति  
और है ।

२४०. किरातार्जुनीय—महाकवि भारवि । पत्र संख्या-१६८ । साइज-११×५ इञ्च । माषा-  
संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८१ ।

विशेष—प्रारम्भ के ३१ पत्र दूसरी प्रति के हैं । पत्र ५२ से १६८ तक दूसरी प्रति के हैं जिसमें श्लोकों पर  
हिन्दी में अर्थ भी दिया हुआ है ।

२४१. कुमारसभ—कालिदास । पत्र संख्या-१३ । साइज-१०३×५३ इंच । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-काव्य । रचना काल-X । लेखन काल-स० १४८६ थापाट । पूर्ण । वेष्टन न० ४८५ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

प्रशस्ति—संवत् १४८६ वर्षे थापाटमासे वटपद्रवास्तव्य दीसावालजातीय नरवद सुत व्यास पद्मनाभेन कुमार  
सभकाव्यमलेखि । शुभभवतु । मट्टारक प्रभु ससारवारणविदारणसिंह श्री सोमसुन्दर सूरिश्चिरनदतु । प्रति सुन्दर है ।

२४२. चदनाचरित्र—शुभचद्र । पत्र संख्या-२७ । साइज-११३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-  
चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-स० १८६१ मादवा बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० १५७ ।

विशेष—शिवलाल साह ने प्रतिलिपि कराई थी ।

२४३. चन्द्रप्रभचरित्र—वीरनन्दि । पत्र संख्या-१०३ । साइज-१३×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-काव्य । रचना काल-X । लेखन काल-स० १५५७ मादवा सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन न० ६७ ।

विशेष—इसमें कुल १८ सर्ग हैं अंथा म य सख्या २५०० श्लोक प्रमाण हैं । प्रारम्भ के १४ पृष्ठों पर संस्कृत  
टीका भी दी हुई है ।

२४४. चन्द्रप्रभचरित्र - कवि दामोदर । पत्र संख्या-२०२ । साइज-१२३×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-चरित्र । रचना काल-स० १७०३ । लेखन काल-१८५० माघ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० २३३ ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२४५. चारुदत्तचरित्र—भारामल्ल । पत्र संख्या-५१ । साइज-१२×८ इंच । भाषा-हिन्दी (पद्य) ।  
विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ७६ ।

विशेष—पद्य सख्या ११०६ है ।

२४६. जम्बूस्वामीचरित्र—ब्रह्म जिनदास । पत्रसंख्या-७२ । साइज-१२×४ इंच । भाषा-  
संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० २४२ ।

२४७ जम्बूस्वामीचरित्र—नाथूराम । पत्र संख्या-३२ । साइज-१२३×८ इंच । भाषा-हिन्दी  
गद्य । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ८० ।

प्रारम्भ—प्रथम प्रणमी परमेष्टिगण, प्रणमी सारद माय ।

यस निर्मय नमो सदा, भव भव मैं सुखदाय ॥१॥

धर्म दया हरदै धरूँ, सब विधि मंगलकार

जम्बू स्वामी चरित, की करूँ वचनिका सार ॥२॥

अथ वचनिका प्रारम्भ । मध्यलोक के अर्धसंख्यात द्वीप और समुद्रों के मध्य एक लाख योजन के व्यास वाला थाली के आकार सदस गोल जम्बू नाम की द्वीप है । जिसके मध्य में नामि के सदस सोमा देने वाला एक सुदर्शन नाम का पर्वत पृथ्वी से दस हजार योजन ऊँचा है और जिसकी जड़ पृथ्वी में १०००० दश हजार योजन की है ।

अन्तिम - जंबूस्वामी चरित जो, पढ़े सुने मनलाय ।

मनवांछित सुख भोग के, अमुकम शिवपुर जाय ॥

संस्कृत से माया करी, धर्म बुद्धि जिनदास ।

लमेचू नाथूराम पुनि, छंद बद्ध की तास ॥

किसनदास सुत मूलचद, करी प्रेरणा सार ।

जंबूस्वामी चरित की, करो वचनिका सार ॥

तब तिनके आदेश से माया सरल विचार ।

लघु मति नाथूराम सुत दीपचंद परवार ॥

जगत राग अर द्वेष वश, चहुँगति ममै सदीव ।

पावै सम्यक रत्न जो, काटे कर्म अदीव ॥

गत संवत् निर्वाण को महावीर जिनराय ।

एकम श्रावण शुक्ल को करी पूर्ण हस्वाय ॥

अंतिम है इक प्रार्थना सुनो सुधी नरनार ।

जो हित चाहो तो करो स्वाध्याय परचार ॥

इति श्री जंबूस्वामी चरित्र भाषा मय वचनिका संपूर्ण ।

२४८. जीवंधरचरित्र—आचार्य शुभचंद्र । पत्र सख्या—८० । साहज—११३/५ इत्थ । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—स० १६२७ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० २१३ ।

२४९. दुर्घटकाव्य—कालिदास । पत्र सख्या—२० । साहज—११४ इत्थ । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८४ ।

प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२५०. धन्यकुमारचरित्र—गुणभद्राचार्य । पत्र सख्या—१६ । साहज—१२४/३ इत्थ । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १७२ ।

विशेष—लबकञ्जुकीनेभूच्छुमचन्द्रो महामना ।

साधुं सुशीलवान् शांतं शिवको धर्मवत्सल ॥

तस्य पुत्रो बभूवान् बह्वृषो दानवान् वशी ।

परोपकारचित्तस्य न्यायेनार्जितसद्गनः ॥

धर्मानुरागिणा तेन धर्मकर्मनिबन्धन ।

चरितं कारितं पुण्यं शिवापेत्ति शिवाचिचनः ॥

इति धन्यकुमार चरित्र समाप्त ।

संस्कृत में कठिन शब्दों का अर्थ भी दिया हुआ है । ७ परिच्छेद है ।

२५१. धन्यकुमार चरित्र—सकलकीर्ति । पत्र संख्या—४० । साइज—१२×५ इंच । मापा—परकृत ।

विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १५६४ मगसिर सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३६४ ।

प्रशस्ति—संवत् १५६४ वर्षे आषाढादि ६५ वर्षे शके १४३१ प्रथम मार्गसिर सुदि ख्य श्री गिरेपुरे श्री आदिनाथचैत्यालये श्री मूलशंघे सरस्वतीगच्छे बलारकारगणे मट्टारक श्री सकलकीर्तिः तत्पट्टे मट्टारक श्री सुवनकीर्ति स्तत्पट्टे मट्टारक श्री ज्ञानभूषणस्तत्पट्टे मट्टारक श्री विजयकीर्तिस्तत् शिष्य ब्रह्म मल्लिदासपठनार्थं हुषड घातीय वृद्ध शास्त्रायां चौफडी आवाह्या तद्गार्या बभूवदे तयो द्वौ पुत्रौ । चोऋडी सारुपा तद्गार्या राजलदे । एते ज्ञानावर्या कर्म चयार्य श्री धन्यकुमार-लिखाप्यदत्त शुभ भवत् पश्चात् ब्रह्म श्री मल्लिदासात् शिष्य उल्ही आक्रेण पठितं । प० हीरा की पोथी है । सात अधिकार हैं ।

२५२ धन्यकुमारचरित्र—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र संख्या—२५ । साइज—६×४ इंच । मापा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४८६ ।

विशेष—चतुर्थ अधिकार तक है इसके आगे अपूर्ण है ।

२५३. धन्यकुमारचरित्र—सुशालचंद । पत्र संख्या—३८ । साइज—१४×८ इंच । मापा—हिन्दी

पद्य । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १६५६ मगसिर सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६५ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

२५४. धर्मशर्माभ्युदय—हरिचंद्र । पत्र संख्या—१०६ । साइज—१२×४ इंच । मापा—संस्कृत ।

विषय—काव्य । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३२ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है बीच के कुछ पत्र जोर्ण है । धर्मानाथ तीर्थकर का जीवन चरित्र वर्णित है ।

२५५. नागकुमारचरित्र—पत्र संख्या—३६ । साइज—१३×८ इंच । मापा—हिन्दी । विषय—चरित्र ।

रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७६ ।

२५६ नेमिदूतकाव्य—विक्रम । पत्र संख्या—१३ । साइज—१०×४ इंच । मापा—संस्कृत । विषय—

काव्य । रचना काल—X । लेखन काल—सं० १७८७ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०३ ।

## चरित्र एवं काव्य ]

२५७ नेमिदूतकाव्य सटीक—मूलकर्ता विक्रम कवि । टीकाकार प० गुण विनय । पत्र संख्या-२३ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । टीका काल-स० १६४४ । लेखन काल-स० १६४४ । पूर्ण । वेष्टन न० २६२ ।

२५८ प्रद्युम्नकाव्य पञ्जिका—पत्र संख्या-८ । साइज-१०×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ३४२ ।

विशेष—१४ सर्ग तक है ।

२५९ प्रद्युम्नचरित्र—महसेनाचार्य । पत्र संख्या-८८ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७११ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० २६४ ।

विशेष—कुल' २४ परिच्छेद हैं, कठिन शब्दों के अर्थ दिये हुए हैं ।

२६०. प्रद्युम्नचरित्र—आ० सोमकीर्ति । पत्र संख्या-२३६ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २६३ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । प्रथम स० ४८५० श्लोक प्रमाण है । एक प्रति संवत् १६४७ की लिखी हुई और है ।

२६१ प्रद्युम्नचरित्र—कवि सिंह । पत्र संख्या-१४३ । साइज-११×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-अपभ्रंश । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १५६८ चैत सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८२ ।

विशेष—तत्काल ( टोडारायसिंह ) में सोलकी वंशोत्पन्न सूर्यसेन के राज्य दावणहया स्थाने खडेलवालजातीय सोगाणी गोत्रोत्पन्न सघी सोदा के वंशज हू गा पत्ता सांगा आदि ने प्रतिलिपि कराकर मुनि पद्मकीर्ति को भेंट किया ।

२६२. पार्श्वपुराण—भूधरदास । पत्र संख्या-८२ । साइज-११×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-काव्य । रचना काल-स० १७८६ । लेखन काल-स० १६१६ श्रावण सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन न० १७ ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

२६३. पार्श्वनाथचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र संख्या-१०३ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६०५ कार्तिक सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३ ।

विशेष—श्री बादशाह सलीमशाह (जहाँगीर के) शासन काल में प्रयाग में श्री आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी । ब्रह्म आसे ने इसे सुमतिदास के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । आचार्य श्री हेमकीर्ति के शिष्य सा० मेघराज की पुस्तक है ऐसा लिखा है ।

इस प्रथम की मण्डार में एक प्रति और है ।

२६४. प्रीतिकरचरित्र—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र संख्या-२७ । साइज-१२×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८०५ द्वि० वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० २७६ ।

विशेष—वसुपुर नगर में श्री चंद्रप्रभचैत्यालय में प० परसराम जी के शिष्य आनन्दराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

२६५. भद्रबाहुचरित्र—रत्नगंदि । पत्र संख्या-३० । साइज-११×५ इंच । माया-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचनाकाल-X । लेखन काल-सं० १६५२ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन न० २६७ ।

विशेष—प्रसारित अपूर्ण है अथ ६८८ श्लोक संख्या प्रमाण है ।

२६६. भद्रबाहुचरित्र भाषा—चपाराम । पत्र संख्या-३८ । साइज-१२<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×७<sup>१</sup>/<sub>२</sub> इंच । माया-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १८०० सावन सुदी १५ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ३८ ।

विशेष—अथ १३२५ श्लोक प्रमाण है ।

प्रारम्भ—जैवतो वरतौ सदा, चौबीसू जिनराज ।

तिन वंदत वंदक लहै, निश्चय थल सुखदाय ॥

चौपई—रिषव अजित संभव अभिनिन्दन ।

सुमति पद्म सुपारिस चद ॥

पुष्पदंत शीतल जिन राय ।

जिन श्रीहास नमू सिर नाय ॥२॥

पत्र संख्या-२३ पर—अथानंतर जे जीव तिस ही भव विधै स्त्री कूं मोक्ष गमन कहै है, ते जीव आग्रह रूप ग्रह करि अस्थ है अथवा तिनकूं वाय लगी है ॥८३॥ कदाचि स्त्री परयाय धारि अर दुद्धर घोर वीर तप करै । तयापि स्त्रीकूं तद्रव मोक्ष नाहीं ॥८४॥

अन्त—इह चरित्र गुर गम्य लखि रत्नगदि मुनिराय ।

रथ्यौ पंसत श्लोक मय मूल महा सुख दाय ॥१॥

लैय तिस अनुसार कछु रथ्यौ वचनका रूप ।

जात नाम कुल तास अथ कहुं सुनी गुन भूप ॥२॥

देश डुंडाहल मध्यपुर माधव सूवस्थान ।

जगतसंध ता नगरपति पातल राज महान ॥३॥

तहां वसे इक वैश्य शुभ हीरालास सु जान ।

जाति थावग न्याति मै खेलेवाल शुभ जानि ॥४॥

गोत भावसा कुनि धरै परम गुनी गुन घाम ।

तिनकै अति मति दीन सुत उपनौ चपाराम ॥५॥

ताकै फुनि अ ता जुगम लसे सुजन सुख दाय ।  
 तानै कछु अचर समभि सीखी पाय सहाय ॥६॥  
 तिस पुर मध्य जिन भवन इक राजत अधिक उदार ।  
 मध्य लसे जिन वृषभ सुर नर वदित पद सार ॥७॥  
 तथा जात दिन रैन मुक्ति मयौ कछु अभ्यास ।  
 तत्र लखि कै सुचरित्र इह रवी वचनका तास ॥ ८ ॥  
 होय दोस यामै जहां अभिलत अचर होय ।  
 सोधौ ताकू सुषड नर निज लक्षण अब लोय ॥ ९ ॥  
 संत सदा गुन दुर्जन ग्रहे श्रीगण लेय ।  
 सुख तै तिष्ठौ मूभि पार मो पर कृपा करेय ॥ १० ॥  
 बुद्धहीन तै मूलवत अर्थ मयो नही होय ।  
 ता परि सजन पुरुष मो क्षमा करो गुन जोय ॥ ११ ॥  
 अर सोधी वर बोर तै लखि अचर विनास ।  
 यह मेरी अरजी शुभग धरौ चित्त गुण रासि ॥ १२ ॥  
 अधिक कहे किम होत है जे है सत पुमान ।  
 ते थोरे ही कहन तै समभि लेत उर आन ॥ १३ ॥  
 नर सुर पति बंदत चरण करन हरन गुन पूर ।  
 पर दरसत भजन करै धर्म रूप विधि चूर ॥ १४ ॥  
 जो जिनेश इन गुण सहित सो वदू सिर नाय ।  
 सोहु इहा मंगल करन हरन विघ्न अधिकाय ॥ १५ ॥  
 श्रावण सुदि पूनिम सु रविवार अर्थ रस जानि ।  
 मद ससि संवत्सर विषै मयौ ग्रंथ सुख खानि ॥ १६ ॥  
 चर धिर चवगति जीवत निति होहु सुखी जगथान ।  
 ररो विघन दुख रोष सच वधौ धर्म भगवान ॥ १७ ॥

— छंद अनुष्टया—

मद्रबाहुसुनेरेतत् चरित्र प्रति दसंता ।  
 भाषा मय कृतं चपारामेण मदबुद्धिना ॥ १६ ॥

— सौरठा—

तस्य दोष परित्यज्य ग्रह तु गुन सज्जना ।  
 यथा घृष्टौपि सौरम्य ददाति चदनोल्बणं ॥ २१ ॥

तेरह सौ पचीस श्लोक रूप संख्या गिनी ।

भद्रबाहु पुनि ईस चरित तनी भाषा मई ॥ २२ ॥

इति श्री आचार्य रत्नानंदि विरचित भद्रबाहु चरित्र सररुत प्रथ ताफी घालचोध वचनका विनी श्वेताम्बर मत उत्पति वा पर्यसध की उत्पति तथा लुकामत की उत्पति नाम वर्ननों नाम चतुर्थ अधिकार पूर्ण भया ॥ इति ॥

२६७ भद्रबाहु चरित्र भाषा—किशनसिंह । पत्र संख्या—३५ । साइज—११×५ इंच । भाषा—हिंदी गद्य । विषय—चरित्र । रचना काल—स० १७८३ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ७८ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

२६८ भविष्यदन्त चरित्र—श्रीधर । पत्र संख्या—६६ । साइज—१२×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—स० १५८६ मगसिर सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन न० २३५ ।

विशेष—खडेलवाल जातीय साह गोत्रोत्पत्त साह लाला के वराज नामा खीमा छीतर आदि ने प्रतिलिपि कराई थी ।

२६९. भविष्यदन्तचरित्र—ब्र० रायमल । पत्र संख्या—३६ । साइज—१२×८ इंच । भाषा—हिंदी पद्य । विषय—चरित्र । रचना काल—स० १६१६ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ११५ ।

२७०. भविष्यदन्त चरित्र—घनपाल । पत्र संख्या—११२ । साइज—११×५ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—स० १६६२ भाष सुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० १६५ ।

विशेष—स० १६६२ वर्षे भाष सुदी ११ शुक्रवासे रोहिणीनक्षत्रे श्री मूलराधे लिखितं खेमकरण कायरव्य हाजीपुरनगरे ।

एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है ।

२७१. भोजप्रबंध—पंडित अल्लारी । पत्र संख्या—१६ । साइज—१०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० २६८ ।

विशेष—श्लोक संख्या ११०० प्रमाथ है ।

२७२. महीपालचरित्र—नथमल । पत्र संख्या—७० । साइज—०२३×६ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । रचना काल—स० १६१८ आषाढ सुदी ४ । लेखन काल—X । अपूर्ण । वेष्टन न० ३६ ।

विशेष—प्रारम्भ के २ तथा अन्तिम पत्र नहीं है ।

श्री नथमल दोसी दूखीचंद के पौत्र तथा शिवचंदजी के पुत्र थे । इनने पं० सदासुखजी के पास रहकर अध्ययन व रचनाएँ की थी ।



२७३. मेघदूत—कालिदास । पत्र संख्या-२७ । साइज-१०×१२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेस्टन नं० ४१३ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । टीकाकार सरस्वतीतीर्थ हैं । काशी में टीका लिखी गई थी । पत्र २३ तक मूल सहित ( श्लोक ५५ ) टीका है शेष पत्रों में मूल श्लोकों के लिए स्थान खाली है ।

२७४ यशोधरचरित्र—वादिराजसूरि । पत्र संख्या-१७ । साइज-१०×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७०० ज्येष्ठ बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० २७७ ।

२७५. यशोधरचरित्र—सकलकीर्ति । पत्र संख्या-५१ । साइज-१०×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २७१ ।

विशेष—आठ सर्ग हैं । प्रति प्राचीन है । पत्र पानी में भीगे हुए हैं । एक प्रति और है ।

२७६. यशोधरचरित्र—ज्ञानकीर्ति । पत्र संख्या-७६ । साइज-१० इंच इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-स० १६५६ भाव सुदी ५ । लेखन काल-स० १६६२ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० २७५ ।

विशेष—६ सर्ग हैं । राजमहल नगर के श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में महाराजाधिराज श्री मानसिंह के राज्य काल में उनके प्रधान अमात्य श्री नानू गोधा ने प्रतिलिपि कराई थी ।

२७७ यशोधरचरित्र—वासवसेन । पत्र संख्या-६३ । साइज-१० इंच इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६१४ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० २७४ ।

प्रशस्ति—संवत् १६१४ वर्षे चैत्र सुदि ५ शुक्रवारे तत्परमहादुर्ये महाराजाधिराजरावश्रीकल्याणराज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसधे नद्याम्नाये बलात्कारण्ये सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकु दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मादिदेवा तत्पट्टे म० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे म० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे श्रीप्रभाचन्द्रदेवा तत् शिष्यमडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्रदेवा तत् शिष्यमडलाचार्यश्री ललितमीतिदेवा स्तदाम्नाये पडेलत्रालान्वये अजमेरा गात्रे सा दामा तद्भार्या चादौ तत्पुत्रौ द्वौ । प्र० सायो जिनपूजापुरदर चतुर्दीनवितरणम्पत्रुह शोलागवेव सा बोहिय, द्वि० सा वाता । सा० बोहिय तद्भार्या बालहदे । तत्पुत्रौ द्वौ । प्र० सा. सुरताण द्वि० सा. सागु । सा, सुरताण भार्या द्वे ।

२७८ यशोधरचरित्र—पद्मनाभ कायस्थ । पत्र संख्या-८६ । साइज-११ इंच इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० २७२ ।

विशेष—६ सर्ग तक है, प्रति प्राचीन है ।

२७९ यशोधरचरित्र—सोमकीर्ति । पत्र संख्या-५१ । साइज-१० इंच इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-स० १५३६ पौष बुदी ५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २७० ।

विशेष—आठ सर्ग हैं। श्री शीतलनाथ चैत्यालय गीटियामेंव पाठ में ग्रन्थ रचना की गई या। प्रथम श्लोक संख्या-१०१८ प्रमाण है। २० से ४१ तक पत्र दूसरी प्रति के हैं। प्रति प्राचीन है। एक प्रति और है।

२८०. यशोधरचरित्र—लिखंमीदास । पत्र संख्या-३६ । साइज-१३×७ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी बंध । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १७८१ कार्तिक सुदी ६ । लेखन काल-सं० ११५२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १०२ ।

२८१. यशोधरचरित्र भाषा—खुशालचन्द । पत्र संख्या-३३ । साइज-१३×८ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । रचना काल-सं० १७८१ कार्तिक सुदी ८ । लेखन काल-सं० ११६० अषाढ सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ६६ ।

विशेष—पं० कालीचरन ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है ।

२८२ रघुवशा—कालिदास । पत्र संख्या-११७ । साइज-१०×८ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०० ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । संस्कृत टीका सहित है । पत्रों के मध्य में मूल पत्र है तथा ऊपर नीचे टीका दी है । प्रथम टीका श्लोक संख्या-५२४० है । मूल श्लोक संख्या-२००० है । एक प्रति और है लेकिन वह अपूर्ण है ।

२८३. रामकृष्ण काव्य-पं० सूर्य कवि । पत्र संख्या-२३ । साइज-११×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८१७ चैत्र सुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ६०२ ।

विशेष—अन्वयदीपिका नाम की टीका है । पण्डितानन्दराम ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ—श्रीमञ्जानकीनामाय नमः ।

श्रीमन्मगलमूर्तिमार्तिशमनं नत्वा विदित्वा तत ।

शान्दत्रस्रमनोरमं सुगुणकलाधिरजात्मन ॥

अन्तिम—सुलब्धवशास्तु विलोमवर्ण काव्येऽन मन्यैरतिमादधातु ।

चातुर्यमायाति यतः कवित्वे, नाशां तथा पाक जातमेति ॥

इति श्री सूर्यकवि कृता रामकृष्णकाव्यस्यान्वयदीपिका नाम्ना टीका संपूर्णा ।

२८४ यर्रांगचरित्र—भट्टारक बद्धमान देव । पत्र संख्या-६७ । साइज ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । रचना काल-X । लेखन काल-१८६३ अषाढ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७० ।

विशेष—जयपुर के शान्तिनाथ चैत्यालय में विद्युत् अमृतचक्र ने प्रतिलिपि की थी ।

२८५ वासवदत्ता—महाकवि सुवधु । पत्र संख्या-१६ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ६७६ ।

२८६ विदग्धमुखमंडन—धर्मदास । पत्र संख्या—२१ । साइज—११×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—काव्य । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन न० ३८० ।

विशेष—यति अमरदत्त ने जयपुर में सं. १८३१ में पंडित श्रीचंद्र के शिष्य वि० मनोरथराम के पठनार्थ  
प्रतिलिपि कराई थी । प्रत संस्कृत टीका सहित है ।

२८७ शिशुपालवध—महाकवि माघ । पत्र संख्या—११ । साइज—११×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—काव्य । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ४२६ ।

विशेष—केवल १४ वें सगे की टीका है, टीकाकार मल्लिनाथ सूरि है ।

२८८. श्रीपालचरित्र—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र संख्या—६६ । साइज—११×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—चरित्र । रचना काल—स० १५८५ आषाढ सुदी १५ । लेखन काल—स० १८४४ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० २०६ ।

विशेष—पूर्णनासा नगर के आदिनाथ चैत्यालय में ग्रन्थ रचना की गई थी ।

२८९. श्रीपालचरित्र—परिमल । पत्र संख्या—१३५ । साइज—१२×४ इंच । भाषा—हिंदी । विषय—  
चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० २७ ।

विशेष—४ प्रतियां और हैं ।

२९०. श्रेणिकचरित्र—शुभचंद्र । पत्र संख्या—११३ । साइज—११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—स० १७८५ भाद्रपद सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन नं० २४१ ।

विशेष.—कोड़ी भाष में प्रतिलिपि हुई थी ।

२९१ सातव्यसन चरित्र भाषा । पत्र संख्या—१३ । साइज—१२×८ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—  
चरित्र । रचना काल—स० १६९१ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ८७ ।

विशेष—रचना के मूलकर्ता सोमकर्ति हैं ।

२९२. सुकुमालचरित्र—सकलकीर्ति । पत्र संख्या—८३ । साइज—१०×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४११ ।

विशेष—६ सर्ग हैं । श्लोक संख्या २९०२ है पत्र पानी में भीगे हुए है ।

२९३. सुकुमालचरित्र भाषा—नाथूलाल दोसी । पत्र संख्या—६५ । साइज—१३×८ इंच । भाषा—  
हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० १४० ।

विशेष—प्रारम्भ में चरित्र पद्य में दिया हुआ है फिर उसकी वचनिका लिखी गई है ।

प्रारम्भ (पद्य)—भीमत वीर जिनेश पद, फमल नग्न शिरनाय ।

जिनवाणी उर में धरू जजू सुगुरु के पाय ॥ १ ॥

पच परम गुरु जगत में परम श्रेष्ठ पद्विधान ।

मन बच तन करि ध्यावते होत कर्म की हानि ॥ २ ॥

श्रातम—सर्पारथ सिव लौं गये, शय जना तत्र गान ।

जानो भवि संक्षेप ते ईश विध चरित बखान ॥ १२२ ॥

गत्र सुकुमाल चरित्र का समरा ज्ञान व हेत ।

देश वचनिका मय लिखू पद्य सुनो धरि चित ॥ १२६ ॥

वशि प्रमाद कहू भूलि क अरय लिग न जो होय ।

पठित जन सब सोधियो, मूढा ग्र य अत्रलोय ॥ १२७ ॥

वचनिका पद्य न० ८८ की —

अर भूठ वचनका बोलना ते बुद्धि की नारा हा हे । अपजम फेले हे । अर सर्व जीवन ते अविद्वान की पा ।  
हो हे । घट्टरि राजादिकनि ते हाथ पाव कान नाक जीम आदि का छेद रूप दउ पावै हे ।

श्रातम—आदि अत मगल करो थी वृषभादि जिनेश ।

जैन धर्म जिन भारती, हर मंगार कलेश ॥

मर्वया—दु टाहउे देश मध्य जैपुर नगर सो हे,

च्यार वर्ष राह चाले अपने सुधर्म की ।

रामसिंह भूपत के राज माहि कभी नादि,

रमी बड्डु दृष्टि परै जानौ निज कर्म की ॥

वैश्यकुल जैनी की पूरव कृत्य पुण्य भरी,

पायो यह खोलो अत्र मृदी दृष्टि अम की ।

जैन वैन कान सुनौ यत्नस्वरूप मूनो,

चार अनुयोग मनो यही सीत्य कर्म की ॥ २ ॥

बीनाई—दोसी गीत दुलीचद नाम । ताको सुत शिवचद अभिराम ॥

नागुलाल तामु सुत भयो । जैन धर्म को सरणो लयो ॥ ३ ॥

श्रीदीगाथ सगही अमरेश । पाय सहाय पदो श्रुत लेश ॥

नासलीवाल सदासुख पास । फिर कीनो श्रुत की अभ्यास ॥ ४ ॥

श्री सुकुमाल चरित्र रसाल । देख कही हरचद गगवाल ॥

होत वचनिका मय जो ऐह । सब जन वाचै हित गेद ॥ ५ ॥

विन व्याकरण पढे नहीं ज्ञान । मूलग्रथ को हीइ निदान ॥  
 औसी प्रार्थना तने वसाय । मूल ग्रथ को पाय सहाय ॥ ६ ॥  
 सावारथ सो लिखयो एह । देश वर्चनिका मय वरि नेह ॥  
 वाचौ पढौ पढावौ सुनौ । आत्म हित कू नीकू सुनौ ॥ ७ ॥  
 जो प्रमाद बस तै कुछ इहा । मोलपने तै मैने कहा ॥  
 सो सब मूल ग्रथ अनुमार । सुध करयो बुध जन सुविचार ॥ ८ ॥  
 उनवीससतठारहसार । सावण सुदी दशमी गुरुवार ॥  
 पूरण यह वचनिका एह । वाचौ पढौ सुनौ धरि नेह ॥ ९ ॥

दोहा—मगलमय मगल करन वीतराग चिद्रूप ।

मन वच कर ध्यावतै, हो है त्रिभुवन भूप ॥ १० ॥

इति श्री सकलकार्ति आचार्य विरचित सुकुमाल चरित्र सस्कृत ग्रथ ताकी देशभाषा वर्चनिका समाप्ता ॥

२६४ सीताचरित्र—कवि बालक । पत्र संख्या—१३ । साइज—१३×६ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।  
 विषय—चरित्र । रचना काल—स० १७०३ मगसिर सुदी ५ । लेखन काल—स० १७६८ सावन सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० ६२

विशेष—प० सुखलाल ने केथून नगर में प्रतिलिपि की थी । प० सुखराम का गीत ठोलिया, वासी शेखा-  
 चाटी, वास हिंगू गया था ।

२६५. हनुमतचौपई—ब्रह्मरायमल्ल । पत्र संख्या—४० । साइज—१०×६ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा—हिंदी पद्य ।  
 विषय—चरित्र । रचना काल—स० १६१६ । लेखन काल—स० १८६५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८७ ।

विशेष—छोटेलालजी ठोल्या ने मन्दिर दाणावलि ( दीवानजी ) के पंडित सवाई रामजी से २) देकर पुस्तक  
 सवत १६०२ में ली थी ।

२६६. हनुमच्चरित्र—ब्रह्म अजित । पत्र संख्या—८६ । साइज—१० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
 विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० २३६ ।

विशेष—ग्रथ २००० श्लोक प्रमाण है प्रति प्राचीन है ।

२६७ होलिकाचरित्र—निनदास । पत्र संख्या—१०६ । साइज—१३ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।  
 विषय—चरित्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० २३८ ।

विशेष—ग्रथ श्लोक संख्या ६४३ प्रमाण है ।



## विषय-पुराण साहित्य

२६८ आदिपुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र संख्या-३४६ । साइज-१२३/४ इच्च । भाषा-मस्कृत ।  
विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १७३६ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० १५८ ।

विशेष—पालुम्ब नगर निवासी विहारीदास के पुत्र निहालचन्द जैमवाल ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है  
लेकिन वह अपूर्ण है ।

२६९ आदिपुराण—पुष्पदत्त । पत्र संख्या-४ से २७६ । साइज-१२४/३ इच्च । भाषा-हिंदी ।  
भाषा-अपभ्रंश । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १६४३ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० १६४ ।

विशेष—एक प्रति और है । लेकिन वह अपूर्ण है ।

लेखक प्रारंभिक निम्न प्रकार है—

प्रशस्ति—अथ श्रीविक्रमादित्यराज्यात् सवत् १६४३ वीं आसोज सुदी ६ शुक्रवारे श्री हिसारपरोजाकेदे  
सुलतान श्रीवहलोलसाहराज्यप्रवर्तमाने आ मूलसधे नद्याम्नाये सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे मट्टारकथीपन्नद्विदेवा तत्पट्टे  
मट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा तत् शिष्य श्री मुनि जयनन्ददेवा तत् शिष्यणी वार्ह गूजरी निमित्त श्री एटेलवाला वये क्षेत्रपालीय  
गोत्रे सुनामपुरवास्तव्ये जिनशासनप्रभावपरमश्रावकसधपतिकल्हू नामा तत्पत्नी शीलशालिनी साध्वी राणो नाञ्जी तयो चत्वार  
पुत्रा अनेकतीर्थयात्रादिमहामहोत्सवकारायिका अर्हतादिर्पचपस्मेष्टिचरणारविन्दसेवनैकचचरीका सधपति हवा सं० धीरा सं० कामा,  
सं० सुरपति नामधेया तन्मध्ये सधपति कामा भार्या विहितानेऋतनियमतपोविधानादिधर्मकार्या साध्वी कमलश्री तत्पुत्रो  
देवपूजादिषट्कर्मपञ्चिनीखड्मार्यण्डौ हस्तिनागपुरतीर्थयात्राप्रभावनाकारणोपपन्न पुण्यबलप्रचण्डौ सं० भीवा सं० वच्छको सधपति  
भीमास्यजाया देवशुक्रशास्त्रसक्तिविधानप्रलब्धद्याया साध्वी मीवथी इति प्रसिद्धि तद्-नन्दने प्रथनामा गुरुदास तत् कलत्र  
शीलाद्यनेत्रगुणपात्रे गुणश्री नामिक तत्सुतौ चिरजीव जैरणमल सधपति बहू गेहनी विनयादिगुणायुतद्वाहिनी बडलसिरि इति  
रुधि । तत् तनुजो जिनचरणमल सेवनैकचचरीका, सं० रात्रणदासास्य तञ्जननी शालात्रिनयादिगुणवाद्यक सरस्वती सङ्गिना ।  
एतेषामध्ये साध्वीया कमलश्री तथा निज पुत्र सं० भीवा वच्छक्यो न्यायोपार्जित विरोन इ दश्री आदिपुराणपुस्तक लिखापित ॥  
लिखित महेश्वर शोभा सुत उधाकेन इद पुस्तक ।

३०० आदिपुराण भाषा—प० दौलतराम । पत्र संख्या-६४८ । साइज-१२३/४ इच्च । भाषा-  
हिन्दी । विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६६ ।

प्रत्य २३७०० श्लोक प्रमाण है । एक प्रति और है ।

३०१. उत्तरपुराण—गुणभद्राचार्य । पत्र संख्या-३८१ । साइज-१२३/४ इच्च । भाषा-मस्कृत ।  
विषय-पुराण । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८६० चैत्र सुदी २३ । अपूर्ण । वेष्टन न० १५६ ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है। अजमेर पट्ट के भ० देवेन्द्रकीर्ति के पट्ट में आचार्य रामकीर्ति के समय में लश्कर ( म्नालियर ) में आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की गयी थी। इसमें ६६ से ६८ तक पत्र नहीं हैं।

एक प्रति और है। यह प्रति प्राचीन है।

३०२ नेमिजिनपुराण—ब्रह्मनेमिदत्त। पत्र संख्या—१८३। साइज—११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत।  
विषय—पुराण। रचना काल—X। लेखन काल—स० १६१० आषाढ सुदी १३। पूर्ण। वेष्टन न० २३०।

विशेष—तत्सकगढ में राजा रामचन्द्र के शासन काल में आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की गई थी।  
० प्रतिया और हैं।

३०३ पद्मपुराण—रविषेणाचार्य। पत्र संख्या—१ से १५०। साइज—१३×६ $\frac{१}{२}$  इञ्च। भाषा—  
संस्कृत। विषय—पुराण। रचना काल—X। लेखन काल—X। अपूर्ण। वेष्टन न० १६१।

३०४. पद्मपुराण—प० दौलतराम। पत्र संख्या—६२५। साइज—१२×६ $\frac{१}{२}$  इञ्च। भाषा—हिंदी गद्य।  
विषय—पुराण। रचना काल—स० १८२३ माघ सुदी ६। लेखन काल—स० १६०० आषाढ सुदी ४। पूर्ण। वेष्टन न० ५८

विशेष—दयाचंद चादवाड ने लिपि की की।

३०५ पाण्डवपुराण—शुभचंद्र। पत्र संख्या—२०२। साइज—१२ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$  इञ्च। भाषा—संस्कृत।  
विषय—पुराण। रचना काल—स० १६०६ भाद्रपद बुदी २। लेखन काल—स० १७६२ आसोज सुदी १४। पूर्ण। वेष्टन  
न० ४१।

विशेष—श्वेताम्बर यति गोरखदास ने बसवा में प्रतिलिपि की थी।

३०६ बलभद्रपुराण—रङ्गधू। पत्र संख्या—१५५। साइज—१२×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च। भाषा—अपभ्रंश।  
विषय—पुराण। रचना काल—X। लेखन काल—स० १७३२ फागुन बुदी १४। पूर्ण। वेष्टन न० १६६।

विशेष—श्रीरंगजेव के शासनकाल में वैराठ नगर में अग्रवाल वशोत्पन्न मुगिल गोत्रीय सघी साधु के वंशज  
सघी श्री कुशलसिंह ने पेमराज से प्रतिलिपि कराई थी।

३०७ रामपुराण पद्मपुराण )—भ० सोमसेन। पत्र संख्या—२०४। साइज—११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च।  
भाषा—संस्कृत। विषय—पुराण। रचना काल—स० १६५६। लेखन काल—स० १८०८ माघ सुदी ७। पूर्ण। वेष्टन न० २५६

विशेष—श्वेताम्बर जयदास ने प्रतिलिपि की थी। कुल ३३ अविंकार हैं। प्रथाप्रथ संख्या—७३० श्लोक  
प्रमाण है।

३०८ वर्द्धमानपुराण—सकलकीर्ति। पत्र संख्या—१६४। साइज—१० $\frac{१}{२}$ ×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत।  
विषय—पुराण। रचना काल—X। लेखन काल—स० १८५८। पूर्ण। वेष्टन न० २५७।

विशेष—इसमें कुल १६ अधिकार हैं। महात्मा मालगराम ने प्रतिलिपि की थी।

३०६ शान्तिनाथपुराण—सकलकीर्ति। पत्र सख्या-४६ से १८४। साइज-११×५ इञ्च। भाषा-मसृत्त। विषय-पुराण। रचना काल-X। लेखन काल-सं० १६१८ माह सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन नं० २१८।

विशेष—कुल १६ अधिकार हैं। श्लोक सख्या ८२८० है। एक प्रति और है।

३१० हरिचशपुराण—यश कीर्ति। पत्र सख्या-१५१। साइज-११½×५½ इञ्च। भाषा-अर्धभ्रंश। विषय-पुराण। रचना काल-X। लेखन काल-सं० १६१५ सावनसुदी १३। पूर्ण। वेष्टन नं० १६६।

विशेष—४००० प्रमाणश्लोक प्रथम है। वादशाह अकबर के शासन काल में अम्रवाल वशोत्पन्न मित्तल गोत्रीय गेवाडी निवासी साह असगज के वंशज सा. भीमसेन ने प्रतिलिपि कराई थी। लेखक प्रशस्ति काफी विस्तृत है।

३११ हरिचशपुराण—त्र० जिनदास। पत्र सख्या-३६६। साइज-१०½×५½ इञ्च। भाषा-मसृत्त। विषय-पुराण। रचना काल-X। लेखन काल-सं० १७१२ अग्रहन बुदी ८। पूर्ण। वेष्टन नं० १६८।

लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है। एक प्रति और है।

३१२ हरिचशपुराण—प० दौलतराम। पत्र सख्या-६८४। साइज-१३×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-पुराण। रचना काल-सं० १८०६ चैत्र सुदी १। लेखन काल-X। पूर्ण। वेष्टन नं० १४१।

विशेष—बलदेव कृत जयपुर बंदना भी है।

### विषय-कथा एवं रासा साहित्य

३१३. अष्टाह्निकाकथा—पत्र सख्या-३८। साइज-१०×४½ इञ्च। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-कथा। रचना काल-X। लेखन काल-सं० १६१० मगसिर बुदी ११। पूर्ण। वेष्टन नं० ७२।

विशेष—युजराती हिन्दी मिश्रित है। प्राकृत गायार्ण है उस पर टीका है। पद्मलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। प्रारम्भ—शांति देव प्रणाम करि निश्चय मन में ध्याय।

कथा अठार्वनी लिखी, भाषा सुगम बनाय ॥



यहा समस्त खोट कर्म री पालने वाली, निमल धर्म री उपजावने वाली और कर्म तिथरी नासरी करिने वाली केर, यह लोग रे विधै परलोक रे विधै परलोक रे विधै कियौ छै । धरौ सुख जिन्हे ऐमा पर्युषणा पर्व आयौ अन्नी समस्त देवता भवनपति इन्द्र मेल्या होय ते नंदीश्वर नामा आठमा द्वीप रे विधै धर्म री महिमा करनावे जावे ॥

अन्तिम—मति मदिर किनी सरस कथा अठाई देख ।

पद में असुध केई हुवो कवि जन लीजो देख ॥

३१४. अष्टाहिका कथा—पत्र सख्या-३३ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-रघु ।

रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८८२ आषाढ सुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८२ ।

विशेष—पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी । अन्त में निम्न दोहा भी है—

रतन कोह मुख संवडो अलवेली पणीयार ।

दपत पाणि मरै तीसै पुरष री नार ॥ १ ॥

३१५ अनतव्रतकथा—पत्र सख्या-६ । साइज-११×५ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा ।

रचना काल-X । लेखन काल-सं० १९०१ माघ सुदी १३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२५ ।

३१६. अष्टाहिका कथा—रत्ननदि । पत्र सख्या-४ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-रघु । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ७५ ।

विशेष—संस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ भी दिया हुआ है । प्रति प्राचीन है । श्लोक सख्या-८६ है ।

३१७. आराधनाकथाकोष—पत्र सख्या-८२ । साइज-११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा ।

रचना काल-X । लेखन काल-सं० १९४५ माघ सुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३२५ ।

विशेष—हिसार पैरोजावादपत्तने सुरत्राय मयलोलिसाहि राज्ये गुणमद्र देवा-तेषा आम्नाये साधु चौडा

पुत्र कथाकोषम च लिखापितं । ब्रह्म घाटम योगदत्त ।

प्रति प्राचीन एवं जीर्ण है । पत्र ३४ से ८२ तक फिर लिखाये गये हैं । अन्तिम पत्र जीर्ण तथा फटा हुआ है ।

३१८. कमलचन्द्रायणकथा—पत्र सख्या-२ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा ।

रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२५ ।

विशेष—१५४ और १५५ वां पत्र अन्य ग्रन्थ के हैं ।

३१९. कालिकाचार्यकथानक—भावदेवाचार्य । पत्र सख्या-८ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-

प्राकृत । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ३८४ ।

विशेष—गाथा सख्या १०० है । पत्रों पर सुनहरी पंक्ति है ।

३२० आराधनाकथाश्रीश—पत्र सख्या-१६ । साइज-१०१/४= ३५ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । रचनाकाल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ८८ ।

निम्न कथाओं का संग्रह है—

सम्यक्त्वोद्योत कथा, अरुलक स्वामी की कथा, समतभद्राचार्य की कथा, मनतकुमार चक्रवर्ता की कथा, मज्जत मुनि की कथा, मधुपिंगल की कथा, नागदत्त मुनि की कथा, ब्रह्मदत्त चक्रवर्ता की कथा, अजन चौर की कथा, अनतमति की कथा, उद्यापन राजा की कथा रेवती रानी की कथा, जिनेन्द्र भक्त सेठ की कथा, गारिपेण की कथा, विष्णुकुमार कथा, ब्रह्मकुमार कथा, भातिरु कथा, तथा जन्मस्वामी कथा । ये कुल १८ कथाएँ हैं ।

३२१ नन्दीश्वरविद्यान कथा—पत्र सख्या-१ । साइज-१०३/४= ३३ । भाषा-मसृष्ट । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ११६ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३२२. नन्दीश्वरव्रत कथा—शुभचन्द्र । पत्र सख्या-७ । साइज-११/४= ३३ । भाषा-मसृष्ट । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४२ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

३२३. नागकुमारपंचमी कथा—मल्लिपेण सूरि । पत्र सख्या-२१ । साइज-१०/४= ३३ । भाषा-मसृष्ट । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २८१ ।

विशेष—४ सर्ग हैं । प्रथम श्लोक सख्या ४६५ प्रमाण है ।

३२४ निशिभोजनकथा—भारामल्ल । पत्र सख्या-१० । साइज-१०/४= ३३ । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २१३ ।

प्रति प्राचीन है ।

३२५ पुण्याश्रमकथाकोप—दौलतराम । पत्र सख्या-४१ । साइज-१३/४= ३३ । भाषा-हिन्दी । गद्य । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-म० १७७७ । पूर्ण । वेष्टन न० ३२ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

३२६. भक्तामरस्तोत्र कथा—पत्र सख्या-३७ । साइज-१०/४= ३३ । भाषा-मसृष्ट । विषय-कथा । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० २१५ ।

३२७ भक्तामरस्तोत्रकथा भाषा—विनोदीलाल । पत्र सख्या-१७३ । साइज-१०/४= ३३ । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । रचना काल-म० १७८७ सावन सुदी २ । लेखन काल-म० १९८७ । पूर्ण । वेष्टन न० ६३ ।

विशेष—थानजीलाल जी ने प्रतिलिपि कराई थी। कुल ३८ कथाएँ हैं। एक प्रति और है।

३२८ मदनमजरीकथा प्रबन्ध—पोपटशाह। पत्र सख्या-२५। साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। रचना काल-मगसिर सुदी १०। लेखन काल-स० १७०६ आषाढ सुदी १०। पूर्ण। वेष्टन न० २६३।

३२९ मुक्तावलित्रतकथा—खुशालचद। पत्र सख्या-५। साइज-८ $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$  इञ्च। विषय-कथा। रचना काल-स० १८७२। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० १६६।

३३०. मेघकुमारगीत—कनककीर्त्ति। पत्र सख्या-२। साइज-१०×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ४४०।

विशेष—प्रति प्राचीन है —४६ पद्य हैं।

श्री वीर जिणद पसाइ, जे मेघकुमार रिषि गाइ।

ताही आगली वीनस बीजाइ, वसी सपति सगली पाइ ॥ ४६ ॥ वन धन रें० ॥

जे सुनीवर मेघकुमार, जीयी चारित पालउसार।

गुथैरू श्री जीन माणीरु सीस, इम कनक मणय नीस दीस ॥

॥ इति मेघकुमार गीत सपूर्ण ॥

३३१ राजुलपच्चीसी—लालचद विनोदीलाल। पत्र सख्या-४। साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च। भाषा-हिंदी (पद्य)। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-स० १७६६। पूर्ण। वेष्टन न० १६६।

३३२. रैद्व्रत कथा—देवेन्द्रकीर्त्ति। पत्र सख्या-४। साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ७२।

३३३ रोहिणीव्रत कथा—भानुकीर्त्ति। पत्र सख्या-४। साइज-११×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। रचना काल-×। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ४२५।

३३४ वक्रचोर कथा (वनदत्त सेठ की कथा)—नथमल। पत्र सख्या-१४। साइज-१२ $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$  इञ्च। भाषा-हिंदी पद्य। विषय-कथा। रचना काल-स० १७०५ आषाढ बुदी २। लेखन काल-×। पूर्ण। वेष्टन न० ३७।

विशेष—एक प्रति और है। चाकसू का विस्तृत वर्णन है। पद्य सख्या २६१ है।

प्रारम्भ—

—चौपाई—

प्रणमू पच परमेष्ठी सार। तिहू सुमरत पावं भवपार ॥

दूजा सारद नैं विस्तरू। बुधि प्रकास कवित उचरू ॥

गुरु निप्रर्थ नमू जगदीस। सख्या तीस सहस चौबीस ॥

चाणी तिहू कहै जनमार। सुणत मन्य जिन उत्तरै पार ॥

गणवर मुनिवर करु वदना । वंक चोर की कथा मन तथा ॥  
 ता सीखा पाली निज मांस । ताको मयौ सोलहो निवास ॥ ३ ॥  
 दूजी कथा सेठ की कही । नाम धनदत्त धर्म नगरी सही ॥  
 सदा व्रत पालै निज सार । ऊँच नीच को नही विचार ॥ ४ ॥

अन्तिम—पदवी सुणसी जे नर कोय । क्रम २ ते मुक्ति ही होय ॥

सहर चाटसू सुवस वास । तिह पुर नाना भोग विलास ॥ २७७ ॥  
 नवसै कृवा नव सै ठाय । ताल पोखरी कक्षा न जाय ॥  
 तामें बडो जगोली राव । सबै लोग देयण को भाव ॥ २७८ ॥  
 पैडीत माहि वणी चोकोर । नीर मरै नारी चहुँ थोर ॥  
 चकवा चकवी केल कराहि । अधिक ताहि नहीं दुख दाय ॥ २७९ ॥  
 छत्री चोंतरा बैठक घणी । थर मसजद तुरका की वणी ॥  
 चहुँधा रूप वृच बहु छाय । पथी देखि रहे विरमाय ॥ २८० ॥  
 चहुँ धा घाट अधिक वणाय । पीवै संग वछा थर गाय ॥  
 सहर बीचि तें कोट उतंग । ताहि सुरज अति वणी सुचंग ॥ २८१ ॥  
 चहुँधा खाई मरी सुमाय । एऊ कोस जायी गिरदाव ॥  
 चहुँ धा वणे अधिक बाजार । वसै वणिक करै व्यापार ॥ २८२ ॥  
 कोई सोनो रूपी कसै । कोई मोती माणिक लसै ॥  
 कोई वेचै टका रोक । केई बजाजी रोक ठोफि ॥ २८३ ॥  
 कोई परचूना वेचै नाज । केई एकठे मेलै साज ॥  
 केई उधार दाम की गाठि । केई पसारी माउँ हाटि ॥ २८४ ॥  
 च्यार देव ए जिणवर तथा । ता सहि निम बढो अति घना ॥  
 करै महोखे पूजा सार । आवक लीया सब आचार ॥ २८५ ॥  
 बाई जती रहण को चाव । उनही हार दीजे करि भाव ॥  
 थोर देहुरे बैसनु तथा । धर्म करै सगला आपणा ॥ २८६ ॥  
 नीरगमाहि राज ते धरै । पौण छतीसौ लौला करै ॥  
 कहुँ चोवा चदन महकाय । कहुँ थगजा फल विकसाय ॥ २८७ ॥  
 नगर नायका सोमा धरै । पातु ननु रचित बोली करै ॥  
 जैसे सहर थोर नही सही । दुखी, दलिद्री दीसै नही ॥ २८८ ॥  
 हाकिम सै मदारखा सही । थोर जोर कोउ दीसै नही ॥  
 पालै परजा चाँ न्याय । सीलवत नर लाभ लहाय ॥ २८९ ॥

कथा एव रासा साहित्य ]

सवत सतरा सै पचीस । आषाड् नैदी जाणो वरतीज ॥  
 वारज सोमवार ते जाणि । कथा सपूर्ण मई परमाण ॥ २६० ॥  
 पदसी सुण्यां जे नर कोय । ते नर स्वर्ग देवता होय ॥  
 भूल चूक कही लिख्यो होय । नथमल कमा करो सव कोय ॥ २६१ ॥  
 ॥ इति श्री वक्रचोर धनदत्त कथा सपूर्णम् ॥

विशेष - एक प्रति और है ।

३३५. व्रतकथाकोष—श्रुतसागर । पत्र संख्या-८० । साइज-१२x१३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-  
 कथा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७८४ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० १५३ ।

विशेष—भिलाय में पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । ४ प्रतियाँ और हैं ।

३३६. व्रतकथाकोष—खुशालचंद । पत्र संख्या-८० । साइज-१२x१३ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य ।  
 विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७६७ । पूर्ण । वेष्टन न० २० ।

विशेष—२ प्रतियाँ और हैं ।

निम्न २३ कथाओं का संग्रह है—

मेरुपक्ति कथा, दशलक्ष कथा, मुक्तावलीव्रतकथा, तर्पकथा, चंदनषष्ठीकथा, घोडबकारणकथा, ज्येष्ठ जिनवरकथा,  
 आकाशपंचमीव्रतकथा, मोक्षसप्तमीव्रतकथा, अन्नयनिधिकथा, मेर्घमालाव्रतकथा, लब्धिविधानकथा और पुण्याजलिभक्तकथा ।

३३७. शुकराज कथा ( शत्रु जय गिरि गौरव वर्णन )—माणिक्य सुन्दर । पत्र संख्या-२१ ।  
 साइज-१०x४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४७६ ।

३३८. सप्तव्यसनकथा—सोमकीर्ति । पत्र संख्या-६६ । साइज-११x४ इंच । भाषा-संस्कृत ।  
 विषय-कथा । रचना काल-सं० १५२६ । लेखन काल-सं० १७१७ चैत्र शुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० १६६५ ।

विशेष—जोशी भगवान ने सिलोर में प्रतिलिपी की थी कुल ७ अध्याय हैं । श्लोक संख्या २१६७ प्रमाण है ।

३३९. सिंहासनद्वात्रिंशका—पत्र संख्या-४१ । साइज-६x४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा ।  
 रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० ३८६ ।

विशेष—बचीसों कथाएँ पूर्ण हैं पर इसके बाद जो कुछ और विवरण है वह अपूर्ण है ।



## विषय-व्याकरण शास्त्र

३४०. आख्यात प्रक्रिया . । पत्र संख्या-२२ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४१६ ।

विशेष—श्लोक संख्या १५० हैं ।

३४१. दुर्गपदप्रबोध—श्री वल्लभवाचक हेमचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-३६ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-सं० १६६१ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०५ ।

विशेष—लिंगानुशासन की वृत्ति है । प्रति प्राचीन है ।

३४२. धातु पाठ—बोपदेव । पत्र संख्या-१४ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८११ मगसिर शुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३०० ।

विशेष—प्रथम ४ संख्या ४०५ हैं । एक प्रति और है वह संस्कृत टीका सहित है ।

३४३. पचसन्धि . । पत्र संख्या-६ । साइज-८ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३६ ।

३४४. पच सन्धि टीका . । पत्र संख्या-२८ । साइज-८ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७८२ ज्येष्ठ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३६ ।

विशेष—सं० १७८२ ज्येष्ठ में नंदलाल यति ने टीका लिखी थी ।

३४५. प्रक्रियाकौमुदी—रामचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-६१ । साइज ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०८ ।

प्रति प्राचीन है । श्लोक संख्या-२५०० हैं ।

३४६. प्रयोगमुख्यसार . . . । पत्र संख्या-११ । साइज-८×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७८८ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८८ ।

३४७. प्राकृतव्याकरण—चण्ड । पत्र संख्या-३ । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८६६ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८८ ।

३४८. प्राकृतव्याकरण . . . । पत्र संख्या-१८ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६ ।

३४९. लिंगानुशासन—हेमचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-६ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन ४४१ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३५०. सारस्वत घातुराठ—द्विर्षकीर्ति । पत्र सख्या-१८ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७८१ चैत्र सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० २६७ ।

विशेष खडेलवाल ह्यातीय हेमविह के पठनार्थ ग्रन्थ रचना की गई तथा वसु ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी ।

३५१. सारस्वत प्रक्रिया—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्र सख्या=१७ । साइज=११×४ $\frac{३}{४}$  इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८६४ सावन सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० २६६ ।

विशेष—६ प्रतियां और हैं ।

३५२. सारस्वत प्रक्रिया—नरेन्द्रसूरि । पत्र सख्या-७४ से १३३ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$  इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ८१५ ।

विशेष—केवल कदंत प्रकरण है ।

३५३. सारस्वतप्रक्रिया टीका—परमहंस परिव्राजकाचार्य । पत्र सख्या-५६ । साइज-१०×४ इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३५० ।

विशेष—द्वितीय वृत्ति तक पूर्ण है ।

३५४. सारस्वत रूपमाला—पद्मसुन्दर । पत्र सख्या-६ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ८१६ ।

विशेष—श्लोक सख्या-५२ है । पठित ऋषभदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३५५. सिद्धान्त चन्द्रिका ( कृदन्त प्रकरण )—रामचद्राश्रम । पत्र सख्या-२१ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८६६ द्वितीय वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३८ ।

विशेष—जयनगर में घासीराम ने महात्मा फतेहचंद से प्रतिलिपि कराई । तृतीय वृत्ति है । एक प्रति और है लेकिन वह भी अपूर्ण है ।

३५६. सिद्धान्त चन्द्रिका वृत्ति—सदानन्द । पत्र सख्या-२८४ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८६१ । पूर्ण । वेष्टन न० ३५४ ।

३५७. हेमव्याकरण—आचार्य हेमचन्द्र । पत्र सख्या-२५ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$  इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२१ ।

विशेष—पत्र के कुछ हिस्से में मूल दिया हुआ है तथा शेष में टीका दी हुई है । धारादि गण तक दिया हुआ है ।

## विषय-कोश एवं छन्द शास्त्र

३५८. अनेकार्थ मञ्जरी—नन्ददास । पत्र संख्या-५ । साइज-१२×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिंदी पद्य ।  
विषय-कोष । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ४०६ ।

विशेष—पद्य संख्या-१०४ है ।

३५९. अनेकार्थ समग्र—हेमचंद्र सूरि । पत्र संख्या-६६ । साइज-१२ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-कोश । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १४७७ कार्तिक सुदी ९ । पूर्ण । वेष्टन न० ३१५ ।

विशेष—प्र भाग य संख्या २०४ है । पत्र जोर्ण है । पत्र ५८ तक संस्कृत टीका भी है ।

३६० प्रति न० २ । पत्र संख्या-२४ । साइज-१२×५ इञ्च । लेखन काल-सं० १४८० अषाढ । पूर्ण ।  
वेष्टन न० ३१६ ।

विशेष—७ काण्ड तक है । सागरचंद्र सूरि ने प्रतिलिपि की थी ।

३६१ अभिधानचिंतामणि नाममाला—आचार्य हेमचंद्र । पत्र संख्या-१२६ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×  
४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८०४ । पूर्ण । वेष्टन न० ३७५ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

३६२. अमर कोष (नाम लिङ्गानुशासन)—अमरसिंह । पत्र संख्या-११२ । साइज-१२ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च ।  
भाषा-संस्कृत । विषय-कोष । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ३९१ ।

विशेष—द्वितीय काण्ड तक है । पत्रों के बीच २ में श्लोक हैं । एक प्रति और है उसमें तृतीय काण्ड तक है ।

३६३. प्रति न० २ । पत्र संख्या-१८७ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । टीका काल-सं० १६८१ ज्येष्ठ  
सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४८० ।

विशेष—संस्कृत में टीका दी हुई है एवं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं ।

३६४. धनजय नाम माला—धनजय । पत्र संख्या-२६ । साइज-१०×८ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-कोश । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १७४७ माघ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४०६ ।

श्लोक संख्या-२०० है ।

विशेष—टोंक में प्रतिलिपि हुई तथा दौघराज ने संशोधन किया ।

एक प्रति और है ।



३६५ शब्दानुशासन-वृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-१५८ । साइज-१०×४६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोष । रचना काल-X । लेखन काल-स० १५२४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४१४ ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५२४ वर्षे श्री खरतरगळे श्री जिनचन्द्रसूरिविजय लब्धविसालगणि, वा० शान्तिरत्नगणि शिष्य वा० धर्मगणि नाम पुस्तक चिरनघात् ।

३६६ वृत्तरत्नाकर—भट्ट केदार । पत्र संख्या-७ । साइज-११×४६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । रचना काल-X । लेखन काल-स० १८६२ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० १६ ।

विशेष—५ प्रतियां और है जिनमें एक संस्कृत टीका सहित है ।

३६७ वृत्तरत्नाकर टीका—सोमचंद्रगणि । पत्र संख्या-४७ । साइज-१०×४६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । टीका काल-स० १३०६ । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ०१६ ।

३६८ श्रुतबोध—कालिदास । पत्र संख्या-१ । साइज-६×४६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-छन्द शास्त्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन नं० ४३३ ।

विशेष—६ फुट लम्बा एक ही पत्र है । पत्र संख्या ४३ है । इसके बाद रत्नमाध्याय दिया हुआ है जिनके ७६ पद्य हैं । इमकी प्रतिलिपि मुखराम मोटे ने (खडेलवाल) स्वपठनार्थ म० १८४५ मगसिर बुदी ६ की वटेश्वर में की थी ।

विशेष—एक प्रति और है ।

## विषय-नाटक

३६९ प्रबोधचन्द्रोदय नाटक—श्रीकृष्ण मिश्र । पत्र संख्या-४७ । साइज-१०×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-नाटक । रचना काल-X । लेखन काल-म० १७८३ फाल्गुन सुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६६ ।

३७०. मदन पराजय—जिनदेव । पत्र संख्या-१० । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×१ इक्ष । मापा-सकृत । विषय-नाटक । रचनाकाल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २४० ।

### विषय-लोकविज्ञान

३७१. त्रिलोकप्रज्ञप्ति—यति वृषभ । पत्र संख्या-२८३ । साइज-१२ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इक्ष । मापा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८३१ । पूर्ण । वेष्टन न० २४ ।

३७२ प्रति न० २ । पत्र संख्या-२०६ । साइज-१२×६ इक्ष । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ३३७ ।

विशेष—अथ के साथ जो लकड़ों का पुट्टा है उस पर चौमीस तीर्थरों के चित्र हैं । पुट्टा सुन्दर तथा सुनहरी है ।

३७३ त्रिलोकसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र संख्या-२६ । साइज-६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इक्ष । मापा-प्राकृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखनकाल-स० १७६६ वैशाख बुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन न० २०८ ।

विशेष—नरसिंह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३७४. त्रैलोक्यसार चौपई—सुमतिकीर्ति । पत्र संख्या-२३ । साइज-८×६ इक्ष । मापा-हिर्दा पथ । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-स० १६२७ माघ सुदी १२ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १४१ ।

विशेष—१६ पत्र से आगे अजयराज कृत सामायिक क्षमावाणी है । जिसका रचना काल-स० १७६४ है ।

३७५. त्रिलोकसार सटीक-मू० कर्त्ता-नेमिचन्द्राचार्य । टीकाकार-सहस्रकीर्ति । पत्र संख्या-८८ । साइज-११×५ $\frac{३}{४}$  इक्ष । मापा-प्राकृत-सकृत । विषय-लोक विज्ञान । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७६ माघ सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन न० २६ ।

विशेष—नरसिंह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

## विषय-सुभाषित एवं नीतिशास्त्र

३७६. कामदकीय नीतिसार भाषा—कामन्द । पत्र संख्या-४ । साइज-१०×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-नीति । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४२८ ।

प्रारम्भ—अथ कामदकीय नीतिसार की बात लिख्यते । जाकै प्रभावतै सनातन मारग विषै प्रवर्तै । सो दंड को धारक लक्ष्मीवान राज जयवंत प्रवरतो ॥ १ ॥ जो विष्णुगुप्त नामा आचारिन वडे वश विषै उपजै अयाचक गुणनि करि वडे जे रिषीश्वर तिनके वश मै प्रथिवी विषै प्रसिद्ध होतो भयो ॥ २ ॥ जो अग्नि समान तेजस्वी वेद के ज्ञातानि में श्रेष्ठ अति चतुर च्यारू वेदनि कौ एक वेद नाई अध्ययन करतो हुवो ॥ ४ ॥

अन्तिम—विस्तीर्ण विषय रूप वन विषै दोटतो पीडा उपजायवेको है स्वभाव जाको असो इन्द्रिय रूप हस्ता ताहि आत्मज्ञान रूप अकुरा करि वशीभूत करै ॥ २७ ॥ प्रयत्न करि आत्मा विषयनि ग्रह ॥ कमदकी ॥ गारशरामजी की लीख ॥

३७७. चाणक्यनीतिशास्त्र—चाणक्य । पत्र संख्या-२ से १५ तक । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४३० ।

विशेष—पथम पत्र नहीं है तथा आठवें अध्याय तक है । एक प्रति और है । लेकिन वह भी अपूर्ण है ।

३७८. ज्ञानचिंतामणि—मनोहरदास । पत्र संख्या-६ । साइज-१२×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुभाषित । रचना काल-सं० १७२६ माह सुदी ७ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ६३ ।

३७९. जैनशतक—भूधरदास । पत्र संख्या-१० । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । रचना काल-सं० १७८३ पौष बुदी १३ । लेखन काल-सं० १८६६ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन नं० १४ ।

३८०. प्रति नं० २ । पत्र संख्या-१३ । साइज-१० $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ११८ ।

विशेष—इस प्रति में रचना काल सं० १७८१ पौष बुदी १३ दिया है ।

३८१. नीति शतक—भर्तृहरि । पत्र संख्या-६ । साइज-१२×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३७६ ।

विशेष—श्लोक संख्या-१११ है । एक प्रति और है ।

३८२. नीतिसार—इन्द्रनदि । पत्र संख्या-५ । साइज-११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-नीति । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ३३० ।

विशेष—श्लोक संख्या ११३ प्रमाण है ।

३८३ शतकत्रय—भक्तृहरि । पत्र संख्या-६७ । साइज-१०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८५८ वैशाख सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन न० ३५१ ।

विशेष—पत्र ३६ तक संस्कृत टीका भी दी हुई है । नीतिशातक वैराग्य शतक एव १८ गार शतक दिये गये हैं ।

३८४ मनराम विलास—मनराम । पत्र संख्या-१० । साइज-१०×५३ इंच । भाषा—हिंदी ( पद्य ) । विषय—सुभाषित । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ३६५ ।

विशेष—दोहा, सवैया, कवित्त आदि छंदों का प्रयोग किया गया है तथा विहारीदास ने समझ लिया है ।

प्रारम्भ—करमादिक अरि न को हरे अरहत नाम, सिद्ध करै काज सब सिद्ध को मजन है ।

उत्तम सुगुन गुन आचरत जाकी संग, आचार ज मगत वसत जाकै मन है ॥

उपाध्याय ध्यान तै उपाधि सम होत, साध परि पूरण कौ सुमरन है ।

पंच परमेष्ठी को नमस्कार मन्तराज आवै मनराम जोई पावै निज धन है ॥

३८५ राजनीति कवित्त—देवीदास । पत्र संख्या-२४ । साइज-६×६ इंच । भाषा—हिंदी । विषय—नीति । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ४७३ ।

विशेष—११६ कवित्त है एव गुटका साइज है । पत्र १, २, ५ तथा अंतिम वाद के लिखे हुए हैं । ताजगज आगरे के रहने वाले थे तथा औरंगजेब के शासन काल में आगरे में ही रचना की ।

३८६. सद्भाषितावली—पन्नालाल । पत्र संख्या-५३ । साइज-१३×८ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सुभाषित । रचना काल—X । लेखन काल—स० १६४२ पौष बुदी ८ । पूर्ण । वेष्टन न० ८४ ।

३८७ सिद्धूर प्रकरण—वनारसीदास । पत्र संख्या-३७ । साइज-८×६ इंच । भाषा—हिंदी पद्य । विषय—सुभाषित । रचना काल—स० १६४१ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १३६ ।

विशेष—१८ पत्र से आगे मैया मगवतीदासजी कृत चैतन कम चरित्र है जो अपूर्ण है ।

३८८ सुभाषितरत्न सन्दोह—अभितगति । पत्र संख्या-७२ । साइज-१०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । रचना काल—स० १३५० । लेखन काल—स० १८०६ वैशाख बुदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० २४३ ।

विशेष—मेवात देश में सहाजहानावाद में प्रतिलिपि हुई । अहमदशाह के शासन काल में लाल इन्द्रराज ने देवीदास के पठनार्थ प्रतिलिपि कराई ।

३८९ सुभाषित समूह । पत्र संख्या-२२ । साइज-१०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ४१८ ।

श्लोक संख्या-१११ है।

३६० सुभाषितावली—सकलकीर्ति । पत्र संख्या-२८ । साइज-१०×६ इंच । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७७६ । पूर्ण । वेस्टन न० २२१ ।

विशेष—अमरसिंह खानडा ने टोंक में प्रतिलिपि की थी ।

३६१ सुभाषितार्णव—शुभचंद्र । पत्र संख्या-६५ । साइज-११×८ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-  
सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७६० भाद्रवा बुदी ७ । पूर्ण । वेस्टन न० २०४ ।

विशेष—धमवा में ढीपचंद सची ने प्रतिलिपि की थी । एक प्रति और है जो सन् १०८० की लिखी हुई है ।

३६२ सुभाषितावली—चौधरी पन्नालाल । पत्र संख्या-१०५ । साइज-११×६ इंच । भाषा-  
हिन्दी । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेस्टन न० ४९ ।

३६३ सूक्तिमुक्तावलि—सोमप्रभाचार्य । पत्र संख्या-४५ । साइज-१०×५ इंच । भाषा-  
संस्कृत । विषय-सुभाषित । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेस्टन न० २०१ ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । अन्तिम पृष्पका में टीकाकार भीमराज वैद्य लिखा हुआ है । २ प्रतियाँ  
धौर हैं । जो केवल मूल मात्र हैं ।

३६४ प्रति न० २ । पत्र संख्या-१६ । साइज-१०×४ इंच । लेखन काल-× । पूर्ण । वेस्टन न० १५२ ।

३६५ प्रति न० ३ । पत्र संख्या-६० । साइज-१२×६ इंच । लेखन काल-स० १७६० । पूर्ण ।  
वेस्टन न० ३१० ।

विशेष—प्रति सटीक है । टीकाकार हर्षकीर्ति हैं ।

## विषय-स्तोत्र

३६६ इष्टोपदेश—पूज्यपाद । पत्र सख्या-५ । साइज-२०×२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।  
रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २०५ ।

विशेष—२० वर्षसागर के शिष्य प० केशव ने प्रतिलिपि की थी । प्रति सस्कृत टीका सहित है ।

३६७. एकीभावस्तोत्रभाषा—भूधरदास । पत्र सख्या-८ । साइज-७ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी ।  
विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १२५ ।

३६८. एकीभावस्तोत्र—चाण्डिराज । पत्र सख्या-४ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-  
स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८६३ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन न० ४८ ।

विशेष—० प्रतियाँ थोर हैं । जिसमें एक प्रति टीका सहित है ।

३६९ कल्याणमन्दिरस्तोत्र—कुमुदचन्द्र । पत्र सख्या-१० । साइज-१०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १६६५ । पूर्ण । वेष्टन न० ३ ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण दिया हुआ है । तथा अथ कर्त्ता का नाम सिद्धसेन दिवाकर दिया हुआ है । ऋषि  
रामदाम ने प्रतिलिपि की थी । निम्न श्लोक टीका के अंत में दिया हुआ है ।

मालवराज्ये महादेशे सारंगपुरपत्तने ।

स्तोत्रस्याथो कृतो नव्य छात्राय उत्तमविष्णो ॥

विशेष—६ प्रतियाँ थोर हैं जो केवल मूलमात्र हैं ।

४०० कल्याणमन्दिर स्तोत्र भाषा—बनारसीदास । पत्र सख्या-३ । साइज-१२ $\frac{1}{2}$ ×६ इञ्च । भाषा-  
हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २०१ ।

विशेष—इसके अतिरिक्त पार्श्वनाम स्तोत्र भी है ।

४०१. कुचेरस्तोत्र । पत्र सख्या-१ । साइज-१२ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।  
रचना काल-× । लेखन काल-स० १६२४ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन न० २०२ ।

४०२ चैत्यवदना । पत्र संख्या-८ । साइज-७ $\frac{1}{2}$ ×३ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।  
रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ६८ ।

विशेष—इसके अतिरिक्त महावीरघटक (संस्कृत) भी हैं ।

४०३ चौबीसजिनस्तुति—शोभन मुनि । पत्र सख्या-१० । साइज-१०३×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ३८८ ।

विशेष—श्लोक सख्या ६४ है । प्रथम पत्र नहीं है प्रति प्राचीन है । इसका शासन सूत्र नाम भी है ।

४०४ चौबीसतीर्थकरस्तवन—ललित त्रिनोद । पत्र संख्या-१ । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-हिंदी । विषय-स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-५० १८६६ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४२९ ।

४०५ ज्वालामालिनी स्तोत्र । पत्र सख्या-२ । साइज-१०×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४३ ।

४०६. ज्वालामालिनी स्तोत्र । पत्र सख्या-२ । साइज-११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८६८ प्र० आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वेष्टन न० १०६ ।

विशेष—छोटिलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

४०७ जिनसहस्रनाम—जिनसेनाचार्य । पत्र सख्या-२३ । साइज-११×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १५० ।

४०८ जिनसहस्रनाम—आशाधर । पत्र सख्या-१४ । साइज-११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३३४ ।

४०९ जिनसहस्रनाम टीका—श्रुतसागर । पत्र सख्या-१०८ । साइज-१२×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० २५६ ।

विशेष—कुल इसमें १००० ( १२३४ ) पद्य हैं ।

४१० जिनसहस्रनाम टीका—अमर कीर्ति । पत्र सख्या-८४ । साइज-११×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २५५ ।

प्रति प्राचीन है । मूल कर्ता जिनसेनाचार्य है । एक प्रति श्रीर है ।

४११. जखडी—विहारीदास । पत्र सख्या-४ । साइज-६३×७ इञ्च । भाषा-हिंदी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४८ ।

विशेष—३६ पद्य हैं ।

४१ दर्शन । पत्र सख्या-० । साइज-८×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४४७ ।

४१३ दर्शनाष्टक । पत्र संख्या-१। साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।  
रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २०१ ।

४१४. दृढकषड्त्रिंशतिका । पत्र संख्या-३ । साइज-१० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-मस्कृत ।  
विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३६० ।

४१५ देवागमस्तोत्र—आचार्य समंतभद्र । पत्र संख्या-६ । साइज-११×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-  
मस्कृत । विषय-दर्शन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३४५ ।

विशेष—श्लोक संख्या-११७ प्रमाण है ।

४१६ देवप्रभास्तोत्र—जयानदिसूरि । पत्र संख्या-६ । साइज-१० $\frac{3}{4}$ ×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८५८ । पूर्ण । वेष्टन न० २७८ ।

विशेष—मस्कृत वृत्त सहित है । सत्राई जगपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

४१७ निर्वाणकारण्डगाथा । पत्र संख्या-२ । साइज-१०×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-  
स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४२५ ।

विशेष—एक प्रति और है ।

४१८ नेमिनाथस्तोत्र—रालिपडित । पत्र संख्या-२ । साइज १०×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १६२ ।

४१९. पद्मावतीस्तोत्रकवच । पत्र संख्या-२ । साइज-११×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत ।  
विषय-स्तोत्र एवं मंत्र शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४२५ ।

४२० पंचपरमेष्ठीगुणस्तवन—प० डालूराम । पत्र संख्या-३६ । साइज-७ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-  
हिंदी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४३४ ।

४२१. पंचमंगल—रूपचंद्र । पत्र संख्या-१४ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा-हिंदी । विषय-  
स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १२५ ।

४२२. पार्श्वदेशान्तरछांदि ' ' ' । पत्र संख्या-४ । साइज-११ $\frac{1}{2}$ ×६ इञ्च । भाषा-हिंदी । विषय-  
स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २०१ ।

४२३ पार्श्वनाथस्तोत्र—मुनिपद्मानदि । पत्र संख्या-१७ से २५ । साइज-१०×४ इञ्च । भाषा-  
मस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ५ ।



४२४. पार्श्वनाथस्तवन । पत्र सख्या-१ साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र ।

रचना काल-× । लेखन काल-स० १८६५ मगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वेष्टन न० २०१ ।

४२५. पार्श्वनाथस्तोत्र । पत्र सख्या-२ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २०१ ।

४२६ भगवानदास के पद—भगवानदास । पत्र सख्या-६५ । साइज-६ $\frac{३}{४}$ ×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी

पद्य । विषय-पद । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८०३ । पूर्ण । वेष्टन न० ४७१ ।

विशेष—१८८ पदों का समग्र है । विभिन्न राग रागिनि यों में कृष्ण मक्ति के पद हैं ।

श्रीराम—हरि का नाम विसाहौ रे सतगुरु चोखा वनिज बनाया ।

गोविंद के गुन रतन पदारथ नफा साथ ही पाया । जनम पदारथ पाइ कै किन्हैं विरलै नेग लगाया ॥

काम क्रोध मद लोभ मोह मैं मूख मूल गवाया । हरि हरि नाम अराधि कै जिनि हरि ही सौ मन लाया ।

कहि भगवान हित रामराय तिनि जग मैं आनि कमाया ॥११२॥

विशेष—प्रत्येक पद के अन्त में “कहि भगवान हित रामराय” लिखा हुआ है । ६५ पत्र के अतिरिक्त अन्त में ६ पत्रों में विषय वार भिन्न २ रागिनियों की सूची दी है । इसमें कुल १५३ पद तथा ४०० श्लोकों के लिये लिखा है । गोविंदप्रसाद साह के पठनार्थ रूपराम नदीश्वर के गुसाई ने प्रतिलिपि की । पदों की सूची के लेखन का सन्वत् १८०२ दिया है ।

४२७ भक्तामरस्तोत्र—मानतुंगाचार्य । पत्र सख्या-१६ । साइज-५ $\frac{३}{४}$ ×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।

विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १४३ ।

विशेष—२ पत्र से कन्यागण मंदिर स्तोत्र है जो कि अपूर्ण है । इसी में २ फुटफर पत्रों पर संस्कृत में लक्ष्मी स्तोत्र भी है ।

विशेष - २ प्रति और है ।

४२८ भक्तामर टीका । पत्र सख्या-४३ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० २८३ ।

४२९ भक्तामरस्तोत्रवृत्ति—म० रत्नचन्द्र सूरि । पत्र सख्या-८४ । साइज-१०×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-स० १६६७ आषाढ सुदी ५ । लेखन काल-स० १७२५ कार्तिक बुदी १० । पूर्ण । वेष्टन न० ३४६ ।

विशेष—वृन्दावती नगर में चन्द्रभ्रम चौयालय में आचार्य कनककीर्ति के शिष्य प० रायमल ने स्वपठनार्थ व परोपकारार्थ प्रतिलिपि की थी । प्रति मत्र तथा कथार्यों सहित है ।

ग्रन्थकार परिचयात्मक श्लोक—

श्रीमद्ब्रह्मवैवर्तपुराणमथिर्महीपति नामा वृषिक ।  
 तद्गार्या गुणमडित व्रतयुता चामामिति नामधा ॥  
 तत्पुत्री जिनपादपकज मधुपो श्रीरत्नचन्द्रो मुनि ।  
 चक्रे वृत्तिभिमा स्तवस्य नितरां नत्वा श्रीवादीन्दुम् ॥ ॥  
 मन्तपद्यकिते वर्षे शोडषाख्येहि सचते ।  
 आपादश्वेतपद्मस्य पचम्यां बुधवारके ॥६॥  
 ग्रीवापुरे महीसिन्धोस्तद भाग समाश्रिते ।  
 प्रोक्तु गदुर्गसयुक्ते श्री चन्द्रप्रमसन्ननि ॥७॥  
 वृषिनः कर्मसी नाम्नः वचनात मया व्यागचि ।  
 भक्तामरस्य सद्वृत्ति रत्नचन्द्रेण सूरिणा ॥८॥

४३०. भक्तामरस्तोत्र भाषा—जयचंद्रजी छात्रड़ा । पत्र संख्या—२७ । साइज—११×५ इंच । भाषा—  
 हिन्दी गद्य । विषय—स्तोत्र । रचना काल—स० १८७० कार्तिक वृदी १२ । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ७ ।

विशेष—२ प्रतियां और है ।

४३१. भक्तामर स्तोत्र भाषा कथा सहित—नथमल । पत्र संख्या—४७ । साइज—१२×५ इंच ।  
 भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—स्तोत्र एवं कथा । रचना काल—स० १८२६ ज्येष्ठ सुदी १० । लेखन काल—स० १८५२ सावन  
 वृदी १३ । पूर्ण । वेष्टन न० ४० ।

विशेष—यह ग्रंथ लिखवाकर ब्रह्मचारी देवकरणजी को दिया गया ।

४३२. भारती स्तोत्र । पत्र संख्या—१ । साइज—१७×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
 स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० २०१ ।

४३३. भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र—भूपाल कवि । पत्र संख्या—६ । साइज—११×४ इंच । भाषा—  
 संस्कृत । विषय—स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १६६ ।

विशेष—संस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं । एक प्रति और है ।

४३४. लक्ष्मी स्तोत्र—पद्मनट्टि । पत्र संख्या—१ । साइज—१०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
 स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० ४८ ।

४३५ लघु सस्त्रहनाम । पत्र संख्या—१ । साइज—१०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—  
 स्तोत्र । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन न० १५२ ।

४३६ विचारपडत्रिशिका स्तोत्र—धवलचन्द के शिष्य गजसार । पत्र संख्या-४ । साइज-१०×११ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३५६ ।

विशेष—सिरि जिणहंस मुणीसर रजे धवलचन्द ।  
सिसण गजसारेण लहिआ एसा अण हिया ॥४२॥

४३७ विद्यापहार स्तोत्र—धनजय । पत्र संख्या-३ । साइज-११×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३५६ ।

पद्य संख्या ४० है ।

४३८ विद्यापहारस्तोत्र भाषा—अचलकीर्ति । पत्र संख्या-१३ । साइज-१०×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० २०१ ।

विशेष—पत्र ५ से आगे हेमराज कृत भक्तामर स्तोत्र भाषा मी है । २ प्रतियां और हैं ।

४३९ विद्यापहार टीका—नागचंद्रसूरि पत्र संख्या-२६ । साइज-१०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २१० ।

विशेष—मटारक ललितकीर्ति के पद्य शिष्यों में नागचंद्र सूरि थे ।

४४० विनती—अजयराज । पत्र संख्या-२ । साइज-११×१३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४२५ ।

विशेष—दूसरे पत्र पर रविवार कथा भी दी हुई है पर वह अपूर्ण है । २३ पद्य तक हैं ।

४४१ शत्रुक्षय मुख मडन स्तोत्र ( युगादि देव स्तवन ) । पत्र संख्या-१० । साइज-१०×१३ इंच । भाषा-गुजराती । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २६६ ।

विशेष—ग्रन्थ में २१ गाथाएँ हैं जिन पर गुजराती भाषा में अर्थ दिया हुआ है । अर्थ के स्थान पर “वखान” नाम दिया है ।

४४२ शान्तिनाथ स्तोत्र—कुशलवर्धन शिष्य नगागणि । पत्र संख्या-४ । साइज-१०×१३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ३६२ ।

विशेष—पद्य संख्या ६२ है ।

प्रारम्भ—मकल मनोरथ पुरणो वाञ्छित फल दातारं ।

वीर जिणोसर नायके जय जय जगदाधार ॥१॥

अन्तिम—ईय वीर जिणवर सयल सुखकर नयर वडली भडनो ।

मिधुण्यो मगति प्रवर युगति रोग रोग विहडनौ ॥

तप गच्छ निरमल नयण दिनयर र्था विजयसेन सूरिमरो ।

इवि कुशलवर्धन मीम ए मण्ड नगागणि मगल करो ॥२०॥

४४२ समवशरण स्तोत्र । पत्र सख्या-७ । साइज-१३३×४५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-  
स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २०० ।

४४३ स्तुति समग्रह—चंद्र कवि । पत्र सख्या-६ । साइज-२३×४३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-  
स्तवन । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०४ ।

विशेष—जातिनाथ, महावीर तथा आदिनाथ की स्तुतियाँ हैं ।

टोह्रा—स्तुति छल तें मे ना चहू इन्द्रादिक सुरवास । चंद तणी यह वीनती दीज्यो मुक्ति निवास ॥१॥

॥ इति आदिनाथजी स्तुति सपूर्ण ॥

४४४. स्तोत्रटीका—आशाधर । पत्र सख्या-३० । साइज-१२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-  
स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-स० १९६१ क्रान्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६३ ।

विशेष—रायमल ने प्रतिलिपि की था ।

४४६ स्तोत्र समग्रह । पत्र सख्या-२ । साइज-११३×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-  
समग्रह । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४६ ।

निम्न लिखित स्तोत्र हैं—

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा	र० का०	ले० का०	विशेष
पार्श्वनाथस्तोत्र	जगतमूषण	हिन्दी	×	×	
सदमीस्तोत्र	पद्मनाथ	संस्कृत	×	×	
पार्श्वनाथस्तोत्र	×	”	×	×	
शशि कुं उ पार्श्वनाथस्तोत्र	×	”	×	×	
पार्श्वनाथस्तोत्र	×	”	×	×	संघ महित
वितामि पार्श्वनाथस्तोत्र	×	”	×	×	
पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	”	×	×	
पार्श्वनाथस्तोत्र	पानतराय	हिन्दी	×	×	

४४७ सिद्धिप्रियस्तोत्र—देवनाथ । पत्र सख्या-२ । साइज-१३×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-  
स्तोत्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १३३ ।

विशेष—एक प्रति श्रीर है ।

## विषय-ज्योतिष एवं निमित्तज्ञानशास्त्र

४४८ अरिष्टाध्याय—पत्र सख्या-१० । साइज-१०<sup>३</sup>×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-ज्योतिष । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८६६ मगसिर बुदी ११ । पूर्ण । वेष्टन न० ३३१ ।

विशेष—कुल २०३ गाथाएँ हैं । अन्त में = पद्य में छाया पुरुष लक्षण है । प० श्रीचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

४४९. क्षीरार्णव—विश्वकर्मा । पत्र सख्या-१८ । साइज-१२×६<sup>३</sup> इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ( शकुन शास्त्र ) । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ३७६ ।

४५०. चमत्कारचिंतामणि—नारायण । पत्र सख्या-७ । साइज-१०<sup>३</sup>×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८६६ व्येष्ट सुदी ४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४६१ ।

विशेष—सवाई जयपुर में महाराजा जगतसिंह के शासन काल में प्रतिलिपि हुई थी ।

४५१. ज्योतिषरत्नमाला—श्रीपति भट्ट । पत्र सख्या-१५ । साइज-१०×४<sup>३</sup> इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४६४ ।

४५२ नीलकण्ठज्योतिष—नीलकण्ठ । पत्र सख्या-६६ । साइज-११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । रचना काल-शक स० १५०६ आसोज सुदी ६ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४६७ ।

विशेष—नीलकण्ठ काशी के रहने वाले थे ।

४५३. पाशाकेवली—पत्र सख्या-६ । साइज-११<sup>३</sup>×६<sup>३</sup> इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४०० ।

श्लोक सख्या ४६ है । पाशा फेंक कर उसके फल निकालने की विधि दी हुई है ।

४५४ भङ्गतीविचार—सारस्वत शर्मा । पत्र सख्या-१४ । साइज-११<sup>३</sup>×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-ज्योतिष । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४६८ ।

विशेष—प्रत्येक नक्षत्र तथा तिथियों में भेष की गर्जना को देखकर वर्ष फल जानने की विधि दी हुई है । कुल ३१६ पद्य हैं ।

४५५. शीघ्रबोध—काशीनाथ । पत्र सख्या-३४ । साइज-१०×६<sup>३</sup> इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । रचना काल-× । लेखन काल-स० १८६६ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वेष्टन न० ४६६ ।

विशेष—चतुर्थ प्रकरण तक है । श्लोक सख्या-७७ है । उदयचन्द्र ने स्वपठनार्थ लिपि की थी । गुटका साइज है ।

४५६ पट्पचासिका बालावोव—भट्टोत्पल । पत्र संख्या—१५ । साइज—१०×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—सरहत्त । विषय—ज्योतिष । रचना काल—X । लेखन काल—स० १६५० वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वेष्टन नं० ४६३ ।

विशेष—पुनि नोरत्नवीर ने नदासा ग्राम में प्रतिलिपि की थी । यह अथ कपूर विजय का था । संस्कृत मूल के साथ गुजराती भाषा में गद्य टीका दी हुई है ।

प्रारम्भ—प्रथिपत्य रवि मूर्द्धना वराहमिहरात्मजेन सतयशसा ।

प्रश्नो कृतार्थं गहनापरार्यमुद्दिश्य पृथु यशसा ॥१॥

टीका—प्रथिपत्य कहीइ नमस्कार करी नइ सूर्य प्रति मूर्द्धां मस्तकि करी वराहमिहरज पंडित तेह आत्मज कहीइ पुत्र पृथुयत्ता एइ उर नामि प्रश्न नइ विषइ प्रश्न तोविया कृता कहीइ की थी ।

४५७. सक्रान्ति तथा ग्रहातिचारफल—पत्र संख्या—१८ से ४२ तक । साइज—८×६ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—सरहत्त । विषय—ज्योतिष । रचना काल—X । लेखन काल—स० १७७३ माघ सुदी ४ । अपूर्ण । वेष्टन नं० ८७० ।

विशेष—व्यास दयाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

### विषय—आयुर्वेद शास्त्र

४५८ अंजनशास्त्र—अग्निवेश । पत्र संख्या—१३ । साइज—११ $\frac{३}{४}$ ×११ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । रचना काल—X । लेखन काल—स० १७५८ आश्विन सुदी २ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५१ ।

विशेष—श्लोक संख्या २३४ है । नेत्र संबंधी रोगों का वर्णन है । मुल्तान नगर में रामकृष्ण ने प्रतिलिपि की थी ।

४५९. अष्टांगहृदयसहिता—वाग्भट्ट । पत्र संख्या—१३ । साइज—११ $\frac{३}{४}$ ×११ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । रचना काल—X । लेखन काल—X । पूर्ण । वेष्टन नं० ५५० ।

विशेष—सूत्र मात्र है । जयमल ने प्रतिलिपि की थी ।

४६०. फाल्गुनज्ञान—पत्र संख्या—११ । साइज—१०×५ $\frac{१}{२}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८७७ पौष सुदी १५ । वेष्टन नं० ४५८ ।

विशेष—रत्नाकर संख्या—१०० है । सद्जराम ने चित्रकोट में अन्नपुराण जी के पास प्रतिलिपि की थी ।

आयुर्वेद ]

४६१. त्रिंशतिकाटीका—पत्र संख्या-२७ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद ।

रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५८ ।

४६२. योगशत—अमृतप्रभसूरि । पत्र संख्या-१६ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-

आयुर्वेद । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८५५ श्रावण बुदी ६ । पूर्ण । वेष्टन नं० २२ ।

विशेष—संपतराम छावडा ने प्रतिलिपि की थी ।

अन्तिम पुष्पिका—इति श्री अमृतप्रभ सूरि विरचित योगशत । सपूर्ण ॥

सं० १८५५ का वर्षे शाके १७२० प्रवर्तमाने मासानामाशुभमासे द्वितियश्रावणमासे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ षष्ठ्यां भृगवासरे लिखित सपतिराम भावक गोत्र छावडा निज पठनार्थ ।

४६३. रसरत्नसमुच्चय—पत्र संख्या-२३२ । साइज-११ $\frac{३}{४}$ ×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद ।

रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८१२ चैत्र सुदी ३ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५६ ।

विशेष—शुलाबचंद छावडा ने जयपुर में मघानीराम तिषारी की प्रति से लिपि की थी ।

४६४. रससार—पत्र संख्या-८ । साइज-१०×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-आयुर्वेद । रचना

काल-× । लेखन काल-सं० १७३६ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५५ ।

विशेष—

प्रारम्भ—श्री गौडीपार्श्वनाथाय नमः पंडित श्री ५ भाषनिधानमणि सद्गुरुभ्यः नमः ।

अन्त—इति श्री रससार मथ निर्विषम् अमभूतिसंग्रीहतम् बहुशास्त्रसम्मत सम्पूर्णम् ।

४६५. रोगपरीक्षा—पत्र संख्या-७ । साइज-१२×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत

रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४६७ ।

४६६. वैद्यजीवन—लोलिम्बराज । पत्र संख्या-२६ । साइज-१०×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-

आयुर्वेद । रचना काल-× । लेखन काल-सं० १८१३ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५३ ।

विशेष—श्लोकों के ऊपर टीका दी हुई है ।

४६७. सर्वज्वरसमुच्चयदर्पण—पत्र संख्या-३६ । साइज-१२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-

आयुर्वेद । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन नं० ४५२ ।



## विषय-गणित शास्त्र

४६८. षटत्रिंशिका—महावीराचार्य । पत्र ख्या-४५ । साइज-११×०३ इञ्च । मापा-सकृत ।  
वषय-गणित । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १६६५ आसोज सुदी = । पूर्ण । वेष्टन न० ४६५ ।

विशेष—सवत् १६६५ वर्षे आसोज सुदी = श्रौ श्री मूलसधे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये  
म० श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे म० श्री सकलकीर्तिदेवा । तत्पट्टे म० शुमचन्द्र देवा तत्पट्टे म० सुमतिकीर्तिदेवा तत्पट्टे म०  
श्रीगुणकीर्तिदेवा तत्पट्टे वादिभूषणदेवास्तद्गुरुभ्राता ब्र० श्री भीमा तत् शिष्य ब्र० श्री मेघराज तत् शिष्य ब्र० केशव  
पठनार्थ । ब्र० नेमिदाम की पुस्तक है ।

४६९. प्रति न० २ । पत्र सख्या-१८ । साइज-११×४ इञ्च । लेखन काल-१६३२ ज्येष्ठ सुदी ६ ।  
पूर्ण । वेष्टन न० ४६६ ।

विशेष—प्रति पर छत्तीसी टीका मी लिखी है ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है:—

सवत् १६३२ वर्षे जेठमासे शुक्लपक्षे नवम्यां तिथौ गुरुवासरे इलाप्राकारे श्रीसमवनाथचैत्यालये श्री मूलसधे  
सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये म० श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टासुरिण म० शुमचन्द्रदेवा तत्पट्टे श्री  
सुमतिकीर्तिदेवा तत्शिष्य ब्र० श्री सुमतिदास लिखापित शास्त्र । मट्टारक श्री गुणकीर्ति शिष्य श्रीमुनिश्रुतकीर्ति पुस्तक ।

## विषय-रस एवं अर्जकार शास्त्र

४७० इस्कचिमन—नागरीवास । पत्र संख्या-३ । साइज-११×४ इञ्च । मापा-हिन्दी पथ ।  
विषय-शृंगार रस । रचना काल-X । लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन नं० ४३८ ।

प्रारम्भ—इस्क उसी की भलक है यही धूरज की धूप ।

जहाँ इस्क ताँही आपह काँदर नागर रूप ॥१॥



कहु कीया नहि इस्क का इस्तमाल सवार ।  
सौ साहिव सू इस्क हैं करि क्यां सकै गंवार ॥२॥

अन्तिम—जिरद जदम जारी जहाँ नित लोहू का कीच ।  
नागर आसिक लुट रहे इस्क चिमन के बीच ॥४४॥  
चलै तेज नागर इफ है इस्क तेज की धार ।  
और कटै नहीं वार सौ कट्टै करै रिभवार ॥४५॥

४७१ कविकुलकठाभरण—दूल्हा । पत्र सख्या-११ । साइज-६×८<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इञ्च । माषा-हिन्दी । विषय-  
अलंकार शास्त्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४७२ ।

प्रारम्भ—पारवती शिव चरन मैं कवि दूल्हा करि प्रीति ।  
थोरे क्रम क्रम तें कहे अलंकार की रीति ॥१॥  
चरन वरन लछन ललित रचिरी क्यों करतास ।  
बिन भूषन नहि भूषई कविता बनिता चास ॥२॥  
दीघ मत सत कविन के अरथा सै लघु तरन ।  
कवि दूल्हा याते कियौ कविकुलकठामरन ॥३॥  
जो यह कठामरन को कठ करै सुख पाई ।  
समामध्य सोमा लहै अलंकृती ठहराई ॥४॥  
चन्द्रादिक उपमान है वदनादिक उपमेय ।  
तुल्य अरथ वाचक लहै धर्म एक सो लेय ॥५॥

मध्य—अप्रस्तुत वरनै प्रससा लिए प्रस्तुत की ।  
पचथा अप्रस्तुत प्रससा होति चाहे तै ॥  
पच्छिन मैं याही तें बडो है राजहस ।  
एक सदा नीर धीर के विवेक अवगाह तै ॥  
प्रस्तुत में प्रस्तुत को घोटन जहाई होइ  
प्रस्तुत अकुर तहाँ वरनौ उछाह तै ।  
फूली रस रली मली मालती समीप तें  
अली कनैर कली कोकले सुदेत काह तै ॥३२॥

अन्तिम—सूरता उदारता को अदभुत वरनन ।  
निथारुप अति उक्ति माषै सब लोयु है ॥  
दानि हूँ कें जाचक हुवे रक भरे तेज ।

सूखे सिंधु तेरी रिपु रानी करि सोयु है ॥  
 नाम जोग श्रीरे अर्थ याधिपु निरुक्ति ।  
 साचे गुपाल मए जो रच्यो राधे सो वियोगु है ।  
 प्रगट निषेध को अत्रुक्थन प्रतिषेध ।  
 गिर गहिवो नयो तो मा'मिन को मोयु है ॥

४७२ वैनविलास—नागरीदास । पत्र रचया-६ । सङ्ग-१०३X५ इत्य । भाषा-हिन्दी पद्य ।  
 विषय-शृ गार । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ३७७ ।

विशेष—प्रारम्भ के ४ पत्रों में स्नेहसंग्राम प्रतापतेज कृत दिया है जिसके २५ पद्य हैं । इमे स० १८६८ में  
 छोटेलाल ठोलिया ने ३ आने में खरीदा था ॥१॥

स्नेहसंग्राम—प्रारम्भ—कु डलिया—

मों है बाकी बाकसा लखी कु ज की ओट ।  
 समर सस्य विछुवा लग्यो लालन लोटहि पोट ॥  
 लालन लोटहि पोट चोट जब उर में लागी ।  
 कियो हियो दुस्मार पीर ग्रान्न में पागी ॥  
 व्रजनिधि बाकेवीर खेत में लखे अगोहे ।  
 तहां घाव पर घाव करत राधे की मोहे ॥१॥

अन्तिम—नेही व्रजनिधि राधिका दोउ समर सधीर  
 हेत खेत छाखत तही छाके बाके वीर ॥  
 छाके बाके वीर हथ्य वथ्य न मरि जुट्टे ।  
 दोऊ करि करि दाव घाव छिन हू नहि छूट्टे ॥  
 यह सनेह संग्राम सुनत चित होत विदेही ।  
 प्रताप तेज की बात जानि है सुधर सनेही ॥२५॥

वैनविलास—प्रारम्भ—

अहे वावरी वसुरिया ते तप कीनों कौन ।  
 अघर सुधारस तै विमौ हम तरफत विच मोन ॥१॥

अन्तिम - सुरली मुनित में मई आसू द्रगनि विसाल ।  
 मुख आवै सोही कहे प्रेम विवस व्रज बाल ॥२६॥  
 नागर हरहि पलाग की दारु धरी दवाय ।  
 अग राग वशी लपट्यो हौ चिउडी नम काय ॥३०॥

इति श्री नागरीदास कृत वैनविलास सधूर्ण ।

४७३. रसिकप्रिया—केशवदास । पत्र सख्या-५६ । साइज-१२ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इक्ष्व । भाषा-हिन्दी पद्य ।  
विषय-श्रु गार । रचना काल-× । लेखन काल-स० १७३३ । पूर्ण । वेष्टन न० ३६८ ।

विशेष—पद्य सख्या-५२४ है । मिश्र आमानेरी वाले ने बसवा में प्रतिलिपि की थी । स्वामी गोविंददास की पौथी से प्रतिलिपि हुई थी । स० १८६८ माह सुदी ६ को छोटेलाल ठोलिया मारोठ वाले ने सवाई जयपुर में १॥) रू० निघरावलि देकर यह प्रति खरीदी थी ।

४७४. श्रुंगारतिलक—कालिदास । पत्र सख्या-४ । साइज-१०×१३ इक्ष्व । भाषा-संस्कृत । विषय-  
श्रु गार । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४०६ ।

विशेष—२३ पद्य हैं ।

४७५. श्रुंगारपञ्चमी—छविनाथ । पत्र सख्या-६ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ इक्ष्व । भाषा-हिन्दी । विषय-  
श्रु गार । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४७५ ।

प्रारम्भ—कोकिल न हो हिये मतंग महा मस्तक कै ।  
वात मात्रु मत्र की बतार्ई मली वस्त है ॥  
फूलै न पलास लाल पौष आई फैलि गये ।  
जग चहुंघा राखिवे को बडी दस्त है ॥  
मेरी समभाई हिल मिल प्यारी पीतम सों ।  
कानि काम भूपति की मान वो प्रस्त है ॥  
कहै छविनाथ आज बकसीप सत छेडि ।  
मान गड पस्त करिवे की करी कस्त है ॥१॥

अन्तिम—छाडि मकरद कमलन के मरंद भई पाइ कै ।  
सुगध जाकौ हरत न टारै है ॥  
खजन चकोर मृग मीन सेदखत जाहि ।  
चौकत से जहाँ तहाँ छपत निचारै है ॥  
कहै छविनाथ छवि भगन की देखि ।  
जासों हारि गर्भ तिलोचमा जाने जग वारे हैं ॥  
प्यारे नद नदन तिहारे मुख चद पर ।  
बारि बारि डारे वहि नैनन के तारे हैं ॥२५॥

धोहा—माधव नृप की रीभ को कवि छविनाथ विसाल ।  
कीन्हे रस श्रु गार के कवित्त पञ्चीस रसाल ॥२६॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज श्री माधवेश प्रसन्नता व्यवस्थापक गोविंददासामज त्रि ध्विनाय विरचिता  
श्रु गारपच्चीसी सोमते ॥ विजयै नाम सवत्सरे दक्षिणायणे हेमत ऋतौ पौषमासे शुक्लपक्षे द्वितीया शुक्रवासरे लिखितमिदं  
पुस्तक ।

महाराजा माधवसिंह के प्रसन्न करने को गोविंददास के पुत्र ध्विनाय ने रचना की थी ।

४७६. हृदयालोकलोचन—पत्र संख्या-१६ । साइज-१०×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-श्रुतकार ।  
रचना काल × । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ४७८ ।

### स्फुट-रचनायें

४७७. अकलनामा—पत्र संख्या ३ । साइज-११×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-स्फुट ।  
रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ४८० ।

४७८. अक्षरवत्तीसी—मुनि महिसिंह । पत्र संख्या-२ । साइज-६ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा-हिन्दी पद्य ।  
विषय-स्फुट । रचना काल-स० १७२५ । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १६६ ।

विशेष श्रुतिम पद्य—

सतरहसई पच्चीस सवत् कीयो बखाण ।

उदयपुर उद्यम कीयो मुनि महसहि जाण ॥

४७९. ज्ञानार्णव तत्वप्रकरण टीका—पत्र संख्या-२० । साइज-१२ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी ।  
विषय-योग । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० ३१२ ।

४८०. गोरसविधि—पत्र संख्या-४ । साइज-४ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । रचना  
काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ७१ ।

४८१. गोत्रवर्णन—पत्र संख्या-१० । साइज-६×३ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-इतिहास ।  
रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १८४ ।

विशेष—गोत्रों के नाम दिये हुये हैं ।

४८२ चौरासी गोत्र—पत्र सख्या-१ । साइज-२१ $\frac{३}{४}$ ×१० इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास ।  
रचना काल-X । लेखन काल-स० १८६२ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८४ ।

विशेष—खण्डेलवाल्लों के चौरासी गोत्रों के नाम हैं ।

४८३. चौरासी गोत्रोत्पत्ति वर्णन—नन्दनन्द । पत्र सख्या-१२ । साइज-६×३ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-  
हिन्दी पद्य विषय-इतिहास । रचना काल-X । लेखन काल-सं० १८८६ । पूर्ण । वेष्टन नं० १८४ ।

विशेष—पद्य सख्या-१११ है । खण्डेलवाल्लों के ८४ गोत्रों की उत्पत्ति का वर्णन है ।

प्रारम्भ दोहा—श्री युगादि रिसमादि गुण, सरण आय गुण गाय ।

श्रावक नंस सुप्रथ रचि धतुल सु सपति थाय ॥१॥

वैस्य वरण में उच्य पद, धर्म दया कौ पाभि ।

श्रय कल्यान श्रावक प्रगट, रच्ये गोत्र कुल ग्राम ॥२॥

छन्द—श्रावक व्रत तीर्थ कर सेय सुच्यारहि वर्ण सु पालत है ।

च्यार ही वर्ण सुकर्म क्रिया तव मुक्ति गया सु भालत है ॥

श्रीवरवर्द्ध सु मान्य सु स्वामी छ मुक्ति गया सुम तालत हैं ।

फेर सुवर्स छह सतीयासिंह वा तव मुनि प्रगटालत है ।

चौपाई—अपराजित मुनि नाम सुस्वामी । थान सीघाडा मध कहामी ॥

अपराजित मुनि तप सु प्रमाक । जिणसेनाचार्य सु मये ताक ॥

श्री जिणसैनचार्य तव होये । सवत येक साल मध्य जोये ॥

जिणसैनाचार्य सु मध्य सारा । छह सात मुनि काञ्च सिधारा ॥

प्रभु पदम पञ्च ध्यान तहां धर्ता । श्री जिण जोग रटण मुनि कर्ता ॥

फिर श्रवसर इक असहु आया । ग्राम खडेल्ला वन मधि आया ॥

मुनिहुँ पाच सह पक्कावलि तह । भूत भवपित्त वर्त हान लह ॥

मूनी सकल मुनि मुनि की वानी । हैगौ यह उपसर्ग पिछानी ॥

होनहार उपसर्ग श्रठही । होनहार नहि मिटै कठही ॥

सावधान मुनि ध्यान सुहावा । जोग सु ध्यान समर्थ सु जूवा ॥

ग्राम लगै चतुरासि खडेल्लै । ताहां इक विघ्न मरी उपजेल्लै ॥

ताहां नरनारी बहुत अति होये । ताहां त्रपति चींता उषजोये ॥

तवै त्रपति सब वीप्र बूलाये । विघ्न मिटै सो करो दुजोये ॥

तव इक वीप्र कही सुणि राजये । नरहि मेघ को जज्ञ काजये ॥  
 तव उह ऋपति वाक्य सत्य कीन्हों । नरहि मेघ सायत रचि दीन्हो ॥  
 नर सब चौरासी के आप । वथ्यो विघ्न ताहा बहोत कहाये ॥  
 दुज्य कहि ऋपति मनुष सत चाहै । भिटै विघ्न यह होन फराहै ॥  
 ताहा मुनी तप करै सु त्याकु । पकडि मंगाय होन किये ज्याकु ॥  
 हाहाकार वोहोत तहां होयो । ऋपति दुष्टतै काहा कर थोयो ॥  
 तव वाहा मुनिराज सत्र थाये । जैनसैन आचार्य ताहाये ॥  
 बडा बडा सब मुनि का स्वामी । जोग ध्यान श्री अतरयामी ॥  
 नगर सुफल सध्यान लगायो । चक्रसुरी सु जाप जजायो ॥  
 बहुरी गुडो जिन आपन कीनो । शांत भई ऋप ग्यान उषीनो ॥  
 तव आय ऋप बंदन कीनी । क्षमा करो अपराध मुनीनी ॥  
 ऋपति कहै मुनिराज दयाल । विघ्न भिटै सो करो कृपाल ॥  
 ऋप सु कही मुनी सर बानी । लग्यो पाप मानुष को धानी ॥  
 स्व अतम कत नंदित राजा । परथ्यो पाय मुनि के छु समाजा ॥  
 कही भूप मम अघ भेटो । तुम पारस्य मुनिराज सु भेटो ॥  
 कही मुनि मुनि हे ऋप राजा । श्री जिणधर्म सर्ष तुव अजा ॥  
 दया रूप जिण धर्म प्रकासा । भिटै पाप बुधि निर्मल मासा ॥  
 आवक धर्म ऋपति मुनि लीन्हों । भिटै पाप निर्मल अग तीन्हों ॥  
 नगर छडेल गांव बयासी । बट्या छा छत्री त्या वासी ॥  
 द्वय सुनार बट्या छा त्याही । कही भूप ये दोउ व्याही ॥  
 दोउ कैसु दीहाडी न्यारी । आवक धर्म मूल सुखकारी ॥  
 इक कही आमणी देवी । दूजा कसु मोहणी तेवी ॥  
 चौरासी सुगोत्र आवक का । नीकै रचौ मली बुधि सुखका ॥  
 गोत्र वस अरु नाम की हाडी । जिणसु धर्म तरु नीकी वाडी ॥

अन्तिम—सवत १८ सह गिनो अन्द्रनीवासी साल ।

चैत क्रमन तेरसि गुण सुम अथ पूर्णाल ॥ १०६ ॥

मन बलित पठियो सुनै कुल आवक गुणसार ।

नंद नद देवत सुख, न देवा सिर मार ॥ ११० ॥

इति श्री अथ आवक गोत्र गुण सार नद नद रचिते सपूर्ण । सुम ॥

लीखी गणेश लाल कवी स्वतंत्र कृत । लिखायत राज्य श्री चपाराम का नद चिरजीव ॥ पुत्र पौत्र कुल वृद्धि  
सुख सपति फल प्राप्ती सत्येव वाक्य ॥ १११ ॥

४८४ जैनमार्तण्डपुराण—म० महेन्द्र भूषण । पत्र संख्या—१०२ । साइज—१२×६ इञ्च । भाषा—  
संस्कृत । विषय—सिद्धान्त एव आचार । रचना काल—X । लेखन काल—स० १८५३ सावन वृदी १२ । पूर्ण । वेष्टन न० १६७ ।

विशेष—म० महेन्द्रभूषण ने प्रतिलिपि कराई थी । ग्रन्थ का दूसरा नाम कर्म विपाक चरित्र भी है ।

प्रारम्भ — अखडालमप्रधानलजनितः तीव्रातिशयितञ्जलः ।

ज्वालावलीनिचय परिदग्धाखिलमलः ॥

महासिद्धः सिद्धै कृतचरणपकेरुहनुति ।

महावीरत्वामी जयति जगतां नाथ उ दत्त ॥१॥

अन्तिमस्तीर्थकरो महात्मा महाशय शीलमहांकुराशि ।

नमोस्तु तस्मै जगदीश्वराय श्रीमन्महावीरजिनेश्वराय ॥२॥

अन्तिम पुष्पिका—इति श्रीमज्जैनमार्तण्डमहापुराणे श्रीमद्भट्टारक जिनेन्द्रभूषण पट्टाभरण श्री भट्टारक महेन्द्रभूषण  
द्वितीय नाम कर्मविपाक चरित्र कृते चित्रांगदायि मोक्षप्राप्तवर्णनो नवमोऽधिकार समाप्तोऽयमर्थः ॥

४८५. नदवत्तीसी—हेमविमल - सूरि । पत्र संख्या—४ । साइज—१०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।  
रचना काल—स० १५६० । लेखन काल—स० १६०० । पूर्ण । वेष्टन न० ३०४ ।

प्रारम्भ—गाथा—

आगमवेदपुराणमग्ने जजकवति कवीयथा तं शारद तुह पसायउ ।

दूहा—पहिलउ प्रणमउ सरसती, जगवति लील विलास ।

श्री जिणवर शंकर नमु मांय बुद्धि पयास ॥१॥

आपीय अविरल बुद्धि धण जन मन रंजन जेह ।

नद वत्तीसी जे सणउ चरीयर चपुरि तेह ॥२॥

नयरागर अहि ठाण जे तेह तणां बोलेस ।

नंद वत्तीसी चुपई एहज नामठ व्योस ॥

चौपई—पुर पाडलीय नगर अभिराम । पुहवि प्रगटउ जेह तु नाम ॥

वरण वरण वसि तहां लोक । जाणस जाण तणा तिहा थोक ॥

सजस सरोवरनि वन खड । राजा लोक न लेवि दड ॥

गद मठ मदिर मैडी पोलि । चुरासी चहु टा नीरा बलि ॥

अन्तिम—हीयङि अति ऊमाहुं करी । नदरायनु वोव्यु चरी ॥  
 सुण विनोद कथा चुपई । नद वचीसी चुपई ॥५१॥  
 तप गळ नायक एह मुण्णिद । जय श्री हेम विमल सूरंद ॥  
 हान सील पडित्त सुविचार । तास सिस्स कहि येह विचार ॥  
 सवत १५ साठा मफ्फार । चैत सुदि तेरसि वार ॥  
 जे नर विदुर विसेष सुणि । मुनिवर कुल सघ भणि ॥  
 मण्णतां गुणतां लहीर बुद्धि बुद्धि सयल काज ती सिद्धि ॥  
 ववुधि फलीह वडित्त सदा नितु नवर सपदा ॥१६४॥  
 ॥ इति विनोदे नंद वचीसी चुपई समाप्त ॥

सवत् १६ श्रीमत् काष्ठासधे नदीतट्टगच्छे विद्यागणे म० रामसेनान्वये तदाम्नाये म० उदयसेन तत्पट्टे म० श्री त्रिभुवनकीर्ति तत्पट्टामरण वादिगजकेसरी उभयभाषाचक्रवर्ति म० श्री रत्नभूषण नरसिंह पुरा ज्ञातीय सांपडीया गोत्रे सा० योगा मार्या विनादे सूत ब्रह्म श्री वछराज तत्सिष्य ब्र० श्री मगलदास ।

४८६. दशस्थानचौबीसी—द्यानतराय । पत्र सख्या-७ । साइज-८×४<sup>३</sup> इख । भाषा-हिन्दी । रचना काल-× । लेखन काल-स० १४४४ । पूर्ण । वेष्टन न० १२५ ।

विशेष—चौबीस तीर्थक्षेत्रों के नाम, माता पिता के नाम, ऊचाई, आयु आदि १०, बातों का वर्णन है ।  
 मीठालाल शाह पावटा वाले ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

४८७. समयसार कलशा—अमृतचद्र । पत्र सख्या-१४ । साइज-११<sup>३</sup>×५<sup>३</sup> इख । भाषा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० २८८ ।

४८८ पद्मनन्दिपचविंशतिका—पद्मनदि । पत्र सख्या-५६ । साइज-११<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इख । भाषा-संस्कृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन नं० १ ।

विशेष—१०५ से आगे के पत्र नहीं हैं । ० प्रतियां और हैं ।

४८९ पंचदशशरीरवर्णन - पत्र सख्या-१ । साइज-११<sup>३</sup>×४<sup>३</sup> इख । भाषा-संस्कृत । विषय-स्फुट । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ७५ ।

४९० प्रतिक्रमण सूत्र . . . । पत्र सख्या-४ । साइज-१०×४<sup>३</sup> इख । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४१० ।

४९१ प्रशस्तिका—पत्र सख्या-१६ । साइज-६×४ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-विविध । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० ४२३ ।



४६२. फुटकर गाथा—पत्र सख्या-२ । साइज-२१×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । मापा-प्राकृत । विषय-वर्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १०५ ।

४६३. वारहव्रतोद्यापन ( द्वादस व्रत विद्यान )—पत्र सख्या-५ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । मापा-संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ८७ ।

४६४. वारहखड़ी—सूरत । पत्र सख्या-३६ । साइज-७ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{१}{२}$  इञ्च । मापा-हिन्दी । विषय-सुमापित रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १०५ ।

४६५. भावनावचीसी—अमितिगति । पत्र सख्या-३ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ इञ्च । मापा-संस्कृत । विषय-चितन । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ३६१ ।

विशेष—पद्य सख्या ३३ है ।

४६६. मानवर्णन—पत्र सख्या-५ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । मापा-संस्कृत । विषय-स्फुट । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० २०२ ।

४६७. मालपचीसी—विनोदीलाल । पत्र सख्या-४ । साइज-६ $\frac{३}{४}$ × इञ्च । मापा-हिन्दी । विषय-वर्म । रचना काल-X । लेखन काल-स० १६०४ पौष सुदी ११ । अपूर्ण । वेष्टन न० १८४ ।

४६८. सास वट्ट का भगडा—देवात्रह । पत्र सख्या-१ । साइज-११×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । मापा-हिन्दी । विषय-समाज शास्त्र । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ४३८ ।

विशेष—देवात्रह यो देखि समामो ढाल वणई मार । मात पिता की मेवा कीज्यो कुलवता नर नारी ॥७॥ सांची बात कहू लू जी ॥

५००. लीलावती—पत्र सख्या-८ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । मापा-संस्कृत । विषय-गायित । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १६२ ।

विशेष—सक्रमण सूत्र तक दिया हुआ है ।

५०१. स्नानविधि—पत्र सख्या-४५ । साइज-८ $\frac{३}{४}$ ×३ $\frac{३}{४}$  इञ्च । मापा-प्राकृत संस्कृत । विषय-पूजा । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ६४ ।

प्रति प्राचीन है ।

५०२. समस्तकर्मसंन्यास भावना—पत्र सख्या-७ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इञ्च । मापा-संस्कृत । विषय-अध्यात्म । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ३६६ ।

श्लोक सख्या-१३३ है ।

५०३. स्तवन—पत्र संख्या-१ । साइज-१० १/२ × १३ १/२ इन् । भाषा-फारसी । लिपि-देवनागरी । विषय-स्तवन । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १४७ ।

विशेष—अदालत में मुकदमा पेश होने का पूरा रूपक है । जिस प्रकार अदालत में अर्ज की जाती है ठीक उसी तरह भगवान से प्रार्थना की गई है ।

## गुटके एषं संग्रह ग्रन्थ

५०४. गुटका न० १—पत्र संख्या-२७५ । साइज-११ × १५ इन् । भाषा-हिन्दी मंस्कृत । लेखन काल-स० १८५३ । पूर्ण ।

मुख्य रूप से निम्न पाठों का संग्रह है—

(१) व्रत विधान वासों—सगही दौलतराम । पत्र संख्या-१ से २२ । भाषा-हिन्दी । रचना काल-स० १७६७ आसोज सुदी १० । लेखन काल-स० १८३८ आसोज सुदी ३ । पूर्ण ।

प्रारम्भ—प्रथम सुमिरो स्वामी वृषभ जिनद, आदि तीर्थ कर सुख के जो वृद ।

तो नमो तिर्थकर वीस है, नमो सनमति सदा सिव सुखधाम ।

नमो परमेष्ठी जी पच पद, ता सुमिरो होय सुख अभिराम ।

तो वरत करी भवि जैन का ॥ १ ॥

रस ओजली—अहो तप रस ओजली मास वैशाख, सुकल तीजसों जो करि अभिलाष ।

तो व्रत पीरिस अति निर्मला, तीन रस ओजली जल मन भाय ॥

बहुरी जल लेन सख्या नहीं, ईसु चढाई जे जिन पद जाप ॥  
तो वरत करौ भवि जैन का ॥ १४१ ॥

अन्तिम पाठ—अहो वू दी जी नम्र हाडा तनौ थान, राज करे बुधसिंह कुल मातु ।  
पोन छत्तीस लीला करै, गढ अरु कोट वन उपवन वाय ।  
महल तलाव देवल छत्रां, श्रावण धर्म चलै बहु माय ॥ तो वरत० ॥  
अहो जगत कीरति मष्टारक परमान, मूल सघी सरस्वती गच्छ जान ।  
तो कु दकु दा पुनि पाटई, ब्रह्मचार आचारिज पडित भाय ॥  
और आरयिका जी सग मै, मानत थावग यह अमनाय ॥ तो० ॥  
अहो पाश्चर्दनाथ चैत्यालौ जी गाय, तहां पडित तुलसी जी दास रहाय ।  
तो सास्त्र समूह विद्या धयी करइ, निरतर धर्म दिद्राव सुख स्यौं काल पूरण करै ।  
तास चरचा रचि गंय पसाव ॥ तो० ॥

अहो साह मामा सुतधर धनपाल, ताकौ चतुरभुज रूप दसाय ।  
तो सुत दौलतराम हुव कछुयक, जिन गुण कहि अभिराम ॥  
वरत विधान रासौ रथ्यौ, ताकै पुत्र हरदौराम सदाराम ॥ तो० ॥  
अहो पाटणी गोत परसिद्ध मही माही, खडेलवाल जिन म तिय कहाहि ।  
तो श्रावण धर्म मारग भालै, करहि चरचा जिन वचन विलास ।  
ओन बर्म नहीं ऊचरै, सहु परिवार वू दी गढ वास ॥ तो० ॥

× × ×

अहो सवत् सतरासै सत सटि लीन, आसोज सुकल दशौं दिन परवीन ॥  
तो लगन मुहुरत सुम घरी वार, गुरु वार नचत्र जो ता माहि ॥  
प्रथ पूरण भयो भविय सवोधन यह उपयोग ॥  
अहो दीय से इकस्या जी ब्रह्म निवास, सातसै पचास सख्या तास ॥  
तो एक सौ इकसठि तामै तप कक्षा, दौलतराम विविध वुरणाय ॥  
भवि करि मन वच काय सौं, अनुक्रम सुर सुख शिव पद पाय ॥ २०१ ॥

॥ इति श्री व्रत विधान रासो सगही दौलतराम कृत सपूर्ण ॥

(२) १५० व्रतों के नाम — पत्र सख्या ०३-२४ ।

(३) पूजा स्तोत्र सग्रह—पत्र सख्या-१ से ०५१ तक ।

विशेष—६३ प्रकार के पाठ व पूजा स्तोत्र आदि का सग्रह है । गुटका के कुल पत्रों की सख्या २७५ है ।

५०५. गुटका न० २—पत्र सख्या-०४ । साहज-०३५६ इश्व । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे दिये हुये हैं। एव मन्त्रों का मङ्गलन है। सभी मन्त्र आयुर्वेद से सम्बन्धित हैं। स्तोत्र आदि भी हैं।

पूर्ण।

५०६. गुटका न० ३—पत्र संख्या—२८। साइज—५×२ इंच। माया—प्राकृत—पश्चिम। लेखन काल—X।

विशेष—नित्य नियम पूजा पाठ हैं।

५०७ गुटका न० ४—पत्र संख्या—६०। साइज—६×८ इंच। माया—हिन्दी। लेखन काल—X। पूर्ण।

निम्न पाठों का समग्र है —

( १ ) ज्ञानसार—खुनाथ। पत्र स० १ में ३४। माया—हिन्दी। पत्र संख्या—७०।

प्रारम्भ - छप्पय छंद—

गनपति मनपति प्रथम सकल शुभ फल मंगलकर ।  
स्वरमति अति मति गूढ देत आरूढ हस पर ॥  
निगम धरन जग भरन करन लागि चरन गगधर ।  
अमर कौटि तेतीस ऋत खुनाथ जोरकर ॥  
भवि तिरन हरन जामन मरन सरनि जानि इह देह वर ।  
श्री हरि पद कौ पाऊं खुनि गाऊं मन वच कण्य कर ॥१॥

दीहा—हरि दरसावन सब सुखद अथ हर ज्ञान उदोत ।  
गगनीर गुरु के चरन छुवत सुधि गति होत ॥२॥  
तुम सर्वज्ञ दयाल प्रभु कहो कृपा करि बात ।  
अनत रूप हरि गति अलख लखे कौन विधि जात ॥३॥  
तव अपनौ जन जानि मन मानि करी प्रतिपाल ।  
स्त्रै दयाल तिह काल कर बोले वचन रसाल ॥४॥

सत दशा वर्णन सबैया—

जग सौं उदास मन वाम क्रिये नास मन, धारत न आम खुनाथ यो कइत है ।  
क्रोधी से न क्रोध, न विरोधी से विरोध, नहि लोभी सौं प्रमोद नित अमे निवहत है ॥  
जीव सकल समानि समभै न बहु अशुराग दोग, अभिमान प्रम तो देहत है ।  
ज्ञान जल मजन मलीन कर्म भजन कै, राचै है निरजन सौं, अजन रहत है ॥१०६॥

×

×

×

अमल रूप माया मिल्यो मलनि भयो सब ठाव ।

सोनीं सोनी संग तैं भूपन नाना नांव ॥१४३॥

विन जानै बहु दुख है जानै तें उडि जात ।  
तीन काल में एक रस सो निज रूप रहात ॥१५७॥  
गृह त्यागी रागी नहीं, मागी भ्रम जग श्रीति ।  
हरि पागी जागी सुबुधि इह वैरागी रोति ॥२१७॥

अन्तिम पाठ—असौ हरि को निज धर्म सुनि मन मयो हुलास ।  
तातै इह भाषा करी लघु मति राधो दास ॥२६४॥  
गुनी मुनी पंडित कवि चतुर विवेकी सोध ।  
कियो ग्रन्थ उनमान विधि छिमा सकल अपराध ॥  
वक्ति बुक्ति तुक छंद गति भाव वरन गन हीन ।  
इक गुन हरि को गुन वरन तातै गुन्यौ प्रवीन ॥२६६॥  
सतरसै चालीसत्रिय सवत् भाष अरूप ।  
प्रगट मयो सुदि पचमी ज्ञान सार सुख रूप ॥२६७॥  
सुनत गुनत जे ज्ञान सत नसत अस्त भ्रम रूप ।  
भव नावत गावत निगम पावत ब्रह्म सरूप ॥२६८॥  
सुज अपार अधार सब सोखन सकल विकार ।  
पार करत रुसार सर महासर को सार ॥२६९॥  
राघव लाघव केरि करि कहत सब सतन सौ बुक्ति ।  
अमै दान धो जानि जन सत सग हरि मक्ति ॥२७०॥  
॥ इति ज्ञानसार रघुनाथ सा० कृत संपूर्ण ॥

( २ ) गण भेद—रघुनाथ साह । पत्र सख्या ३ । भाषा—हिन्दी पद्य विषय—छंद शास्त्र ( पत्र ३४ से ३७ तक ) । पद्य सख्या—१५ । पूर्ण ।

प्रारम्भ—गवरिनद आनन्द कर त्रिघन घाय बहु माय ।  
आदि कवि के राज कवि मगल दाय मनाय ॥१॥  
प्रथम चरित्र ब्रजराज के गाय सु मन वचकाइ ।  
जन्म सुधारिउ धारि कुल कल मल सकल नसाइ ॥२॥  
हरि गुन भेद विना अमल फल दुह लोक अपार ।  
रहन सकत नर कवित्त विनि तिन मधि विवधि विचार ॥३॥

मध्य भाग दोहा—अष्ट गणागण अमरफल अशुभ च्यारि शुभ च्यारि ।  
राधव भनि कवि राज सुनि धरहु विचारि विचारि ॥१०॥

अन्त माग—सुषुप्त गुण्यत गण भेद कौ रघा प्रकासत ह्यन ।

हर जस कपि रस रीति कौ पावत सकल सुजान । १६॥

॥ इति श्री रघुनाथ साह कृत गण भेद सपूर्ण ॥

विशेष—छन्द शास्त्र की सविष्ट रचना है किन्तु प्रार्थन करने की शैली अच्छी है ।

( ३ ) नित्य विहार ( राधा माधो ) रघुनाथ—पत्र सख्या-२ । भाषा-हिन्दी पद्य । पद्य स० १६ ।

पूर्ण ।

आरम्भ—छन्द चरचरी राजत ब्रज रूप अग अग छत्रि अनूप ।

निरखि लजत काम भूप बहु विलास मीनै ॥

रत्न जटित मुकट हारक मनि अमित वरन ।

कु डल दुति उदित फरन तिमर भरत छीनै ॥१॥

माल तरल तिलक लस्त मौहै जुग अग रिसत ।

नैन चपल मीन चिसत नाशा शुक मौहै ॥

कृ द कली दसन रसन धीरी जुत मंद हसन ।

कल कपोल अथर लोल मधुर बोल सोहै ॥-॥

अन्तिम—जे जन अघ नाम रटत मगल सब सुपनि जटत ।

अघ ऋटित जम जार फटित जगत गीत गावै ॥

श्री बाल निचि विहार आनद तउर जे उदार ।

राधो भय होत पाग प्रेम भक्ति पावै ॥१६॥

॥ इति राधो माधो नित्य विहार सपूर्ण ॥

विशेष रचना शृ गार रस की है ।

( ४ ) प्रसंग सार—रघुनाथ । पत्र सख्या-४३ से ५६ तक । भाषा-हिन्दी पद्य । पद्य सख्या-१६० ।

रचना काल—स० १७४६ माघ सुदी ६ । पूर्ण ।

आरम्भ—एक रदन राजत वदन गन मगल सुख कद ।

राघव रिधि सिधि बुधि दे नव निस गवरी नद ॥१॥

वांनि गति वांनीनतै मस बखानी जात ।

हरि मानी रांनी सकल वर दानी जग मात ॥२॥

गुरु सत गुरु तीरथ निगम गगादिक सुख धाम ।

देव त्रिदेव रखी सुमनि पूरत सबके काम ॥३॥

सीस, नाय सब गाय हो राघो मनि इह रीति ।  
सकल देव की सेवकौ फल हरि पद सौ प्रीति ॥४॥

अतिम पाठ—निस दिन रचि पचि मत सठ सबको इह उनमान ।

सकल जानि मन जानि मन राधा भजो भगवान ॥१५६॥  
भजनि भजै तिन तै भजै पाप ताप दुख दानि ।  
भागवत भगवत जन ग्यान वत सो जानि ॥१५७॥  
सब सुख छत सुंदर सुमत सतरासै गुनचास ।  
कीयो माघ सुदि पचमी सार प्रसग प्रकास ॥१५८॥  
रग रग वहु अग के वरने विवधि प्रसग ।  
मुनै गुनै सुख मे सनै अति रति ह्वै सतसग ॥ १५९ ॥  
अग उधारत गग ज्यौ मलिन कर्म करि मग ।  
उक्ति छुक्ति हरि मक्ति ह्वै समभौ सार प्रसग ॥ १६० ॥

॥ इति श्री रघुनाथ साह कृत प्रसगसार सपूर्ण ॥

विशेष—रचना सुभाषित, उपदेशात्मक एव मक्ति रसात्मक है ।

५०७. गुटका न० ५—पत्र सख्या-८० । साइज-२३×५ इञ्च । भाषा-सरकृत हिन्दी । लेखन काल-५ ।

पूर्ण ।

विशेष—केवल नित्य नियम पूजा पाठ है ।

५०८ गुटका न० ६—पत्र सख्या-२५ । साइज-२५×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-स० १९६३  
मादवा बुदी १० । पूर्ण ।

विशेष—वारह भावना, इष्ट छत्तीसी भाषा, भक्तामर भाषा, निर्वाणकांडभाषा एव समाधिसरण आदि पाठों  
का सग्रह है ।

५०९ गुटका न० ७—पत्र सख्या-५४ । साइज-२३×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-स०  
१=३६ मगसिर सुदी ६ । पूर्ण ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थ करों की पूजा है ।

५१० गुटका न० ८—पत्र सख्या-२३ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-५ । पूर्ण ।

(१) वैराट पुराण—प्रभु कवि । प्रारम्भ के पत्र नहीं है ।

विशेष—प्रभु कवि चरणदासी सप्रदाय के है ।

श्रन्तिम पाठ—काँछ मिले ते पड कहाये, रुधिर अ उटी पीछे मरकायै ।  
 कवन पवन तें वाक उचारा, कवन पवन के रहैय अधारा ।  
 याकौ भेद बतावो भोय, प्रभु कहे गुरु पुछू तोय ॥ १ ॥

(२) ध्यायुर्वेद के नुसखे—भाषा—हिन्दी । पूर्ण ।

५११. गुटका न० ६—पत्र सख्या-२७ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण ।

विशेष—यत्र चिन्तामणि के कुछ पाठ हैं ।

५१२. गुटका न० १०—पत्र सख्या-३४ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामर आदि पाठ एव पूजा समग्र है ।

५१३. गुटका न० ११—पत्र सख्या-७१ । साइज-८ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा—संस्कृत—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण ।

विशेष—प्रथम तत्त्वार्थ सूत्र है पश्चात् पूजार्थों का समग्र है ।

५१४. गुटका न० १२—पत्र सख्या- । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण ।

विषय—सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
( १ ) पद	कवीरदास	हि दी	
( २ ) शब्द व धातु पाठ समग्र	—	संस्कृत	पत्र ५५ तक
( ३ ) लक्षण चौबीसी पद	विद्याभूषण	हिन्दी	
( ४ ) षोडशकारणव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	हिन्दी	पद्य स० ३७

प्रारम्भ—श्री जिनवर चौबीस नमुं, सारद प्रणसी अथ निगमु ।

निज गुरु केरा प्रणामु पाय, सकल सत वदत सुख पाय ॥ १ ॥

षोडश कारण व्रतनी कथा, भागु जिन आगम छे यथा ।

आवक सुण जो निज मन शुद्ध, जे श्री तीर्थकर पद वृद्ध ॥२॥

श्रन्तिम भाग—जे नर नारी ए व्रत करे, तें तीर्थकर पद अनुसरे ।

इह मवि पावे रिद्धि अपार, पर भव मोक्ष तयो अधिकार ॥

पामे सकल भोग सयोग, टले आपदा रौरव रोग ।

श्री भूषण गुरु पद आधार, ब्रह्म ज्ञान सागर कहे सार ॥३॥



विषय—सूची	वर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
( ५ ) दशलक्ष्य व्रत कथा	ब्रह्म ज्ञानसागर	हिन्दी	पद्य स० ५५

प्रारम्भ—प्रथम नमन जिनवर नें करू, सारद गणधर अनुसरू ।

दश लक्ष्य व्रत कथा विचार, भाखु जिन आगम अरुसार ॥१॥

अन्तिम पाठ—ए व्रत जे नर नारी करे, विगेंते भव सागर तरे ।

सकल सौख्य पात्रे नव निद्ध, सर्वारथ मन वाञ्छित सिद्ध ॥५४॥

भट्टारक श्री भूषण धीर, सकल शास्त्र पूरण गभीर ।

तस पद प्रथमी बोले सार ब्रह्म ज्ञान सागर सुविचार ॥५५॥

( ६ ) रत्नत्रय व्रत कथा	ब्र० ज्ञानसार	हिन्दी	—
( ७ ) अनन्त व्रत कथा	”	”	—
( ८ ) त्रैलोक्य तीज कथा	”	”	—
( ९ ) श्रावण द्वादशी कथा	”	”	—
( १० ) रोहिणी व्रत कथा	”	”	—
( ११ ) अष्टाहिका व्रत कथा	”	”	—
( १२ ) लब्धि विधान कथा	”	”	—
( १३ ) पुष्पाजलि व्रत कथा	”	”	—
( १४ ) आकाश पचमी कथा	”	”	—
( १५ ) रक्षा बधन कथा	”	”	—
( १६ ) मौन एकादशी व्रत कथा	”	”	—
( १७ ) मुकुट सप्तमी कथा	”	”	—
( १८ ) श्रुतस्कन्ध कथा	”	”	—
( १९ ) कोकिला पचमी कथा	”	”	स० १७३६ चैत्र सुदी ६ रविवार को सूरत में ब्रह्म कनकसागर ने प्रतिलिपि की थी ।
( २० ) चदन षष्ठी व्रत कथा	”	”	—
( २१ ) निशल्याष्टमी कथा	”	”	—
( २२ ) सुगंध दशमी व्रत कथा	”	”	—
( २३ ) जिन रात्रि व्रत कथा	”	”	—
( २४ ) पत्य विधान कथा	”	”	—

(२५) जिनशुनसपति व्रत कथा	”	”	—
(२६) आदित्यवार कथा	”	”	—
(२७) मेघमाला व्रत कथा	”	”	—
(२८) पंच कल्याण नडा	—	”	—
(२९) ” ” ”	—	”	—
(३०) परमानन्द स्तोत्र	पूज्यपाद स्वामी	सरस्त	—

प्रारम्भ—परमानन्द सयुक्तं निर्विकारं निरामय ।

प्यानहीना न पश्यन्ति निजदेहे व्यवस्थित ॥३॥

(३१) वर्द्धमान स्तोत्र	—	सरस्त	—
(३२) पार्श्वनाथ स्तोत्र	राजसेन	”	—
(३३) आदिनाथ स्तवन	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	—

स्वामी आदि जिण्ड, करू वीनती आपणीय । तु उग साचो देव त्रिभुवन स्वामी तू धर्मा ए ॥१॥  
लाख चौरासी योनि बावर जगम हू मभ्यो ए । तुहू न लाधो खेह ससार सागर तेह तणो ए ॥२॥  
चिहु गति ससार माहि पास्या दु खमि अति घणा ए । जामन मरण वियोग, रोग दारिद्र्य जस तेह तणाए ॥३॥  
काध मान माया लोभ इन्द्रि चौरेंहु मोलव्योए । राग द्वेष मद मोह-मयण पापी घणु रोलकोए ॥४॥  
कुदेव कुयुक् कुशास्त्र मिथ्या मारग रंजियुए । साचो देव मुशास्त्र सह गुरु वयण नमे दीयुए ॥५॥  
सजन कुट्ट व ने काज कीधा पापमि अति घणाए । ते पातिःनीवार जिनवर स्वामी अल तणा ए ॥६॥  
तु माता तु बाप, तु ठाकुर तु देव गुरु । तु वांधव जिन राज, वांधित फल हवे दान कर ॥७॥  
हवें जो तुहें जुग देव करम निवारो अल तणाए । मवि भवि तुल पाय सेव गुण आयो स्वामी अल घणा ए ॥८॥  
सकलकीरति गुरु वदि, जिनवर विनति जे मणोए । ब्रह्म जिणदास मणोसार, मुगति वरांगना ने वरे ए ॥९॥

(३४) चउवीस तीर्थकर विनती	ब्रह्म तेजपाल	”	—
(३५) जिनमगलाष्टक	—	सरस्त	—

पूर्ण ।  
५१५ गुटका न० १३—पत्र सख्या-२८ । साइज-६×६ इंच । माया-हिन्दी । लेखन काल-५ ।  
विशेष—नित्य नियम की पूजाएँ हैं । ये पूजाएँ बाल सहेली जयपुर में प्रत्येक शुक्रवार को होती थी ।

५१६. गुटका न० १४—पत्र सख्या-११ । साइज-६×६ इंच । माया-सरस्त लेखन काल-स० १९८३ भाद्रवा सुदी १० । पूर्ण ।

विशेष—सुगन्ध दशमी व्रतोपापन का पाठ एवं कथा है ।

५१७. गुटका न० १५—पत्र सख्या-१६२ । साइज-४×६ इंच । माया-हिन्दी । लेखन काल-५ । पूर्ण ।

विष-नूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	ले० का०	विशेष	
ज्ञान तिलक के पद	कबीरदास	हिन्दी	स० १२०६	कातिक बुदी ७	—
कबीर की परचई	”	”	”	”	—
रेखता	”	”	”	”	—
काया पाजी	”	”	”	”	—
हंसमुक्तावली	”	”	”	”	—
कबीर धर्मदास की दया	”	”	”	”	—
अन्य पाठ	”	”	”	”	—
साल्ही	”	”	कितने ही प्रकार की हैं	”	—
सोसट बंध	”	”	”	”	—

विशेष—कबीर दास कृत रचनाओं का अपूर्व समग्र है ।

काशी वसे कबीर गुसाईं एव । हरि भक्तन की पकड़ी टेक ॥

बहोत दिना सकिट में गये । अब हरि को गुन लीन मये ॥ ( कवि की परचई )

५१६. गुटका न० १६—पत्र सख्या—१२ से ४० । साहज—६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । अपूर्ण ।

विशेष—महाभारत के पाचत्रे अध्याय से २० वें तक है प्रारम्भ के ४ अध्याय नहीं हैं । जिसके कर्ता लालदास हैं ।

१ वें अध्याय से प्रारम्भ—दरसन भीषम को प्रीय जदा, सकल रपीस्वर आये तिहा ।

सरसज्या भीषम विश्राम, अब सुनि प्रगट रिधिन के नाम ॥ १ ॥

भृगु वसिष्ठ पारास्वर व्यास, चिवन अत्रिय अगिरा प्रवगाम ।

अग्रस्त नारद परवत नाम, जमदग्नि दुरवासा राम ॥ २ ॥

२= वें अध्याय का अन्तिम भाग—धर्म रूपज राजा सिव भयौ, जिहि परकाज अपनपौ दयौ ।

विस्नही आराधै इहि रीति धरम कथा सुनै करि मीति ॥ १६ ॥

जो याह कथा सुनै अरु गावै, धरम सहित धरम गति पावै ।

यौ सौ कथा पुरानन कही, लालादास माख्यौ यो सही ॥ २० ॥

५१६. गुटका न० १७—पत्र सख्या—१०६ । साहज—६×६ । भाषा—हिन्दी । रचना काल—X । लेखन काल—स० १२७४ पौष सुदी ७ । पूर्ण ।

विशेष—महाभारत में से 'उषा कथा' है जिसके रचयिता 'रामदास' है ।

प्रारम्भ—श्री गणेशाहनम । श्री सारदा माताजी नम । वो नमो भगवत वासदेवाय । श्री उषा चरण लिखते ।

भवदेव पुत्रा नित लाउ, कौ हो हवा रिखु न गुण गाउ ।  
 सुभो गुण गोविंद सुभो, सदा होत मतन हितकारी ॥  
 सुभो अदि ममति माता, सुभो श्री गणपती सुभदाता ।  
 सुभर जेउ नरप चात लाउ, कौ हो हवा छु हरि गुणगाउ ॥  
 सुभो मात पिता बढमाई, सुभो श्री रघुपति के पाई ।

टीका—प्रथमा योग्य क्यो, सुभो देव कोटी तेतीस ।

मन्दातन ग्या कर तूषी देखो जगदीम ॥ १ ॥  
 प्राज्ञा नरभुज रथ्य चौराज, प्रथमह तीतदि पुरमो राजा ।  
 जाह धरन च्या अर्धोचई, दानव उध वी वीशेत चढाई ॥  
 अरुलोकाव नृ दससग पुत्र सुप्रमान, गऊ विप्र की सेवा जान ॥ २ ॥  
 नारद उरना आस च्या नाहा, दसम सकेद मागवत की हा ।  
 आस पुत्राव छ सभ मायी, श्री मन्वदेव रुप सुभाषी ॥

टीका—चित दे सुनी उपति धनी पराद्यत राग ।

आस पूर उपदेश ते स हीयो अमाय ॥  
 अमर शोक पग गुल नडा देभो, पच मन मलय सेवा ।  
 अरुण तनी मगति पाई, माया सस हस कीरति गाई ॥ ३ ॥  
 प्रन मयला पृथत माता, पुम अयन कडा मये विधाता ।  
 यदि एव तुनादासी च्या होद, हम सुवनन क्यो न जसोई ॥  
 नदभा हू सन को दाउ, देव मालमो पती सुभरासु ।  
 महर, मरु उ निष्ट ताही ठाहु, पायो जनम मालनी गाउ ॥  
 पिता बनारस अल निवाला, बास ने जनम दापो माता ।  
 सनदस सुन तीन मे गाई, अयन नाम हो मगता ताही ॥

टीका—जगदशम पावन च्या, गोपी भगवत गार ।

र नद न को सुधी अष्ट पथ हृदे न नार ॥ १० ॥  
 देव पुत्र अमर है वतु मुना, मुनाय कौ हो माहि ।  
 धनरन उषा हल स अभा, चह मुनामो मोहा ॥ १२ ॥  
 मेने पसा हस से गदे, एन कए भट नई ।  
 दुष पुना सज्ज ह गरा, पर उषा हस दायण दाया ॥  
 श्री न ना तुनी अयन मगायो, अदि पृथव हो अउ न पायो ।  
 वई अकर हस पूर पाई, या सन नुं अद्ये लभ्याई ॥

अन्तिम पाठ—धनी सो सुरता चीत दे सुन, अरथ बीचार प्रेम गुनमन ।

धनी सोही देस धनी सोही गाव, नीस दिन कथा कृष्ण को नाव ।

उषा श्री भागोत पुराना, सहजही दुज दीजे दाना ॥

छुछ मसक पवन सर सोही, कृष्ण भगति विना अवरथा देही ।

रामदास कथा कियो पुराना, पढत गुणत गगा असनाना ॥

दोहा—चद बदन यो होय फल, तो पातु दल पान ।

ई विध हर पूजही, कथे हो पुत्र की लाण ॥

इति श्री हरिचरित्रपद समो असकदे श्री भागोतपुराणे ऊषा कथा वरणनो नाम सप्त दसो अध्याय ॥ १७ ॥

॥ इति श्री उषाकथा सपूर्ण समाप्ता ॥

५२०. गुटका न० १८—पत्र सख्या—१३२ । साइज—६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—स० १७६७  
फागुन वृदी ७ । पूर्ण ।

विशेष—कवि बालक कृत सीता चरित्र है ।

५२१. गुटका न० १९—पत्र सख्या—१३१ । साइज—६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।  
अपूर्ण ।

विशेष—नंददास कृत भागवत महा पुराण भाषा है । केवल ६१ पत्र है ।

५२२. गुटका नं० २०—पत्र सख्या—३ से ३२ । साइज—८ $\frac{1}{2}$ ×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।  
अपूर्ण ।  
विशेष—हितोपदेश कथा भाषा गद्य में है । रचना नवीन प्रतीत होती है भाषा अच्छी है आदि अत माग  
नहीं है ।

५२३. गुटका न० २१—पत्र सख्या—१३६ । साइज—६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।  
अपूर्ण ।

विशेष—हिन्दी गद्य में राम कथा दी हुई है । प्रति अशुद्ध है ।

५२४. गुटका न० २२—पत्र सख्या—२८ । साइज—६×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । लेखन काल—  
स० १८२५ । पूर्ण ।

विशेष—प० नकुल विरचित शालि होत्र है । संस्कृत से हिन्दी पद्य में भी अर्थ दिया हुआ है ।

५२५. गुटका न० २३—पत्र सख्या—१० । साइज—८ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$  इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।  
अपूर्ण ।

विशेष—कृष्ण का बाल चरित वर्णन है । १२० पद्य हैं ।

आदि—गर गनेम वदन करि के सतननि कों सिर नाऊ ।

बाल विनोद यथा मति हरि के सु दर सरस सुनाऊ ॥१॥

भक्तन के वत्सल करना मय अद्भुत तिन की कीडा ।

सुनो सत हो सावधान हो थी दामोदर लीला ॥२॥

५२६. गुटका न० २६—पत्र सख्या-३० । साइज-६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । रचना काल-X ।  
लेखन काल-म० १८२३ आसोज बुदी ३ । पूर्ण ।

विशेष—लक्ष्मीराम कृत करुणा भरण नाटक है । कृष्ण जीवन की बाल लीला का वर्णन है ।

प्रारम्भ—रसिक मगत पडित कविनु कही महाफल लेहु ।

नाटक करुणा भरण तुम लक्ष्मीराम करि देहु ॥१॥

प्रेम बदे मन निपट हो अरु आवै अति रोइ ।

करुणा अति सिंगार रस जहां बहुत करि होइ ॥

लक्ष्मीराम नाटक करयो दीनों गुनिन पढाइ ।

मेव रेथ निच न निपट लाये नर निसि लाइ ॥२॥

अन्तिम पाठ—श्रीकृष्ण कथा अमृत सर वरनी, जन्म जन्म के कर्मल हरनी ।

अति अगाध रस वरन्यौ न जाई, दृधि प्रमान कछु वरनि सुनाइ ॥३४॥

सो मति थोरी हरि जस सागर, सिंधु सुमाइ कहा लो गागर ।

लक्ष्मीराम कवि कहा वखानौ, हरिजस को कोई हरिजन जानै ॥३५॥

इति श्री कृष्ण जीवन लक्ष्मीराम कृत करुणा भरण नाटक सपूर्ण । स० १८२३ आश्विन बुदी ३ रविवासरे ।  
सन्तमो अघ्याय ।

५२७ गुटका न० २५—पत्र सख्या-३८ । साइज-६×७ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण

विशेष—गुटके मे भद्रबाहु चरित्र है । यह रचना किशनसिंह द्वारा निर्मित है जिसको उसने स० १७८३ मे  
समाप्ता की थी । प्रति नवीन है ।

भद्रबाहु चरित्र—

प्रारम्भ—केवल बोध प्रकास रवि उदै होत सखि साल ।

जग जन अतर तम सकल छेयो दीन दयाल ॥ १ ॥

सनमति नाम जु पाइयो जैसे सनमति देव ।

मोको सनमति दीजिए नभौ त्रिविध करि सेव ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—अनत कीरति आचारज जानि, ललित कीर्ति सू सिष प्रमान ।  
 रत्नदि ताको मिष होय, अल्प मति धरि करना सोय ॥  
 अवेतांवर मत्त को अधिहार, मूढ लोफ मन रजन हार ।  
 तिनही परीक्षा करान जान, पूर्व श्रुत कृत मानस आनि ॥ १० ॥  
 क्रिया नहीं कविताइ करी, काव कर्न अभिमान ही श्री ।  
 मगलीक इस चरितह जानि, रच्यौ सबै सुखदाइ मान ॥  
 मूल ग्रंथ कर्ता मये रतन नदि सु जानि ।  
 तापरि भाषा प्रहरि कीनी मती परमान ॥ ११ ॥  
 नगर चाल सुदेस सै चरवाडा को गांव ।  
 माधुराय बसत कौ दामपुरौ है नांव ॥  
 तहा बसत सगही कानो गोट पाटणी जोय ।  
 ता सुत जायो प्रगट सुख देव नाम तसु होय ॥  
 तानौ लघु सुत जानीयो किसन सिंघ सब बन ।  
 देस दु टाहर को भयौ सांगानेर सुथान ॥ ११ ॥  
 तहां करी भाषा यह भद्रवाह गुणधारी ।  
 सुमति कुमति को परख कै द्वेव भाव न विचारि ॥  
 किसनसिंघ विनती करै, लखि कविता की रीति ।  
 चह चरित्र भाषा कियौ, बाल बोध धरि प्रीति ॥ १७ ॥  
 जो याकौ वाचै सुनै विपुल मति उरधारी ।  
 कहूँ और जो भूल है लीज्यौ सुधी मवारी ॥ १८ ॥  
 सुमति कुमति कौ परख के, कीज्यौ कुमत निवार ।  
 ग्रहण सुमति कौ कीज्यौ जो सुर सिव पदकार ॥ १९ ॥  
 सवत् सतरह सै असी उपरि और है तीन ।  
 भाष कृष्ण कुंज अष्टमी ग्रंथ समापत कीन ॥ २० ॥

५२८. गुटका न० २६—पत्र सख्या-२०० । साइज-८ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$  इंच । सीया-सस्त-हिन्दी । लेखन  
 काल-५ । अधूर्ण ।

विशेष—गुटका प्राचीन है । निम्न पाठों का संग्रह है ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	—
श्रीपालरास	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	—
नेमीश्वररास	”	”	—
विवेकजखड़ी	—	”	—
षष्ठ सग्रह	—	”	—
जखड़ी	रूपचन्द्र	”	—
मागीतुंगी की जखड़ी	रामकीर्ति	”	—
जखड़ी	जिनदास	”	१० का० स० १६७६
कर्म हिंडोलणो	हर्षकीर्ति	”	—
गीत	चन्द्रकीर्ति	”	—
गीत	मुनि धर्मचन्द्र	”	—
चैतनगीत	देविदास	”	—
चैतन गीत	—	”	—
पञ्चधावा	—	”	—
आदिनाथस्तुति	चन्द्रकीर्ति	”	—
शालिभद्रचौपई	—	”	अपूर्ण

५२६ गुटका न० २७—पत्र सख्या-२५ । साइज-६×५½ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× ।  
अपूर्ण ।

विशेष—स्फुट पूजाओं का संग्रह है ।

५३०. गुटका न० २८—पत्र सख्या-२५ । साइज-६×५ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—नित्य पूजा पाठों का संग्रह है ।

५३१. गुटका न० २९—पत्र सख्या-१५ । साइज-८½×५ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× ।

अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठ संग्रह है ।

५३२. गुटका न० ३०—पत्र सख्या-१४ । साइज-६×६ इंच । भाषा-हिन्दी संस्कृत । लेखन काल-× ।

पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है —



त्रिनती सम्रह	—	हिन्दी	—
सवोधपञ्चासिका भाषा	धानतराय	”	—
अठारह नाता	—	”	—

५३४ गुटका न० ३२—पत्र सख्या-२० । साइज-७½X५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।

पूर्ण ।

विशेष—६५ चतुराई की वार्ता दी है जिसका रचना कल वीर स० १६४२ है ।

५३५ गुटका सं० ३३—पत्र सख्या-२३ से १४२ । साइज-६X६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण ।

विशेष—मुख्य पाठों का संग्रह निम्न प्रकार है ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
स्तोत्रविधि	जिनेश्वरसूरि	हिन्दी	—
मक्तामर स्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत	—
कल्याणमदिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	”	—
पद सम्रह सतर प्रकार			
पूजा प्रकरण)	साधुकीर्ति	हिन्दी	र का १६५८ आ बु. ५
रागमाला	”	”	—
अष्टापदगिरिस्तवन	धर्मसुन्दर (वाचनाचार्य)	”	—
पद २	जिनदत्तसूरि	हिन्दी	—
स्तमनक पार्श्वनाथ गीत	महिभासागर	”	—
पद	जिनचन्द्र सूरि, जिनकुशल सूरि व कुमुदचन्द्र ।		
कवित्त	—	हिन्दी	र. का. स १४११

इनके अतिरिक्त और भी हिन्दी पद हैं ।

सतर प्रकार पूजा प्रकरण—राग घनाश्री—मार्ण्य गुण्य घनजि के । सठि दिन तेज तरण्य सुख राजइ ।

कवित्त शतक आठ द्युणत्ति शक्रस्तव । घय घुप रगह मझाजइ ॥म०॥

अणहिल पुर शान्ति सव सुखिदाई । सो प्रभु नवनिधि सिधि आव जइ ॥

सतर सुपूज सुविधि आवक की । मणीमई मगति हिज काजइ ॥म०॥

श्रीजिनचन्द्रसूरि गरू खरतरपति । धरमनि वचन तासु तसु राजइ ॥

सवत् १६ अठार आवण सुदि । पचमि दिवसि समाजइ ॥म०॥

दयाकलशागणि अमरमाणिक गुरु । तासु पसाइ सुविधि हूँ गाछइ ।  
कहइ साधु कीरति कर भजन सस्तव सवि ।  
साधुकीरति करत जन सस्तव सविलील सव सुख साजइ ॥

॥ इति सत्तर प्रकार पूजा प्रकरण ॥

५३६. गुटका न० ३४—पत्र संख्या-१४ से २६ । साइज-६×५ इंच । भाषा-प्राकृत हिन्दी । लेखन काल-X । अपूर्ण ।

विशेष—द्रव्य समग्र की गाथायें हिन्दी अर्थ सहित हैं तथा समयसार के २०६ पद्य हैं ।

५३७. गुटका न० ३५—पत्र संख्या-२ से ३८ । साइज-६<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×५ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का समग्र है ।

५३८. गुटका न० ३६—पत्र संख्या-६ से ६३ । साइज-८<sup>३</sup>/<sub>४</sub>×५ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । अपूर्ण ।

विशेष—महाकवि कल्याण विरचित अनग रग नामक काव्य है । काम शास्त्र का वर्णन है आगे इसी कवि द्वारा निरूपित समोग का वर्णन है । आयुर्वेद के तुसखे दिये हुए हैं ।

५३९. गुटका न० ३७—पत्र संख्या-१६ । साइज-६×६ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण ।

विशेष—विष्णु सहस्रनाम के अतिरिक्त अन्य भी पाठ हैं ।

५४०. गुटका न० ३८—पत्र संख्या-१५० । साइज-७×५<sup>३</sup>/<sub>४</sub> इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-स० १७६६ पौष सुदी ५ । पूर्ण ।

विशेष—विभिन्न साधारण पाठों का संग्रह है ।

५४१. गुटका न० ४०—पत्र संख्या-७ । साइज-६×६ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-स० १८८३ चत्र सुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—चाणक्य राजनीति शास्त्र का संग्रह है ।

५४२. गुटका न० ४१—पत्र संख्या-३८ । साइज-६×६ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-X । अपूर्ण एव जीर्ण ।

५४३. गुटका न० ४२—पत्र संख्या-२६ । साइज-६×६ इंच । भाषा-प्राकृत । लेखन काल-स० १८७२ । पूर्ण ।

विशेष—आचार्य कुन्दकुन्द कृत ( दर्शन, चारित्र, सूत्र, बोध, भाव और मोक्ष ) षट् पाहुड का वर्णन है ।

५४४ गुटका न० ४३—पत्र सख्या-४८ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण एव जीर्ण ।

विशेष—देहली के बादशाहों की वशावलि दी हुई है अन्य निम्न पाठ भी हैं—

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
कृष्ण का वारह भासा	धर्मदास	हिन्दी	—
विरहनी के गीत	—	"	—
आयुर्वेद के नुस्खे	—	"	—
दोहे	दादूदयाल	"	—

५४५. गुटका न० ४४—पत्र सख्या-६८ । साइज-८½×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× ।

पूर्ण

विशेष—मन्त्र शास्त्र से सम्बन्धित पाठ है ।

५४६. गुटका न० ४५—पत्र सख्या-६० । साइज-८×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । लेखन काल-× ।

पूर्ण ।

विशेष—पार्श्वनाथ स्तोत्र-संस्कृत, चेत्रपाल पूजा शनिश्चर स्तोत्र-हिन्दी आदि पाठ हैं ।

५४७. गुटका न० ४६—पत्र सख्या-१२ । साइज-५½×४½ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× ।

पूर्ण ।

विशेष—चानदास के पद हैं । कुल १५ पद हैं ।

५४८. गुटका न० ४७—पत्र सख्या-१६ । साइज-८½×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× ।

पूर्ण ।

विशेष—भुवनेश्वर स्तोत्र सोमकीर्ति कृत हैं ।

५४९ गुटका न० ४८—पत्र सख्या-३४ । साइज-६×८ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । लेखन काल-स० १८६० अषाढ शुदी ६ । पूर्ण ।

विशेष—ऋषि मङ्गल स्तोत्र तथा अन्य पाठ हैं ।

५५०. गुटका न० ४९—पत्र सख्या-२० से ६०, १७२ से २१२ । साइज-५×३½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—पंचस्तोत्र, पद्मावतीस्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र, पंचपरमेष्ठीस्तोत्र एवं वज्रपजरस्तोत्र (अपूर्ण) आदि हैं ।

५५१. गुटका न० ५०—पत्र संख्या-४ से २१० । साइज-६×४ इंच । मापा-हिन्दी संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र आदि का समग्र है ।

५५२. गुटका नं० ५१—पत्र संख्या २६ । साइज-५×३½ इंच । मापा-संस्कृत । विषय-समग्र । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र आदि के समग्र है गुटके के अधिकांश पत्र खाली है ।

५५३. गुटका न० ५२—पत्र संख्या-४० । साइज-७×५ इंच । मापा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—गुटका जल्दी में लिखा गया है । कोई उल्लेखनीय पाठ्य नहीं है ।

५५४ गुटका न० ५३—पत्र संख्या-६ । साइज-७×४½ इंच । मापा-संस्कृत लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र आदि का समग्र है ।

५५५ गुटका न० ५४—पत्र संख्या-६-२८४ । साइज-६½×४½ इंच । मापा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ में स्वर्ग लोक का वर्णन है और पीछे तत्त्वार्थ सूत्र के सूत्रों की हिन्दी टीका है । कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है ।

५५६. गुटका न० ५५—पत्र संख्या-२० । साइज-४×३½ इंच । मापा-संस्कृत । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—मत्तामर, पार्श्वनाथ, लक्ष्मीस्तोत्र आदि हैं ।

५५७ गुटका न० ५६—पत्र संख्या-४६ । साइज-७×५ । मापा-संस्कृत । लेखन काल-स० १६०३ । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठ समग्र है ।

५५८ गुटका न० ५७—पत्र संख्या-३-४६ । साइज-७×४ इंच । मापा-हिन्दी । विषय-समग्र लेखन काल-स० १६२३ । अपूर्ण ।

विशेष—उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

५५९ गुटका न० ५८—पत्र संख्या-८० । साइज-८½×६½ इंच । मापा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण एवं जीर्ण ।

विशेष—अत्र घसीट होने पढ़ने में नहीं आते हैं ।

५६० गुटका न० ५६—पत्र सख्या—८ से १७ । साइज-६ $\frac{1}{2}$ ×२ इंच । भाषा—संस्कृत, हिन्दी ।  
लेखन काल—X । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

विषय—सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
चौबीस तीर्थंकर पूजा	—	संस्कृत	—
सरस्वती जयमाल	—	”	—
अकृतिम जयमाल	—	”	—
परमज्योतिस्तोत्र	बनारसीदास	हिन्दी	—
मत्कामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत	—

५६१. गुटका न० ६०—पत्र सख्या—५ से ३८ । साइज—७×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।  
लेखन काल—X । अपूर्ण ।

विशेष—हितोपदेश की कथाएँ हैं ।

५६२ गुटका न० ६१—पत्र सख्या—१०३ । साइज—६×५ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।  
अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं तथा स्तोत्रों का संग्रह है ।

५६३. गुटका न० ६२—पत्र सख्या—१७ । साइज—६×५ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—स०  
१७५४ । अपूर्ण ।

विशेष—१ से १६ एव १०७ से आगे के पत्र नहीं हैं । निम्न विषयों का संग्रह है ।

विषय—सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
मट्टारक पट्टावली	—	हिन्दी	र. का स १७३३
कृष्णदास का रासो	—	”	र. का स. १७४६ ले. का १७५२
पर्वत पाटणी को रासो	—	”	ले. का स १७५४
बीचड रासो	—	हिन्दी	—
नवरत्न कवित	—	”	—

५६४. गुटका न० ६३—पत्र सख्या—६० से १०५ । साइज—७×५ $\frac{1}{2}$  इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन  
काल—स० १७६० माघ सुदी १५ । अपूर्ण ।

(१) भृगुहरि की वार्ता—पत्र संख्या-६० से ७८ । भाषा-हिन्दी गद्य । लेखन काल-स० १७६० माघ सुदी १५ । अपूर्ण

अन्तिम पाठ—भरथरी जी गोरखनाथजी का दरसण नै चालता रखा । प्रथी की भात्र सारो देखी करि व्रकत चीत हुयो । सारो जगत को सुख । हेद ताको सुध । त्रीणी पराजमन मो देखता थोर सुना मडल मे चित दीजो । इति भरथरी जी का वात संपूरण । पोथी मान स्वघ चत्रभुज का वेदा की लिखी जैराम काश्य वाचे जैराम । मी माघ सुदी १५ स० १७५० ।

(२) आसावरी की वात—पत्र स०-८० से १२५ । भाषा-हिन्दी गद्य । अपूर्ण ।

श्री गणेशई नीमो । अचै आसावरी की वात ऊतिपति वरण ववरणी जे छै । ईतरा मांही राणी के पुत्र हुवो । नाम सीधु नीसरथो । उद्याव हुवो जाति कर्म हुवो । दान पुनि वाजा छतोसु वाजवा लागा । नम्र माहै वृद्धाह घरि घरि हुवो । आवतै दीनि कन्या को जनम हुवो । पडिता नाम आसावरी काड्या । सिधि को वचन छै । सोई नाम जनम को नीसरथो । आसावरी देव अग्न्यरा को थोता हुई तदि आसावरी वरस छहकी हुई । तदि पठिवानै वैठी ।

५६५ गुटका न० ६४—पत्र संख्या-१३ । साइज-७ १/२ × ५ १/२ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-५ । पूण ।

विशेष—निम्न स्तनों का समग्र है—

विवाहार, एकीभाव एव भूपालचतुर्विंशति ।

५६६ गुटका न० ६५—पत्र संख्या-८५ । साइज-७ × ५ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल स० १७७६ । अपूर्ण ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
मान मञ्जरी	नन्ददाम	हिन्दी	अपूर्ण
जानकी जन्म लीला	वालवृन्द	”	पूर्ण ले० का० स० १७७६
सीता स्वयंवर लीला	तुलसीदास	”	माघ सुदी ६

आदि पाठ—गुर गणपति गिरजापति गौरी गिरा पति,

सारद सेष सुकवि श्रुति सत सरल मति ।

हाथ जोडि करि विनय सकल सिर नाऊ ,

श्री रघुपति विवा . जयामति मंगल गाऊ ॥१॥

सुम दिन रथ्यौ सुमंगल मंगल दाहक ।

सुनत श्रवन हिए वसहु सीय रघुनाइक ।

देस सुहावन पावन वेद वलानिये ।

मोमि तिलक सम तिरहुत त्रिभुवन मानिये ॥२॥

जानकी जन्म लीला—

आदि भाग—श्री रघुवर गुर चरन मनाऊ, जानकी जनम सुमगल गाऊ ।  
काम रहित सुधर्म जग जोहै, देस विरोहित तनु धरि सोहै ॥  
ता महि मिथुला पुरि सुहाई, मनउ ब्रह्म विद्या छवि छाई ॥२॥

अन्तिम पाठ—भये प्रगट भक्ति अनत हित द्रग दया अमृत रस भरे ।  
सफल सुरनर मुनिन केई है छिनहि सब कारिज सरे ॥३॥  
जै देवि दांनि सिरोमने करि, दया यह वर दीजिये ।  
सदा अपने चरनदास के दास हम कहें कीजिये ॥४॥

॥ इति श्री जालुकी जनम लीला स्वामी बालमन्दजी कृत संपूरन ॥ माह सुदी ६ सवत् १७७६

५६७. गुटका न० ६६—पत्र सख्या—०० । साहज—६३×२३ इत्थ । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—स०  
१०३४ पौष बुदी ३ । पूर्ण ।

विषय- सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
भूषाभूषण	महाराज जसवतसिंह	हिन्दी	पद्य स० २१०
छवितरंग	महाराजा रामसिंह	,,	पद्य स० ६४

प्रारम्भ—असुर कदन मोहन मदन वदन चद रघुनद ।

सिया सहित बसियो सुचित, जय जय मय आनद ॥१॥

यहां कवि की रीति प्रधानता करिकै राम जू सौ विषय होत है । ताते भाव धुनि । अरु प्रथम अनेक चरन अनेक  
बेर फिरत हैं ताते किति अनुप्रास चद रघुनंद यह रूपक ।

दोहा—आनदित बादत जगत सुख निकंद सिव नंद ।

माल चद तुव जपत ही दूरि होत दुख दद ॥ ॥

अन्तिम पाठ—परी परोसनि सौ अटक, चटक चहचही चाह ।

भरि मादों की चोधि को चंद निहारत नाह ॥६३॥

फड़क गुन दोहान के, वरने और अनूप ।

औसे ही सहृदय सबै औरौ लखौ अनूप ॥६४॥

इति श्री महाराजा रामसिंहजी विरचिते छवितरंग संपूर्ण ।

अष्टजाम	कवि देव	हिन्दी	पद्य स० १३१
श्रीषधि वर्णन	—	,,	—

ग्रपूर्ण ।

५६८ गुटका न० ६७—पत्र सख्या-५ से १२३ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-५ ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
कृष्णलीला वर्णन	—	हिन्दी	पत्र ५-१७
होली वर्णन	—	”	—
नारहमाता	—	”	पत्र सं० ७४ से ७७
रफूट पद	—	”	पत्र ७८ से १२३

५६९ गुटका न० ६८—पत्र सख्या-२२ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल- । पूर्ण ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
पीपाजी जी पत्रावलि	—	हिन्दी	—
धु चरित	सुखदेव	”	—
विनति	—	”	—
पत्रावती कथा	—	”	—

५७०. गुटका नं० ६९—पत्र सख्या-२४ । साइज-५½×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-५ ।

पूर्ण ।

विशेष—निम्न रचना है—

रूपय कुठार—रामभद्र हिन्दी ।

मध्यम भाग—कर्ती ही सो कीजियो करनी की कछु दौर ।

मो करनी जिन देखियो तो करनी को थोर ॥ २१ ॥

मो सो करनी कुटिल जग तो सो तारु ताज ।

यही मरोमो मोहि तो सरन गहे की लाज ॥ २२ ॥

इति श्रीमन् काम्यवनग्रन्थ नाथूल सगोत्रोत्पन्न गणेश मट्टात्मज रामभद्र मट्टेन . . . . . विरचिते

रूपय कुठार ग्रंथ सपूर्ण ॥

५७१. गुटका न० ७०—पत्र सख्या-५ । साइज-५×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-५ । ग्रपूर्ण ।

विशेष—सराज नामक ग्रंथ है ।

५७२ गुटका न० ७१—पत्र सख्या-५ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-स० १८२२

सं० २२ । पूर्ण । पत्र सख्या-२५ ।



विशेष—गुटके में नदराम पच्चीसी दी है । रचना स० १७४४ अथ नदराम पच्चीसी लिखते ।

दोहा—गनपति को ज मनाय हरि, रिद्ध सिद्ध के हेत ।  
 वाद वादनी मात तु, सुम अछिर बहु देत ॥  
 कछु कछो हू चाहत हू, तुम्हार पुनि प्रताप ।  
 ताहि सुण्या सुख उपजै, दया करो अब आप ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—नद खडेलवाल है अबावति कौ वासी ।  
 सुत बलिराम गोत है रावत मत है कृष्ण उपासी ॥ २४ ॥  
 सवत् सतरासै चवाला कातिक चन्द्र प्रकासा ।  
 नदराम कछु . . . . . ॥  
 कली व्योहार पच्चीसी वरनी जथा जोग मति तेरी ।  
 कलजुग की ज बानगी एहै है और रासी बहुतेरी ॥  
 राखे राम नाम या कलि मैं नद दासा ।  
 नदराम तुम सरनै आयो गायो अजब तमासा ॥ २५ ॥

इति श्री नदराम पच्चीसी सपूर्ण । सवत् १८१२ चैत बुदी १२ ।

५७३ गुटका न० ७२—पत्र सख्या-१६ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी लेखन काल-X ।

अपूर्ण ।

विशेष—कुछ हिन्दी के कवित्त हैं ।

५७४. गुटका न० ७३ पत्र सख्या-११-२६३ । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X अपूर्ण ।

विशेष—मुख्य रूप से निम्न पाठ हैं—

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
श्रीपाल रास	ब्रह्मरायमख	हिन्दी	ले. का. स. १८२५
मधु मालती कथा	चतुर्थुजदास	"	—
गोरख वचन	बनारसीदास	"	—
वैद्य लक्षण	"	"	—
शिव पच्चीसी	"	"	—
भवसिन्धु चतुर्दशी	"	"	—
ज्ञानपच्चीसी	"	"	—

तेरह काठिया	वनारसीदास	हिन्दी	—
ध्यान वत्तीसी	”	”	—
अध्यात्म वत्तीसी	”	”	—
सूक्ति मुक्तावली	”	”	—

मधु मालती कथा—

प्रथम—बरवीर चित नया वर पाउ', सखर पूत गणपत मनाऊ ।  
 चातुर हेत सहत रिभाऊ, सरस मालती मनोहर गाऊ ॥ १ ॥  
 लीलावती ललित ऐक देसा, चन्द्रसेन जिहा सुघड नरेसा ।  
 सुमग थाभिनी हो गगन प्रवेसा, मानू मडप रचो महेसा ॥ २ ॥  
 वसहपुर नगर जोजन चार, चौरासी चोहटा चोवार ।  
 अति त्रिविध दीमे नरनार मानू' तिलक मूम मभार ॥ २ ॥

मध्य भाग—वभावती निपुत मलियदा, ताको कवर नाम जसु चदा ।  
 वरस बीस ब्राह्मि मैं सोई, ताम पटतर अवर न कोई ॥  
 जास मत्र ग्रह कन्या सुन्दर, वरस अठारह माहि पुलदर ।  
 रूपरेख तसु नाम सोहै, जा देखे सुर नर मन मोहै ॥ ४५ ॥

अन्तिम पाठ—हम है काम अम अत्रतारी, इहै कछै कहै सोनी की न्यारी ।  
 औसे कही मधु नृप सुमभायो, राजा सुनत बहोत सुख पायो ॥  
 राज पाट मधुकर सब दीनों, चन्द्रसेन राजा तप लीनों ।  
 राजरिपनिय वोहत होई, उनकी तथा लख लही कोई ॥ ८२ ॥

दोहा—कायथ नैगमा कूल अहै, नाया सुत मए राम ।  
 तनय चतुर्भुज तास के, कथा प्रकासी ताम ॥ ८६३ ॥  
 अलख बधू दीठ दर्ई, काम प्रवध प्रकास ।  
 कवियन सु कर जोर करि, कहत चतुर्भुज दास ॥ ८६४ ॥  
 काम प्रवध प्रकास पुनी, मधू मालती विलास ।  
 प्रदु मनी का लाला इहै, कहत चतुर्भुज दास ॥ ८६५ ॥  
 वनासपति में अबफल, रस मे एक रसत ।  
 कथा मध्य मधु मालती षट् रति मधि बसत ॥ ८६६ ॥  
 लता मय्या पवग लता, सो धन मे धनसार ।  
 कथा मै मधु मालती, आभूषण मै हार ॥ ८६७ ॥

राजनीत कीया मैं साखी, पचाख्यान बुघ ईहां माषी ।  
 चरना ऐका चातुरी बनायी, थोरी थोरी सबहु आई ॥ ८६८ ॥  
 पुनि बसत राज रस गायो, यामै ईश्वर का मद भायो ।  
 ताका ऐह विलावसतारी, रसिकनि रसक श्रवन सुखकारी ॥ ८६९ ॥  
 रसिक होय सो रस कू चाहे, श्रध्यात्म श्रातम श्रवगाहे ।  
 चातुर पूरष होई है जोई, ईहे कल रस समझू सोई ॥ ८७० ॥  
 किसन देव को कु वर कहावै, प्रदुमन काम अस मधु गावै ।  
 पुत्र कलत्र सब सुख पावै, दुख दालिद्र रोग नहीं आवै ॥ ८७१ ॥

दोहा - राजा पट्टै ही राज नीत, मित्र पट्टै ताही वधू ।  
 कामी काम विलास रस, ग्यानी ज्ञान सरूप ॥ ८७३ ॥  
 सपूरन मधु मालती, कलस भयो सपूरण ।  
 सुरता वकता सवन कू, सुख दायक दुख दूर ॥ ८७४ ॥  
 कैसर कै पति सामजी, तीण उपगार माहारजै ।  
 कनक वदनी कामनी, तै पामा मै आजै ॥ ८७५ ॥

॥ इति श्री मधु मालती की कथा संपूर्ण ॥

फागुण बुदी ७ मंगलवार सवत् १८२५ का दसकत नन्दराम सेठी का ।

५७५ गुटका न० ७४—पत्र सख्या-३४ । साइज-७×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-स० १८७३

पूर्ण ।

विशेष—नन्ददास कृत मानमञ्जरी है । पद्य सख्या-२८६ है ।

प्रारम्भ—त नमामि पदम परम गुरु कृष्ण कमल दल नैन ।  
 जग कारण, करुणार्णव गोकुल जाकौ अैन ॥  
 नाम रूप गुण भेद लहि प्रगटत सब ही वोर ।  
 ता विन तहां अ आन कछु कहे सु अति वड वोर ॥

अन्तिम पाठ—

जुगल नाम—जुगल जुगम जुग द्वय द्वय उभय मिथुन विविवीप ।  
 जुगल किशोर सदा वसहु नददास कै द्वीप ॥८७॥

रस नाम—सरस्व मधु पुनि पुष्प रस कुस्म सार मकर ॥

रस के जाननहार जन सुनियै है आनद ॥८८॥

माला नाम—मालाष्टक ज गुणवती यह छ नाम की दाम ।

जो नर कठ करै सुनें हूँ है छवि की दाम ॥२८६॥

इति श्री मानमजरी नददास कृत सपूर्ण । सवत् १८७३ मगसिर बुदी १३ दीतवार ।

५७६ गुटका न० ७५—पत्र सख्या-६० ; साइज-६×४३ इञ्च । मापा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण

अशुद्ध ।

विशेष—साधु कवि की रचनाओं का संग्रह है । चरणदास को गुरु के रूप में कितने ही स्थानों पर स्मरण किया है । कोई उल्लेखनीय सामग्री नहीं है । प्रति अशुद्ध है ।

५७७ गुटका न० ७६—पत्र सख्या-२४ मे १८६ । साइज-६×३ इञ्च । मापा-हिन्दी । लेखन काल-×

अपूर्ण ।

विशेष—विविध पाठों का संग्रह है ।

५७८ गुटका न० ७७—पत्र सख्या-६२ । साइज-६×६ इञ्च । मापा-हिन्दी संस्कृत । लेखन काल-×

पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

दस अक्षरा, मुनि अहार लेता के पांच अर्थ, मनुष्य राशि मेद, सुमेरु गिरि प्रमाण, जम्बू दीपका वर्णन, शीत प्रमाद के मेद, जीव का मेद, अटार्ई द्वीप में मनुष्य राशि, अष्ट कर्म प्रकृति, विवाह विधि आदि ।

५७९ गुटका न० ७८—पत्र सख्या-१८ से २०४ । साइज-४×४ इञ्च । मापा-हिन्दी । विषय-संग्रह । लेखन काल-स० १७९६ फागुण बुदी ६ । अपूर्ण ।

(१) श्री धू चरित—हिन्दी । लेखन काल-स० १७९६ फागुण बुदी ६ ।

अन्तिम पाठ—राजा प्रजा पुत्र समाना, सकट दुखी न दीसै आना ।

राजनीति राजा छ वीचारै, स्वामी धरम प्रजापतिपासे ॥

चक्र सुदर्शन रखया करई, आग्या मग करत सिर हरई ।

ताते सबको आग्या करी, चक्र सुदर्शन कौ डर मारी ॥४॥

ऐसी विधि करै धू राज, हरि किया सरै सब काजू ।

घर में वन, वन में घर भाई, अतर नाही राम दुहाई ॥५॥

पानी तेल मिलै पुनि न्यारी, यो धू वरतौ राम पीयारी ।

परबनि पत्र मिलै नहीं पानी, येहि विधि वरतै दास वी रानी ॥६॥

उलठै मोल चलै जल मांही, यो हरि भगत भिषन हरि जाहि ।

जैसे सीप समद तै न्यारी, स्वांति बुंद वरषै सुय भारी ॥७॥  
 जैसे चद कमोद निमावै, जल में वसै अर प्रेम वढावै ।  
 जैसे कवल नीर तै न्यारो, अैसी विधि धू पीयारो ॥८॥  
 जैमे कनिक न काई लागै, अग्नि दीया तै बाती जागै ।  
 सुत लपेटि अग्नि में बीजै, मोहरै की सत्या नही छोड़ै ॥९॥  
 धू चरित जे फो सुनै, मन वच क्रम चित लाय ।  
 हरिपुरवै सब कामना, भक्ति मुक्ति फल पाय ॥१०॥  
 वसुधा सब कागद करूँ, सारदा लिखु बनाय ।  
 उदधि घोरि मसि कीजिये, धूमैह मान समाय ॥  
 मैं जानी मति आपनी, कलिप कही कछु बात ।  
 वक्तत सुत अपराध फो, जन गोपाल पित मात ॥११॥  
 इति धी धू चरित संपूरण समापता ।

(२) भक्ति भावती—(भक्तिभाव) हिन्दी

प्रारम्भ—सब सतन कौ नाय माया, जा प्रसाद तै मयो सुनाथा ।  
 भव जल पार गयौ की चाहै, तो संत चरन रज सीस चढावै ॥१॥  
 जे नारायण अतरजामी, सब की बुधि प्रकासक स्वामी !  
 तुम वाणी मैं प्रगटो आई, निर्वर्ति परवति देह चताई ॥२॥

दोहा—पर्म हस आस्वादित चरन, फंवल मकरद ।  
 नमो रामानद नमो अनतानंद ॥३॥  
 जे प्रवृत्ति को दुख नहि जानै, तो निवृत्ति सौ क्यौ मनमानै ।  
 कलि अग्यान मयौ विस्तारा, पुरव नही सचारा ॥४॥

अन्तिम—मगति भावती याको नामा, दुख खडन सब सुख विसरामा ।  
 सीखै सुयौर करै विचारा, तौ कलि कुसमल कौ ह्वै ख्यौ कारा ॥ २७५ ॥  
 अक्षय सुख नाही जायै केता, सु सुख पावै चाहै जेता ।

दोहा—जो बहू गुरु तै मति लहै बहू पडित बुझै होई ।  
 सो सब याही मै लहै जै निकै सोधै कोय ॥ २७६ ॥

चौपई—लरिका कछु वस्त जो पावै, ले माती आगे गुरारवै ।  
 मली बुरी वै लेहि पिछानी, यौ तुम आगै मैं यह आनी ॥ २७७ ॥  
 अथ वहेडो कहा तै करई, अपणौ फल ले आगै धरई ।  
 जैसी क्रिया तुम मोस्यु कीन्ही, तैसी मैं वाणी कहि दीन्ही ।

सवत् सौलहसै नत्र सालै, मथुरापुरी केसवा आलै ।  
 अमुन पहल ग्यारसि रविचारी, तहा पट पहर माहि विस्तारी ॥ २७६ ॥  
 करि जागरणै प्रकमा दीनी, तत्र ठाकरनै समरपण कीनी ।  
 भगत समेत सतोले सोई, ज्यौ तो तद वचन सुन कै सुख होई ॥ २७७ ॥

दीहा—नमह राम रामनदा, नमह अर्नतानद ।  
 चरन कवल रज सिर वरै, पर पनगै सानद ॥ २७८ ॥  
 ॥ इति श्री भगति भावती प्रथम पाप्ता ॥

(३) राजा चंद्र की कथा—पत्र संख्या—१:१-२०४ । भाषा—हिन्दी । रचना काल—स०  
 १६६३ फागुण सुदी २ ।

विशेष—राजा चंद्र आमानेरी की कथा है । चन्दन मलयगिरी कथा भी इसका दूसरा नाम है ।

५८० गुटका नं० ७६—पत्र संख्या—२-२२ । साइज—६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।  
 अपूर्ण ।

विशेष—चरनदास कृत सतगुरु महिमा है—प्रथम व अन्तिम पत्र नहीं हैं ।

प्रारम्भ — " " " " ।

सुख देव जी पूरन विसवा वीस ।  
 परम ईस तारन तरन गुरु देवन गुरु देवा ।  
 अनमै बानी दीजिए सहजो पात्रे भेवा ।  
 नमो नमो गुर देवन देवा ॥

५८१ गुटका नं० ८०—पत्र संख्या—३० । साइज—७×५ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X ।  
 पूर्ण ।

विशेष—तीर्थकरों के माता, पिता, गणेश्वर, अश नाम आदि का पश्चिम, नन्दीश्वर पूजा तथा जीव आदि के  
 भेदों का वर्णन किया गया है ।

५८२. गुटका नं० ८१—पत्र संख्या—२४ । साइज—८×५ इंच । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—X । पूर्ण ।

विशेष—पंचमंगल, सिद्धपूजा—मोलह कारण, दशलक्षण, पंचमेरु पूजा आदि का सग्रह है ।

५८३. गुटका नं० ८२—पत्र संख्या—१०२ । साइज—६×५ इंच । भाषा—प्राकृत—हिन्दी । लेखनकाल—X ।  
 अपूर्ण ।

विशेष—आचार्य कुन्दकुन्द कृत समयसार गाथा मात्र है, ब्रह्मवल विचार आदि पाठों का संग्रह है ।

५८४ गुटका न० ८३—पत्र सख्या-२३-५७ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।

अपूर्ण ।

विशेष—नारायण लीला के हिन्दी के २५६ पद्य हैं लेकिन वे कहीं २ अपूर्ण हैं ।

५८५. गुटका नं० ८४—पत्र सख्या-४० । साइज-७×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।

अपूर्ण ।

विशेष—गुटके में कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

५८६ गुटका न० ८५—पत्र सख्या-८५ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण ।

विशेष—शीलकथा-(भारामल्ल,) लावणी तथा समाधिमरण भाषा का संग्रह है ।

५८७. गुटका न० ८६—पत्र सख्या-२२ । साइज-६×४ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X । अपूर्ण

विशेष—विभिन्न चक्र दिये हुए हैं जो भिन्न २ कार्य पृच्छा से सम्बन्धित हैं । आगे उनके अलग २ फल लखे हुए हैं ।

५८८. गुटका न० ८७—पत्र सख्या-१० । साइज-६½×४½ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।

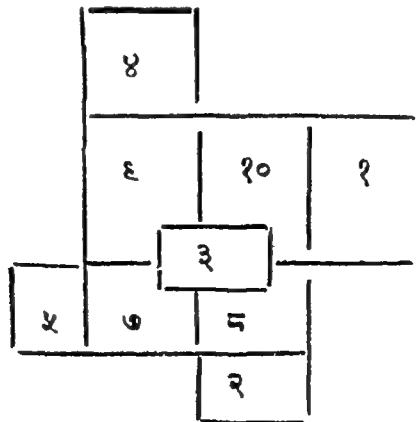
अपूर्ण ।

विशेष—मोह मर्दन कथा है । रचना काल-स० १७६३ कार्तिक बुदी १२ है । जीर्ण तथा अशुद्ध प्रति है ।

५८९. गुटका न० ८८—पत्र सख्या-१४६ । साइज-५×५ इंच । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । लेखन

काल-X ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, सिद्धप्रियस्तोत्र, पार्श्वनाथस्तोत्र (पञ्चप्रम), त्रिषापहारस्तोत्र, परमज्योतिस्तोत्र, आयुर्वेदिक चुसखे, रत्नत्रय पूजा आदि पाठों का संग्रह है । बीसा यत्र भी है जो निम्न प्रकार है—



५६० गुटका न० ८६—पत्र संख्या-६१ से १७१। साइज-५×३ इंच। मापा-संस्कृत। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—ज्वालामालिनीस्तोत्र, चक्रेश्वरीस्तोत्र, पार्व्वनाथस्तोत्र, क्षेत्रपालस्तोत्र, परमानन्दस्तोत्र, लक्ष्मी-स्तोत्र, चैतनवधस्तोत्र, शांतिकरस्तोत्र-(प्राकृत), चिन्तामणिस्तोत्र, पुण्डरीकस्तोत्र, भयहरस्तोत्र, उपसर्गहरस्तोत्र, सामायिक पाठ, जिन सहस्र नाम स्तोत्र आदि स्तोत्रों का संग्रह है।

५६१ गुटका न० ६०—पत्र संख्या-६८। साइज-५×३ इंच। मापा-संस्कृत। लेखन काल-स० १८६६। पूर्ण।

विशेष—निम्न संग्रह हैं—

न्हवण, सकलीकरणविधान, पुण्याहवाचन और याग मंडल।

५६२ गुटका न० ६१—पत्र संख्या-६०। साइज-५×४ इंच। मापा-संस्कृत। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

५६३. गुटका नं० ६२—पत्र संख्या-७१। साइज-५×४ इंच। मापा-संस्कृत। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—अधिकांशतः नन्ददास के हिन्दी पदों का संग्रह है। कुछ पद सुरदास के भी हैं। राधाकृष्ण से संबंधित पद हैं। पदों की संख्या १५० से अधिक है।

५६४ गुटका न० ६३—पत्र संख्या-१६१। साइज-५×४ इंच। मापा-हिन्दी। लेखन काल-सं० १७६३ वैशाख सुदी २। पूर्ण।

विशेष—नेमीश्वररास, श्रीपालरास ( ब्रह्मरायमल्ल ) हैं।

५६५. गुटका न० ६४—पत्र संख्या-२३ से ५४। साइज-४ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच। मापा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है।

५६६. गुटका न० ६५—पत्र संख्या-१४०। साइज-४ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इंच। मापा-संस्कृत। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—अ्योतिष शास्त्र से संबंध रखने वाले पाठ हैं।

५६७. गुटका न० ६६—पत्र संख्या-२६। साइज-१×४ इंच। मापा-हिन्दी। लेखन काल-×। अपूर्ण।

विशेष—पदों का संग्रह है।



५६८. गुटका न० ६७—पत्र सख्या-२७६ । साइज-७X४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।  
अपूर्ण एव जीर्ण ।

विशेष—२ गुटकों का सम्मिश्रण है । मुख्यत निम्न पाठों का सग्रह है ।

विषय-सूचा	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
( १ ) शालिमद्र चौपई	जिनराज सूरि	हिन्दी	२० का० स० १६७८ आसोज बुदी ६

प्रारम्भ—सासण नायक समरियइ, वद्धमान जिनचद ।

अस्मिन् विघन दुरइ हरइ, आपइ परमानद ॥१॥

अन्तिम पाठ—साधु चरित कहवा मन तरसइ, तिणए मास्यउ हरसइजी ।

सोलह सय अठितरि वरसइ, आसू वदि छठि दिवसइजी ॥

सा० जिनसिंह सूरि मतिसारइ भवियण नइ उपगारइ जी ।

श्री जिनराज वचन अनुसारइ, चरित कश्चउ रु विचारइजी ॥

इणि परिसाधु तणा गुण गावइ, जे भवियण मन भावइजी ।

अलिप विघन तसु दूरि पुलावइ मन वञ्चित सुख पावइजी ॥१०॥

ए सवध भविक जे मणिस्यइ, एक मना सामलिस्यइजी ।

दुख दुइ गतस दूरि गयावस्यइ, मनि वञ्चित फल लहिस्यइ जी ॥११॥

( २ ) शीतलनाथ स्तवन	धनराजजी के शिष्य हरखचद	हिन्दी	२० का० स० १७१६ कार्तिक सुदी १५
( ३ ) पार्श्व स्तोत्र	”	”	२० का० स० १७४४ कार्तिक सुदी ५
( ४ ) नेमिनाथ स्तोत्र	—	”	२० का० स० १७१३
( ५ ) पदसग्रह	”	”	२० का० स० १७५८
( ६ ) नेमिनाथ स्तवन	धनराज	”	२० का० स० १७४८
( ७ ) चिन्तामणि जन्मोत्पत्ति जन्मोत्सव स्वध्याय	—	”	—
( ८ ) गणनायक क्षेमकरणा जन्मोत्पत्ति	धर्मसिंह सूरि	”	२० का० स० १७६६ माघ सुदी
( ९ ) पुण्यसार कथा	( पुण्यकीर्ति )	”	२० का० स० १७६६

प्रारम्भ—नामि राय नदन नमु, साति नेमि जिन पाशि ।

महावीर चउवीसमउ प्रणम्या पुरइ आस ॥१॥

श्री गौतम गणधर सदा, लीला लब्धि निधान ।  
समरी सह गुर सरस्वती, वेपिष वधारइ वान ॥२॥

अतिम पाठ—खरतर गछ मति महिय विरजिउ, युग प्रधान जिनवद ।

आचारज मिहमागिर मुनि वरूप, श्री जिनसिंह सुरद ॥२००॥

हर्षचन्द्र गणि हर्ष हितरू, वाचक हस प्रमोद ।

तासु सीस पून्यकीरत इम माथइ, मन धर अणक प्रमोद ॥२॥

सवत् सोलह सइ छासट्टि समइ विजय दसमी गुरुवार ।

सांगानेर नगर रलिया मणउ, पमययउ एइ विचार ॥२॥

पञ्चप्रम जिन सुपसाउलउ, दोष दोह गत जा दिन ।

उदय वढ्डी मणउ, सुख सपद संतान ॥३॥

एह चरित्र मवियन जे सामलइ दुख दोह गतसु जाइ दीन ।

उदय अद्वकउ न तरुवइ, तसघरन वनि बथाइ ॥४॥

इति अष्ट प्रवचन माता उपर पुण्यसार कथा सपूर्ण ।

(१०) सीमधर स्वामी जिन स्तुति	—	हिन्दा	विरोध
(११) छ जीव कथा	—	”	—
विशेष—४५ पद्य के आगे = पत्र किसी के द्वारा फाड दिए गये हैं ।			

(१२) श्रावक सूत्र ( प्रतिक्रमण )	—	प्राकृत	—
(१३) अतिचार वर्याण	—	”	—
(१४) नेम गीत	लब्धिविजय	हिन्दी	—
(१५) स्तवन	—	”	—
(१६) सीमधर स्तवन	गणिलाल चद	”	—
(१७) चउसरण परिकरण	—	”	—
(१८) भक्तामरस्तोत्र	—	”	—
(१९) नवतत्व	—	”	—
(२०) नेमिराजुलस्तवन	जिनहर्ष	”	—
(२१) नेमि राजुल गीत	—	”	—
(२२) सुमद्रासती सञ्जाय	—	”	—
(२३) विजय सेठ विजया सेठाणी सञ्जाय	सूरिहर्षकीति	”	—
(२४) पद—करि अरिहतनी चाकरी	जिनवल्लभ	”	—

(२५) सञ्ज्ञाय	—	”	ले० का० सं० १७८१
(२६) पचाख्यान पचतत्र )	कवि निर्मलदास	”	—

प्रारम्भ—प्रथम जपु अरिहंत, अग द्वादश जु भावधर ।  
 गणधर गुरु सञ्जत, नमो प्रति गणधर तिसतर ॥  
 नमो गणेश सारदा अवर गुरु गोत्तम स्वामी ।  
 तीर्थकर चौबीस सकल मुनि मए शिवगामी ॥  
 नमो न्याति श्रावक सकल रस हाय मिल भविक सम ।  
 तुम्हरे प्रसाद यह उच्चरो पचतत्र की कथा अत्र ॥  
 पचख्यान वखानि हो न्याय नीति ससार ।  
 अल्प बुद्धि भाषा रञ्ज करू ग्रन्थ विस्तार ॥१॥

अन्तिम पाठ—राम नाम निज हीरदै धरै, मुख तै मिष्ट वचन उचरै ।  
 सब जिय, सुख सौ अपनै थान, सदा कहै निज मन मे ग्यान ।

दोहा—सम निज थानक सुख लनै, सब मुख सुमरै राम ।  
 सहस किरत भाषा कियो श्रावक निरमल नाम ॥

इति श्री पचाख्यान श्रावक निरमल दास कृत भाषा सपूर्ण । लेखन काल सं० १७५४ जेठ सुदी ५ । अथ ५१, पत्रों में है । तथा ११४१ पद्य हैं ।

(२७) सात व्यसन सिञ्ज्ञाय	वेम कुशल	हिन्दी	—
(२८) ज्ञान पच्चीसी	—	”	—
(२९) तमाखु गीत	सहसकर्ण	”	—
(३०) नल दमयन्ती चौपई	समयसुन्दर	”	१० का० सं० १७२१ पद्य सं० १०
(३१) शांति नाथ स्तवन	केशव	”	—
३१ क पार्श्वनाथ स्तवन	—	”	—
(३२) महावीर स्तवन	—	”	—
(३३) राजमती नो चिट्ठी	—	”	—
(३४) नववाडी नो सिञ्ज्ञाय	—	”	—
(३५) शीलरासो	विजयदेव सूरि	”	पद्य सं० ७६
(३६) दान शील चौपई	जिनदत्त सूरि	”	ले० का० सं० १७४२
(३७) प्रमादी गीत	गोपालदास	”	२५ पद्य

(३८) आत्म उपदेश गीत	समय सुन्दर	”	—
(३९) यादुरासो	गोपालदास	”	—
(४०) रात्रिमोजन सव्भाय	—	”	—
(४१) तमास्तु गीत	मुनि आणद	”	—
(४२) शांति नाथ स्तवन	गुण सागर	”	—
(४३) पंच सहेली	छीहल	”	१० का० सं० १५७५ फागुण सुदी १५
(४४) माति छचीसी	यश क्रीति	”	१० का० सं० १६८८
(४५) यादवरासो	पुण्य रतन गणि	”	१० का० सं० १७०३
(४६) सिंहासन वचीसी	—	”	१० का० सं० १६३६
(४७) नेमिराजमतिगीत	—	”	—
(४८) मुनिगीत	—	”	—
(४९) मास	मनहरण	”	१० का० सं० १७३५
(५०) सिंघासन वचीसी	हरि कलश	”	१० का० सं० १६३२ आसोज बुदी २

५६६. गुटका न० ६८—पत्र सख्या-१७४। साहज-६३×७ इञ्च। मापा-हिन्दी। लेखन काल-स० १७२८ वैशाख सुदी ६। पूर्ण।

विशेष—पर्वतधर्माथीं कृत समाधितय की बाल बोध टीका है। प्रति जीर्ण है।

६०० गुटका न० ६९—पत्र सख्या-१४६। साहज-१०×२ ३/४ इञ्च। मापा-संस्कृत। लेखन काल-स० १७६७ वैशाख बुदी ३। पूर्ण।

विशेष—निम्न पाठों का समग्र है —

विषय-सूची	कर्ता का नाम	मापा	विशेष
जिनसहस्रस्तवन	आशाधर	संस्कृत	—
नवग्रहपूजाविधान	—	”	—
ऋषिमण्डलस्तोत्र	—	”	—
भूपाल चौबीसी	भूपाल कवि	”	—
आदित्यवार कथा	माउं कवि	हिन्दी	५६ पद्य
मामाधिक पाठ टीका सहित	जयचंदजी छाबडा	”	—

६०१. गुटका न० १००—पत्र सख्या-०८ । साइज-१०×७ इञ्च । भाषा-प्राकृत-हिन्दी । लेखन काल-स० १७०६ वैशाख जुदी ११ । पूर्ण ।

विशेष—गुणचन्द्र सूरि के शिष्य छात्र कल्याण कीर्ति ने प्रतिलिपि की थी । त्रिभगी का वर्णन है ।

६०२. गुटका न० १०१—पत्र सख्या-१०२ । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-१८०० । अपूर्ण ।

विशेष—लक्ष्मीदास कृत श्रेणिक चरित्र है । भाषा-हिन्दी है । कुल पद्यों की सख्या १६७५ है, अन्तिम के कुछ पद्य नहीं हैं । श्रेणिक चरित्र के मूलकर्ता म० शुभचन्द्र हैं ।

६०३ गुटका न० १०२—पत्र सख्या-८० । साइज-१०×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-स० १६८८ । पूर्ण ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
पद	मघपति राइ हूगर श्री जेण सासण सकल सुह गुर गिर दे राउर माव ।	हिन्दी	—
पद	— कुशल करि कुशल करि कुसल सुरिंद गुरु ।	”	—
पद	कालक सूरि जय जय भदा जय जय नदा वनिता वचन विकासहरे ।	”	—
मण्डितार गीत	ऋवि वीर वीर जी वयणे विरचीया, श्रेणिक मन माहि सोइ ।	”	—
गीत	— करि श्रु गार पहिर हार तजि विकार कामनी ।	”	—
जइतपद वेलि	कनकसोम	”	४६ पद्य हैं ।

१० का० स० १६२५, ले० का० सं० १६४८ मादवा वृदी ८ ।

प्रारम्भ—सरसति सामणि वीनवृ, मुभ दे अमृत वाणि ।

मूलथकी खरतरतणा, करिस्थू विरद वखान ॥१॥

श्रावक श्रावी मिलि सुणउ मनि धरि अति आणद ।

चित्ति विष वादन कों धरउ, साचउ कहर मुनिद ॥२॥

सोलह पचीसइ समइ, वाचक दया मुनीस ।

चउमामि आया आगरइ, बहुयरि करि सुजगीस ॥३॥

रतनचन्द्र वहरागि गणि, पडित साधु कीरति ।

हरिरंग गुण आगलउ ज्ञानादेवकी रति ॥४॥

अन्तिम पाठ—दया अमर माथिक गुरु सीस, साधु कीरति लहीय जगीस ।

मुनि कनक सोम इम आखइ चउ विह श्री सघ की सालइ ॥४६॥

इति श्री जइत पद वेलि । सवत् १६४८ वर्ये अषाढ बुदी अष्टर्मा ।

( ६ ) चूनडी	साधुकीचि	हिन्दी	—
( षाउलपुरि सोहामणउ, गढ मढ मन्दिर वार्ई हो )			
( ७ ) मजारी गीत	जिनचन्द्र सूरि	"	—
आली गारउ उदिरउ, नित खेलइ आलि ।			
( ८ ) वहरागी गीत	—	"	—
( ९ ) शील गीत	भारवदास	"	—
( १० ) पद	—	"	—
( ११ ) दानशीलतपभावना	—	हिन्दी	१४ पद्य हैं ।
सरसति स्वामिणि वीजवु नरदेई सारदा मोहि हो ।			
( १२ ) गोरी काली वाद	—	"	—
( १३ ) श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र	—	प्राकृत	—
( १४ ) पार्श्वनाथ नमस्कार	अमयदेव	"	—
( १५ ) रागरागिनी भेद, सगीत भेद	—	हिन्दी	—
( १६ ) नेमिनाथ स्तवन	—	"	—

प्रारम्भ—श्री सहगुरना पाय नमी, जिणवाणी पणमेवि ।

नय भव नेमीसर तणा सपेपइ पभणेछु ।

सील सिरोमणि गुण निलउ, जादव कुल सिणगार ।

छुणता तेह तण उचरी, पामीजइ भवपार ॥२॥

अन्त—इय नेमि जिण जगदीस गुरु, पाम सिव लछी वरो ।

हरिवस खीर समुद्र ससिहर साभि छुह सपइ करो ।

उदाम काम कुरग केसरि, सिवादेवि नंदणउ ॥

मह देहि नीय पइ कमल सेवा, सयल जण आणंदणो ॥४३॥

( १७ ) वेताल पच्चीसी

वेतालदास

हिन्दी

प्रारम्भ—सरसति सुललित वचन विलास, आपउ सेवक पूरइ आस ।  
 तुम्ह पसाइ हुअइ बुद्धि विशाल, कविता रसके रुवउ रसाल ।  
 महियल मालव देस विख्यात, धरमी लोक विसन नहीं सात ।  
 उज्जैणी नगरी सु विसाल, राज करइ विक्रम भूपाल ॥२॥

अन्तिम—प्रगट हुई सर्व सिधि रिधि बहु बुधि नरेसर ।  
 सरउ काज तुम्हि करउ राज, जाम तपइ दिणैसार ॥  
 इद्रइ दीधउ मान बली, वरदान इसी परि ।  
 ए प्रबध तुम्ह तणउ प्रसिधि होसी जग भीतरि ॥  
 रंजउ राउ सुपसाउ लहि विक्रमा इत आव्यउ धरहि ।  
 उज्जैण नगरि उछव हुय हरष करी अति विस्तरिहि ॥३६७॥  
 राज रिधि सब सिधि सुबस विस्तरइ महीतलि ।  
 जरा मरण अवहरण, जन्म लब्धइ उत्तिम कुलि ॥  
 धरम धराढ धरण करण सुख अहि निसि ।  
 रमण रूपि रमा समाण, तिजि माण हुउ वसि ॥  
 चिहु पदहि प्रथम अचर करी, जास नाम अछइ प्रसिद्धि ।  
 तिणि कही कथा पच वीसए सरस वाचउ विबुध ॥३६७॥  
 इति वेतालपचीसी चउपई समाप्त ।

(१=) विक्रमप्रबन्ध रास

विनयसमुद्र

हिन्दी

१० का० स० १५०३

१३६४ पय हैं ।

प्रारम्भ—देव सरसति २ प्रथम पणवेवि, वीणा पुस्तक धारिणी ।  
 चद्र विहसि सु प्रससि बल्लइ कासमीरपुर वासिणी ॥  
 देइ नांण अनाण पिल्लइ कवियणनी माडली दिउ मुभु बुधि विशाल ।  
 जिम विक्रम राजा तणउ कहउ प्रबन्ध रसाल ॥१॥

मध्य भाग—विक्रमा दत्य तेज आदित्य बोलइ वचन करइ ते सत्य ।  
 बलि मागइ बीजउ आदेस खम नयारि करि वेग प्रवेश ॥२४२॥  
 श्री जयकर्ण राय मेघरे वीजीमि चडि साहस करे ।  
 पेटी आणि वेगि तिहा जाइ, राजा चाल्यु करि समदाइ ॥२४६॥

अन्तिम भाग—सवत पनरह सई त्रासीयइ, ए चरित्र निसुणी हरि सीयइ ।  
 साहसीक जे होइ निसकि, कायर कपइ जे बलि रकि ।

श्री उवपुसगद्य गण वर सूरि, चरण करण गुण किरण मयूर ।  
 रयण प्रणु गुणगण मूरि, तसु अंतुकमि जपइ सिद्धसूरि ॥६७॥  
 तेह नइ वाचरु हर्ष समुद्र तसु जसु उजल वीर समुद्र ।  
 तसु विनये विन या वृद्धि एह, रच्यु प्रवधि निरपि तंगेह ।  
 पच डड नामा सुचिरित्र, देखी बेहनउ आवि विचित्र ।  
 तिणि विनोद चउपई रसाल, कीधी सुगता सुख रमाल ॥४६६॥

(१६) विद्याविलाम चउपई आझासु दर

हिन्दी ३६४ पद्य है ।

रचना काल स० १५१६

प्रारम्भ—गोयम गणहर पाय नमी सरसति द्वियइ धरेवि ।  
 विद्या विलास नखइ तणउ, चरिय मणु सखेवि ॥१॥  
 जिम जिम समालियइ श्रवणि पुण्य पवित्र चरित्र ।  
 तिम तिम परमाणद रम अहनिमि विलसइ चित्त ॥२॥  
 भग कण कचण सुयण जण राणिम मोग विलास ।  
 मन बद्धित सुख सपजइ जसु हुय पुण्य प्रकाश ॥३॥

चउपई—पुण्य पमाई पाम्यउ राज, पुण्य प्रमाणि चख्या सविकाज ।  
 धन वन विद्या विलासंहचरी, तेहिय निमणउ आदर करी ॥४॥

मध्य भाग—रुमलवती पुत्री तणउ पाणि ग्रहण करत ।  
 तउमु तउ नरवइ सुणउ वाचा श्ररणहु त ॥६८॥

अन्तिम पाठ—इण परि पूरउ पाली आउ, देवलोकि पहुतउ नरराउ ।  
 खरतर गच्छि जिन वरदन मूरि, तासु सीस ऋहु आणठ पूरि ॥  
 श्री आझासु दर वमु वञ्जाय, नव रस किद्ध प्रवध सुमाव ।  
 सवत् पनरह सोल वरसमि सध वयणिपुविय मुरम्म ॥  
 विद्या विलास नरिद चरित्त, मत्रिय लोय एह पवित्त ।  
 जे नर पदइ सुणइ सामलइ, पुण्य प्रमात्र मनोरव फलइ ॥३६९॥  
 इति श्री विद्या विलाम चउपई ।

(२०) माठि सवत्सरी

हिन्दी

स० १६४८ मे स० १६६० का वर्णन है । विषय—ज्योतिष ।

६०४ गुटका न० १०३—पत्र सख्या-७५ । माइज-७५५ इत्र । मांवा-हिन्दी । लेखन काल-X । पूर्ण  
 विशेष—कर्मों की १४८ प्रकृतियों तथा चौबीस दंडकों का वर्णन है ।



६०५. गुटका न० १०४—पत्र सख्या-३३ । साइज-८×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण

विशेष—सकलीकरणविधान, न्हवनविधि, तथा पूजा समग्र है ।

६०६ गुटका न० १०५—पत्र सख्या-१२० । साइज-५ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—नित्य नियम पूजार्ये आदि हैं ।

६०७. गुटका न० १०६—पत्र सख्या-२१८ । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—पूजा समग्र है ।

६०८. गुटका न० १०७—पत्र सख्या-२५५ । साइज-५ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ समग्र है ।

६०९ गुटका न० १०८—पत्र सख्या-२०० । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) यशोधर चरित्र	खुशालचंद	हिन्दी	१० का० न० १७५ पृष्ठ ५६६
(२) सप्तपरमस्थानकथा	”	”	— पृष्ठ स० = ३ लेखनकाल
(३) मुकुटसप्तमीव्रतकथा	”	”	स० १=३६ पृष्ठ स० ५२
(४) मेघमालाव्रतकथा	”	”	स० १=३० पृष्ठ ४४
(५) चन्दनषट्ठिव्रतकथा	”	”	”
(६) लब्धिविधानव्रतकथा	”	”	”
(७) जिनपूजापुरंदरकथा	”	”	”
(८) षोडशकरणव्रतकथा	”	”	”
(९) पठ ( ५ )	”	”	”
(१०) रूपचंद की जखडी	रूपचंद	”	१=३०
(११) पृकीभावस्तोत्रभाषा	धानतराय	”	१=३१ वैशाख बुदी ३
(१२) भक्तामरस्तोत्रभाषा	—	”	”
(१३) कल्याणमंदिरभाषा	—	”	”
(१४) शनिश्चर देव की कथा	—	”	१=७४ जेठ सुदी १५

(१५) आदित्यवार कथा	भाऊ	हिन्दी	१=७४ आषाढ सुदी ४
१६) नेमिनाथ चरित्र	अजयराज	"	

पथ संख्या—०६४ । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । रचना काल—स० १७६३ अषाढ सुदी १३ । लेखन काल—  
स० १७८८ चैत्र सुदी ८ ।

प्रारम्भ—श्री जिनवर बंदो सर्वे, आदि अत चवर्वासै ।

ज्ञान पु जि गुण सागिखा, नमो त्रिभुवन का ईस ॥१॥

तामै नमि जिर्णद को बंदो बारवार ।

तास चरित वखाणिस्यो, तुछ बुधि अजुसार ॥२॥

मध्य भाग—जो होइ वियोग तिहारो, निरफल हूँ जनम हमारो ।

तातै सजम अथ तजिए ससार तणां सुख मजिए ॥

जल विन मीन जिव किम मीन, तैसे हूँ तुम आर्वांन ।

तुम भाव दया मी कीन्हा, सब जीव छुडार्ई जी ॥

अन्तिम भाग—अजयराज इह कीयो वखाण, राज सवाई जयभिद जाण ।

अवावती सह्रै सुभ धान, जिन मन्दि-र जिम देव विमाण ॥

नीर निवाण सोहै वन राई, बेलि गुलाब चमेली जाइ ।

चपो मरवो अरै सेवति, यो हौ जाति नाना विध कीर्ता ॥३५॥

बहु मेवा विधि सार, वरणत मोहि लागै बार ।

गढ मन्दिर कछु कछो न जाइ, सुखिया लौंग वसे अधिहार ॥३६॥

तामै जिन मन्दिर इन सार, तहां विराजै श्री नेमिकुमार ।

स्याम मूर्ति सोभा अति घणी, ताकी वांपमा जाइ न गर्णा ॥३७॥

जाकै भाग उदै सुभ होइ, करि दरसण हरषै भेट सोई ।

आवै जातै सरावग धणा, काटै कर्म सबै आपणा ॥३८॥

अजैराज तहां पूजा कराई, मन वच तन अति हरष धराई ।

निति प्रति बदै ते बारवार, तारण तरण कहै मव पार ॥३९॥

ताकौ चरित कछो मन अपणा बुधि सारू उपजाई ।

पडित पुरुष हसो मति कोई, भूल चूक यामै जो होई ॥४०॥

सवत् सतरासै त्रैणवै, मास असाढ पाई वर्णयो ।

तिथि तेरस अघेरी पाख, शुक्रवार शुभ उतिम दाख ॥

इति श्री नेमिनाथजी की चौपई संपूर्ण ।

इह पोथी है साह की, चुहड माल तसु नाम ।

मान महातमा लिपि करी, नगर अबावती धाम ॥

इसके अतिरिक्त चौबीस तीर्थंकर स्तुति एव कक्का बचीसी आदि पाठ और हैं ।

६१०. गुटका न० १०६—पत्र सख्या-१६४ । साइज-५३×४३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× ।

पूर्ण ।

विशेष—सुदर्शन रास—पद्य सख्या २०१ । लेखन काल-स० १८०१ कार्तिक सुदी = । पूर्ण ।

इसके अतिरिक्त १० और पाठ हैं ।

६११ गुटका न० ११०—पत्र सख्या-१२० । साइज-६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठों का समग्र है ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
ढडाण्यागीत	—	हिन्दी	—
शिवपञ्चीसी	बनारसीदास	”	—
समवशरणस्तोत्र	—	संस्कृत	—
पचेन्द्रियबेलि	ठक्कुरसी	हिन्दी	—
पद	सुन्दर	”	—
बचीसी	मनराम	”	—

अत में बहुतसी जन्मकु डलियां दी हुई हैं ।

६१२ गुटका न० १११—पत्र सख्या-५ से १०४ । साइज-६×४३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
जिनसहस्रनाम भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	—
एकीभावस्तोत्र भाषा	जगजीवन	”	—
भक्तामरस्तोत्र	हेमराज	”	—
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	बनारसीदास	”	—
पद	दीपचद	”	—

सेवा में जाय सोही सफल घडी ।

पद

—

”

—

मेरे तो यह चाव है निति दरसण पाउ ।

पद	कनककीर्ति	”	—
	अवगुनहु भक्तसो नाथ मेरो ।		
पद	धानत	”	—
	सुमरण ही में त्यारो धानत प्रभू		
पद	मनराम	”	—
	अश्वियां आज पवित्र मई मेरी		
पद	सोभा कही न जिनवर जाय जिनवर मूरति तेरी		

इस तरह के २२ पद्य और हैं ।

त्रेपन क्रिया	ब्रह्मगुलाल	”	—
पंचमकाल का गण मेढ	रमचद	”	—

६१३. गुटका न० ११२—पत्र सख्या-३० । माहज-६×४ इञ्च । मापा-हिन्दी । लेखन काल-स० १=६  
क्रांतिक सुदी ११ । पूर्ण ।

विशेष—गुणविवेक तार नियाणी है ।

६१४ गुटका न० ११३—पत्र सख्या-४६ । माहज-१×४ इञ्च । मापा-हिन्दी संस्कृत । लेखन काल-४ ।  
पूर्ण ।

विशेष—संबोधपत्रिका भाषा, चारह भावना, एवं पंचपरमेष्ठियों के मूल गुण आदि का वर्णन है ।

६१५. गुटका न० ११४—पत्र सख्या-५४ । माहज-१×४ इञ्च । मापा-हिन्दी संस्कृत । लेखन  
काल-४ । अपूर्ण ।

विशेष—त्रेपन भावों का वर्णन, नरकों के दोहे, भक्तामर आदि सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६१६ गुटका न० ११५—पत्र सख्या-६७ । माहज-६×५ इञ्च । मापा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन  
काल-४ । पूर्ण ।

विशेष—नित्य नियम पूजा, चौबीसठाणा चर्चा, समाधिक पाठ आदि का संग्रह है ।

६१७ गुटका न० ११६—पत्र सख्या-३७ । माहज-१×४ इञ्च । मापा-हिन्दी । लेखन काल-४ ।  
पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

प्रिय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
जिनकृशालमूरि छंद	—	हिन्दी	—
स्तवन	जिनकृशालमूरि	”	—

गगाष्टक	शकराचार्य	संस्कृत	—
जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	"	—
रगनाथ स्तोत्र	—	"	—
गोविन्दाष्टक	शकराचार्य	"	—

६१८. गुटका न० ११७—पत्र सख्या-६६ । साइज-७×५ १/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । निम्न सग्रह है —

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
( १ ) पार्श्वनाथ नमस्कार	अभय देव	प्राकृत	—
( २ ) अजितशांति स्तोत्र	—	"	—
( ३ ) अजितशांति स्तवन	जिनवल्लभ सूरि	"	—
( ४ ) मयह्व स्तोत्र	—	हिन्दी	—
( ५ ) सर्वाधिष्ठायिक स्तोत्र	—	"	—
( ६ ) जैनरत्ना स्तोत्र	—	"	—
( ७ ) मक्तामर स्तोत्र	—	"	—
( ८ ) कल्याणमंदिर स्तोत्र	—	"	—
( ९ ) नमस्कार स्तोत्र	—	"	—
( १० ) वसुधारा स्तोत्र	—	"	—
( ११ ) पद्मावती चउपई	जिनप्रभसूरि	"	—
( १२ ) शक्र स्तवन	सिद्धिसेन दिवाकर	"	"
( १३ ) गौतमरासा	विनयप्रभ	"	२० का० सं० १४१२

६१९. गुटका न० ११८—पत्र सख्या-२२० । साइज-६ ३/४×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सग्रह । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—बीच २ में से पत्र काट लिये गये गये हैं ।

विषय-सूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
( १ ) पीपाजी की चतुराई	—	हिन्दी	—
( २ ) नाग दमन कथा ( कालिय नागणी सवाद )	—	हिन्दी गद्य	—
( ३ ) महाभारत कथा	—	गद्य में ३३ अध्याय हैं ले० का० सं० १७८१	आसोज सुदी ८
( ४ ) पद्मपुराण ( उत्तर खंड )	—	"	ले० का० सं० १७८२ श्रावण सुदी ३

( ५ ) पृथ्वीराजवेलि

पृथ्वीराज

”

३०० पद्य हैं

( कृष्ण रूकमणी वेलि )

लेखन का० १५८२ श्रावण सुदी १३ । हिन्दी गद्य टीका सहित है ।

६२०. गुटका नं० ११६—पत्र सख्या-१२ से ६६ । साइज-४<sup>१</sup>/<sub>२</sub>×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । अपूर्ण ।

विशेष—हेमराज कृत मत्तामर स्तोत्र टीका है । प्रति जीर्ण है ।

६२१. गुटका नं० १२०—पत्र सख्या-३४ । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण एव जीर्ण ।

विशेष—परमानन्द स्तोत्र, दर्शन पाठ, सहस्रनाम ( जिनसेन ), सकलीकरण तथा अन्य समग्र आदि पाठों का संग्रह है ।

६२२. गुटका नं० १२१—पत्र सख्या-४० । साइज-५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण

विषय-सूची

कर्ता का नाम

भाषा

विशेष

रामस्तवन

—

संस्कृत

सनत्कुमारसहितायां नारदोक्त श्रीरामस्तवराज सपूर्ण ।

आदित्यहृदय स्तोत्र

—

”

भविष्योत्तरपुराणे श्री कृष्णार्जुन संवादे ।

सप्तश्लोकी गीता

—

”

चतुश्लोकीगीता

—

”

कृष्णकवच

—

”

६२३. गुटका नं० १२२—पत्र सख्या-११७ । साइज-४×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र, देवसिद्ध पूजा, लघु चाणक्य नीति शास्त्र आदि पाठों का संग्रह है ।

६२४. गुटका नं० १२३—पत्र सख्या-६० । साइज-६×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—यत्र लिखने तथा उसके पूजने की दिनों की विधि दी हुई है ।

६२५. गुटका नं० १२४—पत्र सख्या-१२५ । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—मुख्य निम्न पाठों का संग्रह है ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) सच पञ्चीसी	—	हिन्दी	२५ पद्य
चौबीस तीर्थकरों के सषों के साधुओं आदि की सरूपा का वर्णन है ।			
(२) नाईस परीषह वर्णन	—	"	—
(३) मांगीतुंगी स्तवन	अभयचन्द सूरि	"	—
(४) सामायिक पाठ	—	"	—
(५) मक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	"	—
(६) एकीभाव स्तोत्र भाषा	—	"	—
(७) नेमजी का व्याह लो	लालचद	"	रचना काल स० १७४० मादवा सुदी ३
( नव मगल )			

विशेष—अलग २ नो मगल हैं । अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है —

एरी इह सबत सुनहु रसालारी हां,  
एरी सतरैसे अधिक चवालारी हां ।  
एरी भाडु सुदि तीज उजारी री हां,  
एरी तां इह दिन गीत सुधारी रीहां छै ॥

इह गीत मगल नेम जिनका, साहजादपुर में गाइया ।  
अमवाल गरग गोती अनक चूर कहाईया ॥  
पातिसाह वैठाठिक या च्यौरा चक वैन वाईया ।  
नौरंगस्याह वली कै वारै लाल मगल गाइया ॥

(८) चरचा सम्रह	—	हिन्दी	—
विभिन्न चर्चाओं का संग्रह है ।			
(९) परमात्म छत्तीसी पद सम्रह	भगवतीदास	"	रचना काल सवत् १७५०
	—	"	

ब्रह्म टोडर, विजयकीर्ति, विश्वभूषण, नवलराम, जगताराम, धानतराय, खुशालचद, कनककीर्ति, लालविनोद आदि कवियों के हिन्दी पदों का सम्रह है ।

(१०) पचपरमेष्ठी चरचा	—	हिन्दी	—
(११) मक्तामर स्तोत्र भाषा	—	"	—

६२६. गुटका न० १२५—पत्र सरूपा—२ से ३३५ (साहज—६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । लेखन काल—स० १७१२ ज्येष्ठ सुदी २ । अपूर्ण ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
( १ ) युनगजनम	—	हिन्दी	८२२ पद्यों
की सख्या है। प्रारम्भ के १०४ पद्य नहीं हैं। पद्य सुन्दर हैं शिषि विकृत है। ले० स० १०१२ जेठ सुदी २।			
( २ ) दू गर की बावनी	पद्मनाम	”	१० का० स० १५४३
बावनी में ५४ पद्य हैं। कवि ने प्रारम्भ और अन्त में अपना परिचय दे रखा है प्रति अशुद्ध है। लेखन काल स० १०१३ अषाढ बुदी २। बावनी के प्रत्येक पद्य में दू गर श्रीमाल को सम्बोधित किया गया है।			
( ३ ) विवेक चौपई	ब्रह्मगुलाल	”	—
( ४ ) चेतन गीत	जिनदाम	”	—
( ५ ) मदनञ्जुद्ध	सूर्यराज	”	१० का० स० १५८६
( ६ ) छीहल की बावनी	छीहल	”	५० पद्य है।
( ७ ) नन्दु सप्तमी कथा	—	”	१० का० स० १६४३
( ८ ) चन्द्रशुभ के सोलह स्वप्न	ब्रह्मरायमल्ल	”	—
( ९ ) पद्मीगीत	छीहल	”	—
( १० ) सातु बदना	बनारसीदास	”	—
( ११ ) जोगीरामो	जिनदाम	”	—
( १२ ) श्रीपाल रामो	ब्रह्मरायमल्ल	”	अपूर्ण

इसके अतिरिक्त अन्य पाठ समग्र भी है। मत्कामर स्तोत्र, पूजा, जयमाल, कल्याणमन्दिर स्तोत्र, पञ्चमगल, मेघकृमार गीत ( पूर्ण ) आदि।

६२७. गुटका न० १२६—पत्र सख्या-१४६। माहज-६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-समग्र। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—सामान्य पाठों का समग्र है।

६२८. गुटका न० १२७—पत्र सख्या-२४०। माहज-६×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। लेखन काल-×। पूर्ण।

विशेष—पूजा पाठ के अतिरिक्त निम्न पाठों का समग्र है —

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
( १ ) पचाणुत्रत की जयमाल	चाई मेघश्री	हिन्दी	( सुधि चेतन सुशुण्य बण्णा जीहां जीव दया त्रत पालौ )
( २ ) सिद्धों की जयमाल	—	”	—
( ३ ) गोमट्ट की जयमाल	—	”	—



( ४ ) मुनीश्वरों की जयमाल	जिणदास	”	—
( ५ ) योगसार	योगचन्द्र	”	
			गद्य में दोहों पर अर्थ दिया हुआ है ।
( ६ ) अघ्यात्म सवैया	रूपचद	”	—

प्रारम्भ—अनमो अभ्यास में निवास सुध चेतन कौ ।  
 अनमो सरूप सुध बोध को प्रकाश है ॥  
 अनमो अनूप उप रहत अनत ग्यान ।  
 अनमो अनीत त्याग ग्यान सुखरास है ॥  
 अनमो अपार सार आप ही कौ आप जानै ।  
 आप ही मै व्याप्त दीसै जामै जड नास है ॥  
 अनुमो सरूप है सरूप चिदानन्द चद ।  
 अनुमो अतीत आठ क्रम स्यौ अकास है ॥१॥

अन्तिम पाठ—चौथे सरवांग सुधि मानै सौ मिथ्याती जीव,  
 स्यादवाद स्वाद विना भूलौ मूढ मती है ।  
 चौथे अति इट्टी ग्यान जानै नहीं सो अजान,  
 वहै जगवासी जीव महा मोह रती है ॥  
 चौथे बंध्यो खुल्यो मानै दुह नें को भेद जानै,  
 टानै यो निदान कीयो साचौ सील सती है ।  
 चार चाल्यो धारा दोइ ग्यान भेद जानै सोइ,  
 तरहै प्रगट चौदे गयो सिध गती है ॥

इति श्री अघ्यात्म रूपचद कृत कवित्त समाप्त । ग्रन्था ग्रन्थ ४०१ ।

६२६. गुटका न० १२८—पत्र सख्या-१३० । साइज-६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखनकाल-X । अपूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ के २१ पत्र नहीं हैं ।

काल चरित्र	कवीर	हिन्दी	अपूर्ण
साखा	”	”	२३ पद्य हैं

अन्तिम पद्य—ऐसे राम कहे सब कोई, इन बातीन तौ भगतिन न होई ।  
 कहे कबीर सुनहु गुर देवा, दूजौ जानै नाही मेवा ॥

साखा, कवीर धनी धर्मदास की माला, मबद, रमाना, रेषता तथा अन्य पदों व पाठों का सग्रह है ।

गुटका अधिक प्राचीन नहीं है ।

६३० गुटका न० १२६—पत्र संख्या-२ से = । साइज-८×५ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-X ।

अपूर्ण ।

विशेष—संस्कृत में अभिवेक पाठ है ।

६३१ गुटका न० १३०—पत्र संख्या-१६ । साइज-७ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$  इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-X ।

अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का सग्रह है ।

६३२ गुटका न० १३१—पत्र संख्या-२२५ । साइज-८×६ इंच । भाषा-हिन्दी-संस्कृत । लेखन काल-

स० १७७६ मगसिर बुदी ३ । पूर्ण ।

विषय—सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
मोक्ष पैठी	बनारसीदास	हिन्दी	—
विनती	मनराम	"	—
विनती	अजयराज	"	—
अठारह नाता का चौदाल्या	लोहट	"	दो प्रति हैं ।
श्रीपाल स्तुति	—	"	२१ पद्य हैं ।
साधु वदना	बनारसीदास	"	—
आदित्यवार कथा	भाऊ कवि	"	१५० पद्य हैं ।
			ले० का- स० १७७६ फागुण सुदी ३ ।
गुच्छारमाला	मनराम	"	४० पद्य हैं ।

प्रारम्भ—मन बच कर या जोडि कैरे बदी सारद मायरे ।

गुण अछिर माला कहु सुणौ चतर सुख पाई रे ।

माई नर भव पायौ भिनख को ॥१॥

परम पुरिष प्रणमौ प्रथम रे, श्री गुर गुन थाराधौ रे,

ग्यान ध्यान मारिगि लहै, होई सिधि सब साधो रे ।

माई नर भव पायौ भिनख की ॥२॥

अन्तिम भाग—हा हा हासी जिन करे रे, करि करि हासी आनी रे ।

हीरौ जनम निवारियो, विना भजन भगवानौ रे ॥३७॥

पदै गुणै अर सरदहै रे, मन बच काय जो पीहारे ।

नीति गहै अति सुख लहै, दुख न व्यापै ताही रे ।

माई नर भव पायौ भिनख की ॥३८॥

निज कारण उपदेस मेरे, कीयों वृधि अनुसार रे ।  
कवियण दूसण जिनधरो लीज्यौ सव सुधारी रे ।  
यह विनती मनराम की रे, तुम हो गुणह निधान रे ।  
सत सहज अरव गणत जो, करै सुगुण परवानौ रे ।

भाई नर मव पायों मिनख कौ ॥४०॥

समयसार	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण
विनती	दीपचन्द	"	
	अविनासी आनन्द मय गुण पूरण भगवान ॥		
विनती	कुमुदचंद	"	—
	प्रभु पाय लागौ करूँ सेव थारी ॥		
विनती	मनराम	"	—
	पारस प्रभु तुम नाम जी जो सुभरै मन वच काय		
पचमगति वेलि	हर्षकीर्ति	"	—
प्रथु म्नरास	ब्र० रायमल्ल	"	—

६३३. गुटका न० १३२—पत्र सख्या-१० से ३७ । साइज-६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-४ । अपूर्ण ।

विशेष—श्रीपाल चरित्र ( ब्रह्मरायमल्ल ) तथा प्रथु म्नरास, ( ब्रह्मरायमल ) अपूर्ण हैं ।

६३४. गुटका न० १३३—पत्र सख्या-३५ । साइज-६×६ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-स० १७७३ माह बुदी २ । पूर्ण ।

विशेष—चिन्तामणि महाकान्य तथा उमा महेश्वर के संवाद का वर्णन है ।

६३५. गुटका न० १३४—पत्र सख्या-१०१ । साइज-८×६ इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-४ । अपूर्ण ।

विशेष—ऋषिमडल पूजा, दशलक्षण पूजा तथा होम विधान ( आशाधर ) आदि हैं ।

६३६. गुटका न० १३५—पत्र सख्या-५६ । साइज-७½×६ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-४ । अपूर्ण ।

बन्धुराज हसराज चौबई—जिनदेव सूरि ।

प्राग्भ—आदीपुर आदि करी, चौबीसउ जिणद ।

सुरसती मन समरु सदा, श्री जिनतिलक सुनिद ॥१॥

सद गुरु पायि प्रणमु करी पामु गुरु आदेस ।

पुनित यामल वोलिसु, कहस्यु लवलेस ॥२॥  
 पुनि ए सुख उपजै हां, पुन्य सपति होइ ।  
 राजरीव लोला घणी, पुण्य पावै सोई ॥३॥  
 पुन्य उचम कुल होवै, पुण्य पुरष प्रधान ।  
 पुण्य पुरो श्रावुषो, पुण्य बुधी निधान ॥४॥  
 पुण्य उपरि सुणी जो कवा, सुणता अचिरज थायि ।  
 हसराज वछराज नृप हुआ पुण्य पसाई ॥५॥

### मध्यभाग—

कामनी—विविध तेल ताहा काटि घेरे कुमर न जाणै भेद ।  
 कुमरी नगथे नरीवई रे देखी धरौ विपाद ॥७१॥  
 कामनी—रुत भणै ताहां कामनी के दाहारै छेई मन कुड ।  
 नस टालसी साधि परि करसो सगलो श्रो घुड ॥७२  
 वछराज कहै कामनी रे, चिता म करि काय ।  
 जेह वे जिय नई चितवई रे, तेह वो तिण नै थाय ॥७३॥

अतिम पाठ नहीं है

६३७ गुटका न० १३६—पत्र सख्या—१२३ । साइज—८×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । लेखन काल—X ।

अपूर्ण ।

निम्न लिखित पूजा पाठ समग्र हैं—रत्नत्रयपूजा, शिपचाशतक्रियाव्रतोधापन, जिनगुणमपत्तिव्रतपूजा (म० रत्नचन्द्र), सारस्वतयत्रपूजा, धर्मचक्रपूजा (अपूर्ण), रविव्रतविधान ( देवेन्द्रकीर्ति ) बृहत् सिद्धचक्रपूजा ।

६३८ गुटका न० १३७—पत्र सख्या—५—३६ । साइज—८×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । लेखन काल—X ।

अपूर्ण ।

विशेष—गणधरवलय पूजा, एव आचार्य केशव विरचित षोडशकारणपूजा है ।

६३९ गुटका न० १३८—पत्र सख्या—६८ । साइज—८×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । लेखन काल—X । अपूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का समग्र है ।

मन्तामरस्तोत्र, ( मन्त्र सहित ) तथा भक्तामर भाषा हेमराज कृत । एकीभावस्तोत्र मूल एव भाषा । निर्वाण काण्ड भाषा । तत्त्वार्थसूत्र, पंचमगल रूपचन्द्र कृत । चरना समग्र—( आठ कर्मों की प्रकृतियों का वर्णन, जीव ममाम् वर्णन आदि हिन्दी म ) तथा संस्कृतमंजरी ।

६४०. गुटका न० १३६—पत्र सख्या-१०२ । साइज-७ १/२ इञ्च । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-X ।

अपूर्ण ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
मधुमालती की बात	चतुभुजदास	हिन्दी	अपूर्ण
६४५ पद्य तक हैं ।			

पञ्चतन्त्रभाषा — हिन्दी गद्य

विशेष—मित्र लाभ तथा सुहृद् भेद तो पूर्ण है किन्तु विग्रह कथा अपूर्ण है ।

६४१ गुटका न० १४८—पत्र सख्या-५६ । साइज-७ १/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । लेखन काल-X । अपूर्ण ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
नेमीश्वरराञ्जलसवाद	विनोदीलाल	हिन्दी	—
पद	नेमकीर्ति	"	—
सरयागति तेरो नाथ त्यारिये श्री महावीर ।			
षचक्रुमारपूजा	—	"	—
वीस विद्यमान तीर्थकर पूजा	—	"	—
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	—
परीषद् वर्णन	—	हिन्दी	—
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	—	"	—

६४२. गुटका न० १४१—पत्र सख्या-६२ । साइज-६ १/२ इञ्च । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-X । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र ( मन्त्रसहित ) तथा देवसिद्धपूजा है ।

६४३. गुटका नं० १४२—पत्र सख्या-१५ से १८६ । साइज-७ १/२ इञ्च । भाषा-प्राकृत-संस्कृत हिन्दी । लेखन काल-X । अपूर्ण एव जीर्ण ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
( १ ) अजितशान्ति स्तवन	—	प्राकृत	४० गाथा

प्रथम चार गाथायें नहीं हैं ।

( २ ) सीमधरस्वामीस्तवन	—		
( ३ ) नेमिनाथ एव पार्श्वनाथ स्तवन,			
( ४ ) वीर स्तवन और महावीर स्तवन	—	संस्कृत	—

( ५ ) पार्श्वनाथ स्तवन	—	संस्कृत	—
( ६ ) शत्रु जयमङ्गल श्री आदिनाथ स्तवन	—	"	१३ पद्य हैं
( ७ ) गौतम गणधर स्तवन	—	"	६ पद्य हैं
( ८ ) वर्द्धमान बिभ द्वात्रिंशिका	—	"	—
( ९ ) मारी स्तोत्र	—	"	१२ पद्य हैं ।
( १० ) मक्तामर स्तोत्र	—	"	४४ पद्य हैं ।
( ११ ) सचरिसय स्तोत्र	—	"	—
( १२ ) शान्ति स्तवन एव वृहद् शान्ति स्तवन	—	"	—
( १३ ) आत्मानुशासन	पार्श्वनाथ	"	७७ पद्य हैं
१० का० सं० १०४० भाद्रवा बुदी १५ ।			
( १३ ) अजितनाथ स्तवन	जिनप्रम सूरि	"	
( १४ ) वर्द्धमान स्तुति	—	"	
( १५ ) वीतरागाष्टक	—	"	
( १६ ) षष्टिशत	मडारी नेमिचन्द्र	"	
( १७ ) गौतम पृच्छा	—	प्राकृत	
( १८ ) सम्यक्त्व सप्तति	—	संस्कृत	
( १९ ) उपदेश माला	—	हिन्दी	
( २० ) भर्तृहरि शतक	भर्तृहरि	संस्कृत	

६४४. गुटका न० १४३—पत्र संख्या-५५ । साइज-५×२ इंच । भाषा-हिन्दी । लेखन काल-× । पूर्ण ।

विशेष—चौबीस तीर्थंकरों का सामान्य परिचय है ।

६४५. धर्मविलास—द्यानतराय । पत्र संख्या-४४ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । रचना काल-× । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १०८ ।

विशेष—धर्म विलास द्यानतरायजी की स्फुट रचनाओं का समग्र है ।

६४६. पद् संग्रह—पत्र संख्या-४१ से ६१ । साइज-११×६ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-समग्र । रचना काल-× । लेखन काल-× । अपूर्ण । वेष्टन न० १४७ ।

६४७. पाठ समग्र—पत्र संख्या-८८ से ११३ । साइज-७ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-संस्कृत । लेखन काल-× । पूर्ण । वेष्टन न० १२५ ।

विशेष—निम्न पाठों का समग्र है ।

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
(१) मत्तामर स्तोत्र	मानतु ग	संस्कृत	
(२) परमज्योति	वनारसीदास	हिन्दी	
(३) निर्वाणकारण्ड भाषा	भैयाभगवतीदास	"	
(४) ब्रह्मदाला	धानतराय	"	

६४८. पाठसंग्रह—पत्र संख्या-३६ । साइज-११×१३ इंच । भाषा-हिन्दी । रचना काल-४ । लेखन काल-४ । अपूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है —

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	विशेष
( १ ) पंच मंगल	रूपचंद		
( २ ) कल्याणमन्दिर भाषा	वनारसीदास	हिन्दी	
( ३ ) विषापहार	—	"	
( ४ ) एकीभाव स्तोत्र	भूधर	"	
( ५ ) जिनस्तुति	श्रीपाल	"	
( ६ ) प्रभात जयमाल	विनोदलाल	"	
( ७ ) बीसतीर्षकर जखड़ी	हर्षकीर्ति	"	
( ८ ) पंचमेश जयमाल	भूधरदास	"	
( ९ ) वीनती	नवलराम	"	
(१०) वीनतियाँ	भूधरदास	"	
(११) निर्वाण कारण्ड भाषा	भैयाभगवतीदास	"	
(१२) साधु षडना	वनारसीदास	"	
(१३) सवोध पचासिका भाषा	धानतराय	"	
(१४) वारह खड़ी	सूरत	"	
(१५) लघु मंगल	रूपचंद	"	
(१६) जिनदेव पच्चीसी	नवलराम	"	
(१७) वारह भावना	भ्रालू कवि	"	
(१८) वाईस परीषह	भूधरदास	"	
(१९) वैराग्य भावना	"	"	
(२०) गज भावना	"	"	

(२१) चौबीस दडक	दौलतराम	”
(२२) जखडी	भूधरदास	”

६४६. पाठसग्रह—पत्र सख्या-४ से १२ तक । साइज-१०×४ $\frac{१}{२}$  इंच । भाषा-हिन्दी । रचना काल-X ।  
लेखन काल-X । अपूर्ण । वेष्टन न० ४६ ।

विशेष—मक्तामर भाषा पूर्ण है एकीभाव स्तोत्र अपूर्णा है ।

६५०. पाठसंग्रह—पत्र सख्या-६१ । साइज-१०×४ $\frac{१}{२}$  इंच । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० ४३५ ।

निम्न पाठों का सग्रह है—

विषय-सूची	कर्ता का नाम	भाषा	पत्र
(१) पाखीपूत्र	कुशल मुनिद	प्राकृत	१ से २० तक
(२) प्रतिक्रमण	—	”	२० से २६ तक
(३) अजितशान्तिस्तवन	—	संस्कृत	३६ से ४६ तक
(४) पार्श्वनाथ स्तवन	—	”	४६ से ५० तक
(५) गणधर स्तवन	—	प्राकृत	५० से ५३ तक
(६) मक्तामर स्तोत्र	—	संस्कृत	५४ से ५८ तक
(७) शान्तिनाम स्तोत्र	मालदेवाचार्य	”	

इनके अतिरिक्त ये पाठ धौर — स्थानक स्तुति, नवपद स्तुति, रात्रु जय स्तुति, कल्याणमन्दिर स्तोत्र । मध्या चीं  
विहार, पचक, विचार, पटत्रिराक, सामायिक विधि एवं सधारा विधि ।

६५१. बुधजनविलास—बुधजन । पत्र सख्या-५६ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी पद्य ।  
विषय-सग्रह । रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १०६ ।

विशेष—पं० बुधजनजी की रचनाओं का सग्रह है ।

६५२. भूधरविलास—भूधरदास । पत्र सख्या-११६ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी पद्य ।  
रचना काल-X । लेखन काल-X । पूर्ण । वेष्टन न० १३२ ।

विशेष—भूधरदास की स्फुट रचनाओं का सग्रह है ।

६५३ मित्रविलास—घीसा । पत्र सख्या-५१ । साइज-१० $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$  इंच । भाषा-हिन्दी । रचना  
काल-X । लेखन काल-सं० १६५३ । पूर्ण । वेष्टन न० ११० ।

विशेष—



प्रारम्भ—श्री जिन चरण नभूँ सदा, अम तम नाशक मान ।  
जा सुम दर्शन दर्शतै, प्रगटत आतम ह्वान ॥१॥

चौपई—बदू श्रीमत वीर जिनद, सेटत सकल कर्म जग फद,  
बन्दू सिद्ध निरजन देव, अष्टगुणातम त्रिभुवन सेव ।  
बदो आचारज गुण लीन, जिन निज भाव सुद्ध अति छीन ॥  
बदो उपाध्याय करि ध्यान, नाशक मिथ्यातम अज्ञान,  
बदू साधु महा गभीर, ध्यान विषय अति अचल शरीर ।  
बदू वीतराग हित भाव, आतम धर्म प्रकाशन चाव ॥४॥  
मित्र विलास महासुख दैन, वरन् वस्तु स्वभाविक ऐन ।  
प्रगट देखिये लोक मभार, सग प्रसाद अनेक प्रकार ॥५॥

—सवैया—

अन्तिम—कर्म रिपु सो तो च्यारु गति में बसीट फिरयो,  
ताही के प्रसाद सेती घीसा नाम पायो है ।  
मारामल मित्र वो वहालसिंह पिता,  
तिनकी सहाय सेती अथ यो बनायो है ॥  
यामें भूल चूक होय सोधि सो सुधार लीजो,  
मो पै कृपा दृष्टि कीजो भाव यो जनायो है ।  
दिग निध सत ह्वान हरि को चतुर्थ गन,  
फायुन सुदि चोथ मान जिन गुन गायो है ॥

दोहा—आनंदमय आनंद करन हरन सकल दुख रोग ।  
मित्र विलास अथ यह निज रस अमृत भोग ॥

इसमें निम्न लिखित पाठों का सग्रह है —

षट् द्रव्य निर्णय—दूसरे अधिकार तक । भावों का पूर्ण सैद्धान्तिक विवेचन है ।

द्वादस व्रत वर्णन, कषाय के पच्चीस भेद वर्णन, सम्यक् दृष्टि अवस्था वर्णन, गुरु स्वरूप वर्णन, द्वादसालुप्रेक्षा वर्णन, वाईस परीषह वर्णन, पंच प्रकारचारित्र वर्णन, मोक्ष तत्व वर्णन, एव सुख दुख निर्णय/अथ का विषय है आत्मा में स्व और परभावों का सैद्धान्तिक विवेचन ।

६५४ बचनशुद्धिव्याख्यान—पत्र सख्या—६ । साइज—१२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सग्रह ।  
रचना काल—X । लेखन काल—स० १९४३ जेष्ठ बुदी ५५ । पूर्ण । वेष्टन न० १५१ ।

विशेष—व्याख्यान कर्ता मू थालालजी को कहा गया है ।

६७७. विनयी पद समष्टि—पद संख्या-१४२ म १७५ । प.सं.१-१४२६३ (पं. १) । न.सं.—[ ३ ] १७५ ।

विषय-रुद्र पद । जेमात । न.सं.—[ ४ ] १७५ ।

विषय-सूची	रुद्र पद नाम	पं.सं.	न.सं.
विनयी	शूरसदम	१४२६	—
मत्तमर भाषा	देवराज	"	—
सम्भोगिणर पूजा	नंदराज	"	—
रुद्र २ गीत	—	१४२७	—
पद	पानसदम	"	—
उपदेश पद	—	"	—
पद	नंदराज	(१२)	—
आजोगता पाठ	नंदराज	(१२)	—
पद	पानसदम	१३	—



# ॐ ग्रन्थानुक्रमणिका ॐ



## अ

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र सं०
अइमताकुमार रास	मुनि नारायण	( हिन्दी ) १६८	अजीर्णमजरी	—	( सं० ) १६८
अकलनामा	—	( सं० हिन्दी ) २५२	अठारहनाता	—	( हि० ) २७३
अकलकस्तोत्र	—	( सं० हि० ) १००	अठारहनाता का चोढाल्या लोहट	—	( हि० ) ११३
अकलकाष्टक भाषा, सदासुख कासलीवाल	( हि० )	१००			१३२, १६१, १६६, ३०६,
अकृत्रिमचैत्यालयों की जयमाल	( हि० )	११४	अढाईद्वीपपूजा	डालूराम	( हि० ) ४६
अकृत्रिमचैत्यालयों की रचना	( हि० )	६२	अढाईद्वीपपूजा	—	( सं० ) ४६
अकृत्रिमचैत्यालय पूजा चैनसुखदास	( हि० )	४६	अढाईद्वीपपूजा	विश्वभूपण	( सं० ) ४६
अकृत्रिमचैत्यालय पूजा पं० जिनदास	( सं० )	४६	अध्यात्मकमलमार्चण्ड	राजमल्ल	( सं० ) ३८
अकृत्रिमचैत्यालय पूजा	—	( हि० ) ४६	अध्यात्मदोहा	रूपचन्द	( हि० ) ११३
अकृत्रिम जयमाल	—	( सं० ) २७७	अध्यात्मकाग	—	( हि० ) १३८
अक्षयदशमी व्रत पूजा	—	( सं० ) २०५	अध्यात्मवृत्तीषी	बनारसीदास	( हि० ) २८२
अक्षयनिधि पूजा	—	( सं० ) १६७	अध्यात्मबारहखडी	दौलतराम	( हि० ) ३८
अक्षयनिधिप्रतोधापन	ज्ञानभूषण	( सं० ) २०४	अध्यात्मसवैया	रूपचन्द	( हि० ) ३०५
अक्षर वृत्तीषी	मुनि महिसिंह	( हि० ) २५२	अन्तगददशाश्रो वृत्ति अभयदेव सूरि	( हि० )	१
अजितनाथस्तवन	जिनप्रभसूरि	( सं० ) ३१०	( अन्तकृदशासूत्र वृत्ति )		
अजितशांतिस्तवन	—	( हि० ) १४२	अन्तरकाल वर्णन	—	( हि० ) ६, ११६
अजितशांतिस्तोत्र	उपाध्याय मेरुनदन	( हि० ) १८०	अन्तरसमाधि वर्णन	—	( हि० ) ६
अजितशांतिस्तोत्र	—	( सं० ) १०६	अनादिनिधनस्तोत्र	—	( सं० ) १५६
अजितशांतिस्तोत्र	—	( प्रा० ) ३०१	अनित्यपचासिका	त्रिभुवनचन्द	( हि० ) ४, १६४
अजितशांतिस्तवन	जिनवल्लभ सूरि	( प्रा० ) ३०१	अनुभवप्रकाश	दीपचन्द	( हि० ) २३, १८२
अजितशांतिस्तवन	—	( सं० ) ३१२	अनेकार्थमजरी	नददास	( हि० ) २३२
अजितशांतिस्तवन	—	( प्रा० ) ३०४	अनेकार्थसमग्र	हेमचन्द्र सूरि	( सं० ) २३२
अजितजिननाथ की विनती	चन्द्र	( हि० ) १४३	अनगरगकाव्य	कल्याण	( हि० ) २७४

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
अनतव्रतोद्यापन	—	( स० )	१६७	अष्टादिकाकथा	रत्ननन्दि	( स० )	२२५
अनतव्रतकथा	—	( स० )	२२५	अष्टादिकापूजा	—	( हि० )	५०
अनतव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	( हि० )	२६५	अष्टादिकापूजा	भ० शुभचन्द्र	( स० )	१६८
अनतव्रतपूजा	श्रीभूषण	( स० )	११७	अष्टादिकापूजा	द्यान्तराय	( हि० )	५०, ५७
अनतव्रतपूजा	—	( स० )	२०४	अष्टादिकापूजा	—	( स० )	१६८
अनतव्रतपूजा	गुणचन्द्र	( स० )	२०५	अष्टादिकाव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	( हि० )	२६५
अन्नकरारणविधि	—	( हि० )	१४८	अष्टादिकास्नपनविधि	—	( हि० )	१४८
अभिषेकपाठ	—	( स० )	५०, ३०६	अष्टादिकाव्रतोद्यापनपूजा	—	( स० )	५०
अभिषेकविधि	—	( स० )	१६७	अस्ती शिवा की वार्ते	—	( हि० )	१३०
अभिधानचितामणि नाममाला	हेमचन्द्र	( स० )	२३२	अकुरारोपणविधि	इन्द्रनदि	( स० )	४६
अमरकोश	अमरसिंह	( स० )	८८, २३२	अकुरारोपणविधि	—	( स० )	१६७
अर्द्धकथानक	वनारसीदास	( हि० )	१६२	अगोपांगफुरकनवर्णन	—	( हि० )	१४८
अरहत स्वरूप वर्णन	—	( हि० )	२३	अजनशास्त्र	अग्निवेश	( स० )	२४६
अर्हत् पूजा	पद्मनदि	( स० )	१६७	<b>आ</b>			
अर्हन् सहस्रनाम	—	( स० )	१६८	आकाशपञ्चमीकथा	ब्र० ज्ञानसागर	( हि० )	२६५
अरिष्टाभ्याय	—	( प्रा० )	२४५	आख्यातप्रक्रिया	—	( स० )	२३०
अवजदकेगली	—	( हि० )	१३८	आगतिजागतिपाठ	—	( हि० )	२
अष्टक	—	( स० )	१६८	आगमसार	मुनिदेवचन्द्र	( हि० ) ( ग )	१७५
अष्टविधिपूजा	सिद्धराज	( हि० )	१५२	आचारासा	—	( हि० )	१६६
अष्टधर्मप्रकृतिवर्णन	—	( हि० )	१६४	आचारशास्त्र	—	( स० )	१८०
अष्टजाम	कवि देव	( हि० )	२७६	आचारसार	वीरनदि	( स० )	२३, १८२
अष्टपाहुड	आ० कुन्दकुन्द	( प्रा० )	३६	आचारसारवृत्त	—	( स० )	२३
अष्टपाहुड माषा	जयचन्द छावडा	( हि० )	३६, १६१	आठ द्रव्य की भावना	जगराम	( हि० )	१५३
अष्टसहस्री	विद्यानदि	( स० )	४६	आत्म उपदेश गीत	समयसुन्दर	( हि० )	२६२
अष्टांगहृदयमहिता	वाग्भट्ट	( स० )	२४६	आत्मसवोधनकाव्य	रङ्गधू	( अथवा श )	३६
अष्टावधगिरिस्तवन	वर्मसुन्दर वाचनाचार्य	( हि० )	२७३	आत्महिंदोलना	केशवदास	( हि० )	१६३
अष्टादिकाकथा	भ० शुभचन्द्र	( स० )	८१	आत्मानुशासन	गुणभद्राचार्य	( स० )	३६, १६१
अष्टादिकाकथा	—	( हि० )	२२४, २२५	आत्मानुशासन	पार्श्वनाग	( स० )	३१०

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
आत्मानुशासन टीका	प्रभाचन्द्र	( स० )	३६, १६१	आराधनाकथाकोष	—	( स० )	२२५
आत्मानुशासन भाषा	प० टोडरमल	( हि० )	३६, १६१	आराधनाकथाकोष	—	( हि० )	२२६
आत्मावलोकन	दीपचद् कासलीवाल	( हि० )	४०	आराधनास्तवन	वाचक विनय विजय	( हि० )	१००
आदित्यवारकथा	—	( हि० )	१५२	आराधनासार	देवसेन	( प्रा० )	४०, ११०, ११८, १३२, १३४, १६१
आदित्यवारकथा	ब्र० ज्ञानसागर	( हि० )	२६६	आराधनासार भाषा	पन्नालाल चौधरी	( हि० )	१६१
आदित्यवारकथा	भाऊ कवि	( हि० )	८१, ११३ ११७, १३८, १४३, १६४, १६६, १६१, १६७, २६२, २६८, ३०६	आलापपद्धति	देवसेन	( स० )	१६६
आदित्यवारकथा	सुरेन्द्रकीर्ति	( हि० )	८१	आलोचनापाठ	—	( प्रा० )	१०१
आदित्यहृदयस्तोत्र	—	( स० )	३१०	आश्रवत्रिमगी	—	( हि० )	१७६
आदित्यवारत्रतोद्यापन	—	( स० )	२०५	आश्रवत्रिमगी	नेमिचन्द्राचार्य	( प्रा० )	१
आदिनाथपूजा	—	( हि० )	५०, १२६	आसावरी की बात	—	( हि० )	२७८
आदिनाथपूजा	अजयराज	( हि० )	१३०		इ		
आदिनाथपूजा	रामचन्द्र	( हि० )	५०	इक अक्षर आदि बत्तीसी	—	( हि० )	३
आदिनाथ जी का पद	कुशलसिंह	( हि० )	१६५	इकवीस गिनती की पाठ	—	( हि० )	३
आदिनाथ का बधावा	—	( हि० )	१५३	इकवीस गिनती का स्वरूप	—	( हि० )	१
आदिनाथस्तवन	—	( हि० )	१५८	इकवीसठाण्णाचर्चा	—	( प्रा० )	१
आदिनाथस्तवन	ब्र० जिनदास	( हि० )	२६६	इन्द्रध्वजपूजा	भ० विश्वभूपरण	( स० )	५०, १६८
आदिनाथस्तवन	विजयतिलक	( हि० )	१४०	इष्टछत्तीसी	—	( स० )	१०१
आदिनाथस्तुति	चन्द्रकीर्ति	( हि० )	२७२	इष्टछत्तीसी	बुधजन	( हि० )	१०१, १७२
आदिनाथपचमगल	अमरपाल	( हि० )	१६८	इष्टछत्तीसी	—	( हि० )	२६३
आदिपुराण	जिनसेनाचार्य	( स० )	६३, २२२	इष्टोपदेश	पूज्यपाद	( स० )	२३८
आदिपुराण	पुष्पदन्त	( अ० )	२२२	इशकचिम्न	नागरीदास	( हि० )	२४८
आदिपुराण	भ० सकलकीर्ति	( स० )	६३		उ		
आदिपुराण भाषा	दौलतराम	( हि० )	६३, २२२	उत्तरपुराण	गुणभद्राचार्य	( स० )	६४ २२२
आदीश्वर का बधावा	कल्याणकीर्ति	( हि० )	१६२	उत्तरपुराण	पुष्पदन्त	( अ० )	६७
आप्तपरीक्षा	विद्यानदि	( स० )	१६६	उत्तरपुराण	खुशालचद	( हि० )	६४
आयुर्वेद के सुसखे	—	( हि० )	१३०, १३६, १४८, २६०, २६४, २७४, २७५, २८७	उदरगीत	छीहल	( हि० )	११६
आरती विनती	—	( हि० )	१५८	उनतीस बोल देहक	—	( हि० )	१५१

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
उपदेशजलक्ष्मी	रामकृष्ण	( हि० )	१३७	एषणादोष (द्विगलीस दोष)	भगवतीदास (हि०)	( हि० )	१८३
उपदेशपञ्चोत्ती	वनारसीदास	( हि० )	१४६		श्री		
उपदेशवचोत्ती	राज	( हि० )	१५१	श्रीवधिवर्णन	—	( हि० )	२७३
उपदेशमाला	—	( स० )	३१०		शु		
उपदेशशतक	वनारसीदास	( हि० )	६४	शुभनाथचरित्र	भ० सकलभूषण	( स० )	२०६
उपदेशरत्नमाला	सकलभूषण	( स० )	२३	शुभमनामवेलि	—	( हि० )	१६७
उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला	भडारी नेमिचन्द्र ( प्रा० )	( प्रा० )	२३	शुभमदेवस्तवन	—	( हि० )	१६०
उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा	—	( हि० )	२३	शुभिमडलपूजा	—	( स० )	३०७
उपदेशसिद्धांतरत्नमाला भाषा	भागचन्द्र	( हि० )	२४	शुभिमडलपूजा	श्री० गणिनन्दि	( स० )	२०४
उपासकदशासूत्रविवरण	अभयदेव सूरी	( स० )	२४	शुभिमडलस्तोत्र	—	( स० )	२६२
उपासकाचार	पूज्यपाद	( स० )	१३२	शुभिमडलस्तोत्र	गौतम गणधर	( स० )	१०१
उपासकाचारदोहा	लक्ष्मीचन्द्र	( अ० )	२४		क		
उपासकाध्ययन	वसुनन्दि	( स० )	१८३	कफा	—	( हि० )	१६६
उपसर्गस्तोत्र	—	( स० )	२८८	कफावचोत्ती	गुलावराय	( हि० )	१५३
उपामहेश्वरसवाद	—	( स० )	३०७	कफावचोत्ती	अजयराज	( हि० )	१३३, १५१, १६६
उपाकथा	रामदास	( हि० )	२६७	कफावचोत्ती	—	( हि० )	२६६
	ए			कक्षवाहा राजाश्री की वशावलि	—	( हि० )	१३६
एकमौश्रठावन व्रतों के नाम	—	( हि० )	२६६	कसलीला	—	( हि० )	१३६
एकमौश्रठा नामों की शृण्माला	द्यानतराय ( हि० )	( हि० )	१०१	कमलचन्द्रायण कथा	—	( स० )	२२६
एकसौश्रुनहत्तर जीवपाठ	लक्ष्मणदास ( हि० प० )	( हि० प० )	१	कमलचन्द्रायणत्रयपूजा	—	( स० )	६०
एकसौश्रुनहत्तर पुण्य जीवों का व्योरा	—	( हि० )	१६३	कर्मघटावलि	कनककीर्ति	( हि० )	१४६
एकाक्षरनाममाला	सुधाकलशा	( स० )	८८	कर्मचरित्रवाहसी	रामचन्द्र	( हि० )	२४
एकीभावस्तोत्र	वादिराज	( स० )	१०१, १२३, २३८, २७८, ३०८	कर्मचूरत्रतोयापन	—	( स० )	२०४
एकीभावस्तोत्र	द्यानतराय	( हि० )	२६७	कर्मदहनपूजा	—	( हि० )	५०
एकीभावस्तोत्र	जगजीवन	( हि० )	२६६	कर्मदहनपूजा	—	( स० )	५०
एकीभावस्तोत्र	भूधरदास	( हि० )	२३८, ३११	कर्मदहनपूजा	टैकचन्द्र	( हि० )	५०, १६८
एकीभावस्तोत्र	—	( हि० )	१७२, ३०३, ३०८, ३१२	कर्मदहनपूजा	शुभचन्द्र	( स० )	२०४

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र स०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र स०
कर्मदहनव्रतपूजा	—	( स० ) ५१	कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा बनारसीदास	( हि० )	१०२, ११३, ११५, १२४, १४६, १५३, १५८, १७२, २३८, २६६, ३११
कर्मदहनव्रतमंत्र	—	( स० ) ५१	कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा अखयराज	( हि० )	१०२
कर्मप्रकृति नेमिचन्द्राचार्य (प्रा०)		३, १३५, १७६	कलिकु डपूजा	—	( स० ) १५६
कर्मप्रकृतिवर्णन	—	( स० ) ६, १५३ १५६, १६६, २६६	कलिकु डपाश्वर्नाथपूजा	—	( स० ) १६८
कर्मप्रकृतिविधान बनारसीदास		( हि० ) ४, ११५	कलियुग की वीनती ब्रह्मदेव	( हि० )	१७७
कर्मप्रकृतियों का व्योरा -- --		( हि० ) ५	कलियुगचरित	—	( हि० ) ११२
( कर्मप्रकृतिचर्चा )			कलावतीचरित्र भुवनकीर्ति	( हि० )	६७
कर्मप्रकृति वृत्ति सुमतिकीर्ति		( स० ) १७६	कवित्त पृथ्वीराज चौहाण का	—	( हि० ) १२४
कर्मद्विचीसी	—	( हि० ) १६३	कवलचन्द्रायण व्रत कथा	—	( स० ) ८१
कर्मद्विचीसी अचलकीर्ति		( हि० ) ११५	कवित्त गिरधर	( हि० )	१३६
कर्मस्वरूपवर्णन अभिनव वादिराज		( स० ) ५	कवित्त पृथ्वीराज	( हि० )	१३६
( प० जगन्नाथ )			कवित्त खेमदास	( हि० )	१३७
कर्मविपाकरास ब्र० जिनदास		( हि० गु० ) ८१	कवित्त	—	( हि० ) १३६, २७३
कर्महिंडोलना	—	( हि० ) १२८	कवीर की परचई	कवीरदास	( हि० ) २६७
कर्महिंडोलना हर्षकीर्ति		( हि० ) १६७, २७२	कवीर धर्मदास की दया	,,	( हि० ) २६७
कृष्ण का बारहमासा धर्मदास		( हि० ) २७५	कविकुलकठामरण दूलह	( हि० )	२४६
कृष्णदास का रासा	—	( हि० ) २७७	कवीर धनी धर्मदास की माला	( हि० )	३०५
कृष्णकर्मणी बेलि पृथ्वीराज राठौड		( हि० ) ११८	कांजीव्रतोद्यापन	—	( सं० ) २०५
कृष्णलीलावर्णन	—	( हि० ) २००	कातिकेयालुप्रेचा स्वामी कातिकेय	( प्रा० )	१६१
कृष्णबालचरित	—	( हि० ) २७६	कार्तिकेयालुप्रेचा जयचंद छाबड़ा	( हि० )	१६१
कृष्णकवच	—	( सं० ) ३०२	कामदकीयनीतिसार भाषा	—	( हि० ) २३५
करुणाभरन नाटक लच्छीराम		( हि० ) २७०	काल और अन्तर का स्वरूप	—	( हि० ) ५
करुणाष्टक	—	( स० ) ११२	काया पाजी	कवीरदास	( हि० ) २६७
कर्मपकुठार रामचन्द्र		( हि० ) २८८	कालचरित्र	कवीरदास	( हि० ) ३०५
कल्याणकवर्णन मनसुख		( अ० ) १३७	कालज्ञान	—	( स० ) २४६
कल्याणमदिरस्तोत्र कुमुदचन्द्राचार्य		( स० ) १०१, ११२, १२२, १२६, १५६, २३८, २७३, ३१२	कालिकाचार्यकथानक भावदेवाचार्य	( प्रा० )	२२५
कल्याणमदिरस्तोत्रभाषा -- ( हि० )		१२२, २६७, ३०१	किशोरकल्पद्रुम शिवकवि	( हि० )	१६६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
फिराताख्तनीय	भारवि	( स० )	२०६
क्रियाकोष भाषा	किशानसिंह	( हि० )	२४
क्रियाकोष भाषा	दौलतराम	( हि० )	१८३
कु डलिया	—	( हि० )	१३६
कुदेववर्णन	—	( हि० )	६
कुदेव स्वरूप वर्णन	—	( हि० )	११३
कुमतिनिघटिन	श्रीमधर जिनस्तवन	( हि० )	१०७
कुमारसभव	कालिदास	( स० )	२१०
कुवेरस्तोत्र	—	( स० )	२३८
कुवलयानदकारिका	—	( म० )	१६६
कोकसार	आनन्द कवि	( हि० )	१३६
कोकिलापंचमीकथा	ब्रह्म ज्ञानसागर	( हि० )	२६५
कौलकुतूहल	—	( स० )	१६८
क्षपणासार	आचार्य नेमिचन्द्र	( प्रा० )	५
क्षपणासार टीका	माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव	( स० )	६
क्षपणासार भाषा	प० टोडरमल	( हि० )	७, ६, १०
क्षमावचीर्षी	समयसुन्दर	( हि० )	१२६
क्षीरार्णव	विश्वकर्मा	( स० )	२६६
क्षेत्रपाल का गीत	—	( हि० )	१०८
क्षेत्रपालपूजा	—	( हि० )	१६६, २७५
क्षेत्रपालस्तोत्र	—	( स० )	२८८
क्षेत्रपालपूजा	—	( स० )	१५६
<b>ख</b>			
खण्डेखवाल गोश्रोतपति वर्णन	—	( हि० )	१६१
खीचडरासो	—	( हि० )	२७७

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
<b>ग</b>			
गज भावना	भूधरदास	( हि० )	३११
गणधर मुख्य पाठ	—	( हि० )	२
गणधरवलयपूजा	—	( स० )	३०८
गणधरवलयपूजा	शुभचन्द्र	( स० )	१६८
गणधरवलयपूजा	सकलकीर्ति	( स० )	६१
गणधरस्तवन	—	( प्रा० )	३१२
गणनायक वैमकरण	धर्मसिंहसूरि	( हि० )	२८६
जन्मोत्पत्ति			
गणभेद	रघुनाथसिंह मूरि	( हि० )	प ०५२
गंगायात्रावर्णन	—	( हि० )	१३६
गगाण्टक	शकराचार्य	( स० )	३०१
ग्रन्थसूची	—	( हि० )	१६६
ग्रहवलयविचार	—	( हि० )	२८७
ग्यारहप्रतिमावर्णन	मुनि कनकामर	( हि० )	११७
ग्यारहप्रतिमावर्णन	—	( हि० )	१८४
गिरनार सिद्धचैत्र पूजा	हजारीमल्ल	( हि० )	१६८
गिरनारचैत्रपूजा	—	( हि० )	५१
गीत	चन्द्रकीर्ति	( हि० )	२७२
गीत	मुनि धर्मचन्द्र	( हि० )	२७२
गीत	—	( हि० )	२६३
गुणतीसी भावना	—	( प्रा० )	२६
गुणगाथागीत	ब्रह्म वर्द्धमान	( हि० )	११६, १६४
गुणगजनम	—	( हि० )	३०४
गुणस्थानचर्चा	—	( स० )	१७६
गुणस्थान जीव सरूया	—	( हि० )	१५६
समूह वर्णन			
गुणस्थानचर्चा	—	( हि० )	६
गुणस्थानवर्णन	—	( हि० )	१५१



ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
गुणविवेकवारनिसाणी	—	( हि० )	३००	चउसरण परिकरण	—	( हि० )	२६०
गुणाचरमाला	मनराम	( हि० )	३०७	चंक्रेश्वरीस्तोत्र	—	( स० )	२८८
गुरुवीनती	—	( हि० )	१४८	चतुर्गतिबेलि	हर्षकीर्ति	( हि० )	३०२
गुरुभक्तिस्तोत्र	—	( प्रा० )	१५७	चतुर्दशीकथा	हरिकृष्ण पाण्डे	( हि० )	१५४
गुलालपञ्चीसी	ब्रह्मगुलाल	( हि० )	६४	चतुर्विधिसिद्धचक्रपूजा	भानुकीर्ति	( स० )	५२
गोत्रवर्णन	—	( हि० )	२५२	चतुर्विंशतिजिनकल्याणकपूजा	भानुकीर्ति	( हि० )	१५१
गुरोपदेशश्रावकाचार	डालूराम	( हि० )	२५	चतुर्विंशतिजिनपूजा	रामचन्द्र	( हि० )	५२, १११
गोमट्ट की जयमाल	—	( हि० )	३०४				११२, १६६
गोमट्टसार (जीवकाण्ड)	नेमिचन्द्राचार्य	( प्रा० )	६	चतुर्विंशतिजिनपूजा	वृन्दावन	( हि० )	५१, १६६
गोमट्टसार (जीवकाण्ड)	प० टोडरमल	( हि० )	७, ८, ११७	चतुर्विंशतिजिनपूजा	सेवाराम	( हि० )	५१, १६६
गोमट्टसार (कर्मकाण्ड)	नेमिचन्द्राचार्य	( प्रा० )	६, ११०, १७७	चतुर्विंशतिजिनपूजा	—	( हि० )	५१
गोमट्टसार (कर्मकाण्ड)	प० टोडरमल	( हि० )	८, १०	चतुर्विंशतिजिनस्तुति	पद्मनदि	( स० )	१३६
गोमट्टसार टीका (कर्मकाण्ड)	सुमतिकीर्ति	( स० )	८	चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र	जिनरग सूरि	( हि० )	१४०
गोमट्टसार (कर्मकाण्ड)	हेमराज	( हि० )	८, १०७	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	—	( स० )	५२
गोरखवचन	वनारसीदास	( हि० )	२८१	चतुर्विंशतिस्तुति	समयसुन्दर	( हि० )	१४२
गोसेविधि	—	( स० )	२५२	चतुर्विंशतिस्तुति	विनोदीलाल	( हि० )	१५५
गोरीकालीवाद	—	( हि० )	२६४	चतुर्विंशतिस्तुति	शुभचन्द्र	( हि० )	१४३
गोविन्दाष्टक	शंकराचार्य	( स० )	३०१	चतुर्श्लोकी गीता	—	( स० )	३०२
गौडोपाश्र्वस्तवन	—	( हि० )	१४२	चन्दनषष्टिघ्नतपूजा	—	( स० )	५२, २०६
गौतमगणधरस्तवन	—	( स० )	३१०	चन्दनषष्टिघ्नतकथा	खुशालचद	( हि० )	२६७
गौतमपृच्छा	—	( प्रा० )	३१०	चन्दनषष्टिघ्नतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	( हि० )	२६५
गौतमस्वामीचरित्र	धर्मचन्द्राचार्य	( स० )	६७	चन्दनषष्टिघ्नतकथा	विजयकीर्ति	( स० )	८२
गौतमराधा	विनयप्रभ	( हि० )	३०१	चन्दनाचरित्र	शुभचन्द्र	( स० )	२१०
	<b>घ</b>			चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	—	( हि० )	१६४
घटाकरण मंत्र	—	( स० )	२०२	चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न भावभद्र	—	( हि० )	१४२
	<b>च</b>			चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न ब्र० रायमल्ल	—	( हि० )	१६३,
चउनीसतीर्थकविनती	ब्रह्मतेजपाल	( हि० )	२६६				३०४, ३०६
चउनीसतीर्थकरस्तुति	सहजकीर्ति	( हि० )	१४७	चन्दराजा की चौपई	—	( हि० )	१२७
				(चदर्नमलयागिरि कथा)			

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
चन्द्रप्रमस्तुति	—	( हि० )	१५८	चिन्तामणि मानवावनी मनोहर कवि	( हि० )		११२
चन्द्रप्रमचरित्र	कवि दामोदर	( स० )	६५, २१०	चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा	—	( स० )	१२८
चन्द्रप्रमचरित्र	वीरनदि	( स० )	६८, २१०	चिन्तामणि पूजा	—	( स० )	१५६
चन्द्रायणव्रतपूजा	भ० देवेन्द्रकीर्त्ति	( स० )	१६६	चिन्तामण्यिपार्श्वनाथ स्तवन जिनरग	( हि० )		१४०
चन्द्रहंसकथा	टीकम	( हि० )	८२	चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र भुवनकीर्त्ति	( हि० )		१६०
चमत्कारचिन्तामणि	नारायण	( स० )	२४५	चिन्तामणि स्तोत्र	—	( हि० )	१६२
चरखाचडपई	अजयराज	( हि० )	१५६	चिन्तामणि स्तोत्र	—	( स० )	२८८
चर्चावर्णन	—	( हि० )	६	चिन्तामणि जन्मोत्पत्ति	—	( हि० )	२८६
चर्चाशतक	द्यानतराय	( हि० )	६, १२४, १७०	चिन्तामणि महाकाव्य	—	( सं० )	३००
चर्चासमाधान	भूधरदास	( हि० )	१, १७०	चूनयी	माधुकीर्त्ति	( हि० )	२८६
चर्चासमग्र	—	( हि० )	६, १७७, २०३,	चेतनधर्मचरित्र	भगवतीदास	( हि० )	६८, १३३
चर्चासागरभाषा	—	( हि० )	३०८, १८४	चेतनगीत	—	( हि० )	२७२
भ्रुचरित	—	( हि० )	१३६	चेतनगीत	जिणदाम	( हि० )	११६, ३००
चाणक्य नीतिशास्त्र	चाणक्य	( स० )	१११, २३६	चेतनगीत	देवीदाम	( हि० )	२७२
चार ध्यान का वर्णन	—	( हि० )	४०	चेतनव्रधस्तोत्र	—	( स० )	२८८
चार मित्रों की कथा	—	( हि० )	१६३	चेतनशिवागीत	—	( हि० )	१२८
चारित्रशुद्धिविधान	भ० शुभचद्र	( स० )	५०	चेतनशिवागीत	किशनमिह	( हि० )	१३१
चारित्रसार	चामुण्डराय	( स० )	२५	चैत्यवदना	—	( स० )	२३८
( भावनासार समग्र )				चैत्रीविधि	अमरमाणिक	( हि० )	१४०
चारित्रशुद्धिविधान	श्री भूपण	( स० )	१६६	चौदहमार्गपाचर्चा	—	( हि० )	११६
( १२३४ व्रत )				चौबीसठाणा चर्चा	नेमिचन्द्राचार्य	( प्रा० )	६, १७०
चारित्रसार पत्रिका	—	( स० )	२५	चौबीसठाणा चर्चा भाषा	—	( हि० )	१०, ११३
चारित्रसार भाषा	मन्नालाल	( हि० )	२५	( बालबोधचर्चा )			१५६, ३००
चारोगति दुःख वर्णन	—	( हि० )	१३२	चौबीसठाणापीठिका	—	( हि० )	१०
चारित्रपाहुड भाषा	जयचद छावडा	( हि० )	१६२	चौबीसठाणा चौपई	साह लोहट	( हि० )	१६६
चारुदत्त चरित्र	भारामल्ल	( हि० )	२१०	चौबीसठाणाभ्योरा	—	( हि० )	१६१
चित्रसेनपद्मावती कथा	पाठक राजवल्लभ	( स० )	८२	चौबीसदडक	—	( हि० )	२७, ११२
चिड्डी चदानाई की सर्वसुखजी आदि की		( हि० )	१३६	चौबीसदडक	दौलतराम	( हि० )	२८, १०३
चिड्डिसास	दीपचन्द्र	( हि० )	२७				३१२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
चौबीसतीर्थकरजयमाल	—	( हि० )	६२	जखडी	अनन्तकीर्त्ति	( हि० )	१५६
चौबीसतीर्थकरों के नांव गांव वर्णन	—	( हि० )	६२४	जखडी	दरिगाह	( हि० )	११६
चौबीसतीर्थकरपरिचय	—	( हि० )	३१०	जखडी	भूधरदास	( हि० )	१३७, ३१२
चौबीसतीर्थकरपूजा	अजयराज	( हि० )	१३०, १५३	जखडी	रूपचन्द	( हि० )	११६, १२६ १६५, २७२, २६७
चौबीसतीर्थकरपूजा	—	( स० )	१६६, २७७	जखडी	हरीसिंह	( हि० )	१६२
चौबीसतीर्थकरपूजा	मनरगलाल	( हि० )	१६६	जखडी	—	( हि० )	१४६, १७०
चौबीसीनामव्रतमण्डलविधान	—	( स० )	२०४	जखडी	विहारीदास	( हि० )	२३६
चौबीस महाराज की वीनती रामचन्द्र	—	( हि० )	१०२	जखडी	जिनदास	( हि० )	२७२
चौबीसतीर्थकर समुच्चय पूजा	—	( स० )	१६६	जतर चोवनो	—	( हि० )	२
चौबीसजिनस्तुति	शोभन मुनि	( स० )	२३६	जम्बूद्वीपपूजा	जिणदास	( स० )	१६३
चौबीसतीर्थकरस्तवन	ललित विनोद	( हि० )	२३६	जम्बूस्वामीचरित्र	ब्र० जिनदास	( स० )	६८, २१०
चौबीसतीर्थकरस्तुति	अजयराज	( हि० )	१३०	जम्बूस्वामीचरित्र	पाडे जिनदास	( हि० )	६६, १३१
चौबीसतीर्थकरस्तुति	—	( हि० )	१४७, २६६	जम्बूस्वामीचरित्र	वीर	(अप्रभ्र श)	६८
चौरासी आसन भेद	—	( स० )	४०	जम्बूस्वामीचरित्र	नाथूराम	( हि० )	२१०
चौरासीबोल	हेमराज	( हि० )	२७, ११०	जम्बूस्वामीपूजा	पाण्डे जिनराय	( हि० )	११५
चौरासीगोत्र	—	( हि० )	१५३	जयचन्द्रपञ्चीसी	—	( हि० )	२
चौरासी ग त्रोट्यत्ति वर्णन नन्दानन्द	—	( हि० )	२५३	जयपुरवदना	बलदेव	( स० )	२२४
चौसठऋद्धि पूजा	स्वरूपचन्द	( हि० )	५३, २००	जयमालसग्रह	—	( प्रा० )	११८
<b>छ</b>							
छन्दरत्नावलि	हरिराम	( हि० )	८८	जलगालनक्रिया	ब्र० गुलाल	( हि० )	५३
छदशतक	वृन्दावन	( हि० )	८८	जलहरतेला की पूजा	—	( सं० )	२०१
छवितरंग	महाराजा रामसिंह	( हि० )	२७६	ज्वालामालिनीस्तोत्र	—	( स० )	१०२, २३६ २८८
छहदाला	द्यानतराय	( हि० )	१३७, ३११	जानकीजन्मलीला	बालचन्द्र	( हि० )	२७८
छहजीव कथा	—	( हि० )	२६०	ज्ञानचर्चा	मनोहरदास	( हि० )	०८, २३५ १३१, १५३
छहदाला	बुधजन	( हि० )	१५५	ज्ञान क्रिया सवाद	—	( स० )	१७८
छियालीसदोष रहित आहारवर्णन	—	( हि० )	१५५	ज्ञानपञ्चीसी	—	( हि० )	२८१, २६१
<b>ज</b>							
जइतपद बेलि	कनकसोम	( हि० )	२६३	ज्ञानपञ्चीसी	वनारसीदास	( हि० )	११५, १५२, १६३
				ज्ञानतिलक के पद	कवीरदास	( हि० )	२६७

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र	स०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र	स०
ज्ञानपञ्चोत्तरीयाध्यापन	सुरेन्द्रकीर्त्ति	( स० )		२०५	जिनराजस्तुति	कनककीर्त्ति	( हि० )		१५२
ज्ञानपूजा	—	( स० )		१००	जिनराज विनती	—	( हि० )		१५३
ज्ञानसार	रघुनाथ	( हि० )	प	२६०	जिनरात्रिव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	( हि० )		२६५
ज्ञानसूर्योदयनाटक	वादिचन्द्र सूरि	( स० )		८६	जिणैलाहूगीत	ब्र० रायमल्ल	( हि० )		११७
ज्ञानसूर्योदय नाटक माया पारसदास निगोल्या (हि०)		( हि० )		६०	जिनविनती	सुमतिकीर्त्ति	( हि० )		१६०
ज्ञानमार्गशा	—	( हि० )		२८	जिनयज्ञकल्प	आशाधर	( स० )		२००
ज्ञानसारगाथा	—	( प्रा० )		१३२	( प्रतिष्ठापाठ )				
ज्ञानवर्षीसी	वनारसीदास	( हि० )		१६३	जिनस्तुति	—	( हि० )		१०३
ज्ञानसूषडी	शोभचन्द्र	( हि० )		१२६	जिनस्तुति	रूपचन्द्र	( हि० )		१५२
ज्ञानानन्द श्रावकाचार	रायमल्ल	( हि० )		२८	जिनस्तुति	श्रीपाल	( हि० )		३११
ज्ञानार्णव	आ० शुभचन्द्र	( स० )	४०,	१६२	जिनवाणीस्तुति	—	( स० )		१५०
ज्ञानार्णव माया	जयचन्द्र छावडा	( हि० )		४०	जिनसहिता	—	( स० )		६३
ज्ञानार्णव तत्त्वप्रकरण टीका		( हि० )		२५२	जिनस्वामीविनती	सुमतिकीर्त्ति	( हि० )		११७
जिनकुशलसूरि छन्द	—	( हि० )		१००	जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	( स० )		१००
जिनगीत	अजयराज	( हि० )		१६३					१०७, ११६, २०६, २३६, ३०१, ३०३
जिनगुणसपत्तिव्रतपूजा	भ० रत्नचन्द्र	( स० )		३०८	जिनसहस्रनामपूजा	धर्मभूषण	( स० )		५३, ११४
जिनगुणसपत्तिव्रतोद्यपन	—	( स० )		२०५	जिनसहस्रनामपूजामाया	स्वरूपचन्द्र विलाला (हि०)			६३
जिनगुणसपत्ति व्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	( हि० )		२६६	जिनसहस्रनाम	आशाधर	( स० )		१०२, १३४
जिनगुणपञ्चीसी	—	( हि० )		२८					२०४, २३६, २६२
जिनदत्तचरित्र	गुणभद्राचार्य	( स० )		६६	जिनसहस्रनामस्तोत्र	—	( स० )		२०८
जिणयत्तचरित्र	प० लाखू	(अपत्र श)		६६	जिनसहस्रनामटीका	मू० आशाधर	( स० )		१०२, २३६
( जिनदत्तचरित्र )									
जिनधर्मपञ्चीसी	भगवतीदास	( हि० )		१५५	जिनसहस्रनाम टीका	अमरकीर्त्ति	( स० )		२३६
जिनदेवपञ्चीसी	नवलराम	( हि० )		३११	जिनसहस्रनाम माया	वनारसीदास	( हि० )		१०३, १३७, २६६
जिनपजरस्तोत्र	कमलप्रभ	( स० )		१०२					
जिनपूजापुरदर कथा	खुशालचन्द्र	( हि० )		२६७	जीवों की संख्या का वर्णन	—	( हि० )		२८
जिनदर्शन	—	( प्रा० )		१०२	जीतकल्पाव चूरि	—	( हि० )		१७०
जिनदर्शन	—	( स० )		१२३	जीवधरचरित्र	आ० शुभचन्द्र	( स० )		२११
जिनपालितमुनि स्वाध्याय विमलहर्ष वाचक (हि०)		( हि० )		१८४	जीवमोक्षवचोसीपाठ	—	( हि० )		२
जिनमंगलाष्टक	—	( स० )		२६६	जीवसमासवर्णन	नेमिचन्द्राचार्य	( प्रा० )		१०

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र स०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा पत्र स०
जीव की भावना	—	( हि० ) १६७	तत्त्वार्थसार	—	( स० ) १६
जीयडा गीत	—	( हि० ) १६७	तत्त्वार्थसार	अमृतचंद्र सूरि	( स० ) १७६
जैनशतक	भूधरदास	( हि० ) ६४, १३४, १६०, २३६	तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	( स० ) ११, १०, ५८, १०७, १११, ११२, १३५ १६७, १७२, १७६, २६८, २७२, २७५, ३०२, ३०८, ३०६
जैनगायत्री	—	( सं० ) १३३	तत्त्वार्थसूत्र टीका	श्रुतसागर	( स० ) १३
जैनरासो	—	( हि० ) १४१, १६१	तत्त्वार्थसूत्र टीका (टब्बा)	—	( स० हि० ) १७६
जैनपञ्चीसी	नवलराम	( हि० ) १५३	तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति	—	( स० ) ११
ज्येष्ठजिनवरकथा	—	( हि० ) १५६	तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति	योगदेव	( स० ) १३
जैनमार्तण्डपुराण	भ० महेन्द्रभूषण	( स० ) २५६	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	कनककीर्त्ति	( हि० ) १३, १७६
जैनविवाहविधि	जिनसेनाचार्य	( स० ) २००	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	जयचंद्र छात्रड़ा	( हि० ) १४
जैनरत्नास्तोत्र	—	( हि० ) ३०१	तत्त्वार्थसूत्रभाषा सदासुख कासलीवाल	( हि० ) १४	
जैनेन्द्रव्याकरण	देवनादि	( स० ) ८७	( अर्थ प्रकाशिका )		
जोगीरासा	जिण्णदास	( हि० ) ११७, ११६ १३१, १३२, १६३, ३०४	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	—	( हि० ) १४, १६
व्योतिषरत्नमाला	श्रीपति भट्ट	( सं० ) २४६	तपोघोचनअधिकार सचावनी	—	( स० ) १३६
व्योतिष सबधी पाठ	—	( स० ) २८८	तमाखू की जयमाल	आणंद मुनि	( हि० ) १६०
	<b>ट</b>		तमाखूगीत	आणंद मुनि	( हि० ) २६२
टडाणागीत	—	( हि० ) २६६	तमाखू गीत	सहस्रकर्ण	( हि० ) २६१
	<b>ढ</b>		तर्कसंग्रह	अन्नभट्ट	( स० ) ८६, १६६
ढालगण	( सूरत )	( हि० ) २८	तारातबोल की वार्त्ता	—	( हि० ) १३८, १३६
ढालगण	—	( हि० ) १३४	त्रिपचाशतक्रियात्रतोषापन	—	( स० ) ३०६
	<b>त</b>		त्रिभुवनविजयीस्तोत्र	—	( स० ) १५६
तत्वसार	देवसेन	( प्रा० ) १०, ११०	त्रिसगीसंग्रह	नेमिचंद्राचार्य	( प्रा० ) १६, १०
तत्वसारदोहा	भ० शुभचन्द्र	( हि० ) १७८	त्रिसगीसार	श्रुतमुनि	( प्रा० ) १७६, १६
तत्त्वार्थबोध भाषा	बुधजन	( हि० ) १५	त्रिलोकदर्पण कथा	खड्गसेन	( हि० ) ६२
तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर	प्रभाचंद्र	( स० ) १५, १७८	त्रिलोकदर्पण	—	( स० ) ६३
तत्त्वार्थराजवाचिक	भट्टकलकदेव	( स० ) १५	त्रिलोकसार	नेमिचंद्राचार्य	( प्रा० ) ६२, २३
तत्त्वार्थश्लो म्वाचिकालंकार	आ० विद्यानदि	( स० ) १६	त्रिलोकसार भाषा	—	( हि० ) ६३, ६, १०



ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
दर्शन	—	( सं० )	३३६, ३०२	दोहाशतक	रूपचन्द्र	( हि० )	११४, ११६
दर्शनकथा	भारामल्ल	( हि० )	८३	दोहाशतक	योगीन्द्र देव	( अ० )	१६२
दर्शनदशक	चैनसुख	( हि० )	१०३	दोहे	वृन्द	( हि० )	१३६
दर्शनपञ्चमी	आरतराम	( हि० )	२८	दोहे	दादूद्याल	( हि० )	२७५
दर्शनपाठ	—	( हि० )	१०३	दडकषट्त्रिशिका	—	( सं० )	२४०
दर्शनपाठ	—	( सं० )	११०, १५८	द्रव्यसमग्र	आ० नेमिचन्द्र	( प्रा० )	११, १६, १३१
दर्शनपाहुड	प० जयचन्द्र	( हि० )	१६६			१३६, १८०, २७४, ३०३, २०७	
दर्शनसार	देवसेन	( प्रा० )	१५६, १६६				११२, १२२
दर्शनाष्टक	—	( सं० )	२४०	द्रव्यसमग्र भाषा	जयचन्द्र छाबड़ा	( हि० )	१८
दसकरणपाठ	—	( हि० )	२८	द्रव्यसमग्र भाषा	वंशीधर	( हि० )	१८
( दसवधभेद वर्णन )				द्रव्यसमग्र भाषा	—	( हि० )	१८
दस्तूरमालिका	बशीधर	( हि० )	१७०	द्रव्यसमग्र भाषा	पर्वतधर्मार्थी	( गु० )	१६, १७, १८
दसोत्तरा (पहेलियां)	—	( हि० )	१३६	द्रव्य का व्योरा	—	( हि० )	१६
दानकथा	भारामल्ल	( हि० )	८३	द्रव्य समग्र वृत्ति	ब्रह्मदेव	( सं० )	१७, १८
दानशीलचौपई	जिनदत्त सूरि	( हि० )	२६१	द्वादशांगपूजा	—	( हि० )	६४
दानशीलसवाद	समयसुन्दर	( हि० )	१४१	द्वादशानुप्रेक्षा	—	( प्रा० )	४०
दानशीलतपभावना	—	( हि० )	२६४	द्वादशानुप्रेक्षा	—	( हि० )	४०, ११६, १६५
दुर्गापदप्रबोध	श्री वल्लभवाचक	( सं० )	२३०				१२०, १३८, १२०
	हेमचन्द्राचार्य			द्वादशानुप्रेक्षा	लक्ष्मीचन्द्र	( प्रा० )	११८
देवगुरु पूजा	—	( हि० )	६४	द्वादशानुप्रेक्षा	श्रीधर	( हि० )	११६
देवप्रमास्तोत्र	जयनंदि सूरि	( सं० )	२४०	द्वादशानुप्रेक्षा	आलू	( हि० )	१६३, १६२
देवपूजा	—	( सं० )	५४, ५६, २०१	द्वादशानुप्रेक्षा	देवेन्द्रकीर्ति	( सं० )	२०१, २०६
देवपूजा	—	( हि० )	१५८	द्विसप्तथान काव्य सटीक	नेमिचन्द्र	( सं० )	६६
देवसिद्ध पूजा	—	( हि० )	१११				
देवसिद्धपूजा	—	( सं० )	३००				
देवागमस्तोत्र	आ० समंतभद्र	( सं० )	६७, २४०				
देवागमस्तोत्र भाषा	जयचन्द्र छाबड़ा	( हि० )	४७	धनजयनाममाला	धनजय	( सं० )	२३२
देहली के राजाओं की वशावलि	—	( हि० )	१३६, २७६	धन्यकुमार चरित्र	सकलकीर्ति	( सं० )	७०, २१२
देहव्यथा कथन	—	( हि० )	२८	धन्यकुमार चरित्र	ब्र० नेमिदत्त	( सं० )	७०, २१२
दोहाशतक	हेमराज	( हि० )	११०	धन्यकुमार चरित्र	खुशालचन्द्र	( सं० )	७०, २१२
				धन्यकुमार चरित्र	गुणभद्राचार्य	( सं० )	२१०

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
धमाल	धर्मचन्द्र	( हि० )	१६४	नदबत्तीसी	मुनि विमलकीर्ति	( हि० )	६४
ध्यानबत्तीसी	वनारसीदास	( हि० )	१५३, २८२	नदबत्तीसी	—	( स० )	१५०
धर्मचक्र	रणमल्ल	( स० )	२१०	नदबत्तीसी	हेम विमल सूरि	( हि० )	२५५
धर्मचक्रपूजा	—	( स० )	३०८	नदीश्वरपूजा	—	( स० )	५५
धर्मचक्रपूजा	यशोनदि	( स० )	५५	नदीश्वरपूजा	अजयराज	( हि० )	१३०
धर्मतरु गीत	जिण्णदास	( हि० )	१२३	नदीश्वरपूजा	—	( प्रा० )	२०१
धर्मपरीक्षा	अमितगति	( स० )	२६, १८४	नदीश्वरउद्यापनपूजा	—	( स० )	५५
धर्मपरीक्षा	मनोहरदास सोनी	( हि० )	२६	नदीश्वरजयमाल टीका	—	( हि० )	५५
धर्मपरीक्षा	हरिपेण	( अ० )	१८४	नदीश्वरव्रतविधान	—	( हि० )	५५
धर्मपरीक्षा भाषा	—	( हि० )	१८४	नदीश्वरव्रतकथा शुभचंद्र	—	( स० )	२२६
धर्मपरीक्षा भाषा	वा० दुलीचद	( हि० )	२६	नदीश्वरविधान	—	( हि० )	५५
धर्मरत्नाकर	जयसेन	( स० )	१८५	नदीश्वरविधान रत्ननिधि	—	( सं० )	२०२
धर्मरसायन	पद्मनिधि	( प्रा० )	२६, १८५	नदीश्वरविधानकथा	—	( स० )	२०६
धर्मरसा	—	( हि० )	१३१	नदसप्तमीव्रतपूजा	—	( स० )	२०२
धर्म विलास	द्यानतराय	( हि० )	२६, १३४, ३१०	नमस्कार स्तोत्र	—	( हि० )	३०१
धर्मप्रश्नोत्तर	चंपाराम	( हि० )	३०	नयवक्त्रभाषा	हेमराज	( हि० )	८७
श्रावकाचार मन्त्रा	—			नयचक्र	देवसेन	( स० )	१६६
धर्मशर्माभ्युदय	हरिचन्द्र	( स० )	२१०	नाक के दोहे	—	( हि० )	३००, १२७
धर्मसहेली	मनराम	( हि० )	१६७	नरक दुख वर्णन	—	( हि० )	३०
धर्मसग्रहश्रावकाचार	प० मेधावी	( स० )	३०, १८५	नरक निगोद वर्णन	—	( हि० )	६
धर्मसाक्षीचौपई	शिरोमणिदास	( हि० )	२६	नरकवर्णन	—	( हि० )	६, १३८
धर्मपदेशश्रावकाचार	ब्र० नेमिदत्त	( म० )	३०, १८५	नलदमयती चौपई	समय सुन्दर	( हि० )	२६१
धालुपाठ	चोपदेव	( स० )	२३०	नवग्रह अरिष्टनिवारणपूजा	—	( हि० )	२०२
धूर्चरित	सुखदेव	( हि० )	२८०	नवग्रह निवारण जिनपूजा	—	( स० )	५५
धूर्चरित	—	( हि० )	२८०	नवग्रहपूजा विधान	—	( स० )	२६२
				नवतृत्ववर्णन	—	( हि० )	२१०
				नवतृत्ववर्णन	—	( स० )	१२५
				नवतृत्ववालानोध	—	( यु० हि० )	१६७
				नवरत्न कवित्त	—	( हि० )	२७७
				नववाही नो सिञ्चाय	—	( हि० )	२११

न

नखसिख वर्णन — ( हि० ) १७१

ननद मौजाई का ध्यानद वर्धन ( हि० ) १५५

भगवा



ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
नव बाबी सिञ्जाय	जिनहर्ष	( हि० )	१४६	नित्यविहार ( राधा माधो ) रघुनाथ	( हि० प० )		२६२
न्हवन	—	( स० )	२८८	नियम सार टीका पद्मप्रभमलधारिदेव	( स० )		१८६
न्हवन विधि	—	( स० )	२६७	निर्वाणकाण्ड गाथा	—	( प्रा० )	१०३, ११७ ११६
नाकौडा पार्श्वनाथ स्तवन समय सुन्दर	( हि० )		१४२	निर्वाणकाण्ड भाषा	—	( हि० )	१६७, २०२ २६०, २६३, २०८
नागकुमार चरित्र	नथमल विलाला	( हि० प० )	८३	निर्वाणकाण्ड भाषा भगवतीदास	( हि० )	१०३, १०७, १२०, १२६, १३३, १६२, १७२, ३११	
नांदी मंगल विधान	—	( स० )	५५	निर्वाणकाण्डपूजा	द्यानतराय	( हि० )	२०२
नागकुमारपंचमी कथा मल्लिषेण सूत्रि	( स० )		३०६	निर्वाणपूजा	—	( स० )	५६
नागदमन कथा	—	( हि० )	१३८	निर्वाणक्षेत्रपूजा	—	( हि० )	६६
नागदमन कथा	—	( हि० ग० )	३०१	निर्वाणक्षेत्रपूजा	स्वरूपचंद्र	( हि० )	५६, २०२
( कालिय नागणी सवाद )				निश्चयव्यवहारदर्शन	—	( हि० )	१२८
नागश्रीकथा	ब्र० नेमिदत्त	( म० )	८३	निश्वाष्टमी कथा	ब्र० ज्ञानसागर	( हि० )	२६५
( रात्रिमोजन कथा )				निशिमोजनत्यागकथा	भारामल्ल	( हि० )	८४, २२६
नामकर्मप्रकृतियों का वर्णन	—	( प्रा० )	१८०	नीतिशतक	चाणक्य	( स० )	६८
नाममाला	धनजय	( स० )	८८, १६२	नीतिशतक	भर्तृहरि	( स० )	२३५
न्यायदीपिका	यति धर्म भूपण	( स० )	४७, १६६	नीतिसार	इन्द्रनदि	( स० )	२३६
न्यायदीपिका भाषा	पन्नालाल	( हि० )	६७	नीलकण्ठ ज्योतिष	नीलकण्ठ	( स० )	२४५
नारी चरित्र	—	( हि० )	१५१	नुसखे	—	( हि० )	११८
नारायण लाला	—	( हि० )	२८७	नूर की शकुनावलि	नूर	( हि० )	१४८
नासिकेतोपाख्यान	नट्टदाम	( हि० )	१३६	नेमीकुमार बारहमासा	—	( हि० )	१५८, १६१
नास्तिकवाद	—	( सं० )	१८६	नेमिनाथ के दश भव	—	( हि० )	८१
नित्यपूजासमूह	—	( स० )	५६	नेमिनाथ का बारहमासा श्यामदास गोधा	( हि० )		१६६
नित्यपूजा	—	( स० )	६६	नेमिगीत	—	( हि० )	१६७
नित्यपूजा	—	( प्रा० )	५६	नेमिराजुलगीत	इंगरसी वैनाडा	( हि० )	१६७
नित्यपूजा	—	( हि० )	१६२	नेमिराजुलगीत	—	( हि० )	२६०
नित्यपूजापाठ	—	( स० )	५६, १६४	नेमिराजुलस्तवन	जिनहर्ष	( हि० )	२६०
नित्यपूजासमूह	—	( हि० )	५६, १७१, २६३, २६६, ३००	नेमिराजमतिगीत	—	( हि० )	१६७, २६२
नित्यनियमपूजा	—	( स० )	२०२, २६०, २६३	नेमिजी की लहर	प० डू गो	( हि० )	१६५
नित्यनियमपूजा	—	( प्रा० )	२६०				

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
नेमिजी को व्याहलो	लालचन्द	( हि० )	३०३	नेमीश्वर लहरी	—	( हि० )	१५२
नेमि व्याहलो ( नव मंगल ) हीरा		( हि० )	८४	नेमीश्वर विनर्ता	—	( हि० )	१५५
नेमिनाथ का व्याहला	नाथू	( हि० )	१२०	नैणसी ( नैनसिद्धजी ) के व्यापार का प्रमाण	( हि० )		१६०
नेमिराजमति बेलि	ठक्कुरसी	( हि० )	११७	नैमित्तिक पूजा	—	( हि० )	१५६
नेमिनाथराजल गीत	हर्षकीर्त्ति	( हि० )	१६६	पट्टावलि मद्रनाहु से पञ्चनदि तक	( स० )		११७
नेमिनाथचरित्र	अजयराज	( हि० )	२६८	पत्रिका	—	( स० )	१७१
नेमिजिनपुराण	ब्र० नेमदत्त	( स० )	६४, २०३				१३१, १३२
नेमिनाथ मंगल	—	( हि० )	१२३	पद	अजयराज	( हि० )	१३०, १६
नेमिराजमति गीत	जिनहर्ष	( हि० )	१४७	पद	कनककीर्त्ति	( हि० )	३००
नेमिराजमति जल्लडी	हेमराज	( हि० )	१५२	पद	कृष्ण गुलाब	( हि० )	१५५
नेमिदूत काव्य	विक्रम	( सं० )	२१०	पद	कवीरदास	( हि० )	२६४
नेमिदूत काव्य सटीक टीका० गुण विनय ( स० )			२११	पद	कालिक सूरि	( हि० )	२६३
नेमिनाथस्तवन	धनराज	( हि० )	२८६	पद	किशनसिंह	( हि० )	१६३
नेमिनाथस्तवन	—	( हि० )	२३४	पद	कुमुदचन्द्र	( हि० )	२७३
नेमिनाथस्तवन	—	( स० )	३०६	पद	किशोरदास	( हि० )	१२७
नेमिनाथस्तोत्र	—	( हि० )	०८६	पद	खुशालचन्द्र	( हि० )	२६७
नेमिनाथस्तोत्र	शालि पंडित	( स० )	२४०	पद	चरनदास	( हि० )	२७५
नेमिशीलवर्णन	—	( हि० )	१३८	पद	छीहल	( हि० )	११७
नेमीश्वरगीत	जिनहर्ष	( हि० )	१५६	पद	जगजीवन	( हि० )	१००
नेमीश्वरगीत	हर्षकीर्त्ति	( हि० )	१६६	पद	जगतराम	( हि० )	१३३, १३
नेमीश्वरराजमतिगीत	विनोदीलाल	( हि० )	१५६				१५५
नेमीश्वरराजमति गीत	—	( हि० )	१६६	पद	जगराम	( हि० )	१६३
नेमीश्वरराजल सवाद	विनोदीलाल	( हि० )	३०६	पद	जिनकुशालसूरि	( हि० )	०७३
नेमीश्वर के दशमवांतर ब्र० धर्मरूचि		( हि० )	१५७	पद	जिनदत्तसूरि	( हि० )	२७३
नेमीश्वरगीत	छीहल	( हि० )	११७	पद	जिनदास	( हि० )	१६४, १०
नेमीश्वरजयमाल	भंडारी नेमिचन्द्र	( अ० )	११७				१५५
नेमीश्वररास	ब्र० रायमल्ल	( हि० )	११३, १३२, २७२, २८८	पद	जिनवल्लभ	( हि० )	२६०
				पद	जीवनराम	( हि० )	१५५
नेमीश्वररास	नेमिचन्द्र	( हि० )	१२७	पद	जोध	( हि० )	१३७, १५
( हरिविंशतपुण्य )				पद	जौहरीलाल	( हि० )	१७१

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
पदसंग्रह	देकचंद	( हि० )	११३	पद	वखतराम	( हि० )	१३७
पद	टोडर	( हि० )	१२८	पद	वृन्द	( हि० )	१३२
पद	डालू राम	( हि० )	१८७	पद	विश्वभूषण	( हि० )	१३१, १३२
पद	सघपति राइ डू गर	( हि० )	२६३	पद	श्यामदास	( हि० )	१६८
पदसंग्रह	ब्र० दयाल	( हि० )	१०४	पद	सालिग	( हि० )	१६२
पद	द्यानतराय	( हि० )	१२६, १३७ १६३, ३००	पद	कवि सुन्दर	( हि० )	१६७, २३६
पदसंग्रह	दीपचन्द्र	( हि० )	११३, १५१, १५३, १६३, २६६, १२७, १३७	पद	सूरदास	( हि० )	२८८
पदसंग्रह	मंदास	( हि० )	११३	पद	सोभचंद	( हि० )	१५५
पद	नददस	( हि० )	२८८	पद	हरखचंद ( धनराज के शिष्य )	( हि० )	२८६
पद	नवलराम	( हि० )	१३७, १५१ १६२	पदसंग्रह	हर्षचंद	( हि० )	११३
पद	नाथू	( हि० )	१०७	पद	हर्षकीर्ति	( हि० )	११७
पद	नेमकीर्ति	( हि० )	३०६	पद	हरीसिंह	( हि० )	१२७, १३७ १६२
पद	पूनो	( हि० )	१३२	पदसंग्रह	—	( हि० )	१०३, १०४ १२६, २८०, १२८, १४३, १४५ १६६, १४६, १५१, १५३, १५८ १६३, २६३, २६४, २६६, ३०३ १३५, २८८, २७२
पद	परमानंद	( हि० )	११६	पदसंग्रह	साधुकीर्ति	( हि० )	२७३
पद	बुधजन	( हि० )	१३७	( सत्तर प्रकार पूजा प्रकरण )			
पद	बालचन्द्र	( हि० )	१२३	पद्मपुराण	रविषेणाचार्य	( सं० )	२२३
पद	भागचन्द्र	( हि० )	१६२	पद्मपुराण	—	( हि० )	३०१
पद	बनारसीदास	( हि० )	११३, १५३ १५५, १६१, १६३	( उत्तर खण्ड )			
पद	भूधरदास	( हि० )	११३, १३७ १५१, १५५	पद्मनदिपचविशति	पद्मनदि	( प्रा० )	३०, २५६
पदसंग्रह	मनराम	( हि० )	११४, ११५ १२०, १८०, ३००, ३१०	पद्मनदिपञ्चीसी	मन्नालाल खिन्दुका	( हि० )	३१
पद	मलजी	( हि० )	१३७	पद्मपुराणभाषा	खुशालचंद	( हि० )	६८
पद	रामदास	( हि० )	१२६, १३२	पद्मपुराणभाषा	दौलतराम	( हि० )	६४, २२३
पद	ऋषभनाथ	( हि० )	१३१	पद्मावतीश्रद्धकवृत्ति	—	( सं० )	१०४
पद	रूपचंद	( हि० )	१११, ११३ १२३, १२६, १६३, १६५	पद्मावतीकवच	—	( सं० )	२००
				पद्मावतीपटल	—	( सं० )	२०२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
पद्मवतीपूजा	—	( स० )	२०२, ४६	पंचपरमेष्ठीपूजा	—	( हि० )	२०३
			१५८	पंचपरमेष्ठीपूजा	शुभचन्द्र	( स० )	२०४
पद्मवतीश्रद्धा	—	( हि० )	१८०	पंचपरमेष्ठीगुणस्तवन प०	डालूराम	( हि० )	२१०
पद्मवतीस्तोत्र	—	( म० )	१०६, २०२	पंचपरमेष्ठीस्तोत्र	—	( म० )	२०५
			२७८	पंचपरमेष्ठियों के मूलगण	—	( हि० )	३००
पद्मवतीपत्रोत्त	—	( हि० )	१०४	पंचपरमेष्ठियों की चर्चा	—	( हि० )	२७३
पद्मवतीभ्रातृपूजा	—	( स० )	२०४	पंचपरमेष्ठीमन्त्रस्तवन	प्रेमराज	( हि० )	१४१
पद्मवतीपद्मनाम	—	( हि० )	२०२, २०४	पंचतंत्र	—	( हि० )	३०६
पद्मवतीस्तोत्रश्रवण	—	( स० )	२४०	पंचमकाल का गण मेद	करमचन्द्र	( हि० )	३००
पद्मवतीनवपद	जिनप्रभसूरि	( हि० )	३०१	पंचमीस्तवन	समय सुन्दर	( हि० )	१४७
पंचक गणकपूजा	प० जिनदाम	( म० )	५६	पंचमीस्तुति	—	( स० )	१४२
पंचकन्यागणकपूजा	सुवामागर	( स० )	५६	पंचमास चतुर्दशी ( भ० सुरेन्द्र कीर्त्ति )	( स० )	२०४	
पंचकन्यागणकपूजा	—	( हि० )	५७, २०३	प्रतोषापन	—		
पंचकन्यागणकपूजा	लक्ष्मीचन्द्र	( हि० )	२००	पंचमीप्रतोषापन	—	( स० )	२०४
पंचकन्यागणकपूजा	टेकचन्द्र	( हि० )	२०२, ५०	पंचमेरुपूजा	टेकचन्द्र	( हि० )	१७
पंचकन्यागणकपूजा	—	( म० )	२०४	पंचमेरुपूजा	भूधरदास	( हि० )	५७, ३११
पंचकन्यागणकपूजा	—	( हि० )	२६६	पंचमेरुपूजा	विश्वभूषण	( हि० )	१६२
पंचकन्यागणकपूजा	जगद्गुरुलाल	( हि० )	५०	पंचमेरुपूजा	—	( हि० )	२०३, २०८
पंचकन्यागणकपूजा	—	( हि० )	३०६	पंचमेरुपूजा	भ० रत्नचन्द्र	( स० )	२०५
पंचकन्यागणकपूजा	रूपचन्द्र	( हि० )	१०५, १११	पंचमेरुपूजा	अजयराज	( हि० )	१३०
			११६, १२०, १२३, १५१, १४६	पंचमधावा	—	( हि० )	१५८, १६०
			१५३, १६१, १६७, १६९, २४०				२०२
			२८६, ३०६, ३०६, ३०७, ३११	पंचमधावा	प० हरीचैम	( हि० )	१६५
पंचकन्यागणकपूजा	हर्षकीर्त्ति	( हि० )	११७, १३०	पंचललित	—	( स० )	१६६
			१६५	पंचसप्तारस्वरूपनिरूपण	—	( स० )	१८५
पंचकन्यागणकपूजा	—	( म० )	२०६	पंचसधि	—	( स० )	२३०
पंचकन्यागणकपूजा	यशोनिधि	( म० )	५०	पंचसधिटीका	—	( स० )	२००
पंचकन्यागणकपूजा	डालूराम	( हि० )	५०	पंचस्तोत्र	—	( स० )	२३०
पंचकन्यागणकपूजा	—	( हि० )	१३१	पंचस्तोत्र	—	( स० )	२०५
पंचकन्यागणकपूजा	—	( म० )	२०३	पंचपद्मेनी	दीदल	( हि० )	२६२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
पचाख्यान ( पचतत्र )	निरमलदास	( हि० )	२६१	परिभाषापरिच्छेद	पचानन भट्टाचार्य	( स० )	१६६
पचाणुव्रत की जयमाला	वाई मेघश्री	( हि० )	३०४	( नयमूलसूत्र )			
पचारितिकाय	कुन्दकुन्दाचार्य	( प्रा० )	१६, १८०	प्रथमशुक्लध्यानपञ्चीसी	—	( हि० )	३
पचारितिकाय टीका	अमृतचन्द्राचार्य	( स० )	१६, १८०	प्रक्रियारूपावली	प० रामरत्न शर्मा	( स० )	८७
पचारितिकायप्रदीप	प्रभाचन्द्र	( स० )	१६	प्रतिक्रमण	—	( प्रा० ) ( स० )	३१
पचारितिकायभाषा	हेमराज	( हि० )	१६, १८	प्रतिक्रमणसूत्र	—	( प्रा० )	२५६, ३१२
पचारितिकाय भाषा	बुधजने	( हि० )	१६१	प्रतिमास्तवन	राजसमुद्र	( हि० )	१४१
पंचेंद्रियवेलि	ठक्कुरसी	( हि० )	११७, ११६ १६६, २६६	प्रतिष्ठापाठ	आशाधर	( स० )	१७२
पन्थीगीत	छीहल	( हि० )	११४, ११६ १६६, ३०४	पृथ्वीराजवेलि	पृथ्वीराज	( हि० )	३०२
पद्महप्रकार के पात्र वर्णन	—	( हि० )	१२७	प्रतिष्ठासासग्रह	वसुनदि	( स० )	५७
पद्मशाहजादा की बात	—	( हि० )	१७१	प्रबोधसार	प० यश कीर्त्ति	( स० )	३१
परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	( अ० )	४१, ११४ ११८ १३२, १७१, १६३	प्रद्युम्नचरित्र	—	( हि० )	७०
परमात्मप्रकाश टीका	ब्रह्मदेव	( स० )	६१	प्रद्युम्नचरित्र	सधारु	( हि० )	७०
परमात्मप्रकाश भाषा	दौलतराम	( हि० )	६१	प्रद्युम्नचरित्र	महासेनाचार्य	( स० )	२१३
परमात्मपुराण	दीपचद्र	( हि० )	६१	प्रद्युम्नचरित्र	कविसिंह	( अ० )	२५३
परमात्मछ्चीसी	भगवतीदास	( हि० )	३०३	प्रद्युम्नकाव्य पजिका	—	( प्रा० )	२१३
परमार्थगीत	रूपचद्र	( हि० )	११६, १६०	प्रद्युम्नरासो	ब्र० रायमल्ल	( हि० )	१३२, ३०७ ११३
परमार्थदोहाशतक	रूपचद्र	( हि० )	१११	प्रबोधबावनी	जिनरग	( हि० )	१४१
परमानंदस्तोत्र	—	( स० )	११२, १३३ १५७, २८८, ३०२	प्रबोधचन्द्रोदय	मल्लकवि	( हि० )	६०
परमानंदस्तोत्र	पूज्यपाद स्वामी	( सं० )	२६६	प्रबोधचन्द्रोदय नाटक	कृष्णमिश्र	( स० )	२३३
परमज्योति	बनारसीदास	( हि० )	१७२, २७७ ३११	प्रभातजयमाला	विनोदीलाल	( हि० )	३०१
परमज्योतिस्तोत्र	—	( स० )	२८७	प्रमादीगीत	गोपालदास	( हि० )	२६१
पर्वतपाटणी का रासो	—	( हि० )	२७७	प्रमेयस्तनमाला	अनन्त रीर्य	( स० )	६८
परीषद् विवरण	—	( हि० )	३१, ३०६	प्रयोगमुख्यसार	—	( स० )	२३०
परीक्षामुख	आचार्य माणिक्यनदि	( स० )	४८	प्रवचनसार	कुन्दकुन्दाचार्य	( प्रा० )	४२, १६३
परीक्षामुख	जयचद्र छाबडा	( हि० )	४८	प्रवचनसार भाषा	हेमराज	( हि० ग० )	४२, १११, १६३
				प्रवचनसार भाषा	वृन्दावन	( हि० )	४२
				प्रवचनसार भाषा	हेमराज	( हि० प० )	१६३

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
प्रवचनसार सटीक	अमृतचंद्र सूरी	( स० )	१६३	पार्श्वनाथस्तवन	विजयकीर्त्ति	( हि० )	१०१
प्रश्नोत्तरोपासकाचार	बुलाकीदास	( हि० )	३१, १८६	पार्श्वनाथस्तवन	—	( स० )	३०६, ३१० ३१२
प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	सकलकीर्त्ति	( स० )	३१, ३२, १८६	पार्श्वनाथनमस्कार	अभयदेव	( प्रा० )	३०१, २६४
प्रश्नोत्तरमाला	—	( हि० )	१३७	पार्श्वदेशान्तर छन्द	—	( हि० )	२६०
प्रशस्तिका	—	( स० )	२५६	पार्श्वनाथस्तुति	—	( हि० )	१६५
प्रसंगसार	रघुनाथ	( हि० )	२६२	पार्श्वनाथस्तुति	भात्र कुशल	( हि० )	१६६
प्रस्ताविकदोहा	जिनरंग मूरि	( हि० )	१४१	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	( स० )	१०४, २८८ १८७, २४०, २७५
पल्यत्रिधानपूजा	रत्ननदि	( स० )	५८, १७२	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	( प्राचीन हि० )	१३३
पल्यत्रिधान	—	( हि० )	१५७	पार्श्वनाथस्तोत्र	जिनराज सूरी	( स० )	१६०
पल्यत्रिधानकथा	—	( स० )	१५७	पार्श्वनाथस्तोत्र	कमललाम	( हि० )	१४०
पल्यत्रतोषापनपूजा	शुभचंद्र	( स० )	२०५	पार्श्वनाथस्तोत्र	मनरंग	( हि० )	१४०
पल्यत्रिधानकथा	ब्र० ज्ञानसागर	( हि० प० )	२६५	पार्श्वनाथस्तोत्र	जिनरंग	( हि० )	१४०
पहेलियाँ	—	( हि० )	१३६	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	( हि० )	१६२
पाखण्डदलन	वीरभद्र	( स० )	१८१	पार्श्वनाथस्तोत्र	मुनि पद्मनदि	( स० )	२४०
पाखीदून	कुशल मुनिद	( प्रा० )	३१०	पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	( स० )	२६६
पाठसंग्रह	—	( प्रा० )	१७२	पार्श्वनाथस्तोत्र	समयराज	( हि० )	१४०
पाठसंग्रह	—	( हि० )	१७०, ३१०	पार्श्वनाथस्तोत्र	अजयराज	( हि० )	३०, १६३
पाठसंग्रह	—	( स० )	१७२	पार्श्वनाथस्तोत्र	सहजकीर्त्ति	( हि० )	१६७
प्राकृतव्याकरण	चउ	( स० )	२३०	पार्श्वनाथचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	( स० )	२१३
प्राकृतव्याकरण	—	( स० )	२३०	पार्श्वपुराण	भूधरदास	( हि० )	७०, १११, २१३
पांडवपुराण	बुलाकीदास	( हि० )	६८	पार्श्वलघुपाठ	—	( प्रा० )	१०४
पांडवपुराण	भ० शुभचंद्र	( स० )	६८, १२३	पार्श्वस्तोत्र	—	( स० )	११२, २७६
पार्श्वनाथपूजा	—	( हि० )	६८	पार्श्वस्तोत्र	पद्म प्रभदेव	( स० )	११२, २८७
पार्श्वनाथजयमाल	—	( स० )	१५६	पार्श्व मजन	सहज कीर्त्ति	( हि० )	१४७
पार्श्वनाथ की वीनती	—	( हि० )	१५२	पार्श्वस्तोत्र	हरखचढ ( धनराज के शिष्य )	( हि० )	२८६
पार्श्वनाथजिनस्तवन	—	( स० )	१४०	प्रायश्चित्तसमुच्चय	नदिगुरु	( स० )	३१, १८६
पार्श्वनाथस्तवन	—	( हि० )	१३८, २४० २६१	प्रायश्चित्तसंग्रह	अकलक देव	( स० )	१८६
पार्श्वनाथस्तवन	रगनल्लभ	( हि० )	१४०				

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	व्र स०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
पाशाकेवली	—	( स० )	२४५	पूजा एव अभिषेक विधि	—	( स० )	२०३
पाशाकेवली	—	( हि० )	१२५	पूजाटीका	—	( स० )	२०५
( अथजदकेवली )				पूजा स्तोत्रसमग्र	—	( हि० )	२५६
पाचिकसूत्र	—	( स० )	१८१	पोसापडिकम्मण उठावना विधि	—	( हि० )	१४७
पीपाजी की चित्रावनी	—	( हि० )	२८०				
पीपाजी की परिचई	—	( हि० )	३०१				
प्रीतिकरचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	( सं० )	७२, २१३	फलपासा	—	( हि० )	१५२
प्रीतिकरचौपाई	नेमिचन्द्र	( हि० )	१२७	( फलचिंतामणि )			
पुण्डरीकरतोत्र	—	( स० )	२८८	फलवधी पार्श्वनाथस्तवन	पद्मराज	( हि० )	१४०
पुण्यपाप जगमूल पञ्चीसी भगवतीदास		( हि० )	१५५	फुटकरकवित्त	—	( हि० )	१५२
पुण्यसारकथा	पुण्यकीर्त्ति	( हि० )	७८६	फुटकरगाथा	—	( प्रा० )	२५७
पुण्याश्रवकथाकोष	दौलतराम	( हि० )	२२६, ८४	फुटकर दोहे तथा	गिरधरदास	( हि० )	१३७
पुण्याश्रवकथाकोष	किशनसिंह	( हि० )	१२५	कु बलिया			
पुण्याहवाचन	—	( स० )	२८८				
पुरन्दरचौपाई	मालदेव	( हि० )	८४, ११४				
पुराणसारसमग्र	भ० सकलकीर्त्ति	( स० )	६४	वडाकक्का	मनराम	( हि० )	१५३
पुरुषार्थसिद्धयुपाय	अमृतचंद्राचार्य	( स० )	३२, १८५	वडाकल्याण	—	( हि० )	१५७
पुरुषार्थसिद्धयुपाय	प० टोडरमल	( हि० )	३२	वडादर्शन	—	( स० )	१०४
पुरुषार्थसिद्धयुपाय	दौलतराम	( हि० )	१८५	वत्तीसी	मनराम	( हि० )	२६६
पुरुषार्थानुशासन	गोविन्द	( स० )	१८६	वधाई	चालक अभीचन्द्र	( हि० )	१३७
पुष्पमाल	हेमचन्द्र सूरि	( प्रा० )	१८६	वधावा	—	( हि० )	१३१, १६२
पुष्पांजलिप्रतोषापन	—	( स० )	२०४, ५८	वनारसीविलास	वनारसीदास	( हि० )	४, ११४,
पुष्पांजलिप्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	( हि० प० )	२६५				११५, ११८, १२०, १३७, १७२
पूजनक्रियावर्णन	बाबा दुलीचन्द्र	( हि० )	५८	वलमद्रपुराण	रङ्गधू	( अ० )	२२३
पूजासमग्र	—	( हि० )	५८, २७०	वहृत्तरिजिनेन्द्र जयमाल	—	( स० )	१३६
			२७७	बाईस परीषह	भूधरदास	( हि० )	११५
पूजासमग्र	—	( स० )	५८, ५६	बाईसपरीषह	—	( हि० )	१८७, १६२
पूजासमग्र	—	( स० हि० )	११२, २६७				३२, ४१
पूजापाठसमग्र	—	( हि० )	१५०, १५८,	नाल्यवर्णन	अजयराज	( हि० )	१३०
			१६३, १६७, २६४, २६७, ३०६, २०३	बावनछन्द	रूपदीप	( हि० )	३

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
बारहअनुप्रेक्षा	डालूराम	( हि० )	१४७	वक्चोरकथा	नथमल	( हि० )	२२७
बारहखडी	सूरत	( हि० )	१४१, १६१ २५७, ३११	( धनदत्तसेठकीकथा )			
बारहखडी	—	( हि० )	१४०, १५७	वदेतानजयमाल	—	( स० )	१६७
बारहखडी	श्रीदत्तलाल	( हि० )	१६२, १६६	वदना	अजयराज	( हि० )	१३०
बारहमावना	—	( हि० )	२६३, ३०० १३६	वधबोल	—	( हि० )	३
बारहमावना	भूधरदास	( हि० )	१५७	ब्रह्मविलास	भगवतीदास	( हि० )	३३
बारहम वना	भगवतीदास	( हि० )	१६२, १६६	ब्रह्म वर्धनववाडि वर्धन पुठण्य सागर		( हि० )	१४८
बारहमासा	—	( हि० )	२६०	<b>भ</b>			
बारहग्रतोघापन	—	( स० )	२५७	मक्तामाल	—	( हि० )	१३६
( द्वादसत्रतविधान )				मक्तामरपूजाउद्यापन	श्री भूपण	( स० )	५६, ००४
बाहुबलिचरिए	प० धनपाल	( अ० )	७०	मक्तामरस्तोत्रपूजा	आ० सोमसेन	( स० )	२०३
( बाहुबलि देव चरिए				मक्तामरपूजा	—	( स० )	१५८
बीसतीर्थाकरजखडी	भूधरदास	( हि० )	३११	मक्तामरमाषा	गगाराम पांड्या	( हि० )	१०६
बीसतीर्थाकरों की जयमाल		( हि० )	१२३	मक्तामरमाषा	—	( हि० )	१२४, २६० २६७, ३०१, ३०३, ३१२
बीसतीर्थाकरों की नामावलि		( हि० )	१५७	मक्तामरस्तोत्र	आचार्य मानलु ग	( स० )	११, १०६ १०६, १०७, १११, ११०, १२६, १३१, १६२, २०, २६४, २७६, ००७, २८०, ३००, ३१०, ३११, ३१२
बीसतीर्थाकरों की पूजा	अजयराज	( हि० )	१३०	मक्तामरस्तोत्र भाषा	हेमराज	( हि० )	१०५, ११२ ११५, १३५, १३६, १६४ १७०, २६३, २६६, ३०२, ३०३, ३०८
बीसतीर्थाकरपूजा	पन्नलाल सधी	( हि० )	२०३	मक्तामरस्तोत्र टीका	—	( स० )	१०५, १०६, ०६१
बीसतीर्थाकरपूजा	नरेन्द्रकीर्ति	( स० )	२०४	मक्तामरस्तोत्र टीका	अखयराज श्रीमाल	( हि० )	११०
बीसतीर्थाकरस्तुति	सहजकीर्ति	( हि० )	१४७	मक्तामरस्तोत्रवृत्ति	त्र० रायमल्ल	( स० )	१०६
बीसविरहमान के नाम	—	( हि० )	१२६	मक्तामरवृत्ति	भ० रतनचन्द्र सूरि	( सं० )	२४१
बीसविरहमानस्तुति	प्रेमराज	( हि० )	१४७	मक्तामरस्तोत्र भाषा	जयचन्द्रजी छावड़ा	( हि० )	२६०
बीसविद्यमानतीर्था कर पूजा	—	( हि० )	३०६	मक्तामरस्तोत्रभाषा	कथा सहित नथमल	( हि० )	२४२
बीसा यत्र	—	( हि० )	२८७				
बुधजनविलास	बुधजन	( हि० )	१७३, ३१२				
बुधजनमतसर	बुधजन	( हि० )	६०				
बुधरास	—	( हि० )	१५०				
बेलिकेविवेकधन	हर्षकीर्ति	( हि० )	१२८				
बोधिबाहुड भाषा	जयचद छावड़ा	( हि० )	१६०				



ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
भक्तामरस्तोत्र	माषा कथा सहित विनोदीलाल	( स० )	२२६	भवसिधुचतुर्दशी	वनारसीदास	( हि० )	२६१
भक्तामरमञ्जसहित	—	( स० )	३०८	भववैराग्यशतक	—	( अ० )	१६४
भक्तामरस्तोत्रकथा	—	( स० )	२०६	भागवत महापुराण भाषा	नददास	( हि० )	२६६
भक्तिभावती	—	( हि० )	२८५	भारतीस्तोत्र	—	( स० )	२८२
भक्तिमंगल	वनारसीदास	( हि० )	१६२	भावनावतीसी	अमितिगति	( स० )	१५६, २५७
भक्तिवर्णन	—	( प्रा० )	१४६	भावनावर्णन	—	( हि० )	६५
भगवती आराधनाभाषा	सदा मुख कासलीवाल	( हि० )	३३, १८७	भावसग्रह	देवसेन	( प्रा० )	२०, १८१
भगवतीसूत्र	—	( प्रा० )	१८१	भावसग्रह	श्रुतमुनि	( प्रा० )	२१, १८१
भगवानदास के प्रद	भगवानदास	( हि० )	२४१	भावसग्रह	प० वामदेव	( स० )	१८१
भट्टारक देवेंद्रकीर्ति की पूजा	—	( स० )	१६४	भावों का कथन	—	( हि० )	१३७
भट्टारकपट्टावली	—	( हि० )	७७	भाषा	मनहरण	( हि० )	२६२
भडलीविचार	सारस्वत शर्मा	( हि० )	२०५	भाषामूषण	महाराज जसवतसिंह	( हि० )	२७६
भद्रबाहुचरित्र	आ० रत्ननदि	( स० )	७३	मुवनेश्वरस्तोत्र	सोमकीर्ति	( स० )	२७५
भद्रबाहुचरित्रभाषा	किशनसिंह	( हि० )	७३, २१६	भूधरविलास	भूधरदास	( हि० )	३१२
भद्रबाहुचरित्रभाषा	चपाराम	( हि० )	२१४	भूपालचतुर्विंशति	भूपाल कवि	( म० )	१०६, २४२, २७८
भयहरस्तोत्र	—	( हि० )	३०१	भोजचरित्र	पाठक राजवल्लभ	( स० )	७४
भयहरस्तोत्र	—	( स० )	१०६, २८८	भोजप्रवच	प० अल्लारी	( स० )	२१६
भयहरपार्श्वनाथस्तोत्र	—	( प्रा० )	१८०	<b>म</b>			
भारतराजदिग्विजयवर्णनभाषा	—	( हि० )	६४	मजलसराय की चिट्ठी	—	( हि० )	१७३
भारतवक्रवर्ति के १६ स्वराणों का वर्णन	—	( हि० )	१५१	मणिहार गीत	कवि वीर	( हि० )	२६३
भारतेश्वरवैभव	—	( अ० )	११७	मत्तिसागर सेठ की कथा	—	( हि० )	१६१
भर्तृहरि की वार्त्ता	—	( हि० )	२७८	मदनपराजय नाटक	जिनदेव	( स० )	६१, २३४
भर्तृहरि शतक	भर्तृहरि	( स० )	३१०	मदनपराजय भाषा	स्वरूपचन्द्र विलाला	( हि० )	६१
भविष्यत्त चरिय	श्रीवर	( अ० )	७४	मदनमजगी कथा	प्रबन्ध पोपट	( हि० )	२३
भविष्यदत्त चरित्र	श्रीवर	( स० )	२१६	मध्यलोक वर्णन	—	( हि० )	६
भविष्यदत्तप्रचामी कथा	प० धनपाल	( अ० )	७३, २१६	मध्यलोक चैत्यालयवर्णन	—	( हि० )	१८७
भविष्यदत्तचौपई	त्र० रायमल्ल	( हि० )	१११, २१६	मधुमालती कथा	चतुर्भुजदास	( हि० )	२८१, ३०६
भविष्यदत्तकथा	—	( हि० )	१६१	मनराम विलास	मनराम	( हि० )	२३६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
मनुष्य की उत्पत्ति	—	( हि० )	१५१	मुनिमाला	—	( हि० )	१४८
मनोरथमाला	—	( हि० )	१६४	मुनिवर्णन	—	( हि० )	३
महादेव का व्याहलो	—	( हि० )	१३६	मुनिवर स्तुति	—	( हि० )	१५६
महाभारतकथा	लालदास	( हि० )	१३६, २६७	मुनीश्वरों की जयमाला	जिण्णदास	( हि० )	१६४, ३०५
महाभारत कथा	—	( हि० )	३०१	मुनिगीत	—	( हि० )	२६०
महावीर वीनती ( चांदनपुर )	—	( हि० )	१५६	मुनिसुव्रतानुप्रेक्षा	योगदेव	( अ० )	११७, १३१
महावीरस्तवन	जिनवल्लभ	( स० )	१४१	मुक्तावलिप्रतःश्या	खुशालचन्द्र	( हि० )	२२७
महावीर स्तवन	—	( हि० )	२६१	मुक्तावलीप्रतोषापनपूजा	—	( स० )	२०६
महावीर स्तवन	—	( स० )	२०६	मुकुटसप्तमीकथा	ब्र० ज्ञानसागर	( हि० )	२६६
महीमट्टी	भट्टी	( स० )	८७	मुकुटसप्तमीव्रतकथा	खुशालचन्द्र	( हि० )	२६७
महीपालचरित्र	मुनि चरित्रभूषण	( स० )	७४	मूढावृक्कवर्णन	भगवतीदास	( हि० )	१३२
महीपालचरित्र	नथमल	( हि० )	२१६	मूलाचारप्रदीपिका	भ० सकलकीर्ति	( हि० )	३३
मांगीतु गी तीर्थ वर्णन	परिखाराम	( हि० )	११४	मूलाचारभाषा टीका	ऋषभदास	( हि० )	३३
मांगीतु गी की जखडी	रामकीर्ति	( हि० )	२७०	मेघकुमारगीत	पूनी	( हि० )	११५, ११७ १२०, १३०, १५४, १६४, १६७
मांगीतु गी स्तवन	—	( हि० )	३०३	मेघकुमारगीत	कनककीर्ति	( हि० )	२२७
मतिछचीसी	यश कीर्ति	( हि० )	२६२	मेघदूत	कालिदास	( स० )	२१७
मातृकापाठ	—	( हि० )	१४८	मेघमालाउद्यापन	—	( स० )	२०४
मानवावनी	मनोहर	( हि० )	११६	मेघमालाव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	( हि० )	२६६
मानमजरी	नददाम	( हि० )	२५८, २६३	मेघमालाव्रतकथा	खुशालचन्द्र	( हि० )	२६७
मानवर्णन	—	( स० )	२५७	मोक्षपैडी	वनारसीदास	( हि० )	३३, ११३, ११६, १६२, ३०६
मारीस्तोत्र	—	( स० )	३१०	मोक्षमार्गप्रकाश	प० टोडरमल	( हि० )	३४, १७७
मालपञ्चीसी	विनोदीलाल	( हि० )	२५०	मोक्षसुखवर्णन	—	( हि० )	३४, ६,
मालामहोत्सव	विनोदीलाल	( हि० )	३	मोखा	हर्षकीर्ति	( हि० )	१४८
माक्षीरासा	जिण्णदास	( हि० )	१६६	मोरपञ्ज लीला	—	( हि० )	१३६
मासांतचतुर्दशीपूजा	अक्षयराम	( स० )	२०५	मोहउत्कृष्टस्थिति	पचीसा	( हि० )	३
मित्रविलास	धीसा	( हि० )	३१०	मोहमर्दनकथा	—	( हि० )	२८७
मितभाषणीटीका	शिवादित्य	( स० )	४८	मोहविवेकयुद्ध	वनारसीदास	( हि० )	६१२, १६५
मिथ्यात्वखडन	बखतराम साह	( हि० )	१८७				
मिथ्यात्वनिषेध	वनारसीदास	( हि० )	१८७				१७६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
मौनएकादशीव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	( हि० )	२६५	यादवरासो	पुण्यरतनगणि	( हि० )	२६२
मौनित्रतांथापन	—	( स० )	२०५	यादुरासो	गोपालदास	( हि० )	२६२
मगलाष्टक	—	( स० )	१०६	योगशात	अमृतप्रभ सूरि	( स० )	२४७
मगल	विनोदीलाल	( हि० )	१३१	योगसमुच्चय	नवनिधिराम	( स० )	१६४
मंजारीगीत	जिनचन्द्र सूरि	( हि० )	२६४	योगसार	योगचन्द्र	( हि० )	१६४, ३०५
मन्त्रस्तोत्र	—	( हि० )	१४८	योगसार	योगीन्द्रदेव	( अ० )	४०, ११४
मन्त्रशास्त्रपाठ	—	( सं० )	२७५				११६, १२८
मृगीसत्रादवर्णन	—	( हि० )	१२५	योगसारभाषा	बुधजन	( हि० )	४२
मृत्युमहोत्सव भाषा	दुलीचन्द्र	( हि० )	४०	योगीरासा	पाडे जिनदास	( हि० )	६०, १२०
मृत्यु महोत्सव	—	( स० )	१०७				१२२, १६१
मृत्युमहोत्सव	बुधजन	( हि० )	१६४				

## र

य				र			
यत्याचार	वसुनदि	( स० )	३४	रत्नावधन कथा	ब्र० ज्ञानसागर	( हि० प० )	२६५
यत्रचिन्तामणि	—	( हि० )	२६४	रघुवश	कालिदास	( स० )	२१८
यत्रलिखने व पूजने की विधि	—	( स० )	३०२	रजस्वला स्त्री के दोष	—	( स० )	१४६
यशस्तिरुलकचम्पू	सोमदेव	( स० )	७४	रत्नकरण्डश्रावकाचार समन्तभद्राचार्य	—	( स० )	३४
यशोधरचौपई	अजयराज	( हि० )	७७	रत्नकरण्डश्रावकाचार टीका प्रभाचन्द्र	—	( स० )	३४
यशोधरचरित्र	खुशालचन्द्र	( हि० )	७६, १२४	रत्नकरण्डश्रावकाचार सदासुख काशलीवाल	( हि० )	३४, १८७	
यशोधरचरित्र	ज्ञानकीर्त्ति	( स० )	७५, २१७, २१८, २६७	भाषा	—		
यशोधरचरित्र	परिहानद	( हि० )	७५	रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा थान जी	( हि० )	१८७	
यशोधरचरित्र	लिखमीदास	( हि० )	२१८	रत्नत्रयजयमाल	—	( हि० )	५६
यशोधरचरित्र	पद्मनाभ कायस्थ	( स० )	२१७	रत्नत्रयजयमाल	नथमल	( हि० )	६१
यशोधरचरित्र	वादिराज सूरि	( स० )	२१७	रत्नत्रयजयमाल	—	( प्रा० )	२०६
यशोधरचरित्र	सकलकीर्त्ति	( स० )	७५, २१७	रत्नत्रयपूजा	—	( स० )	५६, ३०८
यशोधरचरित्र	वासवसेन	( स० )	७५, २१७				२०६
यशोधरचरित्र	सोमकीर्त्ति	( स० )	७५, २१७	रत्नत्रयपूजाभाषा	द्यानतराय	( हि० )	५६
यशोधरचरित्ररास	सोमदत्त सूरि	( हि० )	१२६	रत्नत्रयपूजाभाषा	—	( हि० )	५६, २०६
यशोधरचरित्र टिप्पण	—	( स० )	७७				२८७
याग मढल	—	( सं० )	२८८	रत्नत्रयपूजा	केशव सेन	( स० )	२०६
				रत्नत्रयपूजा	आशाधर	( स० )	२०६
				रत्नत्रयव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	( हि० प० )	२६५

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र	सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र	सं०
रत्नत्रयव्रततोषापन	—	( स० )	२०५		रेखता	वक्षीराम	( हि० )		६५
रत्नावलीव्रतोषापनपूजा	—	( स० )	२०५		रेखता	कवीरदास	( हि० )		२६७
रत्नसचय	विनयराज गरिण	( प्रा० )	१८१		रैदव्रतकथा	देवेंद्रकीर्ति	( स० )		२२७
रयणसार	कुन्दकुन्दाचार्य	( प्रा० )	१०७		रोगपरीक्षा	—	( हि० स० )		२४७
रगनाथ स्तोत्र	—	( स० )	३०१		रोष ( क्रोध ) वर्णन	गोयम	( अण० )		११७
रविब्रतपूजा	—	( स० )	२०६		रोहिणीकथा	—	( स० )		८५
रविवाग् कथा	—	( हि० )	१४६		रोहिणीव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	( हि० प० )		२६५
रविब्रतविधान	देवेन्द्रकीर्ति	( स० )	३०८		रोहिणीव्रतकथा	भानुकीर्ति	( स० )		
रसरत्नसमुच्चय	—	( स० )	२४७		रोहिणीव्रतोषापन पूजा	—	( स० )		२०५
रसराज	—	( हि० )	२८०		रोहिणीव्रतोषापन	केशवसेन	( स० )		५६
रससार	—	( स० )	२४७						
रसिकप्रिया	केशवदास	( हि० )	२५१						
रागमाला	—	( स० हि० )	१७१		लक्ष्णचौबीसभेद	विद्याभूषण	( हि० )		२६४
रागमाला	साधुकीर्ति	( हि० )	२७३		लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मनदि	( स० )		१०६, २६२
रागरागिनी भेद	—	( हि० )	२६४		लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	( स० )		१०७
राजनीति कवित्त	देवीदास	( हि० )	२०६		लक्ष्मस्तोत्र	—	( स० )		२७६, २८८
राजमती नो चिट्ठी	—	( हि० )	२६१		लघुसैत्रसमाप्त	—	( स० )		१७३
राजाचद की चौपहँ	—	( हि० )	८१		लघुचावनी	मनोहर	( हि० )		११६
राजाचद की कथा	प० फ़ूरो	( हि० )	२८६		लघुस्नपनविधि	—	( हि० )		१८८
राजुल का वारह भासा पदमराज	—	( हि० )	१८०		लघुमगल	रूपचन्द्र	( हि० )		२११
राजुलनारहभासा	—	( हि० )	१६६		लघुचाणक्यजीति	—	( स० )		२०२
राजुलपञ्चासी	—	( हि० )	८५		लघुसङ्घनाम	—	( स० )		१८२, १५७
राजुलपञ्चीसी	लालचद विनोदीलाल	( हि० )	१३१						
	१३२, १०६, १५१, १६६, २२७				लघु सामायिक पाठ	—	( स० )		१०६
रामकथा भाषा	—	( हि० )	२६६		लब्धिविधान उद्यापन पूजा	—	( स० )		२२, १८१
रामस्तवन	—	( स० )	३०२		लब्धिविधानपूजा	—	( हि० )		२०६
रामकृष्ण काव्य	प० मूर्थरुवि	( स० )	२१८		लब्धिविधानव्रतोषापन	—	( स० )		२०६
रामपुराण	भ० सोमसेन	( म० )	२२३		लब्धिविधानकथा	ब्र० ज्ञानसागर	( हि० )		२६५
( पञ्चपुराण )					लब्धिविधानव्रतकथा	खुशालचद	( हि० )		२६७
रूपदीप पिंगल	जैकृष्ण	( हि० )	८८		लब्धिसारभाषा	प० टोडरमल	( हि० )		७, २२

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
लब्धिसार	आ० नेमिचन्द्र	( प्रा० )	२१	वृत्तरत्नाकर	भट्ट केदार	( स० )	२३३
लाटीसहिता	राजमल्ल	( स० )	१८७	व्रतोद्योतनश्रावकाचार	अभ्रदेव	( स० )	३०३
लावणी	—	( हि० )	२८७	वृत्तरत्नाकरटीका	सोमचन्द्र गणि	( स० )	२३३
लिंगानुशासन	हेमचन्द्राचार्य	( स० )	२३०	वृद्धविनोदसप्तसई	वृन्द	( हि० )	१११
लीलावती	—	( स० )	२५७	वृहद्प्रतिक्रमण	—	( प्रा० )	३४
लीलावती भाषा	—	( हि० )	१७३	वृहद्शांति विधान	—	( स० )	६०
	<b>व</b>			वृहद्शांति स्तोत्र	—	( प्रा० ) (स०)	१०६
वङ्गरागीत	—	( हि० )	२२८	वृहद्शांतिस्तवन	—	( स० )	३१०
वच्छराज हसराज चौपई	जिनदेव सूरि	( हि० )	३०७	वृहदसिद्धचक्रपूजा	—	( स० )	३०८
वज्रदन्तचक्रवर्ची की भावना—	—	( हि० )	१३३	व्यसनराजवर्णन	टेकचद्	( हि० )	१७३
वज्रनाभि चक्रवर्ची की भावना भूधरदास	—	( हि० )	१५४, १५७	वसुधारा	—	( हि० )	३०१
			१६२	वाय गोला का मन्त्र	—	( हि० )	१४८
वज्रपजरस्तोत्र	—	( स० )	२७५	वाईसपरीषहवर्णन	—	( हि० )	३०३
वणिकप्रिया	कवि सुखदेव	( हि० )	१०१	वाईस परीषह	भूधरदास	( हि० )	३११
वड्डमाण कव्व	प० जयमित्रहल	( अ० )	७०	वासवदत्ता	महाकवि सुवधु	( स० )	२१८
( वड्डमानकाव्य )				पचक विचार	—	( स० )	३१२
वणिजारोरास	रूपचद्	( हि० )	१६३	विक्रमप्रवधरास	विनय समुद्र	( हि० )	२६५
वरागचरित्र	वड्डमान भट्टारक	( स० )	७०, २१८	विष्णुहरस्तोत्र	—	( प्रा० )	१४०
वड्डमानचरित्र	सकलकीर्त्ति	( स० )	७०, २२३	विचारषड्विंशिका	धवलचद् के शिष्य	( स० )	२८३
वड्डमानचरित्रटिप्पण	—	( स० )	१७३	गजसार	—		
वड्डमानजिनद्वानिश्चिका	—	( स० )	३१०	विजयसेठ विजया	सूरि हर्षकीर्त्ति	( हि० )	२६१
वड्डमानपुराणभाषा	प० केसरीसिंह	( हि० )	६५	सेठाणी सभम्हाय	—		
वड्डमानपुराणभाषा	—	( हि० )	६६	विज्जुच्चर अणुपेहा	—	( अ० )	११७
वड्डमानपुराण सूचनिका	—	( हि० )	६६	विदग्ध मुखमडन	धर्मदास	( स० )	७०, २१६
वड्डमानस्तोत्र	—	( स० )	२६६	विद्यमानवीसतीर्थकर पूजा	—	( हि० )	६०
वड्डमानस्तुति	—	( स० )	३१०	विद्यमान वीसतीर्थकरपूजा	जौहरीलाल	( हि० )	६०
व्रतकथाकोष भाषा	खुशालचद्	( हि० )	८५, २२६	विद्याविलास चौपई	आज्ञासु दर	( हि० )	२६६
व्रतकथाकोश	श्रुतसागर	( स० )	२२६	विनती	अजयराज	( हि० )	२४३, ३०६
व्रतविधानरासो	सगही दौलतराम	( हि० )	२५८				१५१
				विनती	कनककीर्त्ति	( हि० )	१३१, १४६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र	स०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र	स०
विनती	किशनसिंह	( हि० )		१०४	वैद्यलक्षण	वनारसीदास	( हि० )		२८१
विनती	जगतराम	( हि० )		१२६	वैनविलास	नागरीदास	( हि० )		२५०
विनतीसमूह	देवात्रहा	( हि० )		१३२	वैराग्यपञ्चीषा	भगवतीदास	( हि० प० )		०३, १३३, १७२
विनती	पूनो	( हि० )		६२	वैराग्यशतक	—	( प्रा० )		६३
विनती	मनराम	( हि० )		३०६, ३१७	वैराग्यशतक	भर्तृहरि	( स० )		१४२
विनतीसमूह	—	( हि० )		१०४, १३८, १५७, २७३	वैराटपुराण	प्रभु कवि	( हि० )		२६३
विनतीसमूह	—	( हि० )		१५८, २००	वैराग्यभावना	भूधरदास	( हि० )		३११
विमलनाथपूजा	—	( स० )		६०	<b>श</b>				
विमलनाथपूजा	—	( हि० )		६८	शक्रस्तवन	मिद्वसेन टिवाकर	( सं० )		३०१
विमलनाथपूजा	रामचन्द्र	( हि० )		२०६	शतकत्रय	भर्तृहरि	( स० )		२३६
विवेकचौपद	ब्रह्मगुलाल	( हि० )		३०४	शब्दानुशासन वृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	( स० )		२३३
विरहनी के गीत	—	( हि० )		२७५	शब्द व धातु पाठसमूह	—	( स० )		२६४
विवेकजलदी	—	( हि० )		२७२	शब्दरूपावली	—	( स० )		८७
विष्णुसहस्रनाम	—	( स० )		१७४	शत्रु जयमुखमडल	श्रीधरदिनाथ स्तवन	( स० )		३१०
विषापहार	—	( हि० )		३११	शत्रु जयमुखमडनस्तोत्र	विजयतिलक	( गृ० )		२४३
विषापहार टीका	नागचन्द्रसूरि	( स० )		२४३	( युगादिदेव स्तवन )				
विषापहारस्तोत्र	वनजय	( स० )		१०६, १०८, १५७, १५८, २४३, २७८, २८७	शत्रु जयोद्धार प० भानुमेरु का शिष्य	( हि० )			१२६
विषापहारस्तोत्र भाषा	अचलकीर्ति	( हि० )		१०६, १२४, १२६, १३१, २४३	<b>नयसुन्दर</b>				
विशेषसत्ताप्रिमगा	—	( हि० )		१८२	शनिश्चरदेव की कथा	—	( हि० )		२६७, ८५, १०४, १३८
विहारीपतसई	विहारी	( हि० )		१११, १३४	शनिश्चरस्तोत्र	दशरथ महाराज	( प्रा० )		१४०
विनतीसमूह	भूधरदास	( हि० )		३११	शनिश्चरस्तोत्र	—	( हि० )		२७१
वीतरागाष्टक	—	( स० )		३१०	शान्तिकरणस्तोत्र	—	( प्रा० )		२८८
वीरपत्रसञ्ज्ञाय	—	( हि० गृ० )		१०६	शान्तिचक्रपूजा	—	( स० )		६०, २०६
वीरस्तवन	—	( सं० )		३०६	शान्तिनाथपूजा	सुरेश्वर कीर्ति	( स० )		२०५
वैतालपञ्चीषा	—	( हि० )		२६४	शान्तिनाथपुराण	अशग	( स० )		६६
वैतालपञ्चीषा	—	( हि० ग० )		८५	शान्तिनाथपुराण	सकलकीर्ति	( स० )		६६, १२४
वैद्यज्ञवन	लोलिम्बरराज	( स० )		२६७	शान्तिनाथजयमाल	अजयराज	( हि० )		१३०

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
शान्तिपाठ	—	( स )	१५६	शुभाषितार्थव	—	( स० )	१६३
शान्तिनाथस्तवन	केशव	( हि० )	२६१	श्रद्धानिर्णय	—	( हि० )	३५
शान्तिनाथस्तवन	गुणसागर	( हि० )	२६२	श्रावकाचार	अमितागति	( स० )	३६
शान्तिनाथस्तोत्र	गुरुभद्र ( गुणभद्र )	( स० )	११७	श्रावकाचार	गुणभूषणाचार्य	( स० )	३६
शान्तिनाथस्तोत्र	कुशलवर्धनशिष्य	( हि० )	२४३	श्रावकाचार	पद्मनंदि	( स० )	३५
	नगागणि			श्रावकाचार	पूज्यपाद	( स० )	३५
शान्तिनाथस्तोत्र	मालदेवाचार्य	( स० )	३१२	श्रावकाचार	योगीन्द्रदेव	( अ० )	१०६
शान्तिस्तवन	—	( स० )	३१०	श्रावकाचार	धसुनंदि	( स० )	३५
शान्तिस्तवनस्तोत्र	—	( हि० )	१०७	श्रावकाचार	—	( प्रा० )	३५
शालिभद्रचौपई	जिनराजसूरि	( हि० )	७=, २=६	श्रावकाचार	—	( स० )	३५
शालिभद्रचौपई	—	( हि० )	२७२	श्रावकाचार	—	( हि० )	१००
शालिभद्रसञ्ज्ञाय	मुनि लावनस्वामी	( हि० )	१७४	श्रावकाचारदोहा	लक्ष्मीचन्द	( प्रा० )	११०
शालिहोत्र	प० नकुल	( स० हि० )	२६६	श्रावकों के १७ नियम	—	( हि० )	४
शास्त्रपूजा	द्यानतराय	( हि० )	६०	श्रावकक्रियावर्णन	—	( हि० )	३५
शास्त्रमङ्गलपूजा	ज्ञानभूषण	( स० )	२००	श्रावकधर्मवचनिका	—	( हि० )	३५
शिखरविलास	मनसुखराम	( हि० )	१००	श्रावकदिनकृत्यवर्णन	—	( हि० )	३५
शिखरविलास	—	( हि० )	१२६	श्रावक प्रतिक्रमणसूत्र	—	( प्रा० )	३५, २६०
शिवपञ्चोत्ती	वनारसीदास	( हि० )	२=०, २=६	श्रावकनी सञ्ज्ञाय	जित्तहर्ष	( हि० )	१४०
शिवरमणी का विवाह	अजयराज	( हि० )	१६३	श्रावकधर्मवर्णन	—	( हि० )	१७३
शिशुपालवध	महाकवि माघ	( स० )	२१६	श्रावकसूत्र	—	( प्रा० )	२६०
शिव्यदीक्षाब्रीसा पाठ	—	( हि० )	२	श्रावकद्वादशी कथा त्र०	ज्ञानसागर	( हि० प० )	२६५
शीघ्रबोध	काशीनाथ	( स० )	२४१	श्रीपालचरित्र	कवि दामोदर	( अ० )	७०
शीलगीत	भैरवदास	( हि० )	२६४	श्रीपालचरित्र	दौलतराम	( हि० )	७०
शीतलनाथस्तवन	धनराज के शिष्य	( हि० )	२=६	श्रीपालचरित्र	त्र० नेमिदत्त	( स० )	७=, ११६
	हरखचन्द			श्रीपालचरित्र	परिमल्ल	( हि० )	७६, २१६
शीलकथा	भारामल्ल	( हि० )	०५, २=७	श्रीपालचरित्र	—	( हि० ग० )	७६
शीलतरंगिनीकथा	अखैराम लुहाडिया	( हि० प० )	०६	श्रीपालदर्शन	—	( हि० )	१४३
शीलरास	विजयदेवसूरि	( हि० )	१=१, २=६	श्रीपालरास	त्र० रायमल्ल	( हि० )	११३, १३१
शुकराज कथा	माणिक्यसुन्दर	( स० )	२२६				२७०, २=१, २=०, ३०४, ३०७
( शत्रु जयगिरि स्तवन )				श्रीपाल की स्तुति	—	( हि० )	१०६, ३०६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र	सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र	सं०
श्रीपालस्तोत्र	—	( हि० )	१४३		षट्मक्तिपाठ	—	( स० )	१३४	
श्री अजितशान्तिस्तोत्र	—	( प्रा० )	१४०		षट्मालवर्णन	श्रुतसागर	( हि० )	१४३	
श्री जिनकुशलसूरिस्तुति उपाध्याय	जयसागर	( हि० )	१८०		षट्शत	भण्डारी नेमिचन्द्र	( स० )	३१०	
श्री जिननमस्कार	यशोनदि	( हि० )	१६७		षोडशकारणजयमाल	—	( हि० )	६०	
श्री जिनस्तुति	ब्र० तेजपाल	( हि० )	१६७		षोडशकारणजयमाल	रङ्गधू	( अ० )	६१	
श्रुतज्ञानवर्णन	—	( हि० )	६		षोडशकारणजयमाल	—	( स० )	६१	
श्रुतज्ञानव्रतोधापन	—	( स० )	२०५		षोडशकारणपूजा	—	( स० )	६१, २०६	
श्रुतज्ञानपूजा	—	( स० )	२०७		षोडशकारण पूजा उधापन केशवसेन	( स० )	२०४, २०७	३०८, ६०	
श्रुतोधापन	—	( हि० )	६०		षोडशकारणव्रतोधापनपूजा ब्र० ज्ञानसागर	( स० )	६०		
श्रुतबोध	कालिदास	( स० )	८२, २३३		षोडशकारणभावना वर्णन	—	( हि० )	३६, १८८	
श्रुतस्कन्धकथा	ब्र० ज्ञानसागर	( हि० )	२६५		षोडशकारण प० सदासुख कासलीवाल	( हि० )	१८८		
श्रीशिवचरित्र	गुणचन्द्र सूरि	( हि० )	२६३		भावना				
श्रीशिवचरित्र	जयमित्रहल	( अ० )	७६		षोडशकारणव्रत कथा खुशालचन्द	( हि० )	२६७		
श्रीशिवचरित्र	भ० विजयकीर्त्ति	( हि० )	७६		षोडशकारणव्रत कथा ब्र० ज्ञानसागर	( हि० )	२६४		
श्रीशिवचरित्र	शुभचन्द्र	( स० )	२१६		<b>स</b>				
श्रीशिवचरित्र की कथा	—	( हि० )	१२७		सकलीकरण विधान	—	( स० )	२८८, २९७	
श्रु गारपञ्चीसी	छविनाथ	( हि० )	२५१		सगुरुसीख	मनोहर	( हि० )	१६५	
श्रु गारतिलक	कालिदास	( स० )	२५१		सज्जनचित्तवल्लभ	—	( स० )	१५६	
<b>ष</b>									
षट्कर्मोपदेशमाला	अमरकीर्त्ति	( अ० )	१८८, ७८		सज्भाय	विजयभद्र	( हि० )	१७८	
षट्फर्मोपदेशमाला	भ० सकलकीर्त्ति	( स० )	१८८		सज्भाय	—	( हि० )	२६१	
षट्कारिक पाठ	—	( हि० )	२		सचरिसय स्त्रोत्र	—	( स० )	३१०	
षट्त्रिंशिका	महावीराचार्य	( स० )	२०८		सतगुरु महिमा	चरनदास	( हि० )	२८६	
षट्दर्शन समुच्चय	हरिभद्रसूरि	( स० )	१६६		सद्भाषितावली	पन्नलाल	( हि० ग० )	२३६	
षट्द्रव्यचर्चा	—	( हि० )	१२४					२३७	
षट्द्रव्यवर्णन	—	( हि० )	२२, १३८		सद्भाषितावली	—	( हि० )	६५	
षट्पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	( प्रा० )	४३, ११०	१३२, १६४, २७५	सक्रांति तथा अक्रांतिचार फल	—	( स० )	२४६	
षट्पाहुडटीका	भूधरदास	( हि० )	१६४		सगीत मेद	—	( हि० )	२६८	
षट्पचासिका बालाबोध	भट्टोत्पल	( स० )	२४६		सधपञ्चीसी	—	( हि० )	३०३	



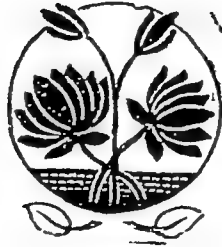
ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
मखेश्वर पार्श्वनाथस्तुति	रामविजय	( हि० )	१५०	सम्भेदशिखरमहात्म्य दीक्षित देवदत्त	( म० )	३६, १६०	
मखेश्वर पार्श्वनाथस्तवन	—	( हि० )	१४०	सम्भेदशिखरमहात्म्य मनसुख सागर	( हि० )	३६	
सभारा विधि	—	( स० )	३१२	सम्यग्रकाश डालराम	( हि० )	३६	
पन्मतितर्क	सिद्धसेन दिवाकर	( स० )	१६६	सम्यग्दर्शन के आठ अ गों की कथा—	( स० )	८६	
संस्कृतमजरी	—	( स० )	३०८	सम्यक्त्वकौमुदी मुनि धर्मकीर्त्ति	( स० )	८६	
मन्तपदार्थी	श्री भावविद्येश्वर	( स० )	४८	सम्यक्त्वकौमुदी कथा जोधराज गोदिका	( हि० प० )	८६	
सन्तऋषिपूजा	—	( स० )	१५६, २०७				२२५
मन्तपरमस्थान कथा	खुशालचन्द	( हि० )	२६७	सम्यक्त्वकौमुदी कथा	—	( हि० )	८६
मन्तपरमस्थान पूजा	—	( स० )	२०५	सम्यक्त्व के आठ अ गों	—	( हि० )	१०८
मन्तपरमस्थान विधानकथा	श्रुतसागर	( स० )	८६	का कथा सहित वर्णन			
मन्तव्यसन कथा	आ० सोमकीर्त्ति	( स० )	८६, १२६	सम्यक्चतुर्दशी	—	( हि० )	३
मन्तव्यसन कवित्त	—	( हि० )	१५५	सम्यक्त्वपच्चीसी	भगवतीदाम	( हि० )	३६, १७२
सन्तव्यसन चरित्र	—	( हि० )	२१६	सम्यक्त्वसप्तति	—	( स० )	३१०
मन्तश्लोकी गीता	—	( स० )	३००	सम्यक्वी का बधावा	—	( हि० )	१५२
मन्बोधपचासिका	गोतमस्वामी	( प्रा० )	१२३, १८६	समकृतभावना	—	( हि० )	१६४
मन्बोधपचासिका	त्रिभुवनचन्द	( हि० )	११४	समस्तमन्त्रस्तुति	ममतभद्र	( स० )	१०८
सन्बोधपचासिका	द्यानतराय	( हि० )	३७, ११६	( बृहद् स्वयम्भू स्तोत्र )			
			१२३, २७३, ३११	समयसारकलशा	अमृतचन्द्राचार्य	( स० )	४३, १६८
मन्बोधपचासिका	देवसेन	( प्रा० )	११८				२५६
सन्बोधपचासिका	विहारीदाम	( हि० )	१५३	समयसारगाथा	कुन्दकुन्दाचार्य	( प्रा० )	१३२,
सन्बोधपचासिका	—	( प्रा० )	१३६				१६६, २०७
सन्बोधपचासिका	—	( हि० )	३००	समयसारटीका	अमृतचन्द्राचार्य	( स० )	८३
मन्बोधपचासिका टीका	—	( प्रा० सं० )	१८६	समयसारनाटक	वनारसीदाम	( हि० )	८४, ११३
मन्बोधपचासिका	रङ्गधर	( अ० )	३६				११५, ११८, १२०, १५८
मन्बोधसत्तरी सार	—	( स० )	३७				१६५, २७४, ३०५
सम्भेदशिखरपूजा	जवाहरलाल	( हि० )	२०७	समयसारभाषा	राजमल्ल	( हि० )	४, १६५
सम्भेदशिखरपूजा	नदराम	( हि० )	२०७	समयसारभाषा	जयचन्द छावडा	( हि० )	८५
सम्भेदशिखरपूजा	रामचन्द	( हि० )	६१	समयसारवचनिका	—	( हि० )	१६३
सम्भेदशिखरपूजा	—	( हि० )	६१, ११६	समवशरणपूजा	पन्नालाल	( हि० )	२०७
सम्भेदशिखरपूजा	—	( स० )	२०७	समवशरणपूजा	लालचन्द विनोदीलाल	( हि० )	११८

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
ममवशरणपूजा	ललितकीर्त्ति	( सं० )	२०७	सनैया	वनारसीदास	( हि० )	१४४
ममवशरणस्तोत्र	—	( सं० )	०४१, २६४	सहस्रगुणितपूजा	भ० शुभचन्द्र	( सं० )	१०, २००
समाधितत्र भाषा	पर्यंत धर्मार्थी	( गु० )	४५, १६५	सहस्रगुणपूजा	भ० धर्मकीर्त्ति	( सं० )	६२
समाधितत्र भाषा	—	( हि० )	४५, २६२ २६३, २८५	सहस्रनामपूजा	धर्मभूषण	( म० )	२०८
समाधिप्रण भाषा	—	( हि० )	४५, ४६, १६५	सहस्रनामपूजा	चैनसुख	( हि० )	२०८
समाधिप्रण	—	( प्रा० )	१४८	सहस्रनामस्तोत्र	—	( सं० )	५८, १७२
समाधिप्रण	द्यानतराय	( हि० )	१६२	सहेलीगीत	सुन्दर	( हि० )	१३१
समस्तकर्म सन्यास भावना	—	( सं० )	०१७	सहेलीसन्धोवन	—	( हि० )	१५३
समाधिशातक	समतभद्राचार्य	( सं० )	४६	सागारधर्माट्ट	प० आशाधर	( सं० )	००, १६०
समाधिशातक	पूज्यपाद	( सं० )	११०	साखी	ऋषीरदाम	( हि० )	२६०, ३०४
समुच्चय चौबीसी पूजा	रामचन्द्र	( हि० )	११६	साठि सवत्सरी	—	( हि० )	२६४
समुच्चय चौबीसी तीर्थकर अजयराज पूजा	—	( हि० )	१५७	सात प्रकार वनस्पति उत्पत्ति पाठ	—	( हि० )	३
समुच्चय चौबीस तीर्थकर जयमाल	—	( हि० )	१५८	सातव्यसनसञ्ज्ञाय	त्तैम कुशान	( हि० )	२६१
समोसरणवर्णन	—	( हि० )	१	साधर्मो मारै रायमल्ल रायमल्ल की चिट्ठी	—	( हि० )	१७५
समप्रवहण	मुनि मेघराज	( हि० प० )	१८६	साधुवदना	—	( हि० )	१०८
सरस्वतीस्तोत्र	विरचि	( सं० )	१०७	साधुओं के आहार के समय ४६ दोषों का वर्णन	—	( हि० )	२००
सरस्वतीजयमाल	—	( सं० )	२७०	साधु वदना	वनारसीदास	( हि० )	१३६, १६१ ३०४, ३०६, ३०१
सरस्वतीपूजा	—	( सं० )	१५६	सामायिकपाठ	—	( सं० )	१०८, १४६ २०८, ३००, १६०
सरस्वतीपूजा भाषा	पन्नालाल	( हि० )	६१	सामायिकपाठभाषा	त्रिलोकेन्द्रकीर्त्ति	( हि० )	१०८
सर्वेश्वर समुच्चय दर्पण	—	( सं० )	०४७	सामायिकपाठभाषा	जयचन्द्र छात्रडा	( हि० ग० )	१६० ६०६
सर्वसुख के पुत्र अमयचन्द्र की पुत्री ( चाँदवाई ) की जन्मपत्री	—	( हि० )	१३६	सामायिकटीका	—	( सं० प्रा० )	१०८
सर्वार्थसिद्धि	पूज्यपाद	( सं० )	२२	सामायिकमहात्म्य	—	( हि० )	३७
सर्वाधिष्ठायकस्तोत्र	—	( प्रा० )	१४०	सामायिकत्रिधि	—	( सं० )	३१०
सर्वाधिष्ठायकस्तोत्र	—	( हि० )	३०१	सामादिक श्लोक	—	( म० )	१५६
सवैया	केशवदास	( हि० )	१४५				

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
सारमनोरथमाला	साहू अचल	( हि० )	११७	सिद्धान्तसारदीपक	भ० सकलकीर्त्ति	( स० )	२२, १८२
सारसमुच्चय	कुलभद्र	( स० )	३७	सिद्धान्तसार दीपक	नथमल विलाला	( हि० )	२२
सारसमुच्चय	दौलतराम	( हि० )	३८	सिद्धान्तसार समग्र	आ० नरेन्द्रकीर्त्ति	( स० )	१८२
सारस्वत धातुपाठ	हर्षकीर्त्ति	( सं० )	२११	सिद्धों की जयमाल	—	( हि० )	३०४
सारस्वत प्रक्रिया	नरेन्द्र सूरि	( स० )	२३१	सिद्धाष्टक	—	( हि० )	१४७
सारस्वत प्रक्रिया अनुभूति स्वरूपाचार्य		( स० )	८७, २३१	सिंहासन द्वात्रिंशिका	—	( स० )	२०६
सारस्वत प्रक्रिया टीका परमहंस		( स० )	२३१	सिंहासन बत्तीसी,	—	( हि० )	२६०
	परिव्राजकाचार्य			मिन्दूर प्रकरण	वनारसीदास	( हि० )	८, ११४, ११५, ११८, १३३, २३६, २८२
सारस्वत रुपमाला	पद्मसुन्दर	( स० )	२३१	सीख गुरुजनो की	—	( हि० )	१५८
सारस्वत यज्ञ पूजा	—	( सं० )	३०८	सीता चरित्र	गमचन्द्र 'बालक'	( हि० प० )	७६, ११४, २२१
सास बहू का भगडा	—	( हि० )	१७०	सीता की धमाल	लक्ष्मीचन्द	( हि० )	१६७
सास बहू का भगडा	देवा ब्रह्म	( हि० )	२५७	सीता स्वयंवरलीला	तुलसीदास	( हि० )	२७८
साह्य द्वयद्वीपपूजा	विश्व भूषण	( स० )	२०८	सीमधरस्तवन	—	( हि० )	१४७
सिद्ध क्षेत्र पूजा	—	( हि० )	२०८	सीमधर स्तवन उपाध्याय भगत लाभ		( हि० )	१४०
सिद्धचक्रकथा	नरसेन देव	( अ० )	७६	सीमधरस्वामी जिन स्तुति	—	( हि० )	२६०
सिद्धचक्रपूजा	नथमल विलाला	( हि० )	२०८	सीमधरस्तवन	गणेश लालचन्द	( हि० )	२६०
	( अष्टाहिका पूजा )			सीमधर स्वामी स्तवन	—	( प्रा० )	३०६
सिद्धचक्रपूजा	द्यानत राय	( हि० )	६२	सुकुमाल चरित्र माया	नाथूलाल दोसी	( हि० ग० )	२१६
सिद्धचक्रव्रतकथा	नथमल	( हि० )	८६	सुकुमाल चरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	( स० )	२१६
सिद्धचक्रस्तवन	जिनहर्ष	( हि० )	१४७	सुगुरुशतक	जिनदास गोधा	( हि० )	३८, १६२
सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनदि	( स० )	१०६, १४१, १५६, २४४	सुगन्धदशमीपूजा	—	( हि० )	१६२
सिद्धप्रियस्तोत्र टीका	—	( हि० )	१६४	सुगन्धदशमी व्रत कथा	नयनानन्द	( अ० )	१६
सिद्धप्रियस्तोत्र	—	( स० )	२८७	सुगन्धदशमी व्रतोपापन	—	( स० )	२०६
सिद्धपूजा	पद्मनदि	( स० )	२०८	सुगन्धदशमी व्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	( हि० )	२६५
सिद्धपूजा	—	( हि० )	२८६	सुगन्धदशमी पूजा व कथा	—	( सं० )	२६६
सिद्धान्तचन्द्रिका	रामचन्द्राश्रम	( स० )	२३१	सुदर्शन चरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	( स० )	७३
	( कृदन्त प्रकरणा )			सुदर्शन चरित्र	विद्यानदि	( स० )	७६
सिद्धान्तचन्द्रिका वृत्ति	सदानन्द	( स० )	२३१	सुदर्शनजयमाल	—	( प्रा० )	१२०
सिद्धस्तुति	अजयराज	( हि० )	१३०				

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र स०
सुदर्शनरास	ब्रह्म रायमल्ल	( हि० )	१११, ११३ १३१, १३२	सोलहघडी अिनधर्म पूजा मी		( हि० )	१६४
सुदृष्टितरंगिणी	टेकचट	( हि० )	१६०	सोलह सतीस्तवन	—	( हि० )	१६१
सुदामा चरित्र	—	( हि० )	१३६	सोलहस्वप्न	भगवतीदास	( हि० )	१६४
सुप्य दोहा	—	( प्रा० )	१११	( स्वप्न नचीसी )			
सुवाहुरिषिसिधि	माणिक सूरि	( हि० )	१४८	सोपट बंध	कवीरदास	( हि० )	२६७
सुबुद्धि प्रकाश	धानसिंह	( हि० प० )	६५	सौख्यकार्य	अक्षयराम	( स० )	१०६
सुभाषित	—	( हि० प० )	६६	त्रतोषापन विधि			६३, २०५
सुभाषितरत्नावलि	भ० सकलकीर्त्ति	( स० )	६६, ३३७	स्तमनपार्श्वनाथगीत	महिमा सागर	( हि० )	२७३
सुभाषितरत्नसंदोह	अमितगति	( स० )	२३६	स्तवन	—	( हि० )	२६०
सुभाषितसंग्रह	—	( स० )	१३६	स्तवन	—	( हि० )	२६८
सुभाषितार्णव	—	( स० )	६६	स्तवन	जिनकुशल सूरि	( हि० )	३००
सुभाषितार्णव	शुभचंद्र	( स० )	२३७	स्तुति	—	( हि० )	११३
सुभाषितावलि भाषा	—	( हि० )	६६	स्तुति	द्यानंतराय	( हि० )	१३४
सुमद्रासतीमञ्जुषाय	—	( हि० )	२६०	स्तुतिसंग्रह	चट कवि	( हि० )	२६६
सूक्तकवर्णन	—	( स० )	१०६, १६०	स्तोत्रटीका	आशाधर	( स० )	२४६
सूक्तकमेद	—	( हि० )	१३१	स्तोत्रविधि	जिनेश्वर सूरि	( हि० )	२७३
सूक्ति मुक्तावलि	मोमप्रभ सूरि	( स० )	१००, २३७	स्तोत्रसंग्रह	—	( स० )	१०७, १३६ १४६, २४६, २७६
सूक्तिसंग्रह	—	( स० )	१००	स्नपन पूजा	—	( हि० )	१६६
सूत्रपाण्डु भाषा	जयचंद छात्रडा	( हि० )	१६५	स्नान विधि	—	( प्रा० स० )	२५७
सोलहकारण	—	( हि० )	२८६	स्फुट पद	—	( हि० )	१३३
सोलहकारण जयमाल	—	( अ० )	२०६	स्याद्वादमञ्जरी	मल्लिपेण	( मं० )	४८ ४६
सोलहकारण जयमाल	—	( प्रा० )	६०	स्वयभूस्तोत्र	समतभद्राचार्य	( स० )	५८, ११२ १०७, १३८
सोलहकारण पूजा	—	( हि० )	६०	स्वर्ग नर्क और मोच का वर्णन		( हि० )	११६
सोलहकारण पूजा	टेकचट	( हि० )	६२	स्वामी कार्तिकेयानु स्वामी कार्तिकेय		( प्रा० )	६
सोलहकारण पूजा	द्यानतराय	( हि० )	६२	प्रेक्षा			
सोलहकारण भावना	—	( हि० )	६२	स्वामी कार्तिकेयानु जयचंद छात्रडा		( हि० )	६६
सोलहकारण भावना कनककीर्त्ति		( हि० )	१४२	प्रेक्षा भाषा			
सोलहकारण विशेष पूजा	—	( प्रा० )	६३				
सोलहकारण पाश्चा	—	( स० )	१४६				

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पत्र सं०
	<b>ह</b>						
हनुमतकथा ( चौपई )	ब्र० रायमल्ल	( हि० )	८७, १३२ १६१, २२१	हरिवशपुराण	महाकवि स्वयंभू	( अ० )	३६
हनुमच्चरित्र	ब्र० अजित	( म० )	२२१	हृदयालोकलोचन	—	( स० )	२६२
हसमुक्तावलि	कवीरदास	( हि० )	२६७	हितोपदेशएकोत्तरी	श्री रत्नहर्ष के शिष्य	( हि० )	१६०
हसामावना	ब्र० अजित	( हि० )	११७		श्रीसार		
हरिवश पुराण	खुशालचन्द	( हि० )	६७	हितोपदेश की कथाएँ	—	( हि० )	२७७
हरिवश पुराण	ब्र० जिनदाम	( स० )	२२४	हितोपदेशवत्तीसी	वालचन्द	( हि० )	१००
हरिवश पुराण	जिनसेनाचार्य	( स० )	६६	हितोपदेशमाषाः	—	( हि० ग० )	२६६
हरिवशपुराण	दौलतराम	( हि० ग० )	६७, २२४	हुक्कानिषेध	भूधरमल्ल	( हि० )	१२६
हरिवशपुराण	महाकवि धवल	( अ० )	१७४	हेमव्याकरण	हेमचन्द्राचार्य	( स० )	२३१
हरिवशपुराण	यश कीर्ति	( स० )	२२६	होमविधान	आशाधर	( स० )	३०७
				होलिकाचरित्र	छीतर ठोलिया	( हि० )	८०
				होलीरेणुकाचरित्र	जिनदास	( स० )	८०, २२१
				होलीवर्णन	—	( हि० )	२८८



## ★ ग्रन्थ प्रशस्तियों की सूची ★



क्रम संख्या	ग्रन्थ नाम	कर्ता	रचना काल	ग्रन्थ सूची का क्रमांक
१.	अध्यात्मसवैया	रूपचन्द्र	—	६२८
२	आगमसार	मुनि देवचन्द्र	स० १७७६	१
३	आदिनाथ के पंचमंगल	अमरपाल	—	८४६
४	आदिनाथस्तवन	ब्र० जितदास	—	४१५
५	आराधनास्तवन	वाचक विनयविजय	स० १७२६	६२१
६	इस्कचमन	नागरीदास	—	४७०
७	उपदेशसिद्धांतरत्रमाला भाषा	—	स० १७७२	१४२
८	उपासकदशासूत्रविवरण	अभयदेव सूरि	—	१५४
९.	ऊपा कथा	रामदास	—	४१६
१०.	एक सौ गुणहत्तर जीव पाठ	लक्ष्मणदास	स० १८२४	४
११.	करुणाभरन नाटक	लच्छीराम	—	४२६
१२	कर्मप्रकृति	नेमिचन्द्राचार्य	—	११
१३	कर्मस्वरूपवर्णन	—	—	१८
१४	कविकुलकटाभरण	दूलह	—	४७१
१५	कामन्दकीयनीतिसार भाषा	कामद	—	२७६
१६	काल और अंतर का स्वरूप	—	—	१८
१७	गणभेद	रघुनाथ साह	—	४०७
१८	गुणहत्तर माला	मनराम	—	६३०
१९.	गोमट्टसारकर्मकाण्ड भाषा	प० हेमराज	—	३७
२०	गौतमपृच्छा	—	—	४४४
२१	चन्द्रराजा की चौपई	—	स० १६०३	७३२
२२	चन्द्रहंसकथा	टीकम	स० १७०८	४४६
२३	चारित्रसारपत्रिका	—	—	१६१

क्रम संख्या	ग्रन्थ नाम	कर्ता	रचना काल	ग्रंथ मूची का क्रमांक
२४	चारित्रसारभाषा	मन्नालाल	सं० १८७१	१६२
२५	चौबीसठाणाचौपई	माह लोहट	स० १७३६	८६१
२६	चौरासीगोत्रोत्पत्तिवर्णन	नदानद	—	४८३
२७	छवितरंग	महाराजा रामसिंह	—	५६७
२८	छंदरत्नावली	हरिराम	स० १७०८	५८२
२९	जइतपदवेलि	कनकसोम	स० १६२५	६०३
३०	जन्मवृत्तचरित्र	नाथूराम	—	२४७
३१	जानकीजन्मलीला	बालवृन्द	—	५६६
३२	जिनपालित मुनि स्वाध्याय विमलहर्ष वाचक	—	—	५५
३३	जैनमार्त्तण्ड पुराण	भ० महेन्द्र भूपण	—	४८४
३४	ज्ञानसार	रघुनाथ	—	५०७
३५	तत्त्वसारदोहा	भ० शुभचन्द्र	—	१६
३६	तत्त्वार्थबोध भाषा	बुधजन	स० १८७३	६५
३७	तत्त्वार्थसूत्र भाषाटीका	कनककीर्ति	—	८२, ६२
३८	तमाखू की जयमाल	आणदमुनि	—	८०८
३९	त्रिलोकसारबधचौपई	सुमतिकीर्ति	स० १६२७	७१६, ५६४
४०	त्रिलोकसारभाषा	उत्तमचन्द्र	स० १८४१	५६८
४१.	दशलक्षणव्रतकथा	त्र० ज्ञानसागर	—	५१४
४२	दस्तूरमालिका	वशीधर	स० १७६५	८६४
४३	द्रव्यसंग्रहभाषा	वशीधर	—	१२४
४४	श्री धू चरित्त	—	—	५७६
४५	नववाडसज्जाय	जिनहर्ष	—	८८८
४६	न्यायदीपिकाभाषा	पन्नालाल	स० १६३५	३१२
४७.	नागदमनकथा	—	—	७५८
४८	नित्यविहार ( राधामाधो )	रघुनाथ साह	—	५०७
४९	नेमिजी का व्याहलो	लालचन्द्र	—	६२५
	( नवमगल )			
५०	नेमिव्याहलो	हीरा	स० १८४८	५५४
५१	नेमिनाथचरित्र	अजयराज	स० १७६३	६०६

क्रम संख्या	ग्रंथ नाम	कर्ता	रचना काल	ग्रंथ मूची का क्रमांक
५०	नदवत्तीसी	हेमविमल सूरि	म० १५६०	४८५
५३	नदरामपञ्चीमी	नदराम	म० १७४५	५७२
५४	परमात्मपुराण	दीपचन्द्र	—	२६८
५५	पाकशास्त्र	अजयराज पाटर्नी	म० १७६३	७२६
५६	पार्श्वनाथ स्तुति	भामिकुश्ल	—	८१६
५७	पुरंदरचौपई	त्र० मालदेव	—	५५५
५८	पुण्यसारकथा	पुण्यकीर्ति	म० १७६६	५६७
५९	पचाख्यान ( पचतंत्र )	कवि निरमलदाम	—	५६७
६०	पचास्तिकावभाषा	बुधजन	म० १८६०	१३०
६१	प्रबोधचन्द्रोदय	मल्ल कवि	म० १६०१	५८६
६२	प्रतिष्ठासङ्गसंग्रह	वसुनट्टि	—	४०५
६३	प्रद्युम्नचरित्र	मथारु	म० १४११	४६७
६४	प्रसंगसार	रघुनाथ	—	५०७
६५	वारहखडी	श्रीरत्नलाल	—	८४०
६६	बुधरासा	—	—	८०८
६७	भक्तामरस्तोत्रभाषा	गगाराम पाडे	—	७३१
६८	भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	म० रत्नचन्द्र मणि	म० १६६७	४०६
६९	भक्तिभावती ( भक्ति भाव )	—	—	५७६
७०	भद्रबाहुचरित्रभाषा	चपाराम	म० १८००	२६६
७१	भद्रबाहुचरित्र	किशनसिंह	म० १७८३	५२७
७२	मदनपराजय भाषा	स्वरूपचंद त्रिलाला	म० १६१८	५६०
७३	मधुमालतीकथा	—	—	५७४
७४	महाभारत	लालदास	—	५१८
७५	मानमजरी	नददास	—	५५५
७६	मितभाषिणी टीका	शिवादित्य	—	३१६
७७	मूलाचारभाषाटीका	ऋषभदास	स० १८८८	२११
७८	मृगीसवाद	—	—	७२६
७९	मोडा	हर्षकीर्ति	—	८०७
८०	यशोधरचरित्र	परिहानद	म० १६७०	५१४
८१	रामकृष्णकाव्य	प० सूर्यकवि	—	२६३



क्रम संख्या	ग्रंथ नाम	कर्ता	रचना काल	ग्रंथ सूची का क्रमांक
८२.	रूपदीपपिंगल	जयकृष्ण	स० १७५६	५८५
८३.	वच्छराजहंसराजचौपई	जिनदेव सूरि	—	६३६
८४.	त्रिणिकप्रिया	सुखदेव	स० १७६०	७१६
८५.	वर्द्धमानपुराणभाषा	प० केशरीसिंह	स० १८७३	४७१
८६.	वकचोरकथा	नथमल	स० १७२५	३३४
८७.	विक्रमप्रवधरास	विनयसमुद्र	स० १५८३	६०३
८८.	विद्याविलासचौपई	आज्ञासुन्दर	स० १५१६	६०३
८९.	वैतालपच्चीसी	—	—	५६२, ६०३
९०.	वैनविलास	नागरीदाम	—	४७०
९१.	वैराग्यशतक	—	—	२७६
९२.	व्रतविधानरासो	सगही दौलतराम	सं० १७६५	५०४
९३.	शांतिनाथस्तोत्र	कुशलवर्द्धन शिष्य नगागणि	—	४४२
९४.	शालिभद्रचौपई	जिनराज सूरि	स० १६७८	५२७
९५.	शृंगारपच्चीसी	छविनाथ	—	४७५
९६.	पट्टमालवर्णन	श्रुतसागर	स० १८२१	७६३
९७.	षोडशकारणव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	—	५१४
९८.	सतरप्रकारपूजा प्रकरण	साधुकीर्ति	स० १६१८	५३५
९९.	सप्तपदार्थी	भावविद्येश्वर	—	३१७
१००.	सखेश्वरपार्श्वनाथ स्तुति	रामविजय	—	८०८
१०१.	सयमप्रवहण	मुनि मेघराज	सं० १६६१	६४
१०२.	संबोधसत्तरी सार	—	—	२४१
१०३.	संबोधपंचासिका	रङ्गू	—	२३६
१०४.	साखी	कबीरदास	—	६२६
१०५.	सामायिकपाठभाषा	त्रिलोकेन्द्रकीर्ति	सं० १८३२	६८७
१०६.	सारसमुच्चय	कुलभद्र	—	२४४
१०७.	सारसमुच्चय	दौलतराम	—	२४५
१०८.	सुकुमालचरित्र भाषा	नाथूलाल दोसी	—	२६३
१०९.	सुबुद्धिप्रकाश	थानमिह	स० १८४७	६११

## ★ लेखक प्रशस्तियों की सूची ★

क्रम संख्या	ग्रंथ नाम	कर्ता	लेखन काल	ग्रन्थ सूची का क्रमांक
१.	आगमसार	मुनि देवचन्द्र	स० १७६६	१
२.	आत्मानुशासन टीका	पं० प्रभाचन्द्र	स० १५८१	२५३
३.	आदिपुराण	पुष्पदत्त	म० १५४३	२६६
४.	आराधनाकथाकोष	—	सं० १५४५	३१७
५.	उत्तरपुराण	पुष्पदत्त	स० १५५७	४७६
६.	उपासकाध्ययन	आ० वसुनदि	स० १८०८	४८
७.	कर्मप्रकृति	नैमिचन्द्राचार्य	म० १६०६	६
८.	कर्मप्रकृति	"	सं० १६७३	१२
९.	गोमट्टसार	"	स० १७६६	२६
१०.	चतुर्विंशतिजिनकल्याणक पूजा जयकीर्त्ति	—	स० १६८४	३४५
११.	चारित्रशुद्धिविधान	भ० शुभचन्द्र	स० १५८४	३५३
१२.	जंबूस्वामीचरित्र	महाकवि वीर	सं० १६०१	४८५
१३.	जिण्यत्तचरित्त	पं० लाखु	स० १६०६	४८६
१४.	जिनसंहिता	—	स० १५६०	३५६
१५.	खण्डकुमारचरिए	पुष्पदत्त	सं० १५१७	४६०
१६.	"	"	स० १५२८	४६१
१७.	तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	स० १६४६	७८
१८.	तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति	—	स० १५५७	७६
१९.	त्रैलोक्य दीपक	वामदेव	स० १५१६	६०१
२०.	द्रव्यसंग्रह	नैमिचन्द्राचार्य	—	१११
२१.	द्रव्यसंग्रहटीका	ब्रह्मदेव	स० १४१६	२८
२२.	धन्यकुमारचरित्र	सकलकीर्त्ति	सं० १६५६	४६३
२३.	धन्यकुमारचरित्र	"	सं० १५६४	३५१
२४.	धर्मपरीक्षा	आ० अमितगति	सं० १७६२	१७७
२५.	नन्दवत्तीसी	हेमविमल सूरि	सं० १६	४८५
२६.	पद्मनदिपचर्चिशक्ति	पद्मनदि	सं० १५३२	१६१

क्रम संख्या	ग्रंथ नाम	कर्ता	लेखन काल	ग्रंथ सूची का क्रमांक
२७.	परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	सं० १४८६	११६
२८	प्रबोधसार	पं० यश कीर्त्ति	सं० १५२५	१६५
२९.	प्रवचनसारभाषा	हेमराज	सं० १७११	२७१
३०.	प्ररनोत्तरश्रावकाचार	सकलकीर्त्ति	सं० १६३०	१६६
३१	बाहुबलिदेवचरिए	प० धनपाल	सं० १६०२	५००
३२	भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	भ० रत्नचन्द्र सूरी	सं० १७२५	४२६
३३	भगवानदास के पद	भगवानदास	सं० १८७३	४२६
३४	भविसयत्तचरिए	पं० श्रीधर	सं० १६४६	५०५
३५.	भविसयत्तचरिए	"	सं० १६०६	५०६
३६.	भावसंग्रह	देवसेन	सं० १६२१	१३३
३७	"	"	सं० १६०६	१३४
३८.	"	श्रुतमुनि	सं० १५१०	१३५
३९.	भोजचरित्र	पाठक राजवल्लभ	सं० १६०७	५०७
४०.	मृगीसंवाद	—	सं० १८२३	७२६
४१	मूलाचारप्रदीपिका	भ० सकलकीर्त्ति	सं० १५८१	२१०
४२.	यशोधरचरित्र	वासवसेन	सं० १६१४	२७७
४३	लब्धिसार	नेमिचन्द्राचार्य	सं० १५५१	१३६
४४	वड्डमाणकहा	नरसेन	सं० १५८४	५१८
४५.	वड्डमाणकठव	प० जयमित्रहल	सं० १५५०	५१६
४६	वणिकप्रिया	सुखदेव	सं० १८५५	७१६
४७	शब्दानुशासनवृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	सं० १५२४	३६५
४८.	षट्कर्मोपदेशमाला	अमरकीर्त्ति	सं० १५५६	५२३
४९	षट्कर्मोपदेशमाला	भ० सकलभूषण	सं० १६४४	८६
५०	षट्पचासिका बालाबोध	भट्टोत्पल	सं० १६५०	४५६
५१	समयसार टीका	अमृतचन्द्राचार्य	सं० १७८८	२८३
५२	"	"	सं० १८००	२८६
५३	समयसारनाटक	बनारसीदास	सं० १७०३	२६०
५४.	संयमप्रवहण	मुनि मेघराज	सं० १६८१	६४
५५	सिद्धचक्रकथा	नरसेनदेव	सं० १५१५	५३३
५६	हरिवशपुराण	महाकवि स्वयम्भू	सं० १५८२	५३६

# \* ग्रंथ एवं ग्रंथकार \*

## संस्कृत-भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अकलकदेव—	नरनार्यराजवार्तिक	१५	अमृतचन्द्र—	तत्त्वार्थसार	१७६
	प्रायश्चित्त सग्रह	१८६		पचास्तिकायटीका	१६, १८६
अक्षयराम—	गणोकारपैतोसी	२०५		पञ्चनमार टीका	१६२
	मामातितनुर्दशी	२०५		पुरुषार्थसिद्धयुपाय	३२, १८५
	सौख्यव्रतोपापनपूजा	६३, २०१, २०६		ममयसार कलशा	६३, १६६, २५१
अग्निवेश—	अजनशास्त्र	२४१		ममयसार गीता	१६३
ब्रह्म अजित—	इनुमचरित्र	२२१	अमृतप्रभसूरि—	योगशतक	२४७
अनन्तवीर्य—	प्रमेयरत्नमाला	४८	प० अल्लारी—	भोजप्रबन्ध	२१६
अन्नभट्ट—	तर्कसंग्रह	४२, १६६	अशग—	शक्तिनाथ पुराण	६६
अनुमूतिस्वरूपाचार्य—	सारस्वतप्रक्रिया	८७, २३१	आनन्दराम—	चीनीसठाया चर्चा टाका	६
अभयदेव सूरि—	अन्तगहदशाशो वृत्ति	१	आशाधर—	जिनयज्ञकथ ( प्रति"टापाठ )	२००
	उपासकदशासूत्र विवरण	४४		जिनमहयनाम	१०२, १३६, २०५, २३६, २४०
अभयनदि—	दशलक्षण पूजा	१०१		रत्नयपूजा	२००
अभ्रदेव—	व्रतोद्योचन श्रावकाचार	३६		सागारधर्मामृत	३७, १६७
अभिनव वादिराज ( प० जगन्नाथ )				स्तोत्र टीका	२४६
	कर्मस्वरूप वर्णन	५		ज्ञानविधान	३०१
अभिनव धर्मभूषण—	न्यायदीपिका	६७, १६६	इन्द्रनदि—	अकुरारोपणविधि	६६
अमरकीर्ति—	जिनसहस्रनामटांका	२३६		नातिसार	२३५
अमरसिंह—	अमरकोश	८८, २३२		तत्त्वार्थमृत	११, १२, ५८, १०५, १११, ११२, १३६, १६७, १७२
अभितिगति—	वर्मपरीक्षा	२४, १८६	उमास्वामी—	११६, २६६, २७२, २७६, ३०२	
	भावनावतीर्षा	१५६, २५७		३०८, ३०९	
	श्रावकाचार	३६			
	सुभाषितरत्नसदोह	२३६			

प्रथकार का नाम	ग्रंथ नाम	प्रथ सूची की पत्र सं०	प्रथकार का नाम	ग्रंथ नाम	प्रथ सूची की पत्र सं०
	श्रावकाचार	३६	चड—	प्राकृत व्याकरण	२३०
कमलप्रभ—	जिनपजर स्तोत्र	१०२	चाणक्य—	चाणक्यनीतिशास्त्र	१११, २३५, २७५
कालिदास—	कुमार समव	२१०		नीतिशतक	६४
	मेघदूत	२१७	चामुण्डराय—	चारित्रसार	२५
	रघुवश	२१८		भावनासार संग्रह	२५
	श्रुतबोध	२२, २३३	मुनि चारित्रभूषण—	महीपालचरित्र	७६
कालिदास—	दुर्घट काव्य	२११	जयकीर्ति—	चतुर्विंशतिजिनकल्याणकपूजा	५१
	श्रु गारतिलक	२५०	जयानंदि सूरि—	देवप्रभा स्तोत्र	२४०
काशीनाथ—	गीघबोध	२४५	जयसेन—	धर्मरत्नाकर	१८५
कुमुदचन्द्र—	स्न्याण मदिा स्तोत्र	१०१, ११२, १२२, १३६, १५८, २०८	पाण्डे जिनदास—	पंचकल्याणक पूजा	५६ (१० १६४२)
	सारममुच्चय	३७	प० जिनदास—	होलीरेणुकाचरित्र	८०, २२१
कुलभद्र—	वृत्तरत्नाकर	३३	त्र० जिनदाम—	जम्बूद्वीपपूजा	२००
भट्ट केदार—	रत्नत्रयपूजा	२०५		जम्बूस्वामी चरित्र	६८, २१०
केशवसेन (कृष्ण सेन)	रांक्षिणीव्रतपूजा	५६, २०६	जिनदेव—	हरिवंश पुराण	२०४
	षोडशकारणमंडलपूजा	६०, २०७, ३०८		मदनपराजयनाटक	६१, २३४
	षोडशकारण पूजाउघापन	२०६	जिनसेनाचार्य—I	श्रादिपुराण	६३, ६५, २२२
गजसार ( धवलचन्द्र के शिष्य )				जिनमन्त्रनाम	१००, १०७, ११६
	विचारषड्विंशिका स्तोत्र	२६३			२०४, २३६, ३०१
गणिनंदि -	ऋषिमंडलपूजा	२०४	जिनसेनाचार्य—II	जैन विवाह विधि	२००
गुणचंद्र -	अनंतव्रतपूजा	२०५		हरिवंशपुराण	६६
श्री० गुणभद्र—	आत्मानुशासन	३३, १६१	ज्ञानकीर्ति—	यशोधरचरित्र	५१, २१७
	उत्तरपुराण	१६, २२२	ज्ञानभूषण—	अक्षयनिधिप्रतोघापन	२०६
	जिनदत्तचरित्र	६६		शास्त्रमंडलपूजा	२०१
	धन्यकुमार चरित्र	२११	ब्रह्म ज्ञानसागर—	षोडशकारणप्रतोघापन पूजा	६०
गुरुभद्र—	शातिनाथ स्तोत्र	११७	दशरथ महाराज—	गनिश्वर स्तोत्र	१४०
गुणभूषणाचार्य—	श्रावकाचार	३६	कवि दामोदर—	चन्द्रप्रभचरित्र	६७, २१०
गोविन्द—	पुरुषार्थानुशासन	१६६		श्रीपालचरित्र	७८
गौतम गणधर—	ऋषिमंडलस्तोत्र	१०१	दीक्षित देवदत्त—	मन्मेदशिखरमहात्म्य	३६
			देवनन्द—	जैनेन्द्रव्याकरण	८३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	मिद्विप्रिय स्तोत्र	१०६, १४१ १५६, २४४	ब्र० नेमिन्द्र—	धन्यकुमार चरित्र	७०, २१२
देवसेन—	आलाप पत्रनि	१६६		वर्मापदेशश्रावकाचार	३०, १८५
	नयचक्र	१६६		नागश्रीकथा ( रात्रिमौजन त्याग कथा )	८३
भ० देवेन्द्रकीर्ति—	चन्द्रायणप्रतपूजा	१६६		नेमिनाथपुराण	६४, २२०
	त्रेपनक्रियाप्रतोद्यापन	२०५		श्रातिहर चरित्र	७२, २१६
	द्वादशप्रतपूजा	२०१, २०६		श्रीपालचरित्र	७८, २१६
	गविप्रनविवान	३०८	पद्मसुन्दर—	मारस्वत रूपमाला	२३१
	देवव्रतकथा	२२७	पद्मप्रभदेव—	पार्श्वस्तोत्र	११०
वनजय—	द्विसंधानकाव्य ( मर्त्याङ्ग )	६६		लक्ष्मीस्तोत्र	१०७
	नाममाला	८८, १३०	पद्मप्रभमलवारि देव—	नियमसार टीका	१८५
	विद्यावद्वाग्नात्र	३, १०७, १५७ १८६, २४३	पद्मनन्दि -	ग्रहंतपूजा	१६७
भ० वर्मकीर्ति—	महद्युग्यपूजा	६२		पार्श्वनाथस्तोत्र	२६०
	मन्मथकवकौमुदी	८६		लक्ष्मीस्तोत्र	१०६, २४२, २४७
आचार्य धर्मचन्द्र—	गांतमस्वामी चरित्र	६७		श्रावकाचार	३५
वर्मदास—	विदग्धमुखमदन	७८, २१६	पद्मनाभ कायस्थ—	सिद्धचक्रपूजा	२०८
वर्मभूषण—	निममहसनाम पूजा	१३, १०१, २०८		यशोधरचरित्र	२१७
प० नकुल—	शालिहोत्र	१६६	परमहंस परिव्राजकाचार्य—	मारस्वतप्रक्रिया	२३१
नदिगुरु—	प्रायश्चित्त ममुच्चय चूल्कि	३, ३२ १८६	पचाननभट्टाचार्य—	परिभाषापरिच्छेद (नयमूल सूत्र)	१६६
नरेन्द्रकीर्ति—	नामतीर्थाङ्कपूजा	१०६	प्रभाचन्द्र—	आत्मानुशासनटीका	२६, १६१
नरेन्द्रसेन—	भिद्वान्तमात्मग्रह	१८२		नच्यार्थरत्नप्रमा	१५, १७८
नरेन्द्रसूरि—	मारस्वतप्रक्रिया टीका	२३१		नच्यार्थसूत्रटीका	१२
नवनिधिराम—	योग समुच्चय	१६७		पचारितकायप्रदीप	१६
नागचन्द्रसूरि—	विषापहार टीका	२४३	पार्श्वनाग—	रत्नकरणदशावकाचारटीका	३१
नारायण—	चमत्कारचिंतामणि	२४५	पृथ्वीपाद—	आत्मानुशासन	२१०
नीलकण्ठ—	नीलकण्ठ उद्योतिष	१४६		इन्दोपदेश	२८८
नेमिचन्द्र—	द्विसंधानकाव्य टीका	६६		परमानन्दस्तोत्र	२६६
				श्रावकाचार	३५, १३२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	समाधिशातक	११०		१५८, २०१, २७३, २७७. ३११	
	सर्वार्थसिद्धि	२२	मालदेवाचार्य—	शान्तिनाथस्तोत्र	३१२
भट्टी—	महीमट्टी	८७	प० मेधावी—	धर्ममप्रहश्रावकावार	३०, १८५
भट्टोत्पल—	षट्पचासिका बालाबोत्र	२४६	प० यश कीर्त्ति—	प्रबोधसार	३१
भर्तृहरि—	नातिशातक	१४२	यशोनदि—	वर्मचक्रपूजा	५५
	भर्तृहरिशातक	३१०		पचपरमेष्ठीपूजा	५७
	वैराग्यशातक	१४२	योगदेव—	तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति	१३
	गतकत्रये	२३६	रणमल—	धर्मचक्र	२०४
भानुकीर्त्ति—	चतुर्विधसिद्धचक्रपूजा	५२	भ० रत्ननदि—	अष्टाङ्गिकाकथा	२२५
	रोहिणीव्रतवधा	२२७		नन्दीश्वरविधान	२००
भारवि—	किराताजुर्नाय	२०६		पल्यविधानपूजा	५८, १७२
भावविद्येश्वर—	सप्तपदार्थी	४८		मद्रवाहुचरित्र	७३, २१४
भूधर मिश्र—	षट्पाहुड टीका	१६४	रत्नचन्द्र—	जिनगुणसम्पत्तिव्रतपूजा	३०८
भूपाल कवि—	भूपालचतुर्विंशति	१०६, २०२, २६२		पचमेरूपूजा	२०६
मल्लिपेण--	निशिभोजनकथा	२२६		भक्तामरस्तोत्र वृत्ति	२४१
	मञ्जनचित्तवल्लभ	१५६	रविपेणाचार्य—	पद्मपुराण	२२३
मल्लिपेणसूरि—	स्याद्वादमजर्ग	४८, ४९	राजमल्ल—	अध्यात्मकमलमार्त्तगड	३८
महावीराचार्य—	पट्ट्विशिका	२६८		लारीमहिता ( श्रावकाचार )	१८७
महासेनाचार्य—	प्रद्युम्नचरित्र	२१३	पाठक राजवल्लभ—	चित्रसेनपद्मावती कथा	८३
भ० महेन्द्रभूषण—	जैनमार्त्तगडपुराण	२६६		भोजचरित्र	७४
माघ—	शिशुपालवध	२१६	रामचन्द्राश्रम—	सिद्धान्त चन्द्रिका	२३१
माणिक्यनदि—	परीवामुख	४८	रामचन्द्राचार्य—	प्रक्रियाकौमुदी	२३०
माणिक्यसुन्दर—	शुकराजकथा	२२६	पं० रामरत्न शर्मा—	प्रक्रिया रूपावली	८७
माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव—			ब्र० रायमल्ल—	भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	१०६
	नृपणासारटीका	६	लक्ष्मीचन्द्र—	पचकल्याणपूजा	२०२
	त्रिलोकसारटीका	६२	ललितकीर्त्ति—	समन्तराणपूजा	२०७
	लब्धिसारटीका	२०, २८१	लोलिम्बराज—	वैद्य जीवन	२४७
मानतुगाचार्य—	भक्तामरस्तोत्र	११, १०५, १०६	लोहाचार्य—	तीर्थमहान्म्य	३६
	१०७, ११०, १११, १३८, १४०				

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
वर्द्धमान भट्टारक देव—	वरागचरित्र	७७, २१८	श्रीपतिभट्ट—	भक्तामरण उद्यापन	५६, २०८
वामभट्ट—	अष्टांगहृदयसहिता	२४६	श्रीपतिभट्ट—	च्योतिपरलमाला	२५५
वादिचन्द्र सूरि—	ज्ञानसूर्योदय नाटक	८६	श्री० शुभचन्द्र—	ब्रानार्णव	१०, १६२
वादिराज—	एकीमावरतोत्र	१०१, १०३	भ० शुभचन्द्र—	अष्टाहिका कथा	८१, २२६
वामदेव—	यशोधर चरित्र	२१७		अष्टाहिका पूजा	१६८
	त्रैलोक्य दीपक	६३		कर्मदहनपूजा	२०८
	मान सग्रह	१८१		गणेशरत्नलय पूजा	१६८
वामभयसेन—	यशोधरचरित्र	५५, २१७		चन्दना चरित्र	२१०
विक्रम—	नेमिदूत काव्य	२१२		चारित्र्यशुद्धिविधान	५२
आचार्य विद्यानदि—	अष्टमहर्षी	४६		जीवधर चरित्र	२११
	आप्तपरीक्षा	१६६		निशचतुर्विंशतिपञ्चा	२००
	तत्त्वार्थशंकराचिकालका	१५		पंचपरमेष्ठीपूजा	२०४
विद्यानदि ( भ० देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य )	सुदर्शन चरित्र	७६		पंचमतीयापन	२०८
विरचि—	मरस्वती स्तोत्र	१०७		पाण्डवपुराण	६८, २२३
	मारस्वत स्तोत्र	१०७		श्रेणि रूचरित्र	८६६
विश्वकर्मा—	चीरार्णव	२८५	शोभन मुनि—	महद्यनामगुणितपूजा	६२
वीरनंदि—	आचारसार	२३, १२२	श्रीकृष्णमिश्र—	मुभापितार्णव	२३७
	चन्द्रप्रसन्नचरित्र	६८, २१०	श्रुतमुनि—	चौबीसजिन स्तुति	२३८
वीरभद्र—	पाण्डवद दलन	१२५		प्रबोधचन्द्रोदय नाटक	२३३
त्रोपदेव—	धातुपाठ	२३०	श्रुतसागर—	निमगोसार	१६
शकराचार्य—	गगाष्टक	३०१		भावसग्रह	२०, १८१
	गोविन्दाष्टक	३०१		जिनमहद्यनामस्तोत्र टीका	१०२, २३४
शिवादित्य—	मितभाषिणी टीका	६८		तत्त्वार्थसूत्रटीका	१३
शालिपडित—	नेमिनाथ स्तवन	२१०		त्रतकथा कौश	२२६
श्रीधर—	मविन्द्यदत्त चरित्र	७६, २१६		यशपरमस्थानविधानकथा	८६
श्रीभूषण—	अनतप्रतपूजा	१६७	सकलकीर्ति—	आदिपुराण	६३, २०६
	चारित्र्यशुद्धिविधान	१६६		गणेशरत्नलय पूजा	११
				बन्धुकुमारचरित्र	७०, २१२
				प्रश्नोत्तरभावकाचार	८१, १८६



ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पार्श्वनाथचरित्र	२१३	पं० सूर्य कवि—	रामकृष्णकाव्य	२१८
	पुराणसंग्रह	६४	सोमचन्द्र गणि—	वृत्तरत्नाकर टीका	२३३
	मूलाचार प्रदीप	३३	सोमकीर्त्ति—	प्रद्युम्न चरित्र	२१३
	यशोधर चरित्र	७५, २१७		यशोधर चरित्र	७५, २१७
	शांतिनाथपुराण	६६, २२४		सप्तव्यसन कथा	८६, २२६
	सद्माषितावली	६५, ६६, २३७	सोमदेव—	यशस्तिलक चम्पू	७४
	सिद्धान्तसारदीपक	२०, १८२	सोमप्रभाचार्य—	सूक्तिमुक्तावली	१००, २३७
	सुकुमालचरित्र	२१६	सोमसेन—	त्रिवर्णाचार	१८४
	सुदर्शनचरित्र	७६		दक्षिणयोगीन्द्र पूजा	२०१
सकलभूषण—	उपदेशरत्न माला	२३, १८८		भक्तामरस्तोत्र पूजा	२०३
	( षट् कर्मोपदेशरत्न माला )			वर्द्धमान पुराण	२२३
सदानन्द—	सिद्धान्तचन्द्रिका वृत्ति	२३१	हरिचंद—	धर्मशर्माभ्युदय	२१२
आ० समन्तभद्र—	देवागमस्तोत्र	४७, २५०	हरिभद्र सूरि—	षट् दर्शन समुच्चय	१६६
	रत्नकरण्डश्रावकाचार	३४	श्री वल्लभवाचक हेमचन्द्राचार्य—		
	समन्तभद्रस्तुति	१०८		दुर्गपदप्रबोध	०३१
	समाधिशतक	८६	दूर्षकीर्त्ति—	सारस्वत घातु पाठ	२०१
	स्वयभूस्तोत्र	१०७, ११०, १३७		सूक्तिमुक्तावली टीका	२३७
सहस्रकीर्त्ति—	त्रिलोकसार सटीक	०३४	हेमचन्द्राचार्य—	प्राकृतव्याकरण	२३०
सिद्धसेन दिवाकर—	कल्याणमदिरस्तोत्र	१२६		हेमव्याकरण	२३१
	सन्मतितर्क	१६७		अभिधानचिन्तामणिनाममाला	२३२
	शक्ररत्नवन	३०१		अनेकार्यसंग्रह	२३२
सुधाकलश—	एकचरनाममाला	८८			
सुधासागर—	पञ्चकल्याणक पूजा	५६			
सुबन्धु—	वासवदत्ता	२१८	अभयदेव—	पार्श्वनाथ स्तवन	२६४, ३०१
सुमतिकीर्त्ति—	जिन विनती	१६४	स्वामी कार्तिकेय—	कार्तिकेयानुप्रेक्षा	४६, १६१
	कर्मप्रकृति वृत्ति	१७६	आचार्य कुन्दकुन्द—	अष्ट पाहुड	३६
	गोमट्टसार कर्मकाण्डटीका	८		द्वादशानुप्रेक्षा	१६२
सुमतिसागर—	दशलक्षण पूजा	५४		पञ्चाशतिनाय	१६, १८०
सुरेश्वरकीर्त्ति—	शान्तिनाथ पूजा ।	२०७		प्रवचनसार	८२, १६३

### प्राकृत-भाषा

अभयदेव—	पार्श्वनाथ स्तवन	२६४, ३०१
स्वामी कार्तिकेय—	कार्तिकेयानुप्रेक्षा	४६, १६१
आचार्य कुन्दकुन्द—	अष्ट पाहुड	३६
	द्वादशानुप्रेक्षा	१६२
	पञ्चाशतिनाय	१६, १८०
	प्रवचनसार	८२, १६३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	रथसार	१८७		विशेषसत्तात्रिमगी	१६
	पट्पाहुड ४३, ११०, १३२, १६४			सत्तात्रिमगी	१६
	समयसार	१३२, १६४, २०७	पद्मनन्दि—	धर्मरसायन	२६, १८५
गौतम स्वामी—	सर्वोधपचासिका	१२३, १८६		पद्मनन्दिपचविंशति	३०, २५६
देवसेन—	आराधनासार	८०, ११०, ११७, ११८, १६१, ३१२	भावदेवाचार्य—	कालिकाचार्यकथानक	२२५
	तत्त्वसार	१०, ११०	भाव शर्मा—	दशलक्षण जयमाल	५४, २०१
	दर्शनसार	१६६, १६६	विनयराज गण्—	ना. सचय	१८१
	भावसमूह	२०, १८१	यति वृषभ—	त्रिलोक प्रबन्धि	२३४
	सर्वोधपचासिका	११८	हेमचंद्र सूरि—	पुष्पमाल	१८६
धर्मदास गण्—	उपदेशसिद्धांतरत्नमाला	२३	<b>अपभ्रंश भाषा</b>		
भडारी नेमिचन्द्र—	उपदेशसिद्धांतरत्नमाला	२३	अमरकीर्ति—	प्रदूकर्मोपदेशरत्नमाला	७८, १८८
	पष्टिशतप्रकरण	३१०	गोयमा —	रोष (क्रोध) वर्णन	११७
नेमिचन्द्राचार्य—	आश्रवत्रिमर्गा	१	जयमित्र हल—	वर्द्धमान काव्य	७७
	उदय उदीरणा त्रिमर्गा	१६		श्रृणिक चरित्र	७८
	कर्मप्रवृत्ति	३, १३५, २७६	धनपाल—	बाहुबलि चरित्र	७२
	वृषणसार	६		मविसयत्तर्पचमीकथा	७३, २१६
	गोमट्टसार	६, १७७		( मविष्यदत्ता पचमी कथा )	
	गोमट्टसार ( कर्मकाण्ड गाथा )	११२	धवल—	हरिविंशपुराण	१७४
	चौबीस ठाणा चर्चा	६, १७७	नयमानन्द—	सुगंधदशमीव्रत कथा	८६
	जीव समाग वर्णन	१०	नरसेन देव—	वर्द्धमान कथा	७७
	त्रिमर्गासार	११०, १७६		सिद्धचक्र कथा	७६
	त्रिमर्गासारमट्टि	१८०	भडारी नेमिचन्द्र—	नेमीश्वर जयमान	११७
	त्रिलोकसार	६०, २३४	पुष्पदंत—	आदिपुराण	२२२
	त्रयसमूह १६, १०७, ११२, १२२			उत्तरपुराण	६७
		१४५, १८०		नागकुमारचरित्र	६६
	बोधत्रिमर्गा	१६	मनसुख—	कन्यायाक वर्णन	१३७
	भावत्रिमर्गा	१६	यश कीर्ति—	हरिविंशपुराण	२२५
	तन्त्रसार	२०	पं० योगदेव—	पनिपुत्रतानुदेवा	११७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
योगीन्द्रदेव—	दोहा शतक	१६२		क्वका वृत्तीर्षी	१३३, १५२
	परमात्मप्रकाश	४१, १२४, ११८ १३१, १७१, १६२		चरखा चउपई	१५५
	योगसार	४२, ११४, ११६, ११८ १३२, १६४, १६४, ३०५		ज्ञार मित्रों की कथा	१५३
	श्रावकाचार दोहा ( सावयधर्मदोहा )	१५६		चौवीसतीर्थकर पूजा	१३०, १६३
इक्षु—	आत्मसंभोवन काव्य	३६		चौवीसतीर्थकर स्तुति	१३०
	दशलक्षण जयमाल	५२, २०१		जिनगीत	१६३
	वल्लभद्र पुराण	२२३		जितजी की रसोई	१२६
	षोडशकारण जयमाल	६१		यमोकर सिद्धि	१३१
	सत्बोध पत्रासिका	३६		नदीश्वर पूजा	१३०
पं० लाखू—	ज्ञिप्रयत्नचरित्र	६६		नेमिनाथ चरित्र	२६८
वीर—	जम्बूस्वामीचरित्र	६८		मद १३०, १३२, १३३, १६३	
स्वयभू—	ऋग्वेद पुराण	७३		पचमेरु पूजा	१३०
कवि सिंह—	प्रद्युम्नचरित्र	२१३		पार्श्वनाथजी का सालेहा	१३०
हरिपेण—	धर्मपरीक्षा	१८४		त्राल्यन्नर्यन	१३०
				चीसतीर्थकरों की जयमाल	१३०
				यशोधर चौपई	७७
				चदना	१३०
				शांतिनाथ जयमाल	१३०
				शिवरमणी का विवाह	१६३
				विजती	१६१

## हिन्दी भाषा

अखयराज (श्रीमाल)	कल्याणमदिरस्तोत्र भाषा	१०२		ब्रह्म अजित—	हसा भावना	११७
	भक्तामरस्तोत्र भाषा	११४		अनंतकीर्ति—	जखडी	११६
अखयराम लुहाडिया—				अभयचंद्र सूरि—	मार्गीतु गी स्तवन	३०३
	शीलतर गिनी कथा	८६		अमरपाल—	आदिनाथ के पंच मंगल	१६८
साह अचल—	सारमनोरथमाला	११७		अमरमणिक—	चैत्रीविधि	१४७
अचलकीर्ति—	कर्मवृत्तीसी	१७७७		बालक अभीचन्द्र—	बधाई	१३७
	विष्णुपहार स्तोत्र भाषा	१०६, १२४ १०६, १३१, २४३		अवधू—	द्वादशानुप्रेक्षा	११६
अजयराज ( पाटणी )				आज्ञा सुन्दर—	विद्याविलास चौपई	२६८
	आदिनाथ पूजा	१३०		आणंदमुनि—	तमाखू की जयमाल	१५०, २६२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
आनंद कवि—	बोरूसार	१८०		सोसट बंध	२६७
आनन्द चन्द्र—	नन्द मौजाई का भगडा	१५५		इसमुक्तावलि	२६७
आरतराम—	दर्शनपञ्चीसी	२८	कामन्द—	कामन्दकीय नीतिसार	२३५
आलू—	द्वादशानुप्रेला	१६३, १६४, ३११	ब्र० कामराज—	त्रैसठ—शालाकापुरुषोंका वर्णन	१८३
उत्तमचन्द्र—	त्रिलोकसार भाषा	६३	कालकसूरि—	पद	२६३
ऋपभनाथ—	पद	१३१	कृष्ण गुलाब—	पद	१५५
ऋपभदास—	मूलाचार भाषा टीका	३३, १८८	किशनसिंह—	आदिनाथ का पद	१६५
मुनि कनकामर—	ग्यारह प्रतिगा वर्णन	११७		एकावलीप्रतकथा	७३
कनककीर्ति—	कर्मघटा वलि	१४६		क्रियाकोश	२८
	जिनराज स्तुति	१५२		गुरुमक्तिगीत	७३
	तत्त्वार्थसूत्र भाषा टीका	१३ १७६		चतुर्विंशति स्तुति	७३
	पद	३००		चेतन गीत	७२, १३१
	मेखकुमारगीत	२२७		चेचन लौरी	७३
	विनती	१३१, १८६		चौबीस दडक	७३
	श्रीपाल स्तुति	१४३		जिनमक्तिगीत	७३
कनकसोम—	जइत पद वेलि	२१३, १६२५		गमोकार रास	७३
कमललाभ—	पार्श्वनाथ स्तोत्र	१४०		नागश्रीकथा	७३, ८३
करमचंद—	पंचमकाल का गण मेद	३००		( रात्रि भोजन त्याग कथा )	
महाकवि कल्याण—	धनगरंग काव्य	२७४		निर्वाण कांड भाषा	७३
कल्याणकीर्ति—	थादीश्वरजी का बधावा	१५२		पद	१६३
	तीर्थरु विनती	१४१		पद समूह	१०४
कबीरदास—	कबीर की चौबई	२६७		पुण्याश्रवकथाकोश	१२
	कबीर धर्मदास की दया	२६७		मद्रजाहुचरित्र भाषा	७३, २१६, २७०
	काया पाजी	२६७		लब्धिविधान कथा	७३
	कालचरित्र	३०५		विनती समूह	१०५
	ज्ञानतिलक के पद	२६७		श्रावकमुनिवर्णन गीत	७३
	पद	२६४	किशोरदास—	पद	१२०
	रेखता	२६७	कुमुदचंद—	पद	२७३
	साखां	२६०		विनती	३०७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
कुशललाभ—	श्रमणपार्वर्चनाथस्तवन	१४०	कुशललाभ—	फुटकर दोहे तथा कु डलियां	१३७
कुशलवर्द्धन ( शिष्य नगागणि )	शान्तिनाथ स्तोत्र	२४३	गुणसागर—	शान्तिनाथ स्तवन	२६२
पं० केशरीसिंह—	वर्द्धमानपुराण भाषा	६५	गुलाबराय—	कवका बत्तीसी	१५३
केशवदास—	रसिकप्रिया	२५१	ब्र० गुलाल—	गुलाल पच्चीसी	६४
केशवदास—	आत्महिंडोलना	१६३		जलगालनक्रिया	५३
	शान्तिनाथ स्तवन	२६१	गोपालदास—	त्रेपनक्रिया	३००
	सवैया	१६५		त्रिवेक चौपई	३०४
चैमकुशल—	सातव्यसन सञ्ज्ञाय	२६१		प्रभादीगीत	२६१
खड्गसेन—	त्रिलोकदर्पण कथा	६२	घीसा—	यादुरासो	२६२
खुशालचन्द—	उत्तरपुराणभाषा	६४	चतुर्भुजदास—	मित्रविलास	३१२
	* चन्दनषष्टिप्रत कथा	२६७		मधुमालती कथा	२०१, ३०६
	* जिनपूजा पुरदर कथा	२६७	चंद्रकीर्ति—	श्रादिनाथ स्तुति	२७२
	धन्यकुमार चरित्र	७०, २१२		गीत	२७२
	पद	२६७	चंपाराम—	धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचार	३०
	पद्मपुराणभाषा	६४		मद्ब्राह्मचरित्र	२१४
	* मुक्तावलिप्रत कथा	२२७	चरनदास—	पद	२७५
	* मुकुटसप्तमीप्रत कथा	२६७	चन्द्र—	अजित जिननाथ की वीनतां	१४३
	* मेघमालाप्रत कथा	२६७		स्तुतिसमूह	२४६
	यशोधरचरित्र ७६, १२४, २१८, २६७		चैनसुख—	अकृत्रिम चैत्यालय पूजा	४६
	* लब्धिविधानप्रत कथा	२६७		दर्शनदशक	१०३
	प्रतकथाकोश	८५, २२६		सहस्रनामपूजा	२०८
	* षोडशकारणप्रत कथा	२६७	छविनाथ—	श्रु गारपच्चीसी	२५१
	* सप्तपरमस्यान कथा	२६७	छीतर ठोलिया—	होलिकाचरित्र	८०
	हरिवंश पुराण	६७	छीहल—	उदरगीत	२१६
खैमदास—	कवित्त	१३७		छीहल की बाधनीं	३०४
गगाराम पांड्या—	भक्तामरस्तोत्र भाषा	१२६		पद	११७
गिरधर—	कवित्त	१३६		पचसहेलीं	२६२
				पृथगीगीत	११४, १६५, ३०६
			जगजीवन—	एकीभाव स्तोत्र भाषा	२६६

\* ये सब कथाएँ प्रतकथा-कोष में समूहित हैं ।

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पद	१००		मजारी गीत	२६४
जगतभूषण—	पार्थनाथ स्तोत्र	२४४	जिनदत्त—	अर्भतरुगीत	१२३
जगतराम—	पदसमूह १२१, १३३, १३७, १५५			पदसमूह	१२३
	विनती	१२६		( जिणदत्त विलास )	
जगराम—	आठद्रव्य की भावना	१५३	जिनदत्त सूरि—	दानशील चौपई	०६१
	पद	१६२	जिनदास गोधा—	अष्टमि चैत्यालय पूजा	६६
जयकृष्ण—	रूपदीपपिंगल	८८		सुशुक गतक	३८
जयचन्द्र छावडा—	अष्टपाहुड भाषा	३६, १६१	त्र० जिनदास—	आदिनाथस्तवन	२६६
	स्वा० काचिकेयानुप्रेषा भाषा ४६, १६१			कर्मविपाकराम	८१
	चारित्र्यपाहुड भाषा	१६०	जिनदेव सूरि—	बृहन्नाराज हंसराज चौपई	३०७
	ज्ञानार्णव भाषा	००	पाण्डे जिनदास—	चैतनगीत	११६, ३०४
	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	१४		जम्बूस्वामीचरित्र भाषा	६६, १३१
	दर्शनपाहुड	१६२		गिरचर जलडी	११६
	देवागमस्तोत्र भाषा	४७		पठ	२७२
	द्रव्यसमूह भाषा	१८		मालीरामा	१६६
	परीक्षामुख भाषा	४८		पुनीश्वरों की जयमाल	१३४, ३०१
	बोधपाहुड भाषा	१६४		योगीरामा ४०, ११७, ११६, १२०	
	भक्त्यामरस्तोत्र भाषा	२४२		१३१, १३६, १५३, १६६, ३०६	
	समयसार भाषा	६५	जिनप्रभ सूरि—	अजितनाथ स्तवन	३४०
	मामाथिक वचनिका १०६, १६०, २६०			पद्मावती चौपई	३०१
	सूत्रपाहुड	१६५	जिनरंग—	चतुर्विंशति जिनगतोत्र	१४१
उपाध्याय जयसागर—	श्री जिनकुशल धरि स्तुति	१४०		चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन	१४०
जवाहरलाल—	पचकृमार पूजा	६७		पार्श्वनाथ स्तोत्र	१४०
	सम्मोदशिखर पूजा	००७		प्रबोध नावनी	१४२
महाराज जसवंतसिंह—				प्रस्ताविक दोहा	१४१
	भाषाभूषण	२७६	जिनराज सूरि—	पार्श्वनाथ स्तोत्र	१४०
जिनकुशल सूरि—	पद	२७३		शालिभद्र चौपई	७८, २८६
	स्तवन	३००	पाण्डे जिनराय—	जम्बूस्वामी पूजा	११५
जिनचंद्र सूरि—	पद	०७३	जिनवल्लभ सूरि—	अजित-शक्ति स्तवन	३०१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पद	२६०		रोहणीव्रत कथा	२६५
जिनहर्ष—	नववाड सज्भाय	१४६		लब्धिविधान कथा	२६५
	नेमिराजमति गीत	१४७, २६०		षोडशकारणव्रत कथा	२६४
	नेमीश्वर गीत	१५६		श्रुतरुक्म ( कथा )	२६५
	श्रावकनी सज्भाय	१४१		श्रावणद्वादशी कथा	२६५
	सिद्धचक्र स्तवन	१४७		सुगन्धदशमीव्रत कथा	२६५
जिनेश्वर सूरि—	स्तोत्रविधि	२७३	टीकम—	चन्द्रहस कथा	८७
जोधराज गोदीका—	पदसमूह	१३७, १५३	टेकचन्द—	कर्मदहन पूजा	५०, १६८
	सम्यक्त्वकौमुदी कथा	५६, १२५		तीनलोक पूजा	५३
जौहरीलाल—	पद	१७१		पदसमूह	११३
	विद्यमान बीसतीर्थकर पूजा	६०		पंचकल्याण पूजा	७०२
त्र० ज्ञानसागर—	अनन्तव्रत कथा	२६५		पचमगल पूजा	५७
	अष्टाह्निकाव्रत कथा	२६५		पचमेरु पूजा	५७
	आकाशपचमी कथा	२६५		व्यसनराज वर्णन	१७३
	आदित्यवार कथा	२६६		सुदृष्टितरंगिणि	१६०
	कोकिलपचमी कथा	२६५		सोलहकारण पूजा	६२
	चन्दनषष्ठीव्रत कथा	२६५	टोडर—	पद	१२८
	जिनगुनसप्तविंशत कथा	२६६	प० टोडरमल—	आत्मालुशासन भाषा	३६, १६१
	जिनरात्रिव्रत कथा	२६५		गोमट्टसार जीवकाण्ड भाषा	१७७
	त्रैलोक्यतीज कथा	२६५		गोमट्टसार भाषा	७८
	दशालक्षणाव्रत कथा	२६५		पुरुषार्थ सिद्धच्युपाय	३३
	निशल्पाष्टमी कथा	२६५		मोक्षमार्गप्रकाश	३५, १८७
	पल्यविधान कथा	२६५		लब्धिसार भाषा	२२
	पुष्पाजलिव्रतविधान कथा	२६५	ठकुरसी—	नेमिराजमति बेलि	११७
	मुकुटसप्तमी कथा	२६५		पंचेन्द्रिय बेलि	११७, ११६, १६५
	मेघमालाव्रत कथा	२६६			१६७, २६९
	मौन एकादशीव्रत कथा	२६५	डालूराम—	अट्टाईद्वीप पूजा	४६
	रत्नाबधन कथा	२६५		शुरोपदेश श्रावकाचार	२५
	रत्नत्रयव्रत कथा	२३, ५ २६८		पद	१४७

प्रथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	प्रथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	
	पंचपरमेष्ठी गुणस्तवन	२४०		रत्नत्रयपूजामाषा	५८	
	पंचपरमेष्ठी पूजा	५७		शास्त्र पूजा	६०	
	भारहृश्रुतप्रेषा	१४७		समाधिमरण	१६२	
	सम्यग्रकाशा	३६		सिद्धचक्र पूजा	६२	
संघपतिराय डूंगर—	पद	२६३		सौलहकारण पूजा	१२	
डूंगरसी वैनाडा—	श्री जिनस्तुति	१६७		मनोधपचासिका	३७, ११६, १३२	
पं० डूंगो—	नेमिजी की लहर	१६५			२७३, ३११	
तुलसीदास—	सीतास्वयंवर लीला	२७८		स्तुति	१३६	
ब्र० तेजपाल—	चण्डीसतीर्थकर विनती	२६६	दादूदयाल—	दोहा	२७५	
	श्रीजिनस्तुति	१६७	दीपचन्द—	ग्रनुभव प्रकाश	०३, १८२	
त्रिभुवनचन्द्र—	अनित्य पचाशिका	४, १६४		आत्मावलोकन	६०	
	सद्योष पचासिका	११४		चिद्विलास	२७	
त्रिलोकेन्द्रकीर्ति—	सामागिकपाठ भाषा	१०८		पद संग्रह	११३, १२७, १३२	
श्रीदत्तलाल—	भारहृश्रुती	१६२			१५१, १५३, १६३, २६६	
थानसिंह—	रत्नकारणवैश्रावणकाचार	१८७		परमात्मपुराण	४१	
	सुयुद्धिप्रकाश	६५		विनती	३०७	
ब्रह्मदयाल—	पद संग्रह	१०४	वावा दुलीचन्द—	धर्मपरीक्षा भाषा	२६	
हरिगह—	जरवडी	११६		पूजनक्रिया वर्णन	५८	
द्यानतराय—	अष्टादशिका पूजा	५०		मृत्युमहोत्सव भाषा	४२	
	१०८ नामों की गुणमाला	१०१	दूलह—	कविकुलकंठाभरण	२६६	
	एकीभाव स्तोत्र भाषा	२६७	कवि देव—	अष्टजाम	२७६	
	चर्चाशासक	६, १-४, १७७	मुनि देवचन्द्र—	आगमसार	२७५	
	छद्दाला	१३७, ३११	देवात्रह—	विनती	१३२	
	दशस्थानचौवीसी	२५६		सास बहूका भगडा	२५७	
	धर्मविलास	२२, १३१, ३१०	देवीदास—	राजनीति कविता	२३६	
	निर्वाणकारण पूजा	२०२	देवीदास नन्दन गणि—	चैतनगीत	२७२	
	पदसंग्रह	१०४, १२६, १३७		वैराग्य गीत	१२२	
		१६३, ३१०		सगही दौलतराम—	अंतविधान रासो	२५८
	पार्श्वनाथ स्तोत्र	२४४				



ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
दौलतराम—	अध्यात्म बारहखंडी	३०		सिद्धचक्र पूजा ( अष्टाङ्गिका )	२००
	आदिपुराण भाषा	६३, २२२		सिद्धचक्रमत कथा	८६
	क्रियाकोश	१०३		सिद्धांतसार दीपक भाषा	२२
	चौनीसदडक	२८, १०८, ३१२	नंद—	यशोधर चरित्र	७५
	त्रेपनक्रिया विधि	२०	नंददास—	मानमजरी	०७०, २०३
	पद्मपुराणभाषा	६८, २२३		नासिकेतोपाख्यान	१३६
	परमात्मप्रकाश टीका	८१		अनेकार्थ मजरी	०३२
	पुण्याश्रवणथाकोश	८४, २२६	नन्द नन्दन—	चौरासी गीत्रोत्पत्ति ब्रह्मण	
	पुरुषार्थसिद्धयुपाय	१०५	नंदराम—	सम्मेदशिखर पूजा	२१७
	श्रीपाल चरित्र	७८	नागरीदास—	इशकचमन	२८०
	सारसमुच्चय	३०		चैनविलास	२५०
	हरिद्विशपुराण	६६, २२४	नाथू—	नेमिनाथ का न्याहला	१२०
धनराज—	नेमिनाथ स्तवन	२०६		पद	१२७
मुनिधर्मचंद्र—	गीत	२७२	नाथूराम—	जम्बूस्वामी चरित्र	२१०
	धर्म धमाल	१६३, १६४	नाथूलाल दोसी—	सुकुमाल चरित्र	२१६
वर्मादास—	कृष्ण का बारहमासा	२७५	मुनि नारायण—	अहमताकुमार रास	१६०
	पद संग्रह	११३	नूर—	नूरकी शकुनावली	१४०
ब्रह्म धर्मरुचि—	नेमीश्वर के दश भवातर	१५७	कवि निरमलदाम—	पंचाख्यान ( पंचतंत्र )	२६१
धर्मसुन्दर ( वाचनाचार्य )			नेमकीर्ति—	पद	३०६
	अष्टापदगिरिरत्न	२७३	नेमिचन्द्र—	हरिवंशपुराण	१२७
नयसुन्दर—	शत्रु जयोद्धार	१२६		प्रीत्यकर चौपई	१२७
नवलराम—	जिनदेव पञ्चीसी	३११		नेमीश्वररास	१२७
	पदसंग्रह	१३७, १४३, १६२	पदमराज—	फलवधी पाशवनाथ स्तवन	१८०
	चनती	३११		राजुल का बारहमासा	१४०
नथमल विलाला—	नागकुमार चरित्र	८३	पद्मनाभ—	हूंगर की ब्रावनी	३०४
	बकचोर कथा	२२७	पन्नालाल—	आराधनाभार भाषा	१६१
	( धनदत्त सेठ की कथा )			न्यायदीपिका भाषा	४७
	भक्तामरस्तोत्र भाषा कथा सहित	२४१		सद्भाषितावली	२३६
	महीपाल चरित्र	२१६		समवशरण पूजा	२०७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	सरस्वती पूजा	६१	वखतराम—	आसावरी	१६०
	सुभाषितावली	२३६		पदसमूह	१३७
पन्नलाल संधी—	बीस तीर्थकर पूजा	२०३		मिथ्यात खडन	१८६
पृथ्वीराज राठौड—	कृष्णरुक्मणि बेलि	११८	वनारसीदास—	ग्रथ्यात्म बत्तीसी	२८०
	कवित्त	१३६		अर्द्धकथानक	१८६
	पृथ्वीराज बेलि	३०२		उपदेश पञ्चोत्ती	१४६
	( कृष्णरुक्मणि बेलि )			उपदेश शतक	६८
प्रभु कवि—	वैराट पुराण	२६३		कर्मप्रकृति वर्णन	११५
पर्वतधर्मार्थी—	द्रव्यसमूह बाल बोधिनी टीका	१६, १७, १८०		कर्मप्रकृति विधान	८, ११५
	समाहितप्र भाषा	८५, १६६		कल्याणमंदिरस्तोत्र भाषा	१०२, ११३, ११५, १२४, १८६, १५३
परमानंद—	पद	११६		१६८, २३८, २६६, ३११	
परिवाराम—	मांगीतु गी तीर्थ वर्णन	११८		कवित्त	१६२
परिमल्ल—	श्रीपाल चरित्र	७६, २१६		गोरख वचन	२८१
पारसदास निगोत्या—	ज्ञानसूर्योदय नाटक	६०		जिनसहस्रनाम भाषा	१०३, १३७, २६६
पुण्यरत्नगणि—	यादवरासो	२६२		ज्ञानपञ्चीमी	११५, १५२, १६३, २८१
पुण्यकीर्ति—	पुण्यसार कथा	२८६		ज्ञानबत्तीसी	१६३
पुण्यसागर—	ब्रह्मचर्य नववाडि वर्णन	१४८		तेरहकाठिया	२८०
	सुनाहु ऋषि सधि	१४८		ध्यानबत्तीमी	१५३, २८२
पूनो—	पद	१३२		पद समूह	११३, १५३, १५५
	मेघकुमार गाँत	११५, ११७, १२०, १३०, १५६, १६४		परमज्योति	८७७, ३११
	विनती	१३१		वनारसी विलास	११८, ११५, ११८, १२०, १३७, १७२
प्रेमराज—	पंचपरमेष्ठि मंत्र स्तवन	१४१		भवसिंधु चतुर्दशी	२८१
	त्रीशविश्वमान स्तुति	१८१		मांझा	१२०
	गोखह सती स्तवन	१८१		मिथ्यात्व निषेध	१८७
पोपट शाह—	मदनमजरी कथा प्रबन्ध	२२७		मोक्ष पैठी	३३, ११३, ११६, ३०४
प० फूरो—	राजाचंद की कथा	२८६			
बन्नीराम—	स्वैरदा	६५			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	मोहविवेक युद्ध	६०, ६२, १६५	बिहारीदास—	जखड़ी	०३६
	वैद्य लक्षण	२८१		सबोध पचासिका	१५३
	शिव पञ्चीसी	२८१, २६६	बूचूराम—	गीत	११७
	समयसार नाटक ४४, ११५, ११८, १२०, १६५, ३०७			मदनबुद्ध	३०४
	सवेया	१४६, १६२	उपाध्याय भगतिलाम—		
	साधु बदना	१३६, १६१, ३०४ ३०६, ३११		सीमधरस्वामी स्तवन	१४०
	सिन्दूर प्रकरण	४, ११४, ११५, ११८, १३३, २३६	भैया भगवतीदास—	एषणा दोष	१८३
बालचन्द्र—	पद संग्रह	१२३		चेतन कर्म चरित्र	६८, १३३
	हितोपदेश पञ्चीसी	१००		जिनघर्मपञ्चीसी	१५५
कवि बालक(रामचन्द्र)	सीता चरित्र ७६, ११४, २२१, २६६			निर्वाणकाण्ड भाषा १०३, १२०, ३११	
बालवृन्द—	जानकी जन्मलीला	०७८		परमात्म छत्तीसी	३०३
बुधजन—	इष्ट छत्तीसी	१०१		पुण्य जगमूल पञ्चीसी	१५
	छह टाला	१५५		ब्रह्मविलास	३२
	तत्त्वार्थ बोध	१५		धारह भावना	१६६
	पचासिकाय भाषा	१६		मृदाष्टक वर्णन	१७२
	पद संग्रह	१३७		वैराग्य पञ्चीसी ४३, १३३, १७०	
	बुधजन विलास	१७३, ३१२		सम्यक्त्व पञ्चीसी	३६, १७२
	बुधजन सतसई	६४	भगवानदास—	समधुओं के आहार के समम के ४६ दोषों का वर्णन	१२०
	मृत्यु महोत्सव	१६४		सीतलह स्वप्न ( स्वप्न बत्तीसी )	१५५
	योगसार भाषा	४२	भगवानदास—	भगवानदास के पद	२४१
धुलाकीदास—	प्रश्नोत्तरोपासकाचार	३१, १८६	भाऊकवि—	श्राद्धित्यवार कथा ८१, १२३, ११७ १३८, १४३, १५४, १६६, १६१ १६७, २६२, २६८, ३०६	
	पाण्डवपुराण	६४	भागचन्द्र—	उपदेश सिद्धांत रत्नमाला २४, १८३ पद	१६२
बंशीधर—	द्रव्यसंग्रह भाषा	१८, १		शील गीत	२६४
बंशीधर—	दस्तूर मालिका	१७०	भैरवदास—	दर्शनकथा	८३
ब्रह्मदेव—	द्रव्यसंग्रह वृत्ति	१७, १८०	भारामल्ल—	दानकथा	८३
	वरमात्मप्रकाश टीका	६१			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	निशिभोजनत्याग कथा	८४, २२६		विनती	३०६, ३०७
	शीलकथा	८५, २८७	मनरंग—	चौबीस तीर्थकर पूजा	१६६
भावकुशल—	पार्श्वनाथस्तुति	१४६		पार्श्वनाथ स्तोत्र	१४०
भावभद्र—	च द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	१४०	मनसुखराम—	शिखर विलास	१८८
भुवनकीर्ति—	कलावती चरित्र	६७	मनसुख सागर—	सन्मिदशिखर महात्म्य	३६
	चितामणि पार्श्वनाथस्तोत्र	१४०	मन्नालाल ( खिन्दूका )		
भूवरदास—	पृथ्वीभावंस्तोत्र भाषा	२३८, ३११		चारित्रसार भाषा	२५
	गजभावना	३११		पद्मनन्दिपञ्चमीसी माया	३१
	चर्चा समाधान	६, ११७	मनोहरदास—	ज्ञानचिंतामणि	२८, १३१, १५३, २३५
	जख्खी	१३७, ३१२		धर्म परीक्षा	२६
	जैनशतक	६४, १३४, २३५	मनोहर—	चिन्तामणि भान बावनी	११२, ११६
	पद-समूह ११३, १३२, १३७, १५६			लघु भावनी	११६
	पञ्चमेक पूजा	५७, ३११		सुगुण सीख	१६५
	पार्श्वपुराण	७७, ६११, २१३	मनहरण—	भास	२६२
	बारह भावना	१५७	मलजी—	पद समूह	१३७
	भूधर विलास	३१२	कवि मल्ल—	प्रबोधचन्द्रोदय ( नाटक )	६०
	वज्रनाभि चक्रवर्ती की	१५४, १६२	महमद—	पद	१४६
	वैराग्य भावना	३११	महिमा सागर—	स्तमनक पार्श्वनाथ गीत	२७३
	वाईस परीषद्	३११	मुनि महिसिंह—	श्रद्धा बचीसी	२५०
	वीनतियां	३११	ब्र० मालदेव—	पुरंदर चौपई	८४, ११६
भूधरमल्ल—	टुकका निषेक	११२६	वाई मेघश्री—	पंचाणुव्रत की जयमाळ	३०५
मनराम—	श्रद्धामाला	१२७	मुनि मेघराज—	सयम प्रवहण	१८६
	शुशाचरमाला	३०६	उपाध्याय मेरुनन्दन—		
	धर्मसहेली	१६७		अजित शांति स्तोत्र	१६०
	पद ११४, ११६, १२०, १४०, ३००		सहजकीर्ति—	प्राप्ति बचीसी	०६२
	बडा कक्का	१५३	यशोनन्दि—	श्रीजिननमस्कार	१६५
	बचीसी	२६६	रघुनाथ—	गणमेद	२६१
	मनराम विलास	२३६		ज्ञानसार	२६७
	रोगापहार स्तोत्र	११५		नित्यविहार ( राधा माधो )	२६२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	प्रसंगसार	२६२	रामविजय—	सखेश्वरपार्श्व नाथस्तुति	१५०
रंगवल्लभ—	पार्श्वनाथ स्तवन	१४०	महाराजा रामसिंह—	द्विवितरंग	२७६
श्री रत्नहर्ष—	हितोपदेश एकोत्तरी	१६०	रायमल्ल—	ज्ञानानन्द श्रावकाचार	२८
ब्र० रायमल्ल—	चन्द्रशुप्त के सोलह स्वप्न	१६३, ३०४		साधर्मि माई रायमल्ल की चिट्ठी	१७८
	जिनलाहृगीत	११७	रूपचंद—	अध्यात्म दोहा	११३
	नेमिकुमाररासो	१३२, २७२, २८८		अध्यात्म सवैया	३०५
	प्रद्युम्नरासो	१३२, ३०७		जखडी	११६, १६६
	भविष्यदत्त चौपई	१११, २१६		जिनस्तुति	१५२
	श्रीपालरास	११३, १३१, २७२, २८८, ३०४, ३०७		दोहा शतक	११८, ११६
	सुदर्शनरास	१११, १३२		पद	१११, ११३, १२३, १२५, १२६, १६६
	हनुमतकथा ( चौपई )	८७, १३२, १६१, २२१		परमार्थगीत	११६, १६४
				परमार्थदोहा शतक	१११
राज—	उपदेशकवीसी	१५१		पंच कल्याणक पाठ ( पंच-मंगल )	११६, ११२, ११६, १२०, १२३, १४१, १४६, १५३, १५४, १५७, १६१, १२४, २८६, ३०५, ३१६
राजसमुद्र—	प्रतिमास्तवन	१४१	लखमीदास—	यशोधर चरित्र	२१८
राजसेन—	पार्श्वनाथ स्तोत्र	२४५	लच्छीराम—	कृष्णभरन नाटक	२७०
रामकीर्ति—	मानतु गी की जखडी	२७२	लक्ष्मणदास—	पुस्कौ गुणहल्लर जीव पाठक	११०
रामकृष्ण—	उपदेशजखडी	१३७	लक्ष्मीचन्द्र—	उपासकाज्ञान दोहा	१२४, १२०
रामचन्द्र—	आदिनाथपूजा	५०		द्विदशानुप्रेक्षा	११८
	कर्मचरित्रबाईसी	२४	गणि लालचंद—	सीता की धमाल	१६७
	चतुर्विंशति जिनपूजा	५२, १११, ११६		सीमंधर स्तवन	२६०
	चौबीस महाराज की वीनतो	१०२, ११२	लब्धिविजय—	नेमिगीत	२६०
	विमलनाथ पूजा	२०६	लालचंद—	नेमजी का ब्याहलो	३०३
	समुच्चय चौबीसी पूजा	११६		( नव मंगल )	
	सम्भेदशिखर पूजा	६१	लालचंद विनोदीलाल—	चतुर्विंशति स्तुति	१५५, २३६
रामदास—	ऊषा कथा	२६७			
	पद	१२६, १३२			
रामभद्र—	कर्मष कुठार	२८०			
राजमल्ल—	समयसार भाषा	४६, १६६			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पंचमंगल	१३१	विनोदीलाल—	नेमीश्वर राजमति गीत	१५६
	शैल पञ्चीसी	१३१, १३२, १४६		नेमीश्वर राजल सवाद	३०६
		१५१, १६६, २२७		प्रभात जयमाल	३११
	समवशरण पूजा	११४		भक्तामरस्तोत्रकथा भाषा	२२६
लालदास—	महामारत कथा	१३६, २६७		मान पञ्चीसी	२५७
मुनि लावन स्वामी—	शालिमद्र सङ्काय	१७४		राजल पञ्चीसी	१६५
साह लोहट—	श्रठारह नाता का चौदाला	११३, १३२	मुनि विमलकीर्ति—	नंद क्वचीसी	६४
		१६१, १६६, ३०६	विमलहर्ष वाचक—	जिनपालितमुनि स्वाध्याय	१८४
	चौबीसठाणा चौपई	१६६	विहारी—	विहारी सतसई	१११, १३६
ब्रह्मवर्द्धन—	गुणस्थान गीत	११६, १६४	कवि वीर—	मणिहार गीत	२६३
वृन्द—	दीहा	१३६	वील्लव—	नेमीश्वर गीत	
	पद	१३२	रयामदास ( गोधा ) पद		१६४
	वृन्द सतसई	१११		नेमिनाथ का बारहमासा	१६६
वृन्दावन—	चतुर्विंशति जिनपूजा	५१, १६६	प० शिरोमणिदास—	धर्मसार चौई	७६
	छन्द शतक	८८	शिव कवि—	किशोर कल्पद्रुम	१६६
	तंसि चौबीसी पूजा	६३	शुभचन्द्र—	चतुर्विंशति स्तुति	१४३
	प्रवचनसार भाषा	४२		तत्वसार दोहा	१७८
भ० विजयकीर्ति—	चन्दनपट्टिप्रतकथा	६१	शोभचन्द्र—	झाव मूलडी	१२६
	पार्श्वनभस्तवन	१४१		पद-	१५५
	श्रणिकचरित्र	७६	श्रीपाल—	जिनस्तुति	३११
विजयतिलक—	श्रादिनाथ स्तवन	१४०	श्रुतसागर—	पट्टमाल वर्णन	१४३
विजयदेव सूरि—	शीलरास	११३, २६१	सदासुख कासलीवाल—		
विजयभद्र—	सङ्काय	१७६		मङ्गलकाष्टक भाषा	३४, १८७
विद्याभूषण—	लक्ष्मण चौबीसी पद	२६६		अर्थप्रकाशिका	१६
विनयसमुद्र—	विक्रम प्रबंध रास	२६५		तत्त्वार्थसूत्र भाषा	१६
विनयप्रभ—	गोतम रासा	३०१		भगवतीश्राराधना भाषा	३३, १८७
विश्वभूषण—	पद	१३१		रत्नकण्ठ श्रावकाचार भाषा	३४, १८७
	पचमेश पूजा	१५२		लघु भाषा, वृत्ति	१४
वाचक विनय सूरि—	श्रावनास्तवन	१००		षोडशकारणभावना तर्था	१८८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	दशलक्षण धर्म			वाणिक प्रिया	१२१
सुमयराज—	पाश्र्वनाथ लघु स्तोत्र	१४०	सुमतिकीर्त्ति—	जिनवरस्वामी वीनती	११७
समयसुन्दर—	आत्मउपदेश गीत	२६०		जिनविनती	१६४
	सुमानचीमी	१२६		त्रिलोकसारबध चौपई	६२, ११८,
	चतुर्विंशति स्तुति	१४२			२३४
	दानशील सवाद	१४१	सुन्दर—	पुंद्	१६७, २६६
	नलदमयती चौपई	२६१		सहेली गीत	१३१
	नाकौव्या पाश्र्वनाथ स्तवन	१४२	सुरेन्द्रकीर्त्ति—	आदित्यारं कथं	८१
	पचमी स्तवन	१४७		ज्ञानपञ्चीसी व्रतोद्यापन	२०५
सहजकीर्त्ति—	चउकीस जिनगणधर वर्णन	१४७		पचमास चतुर्दशी व्रतोद्यापन	२०४
	पाश्र्व जिनस्थान वर्णन	१४७	सूरत—	दालगण	२८
	पाश्र्व भजन	१४७		बारहखडी	१४१, २५७, ३११
	प्राति छत्तीसी	२६२	सेवाराम—	चतुर्विंशतिजिन पूजा	६१, १६६
	बीसतीर्थकर स्तुति	१४७	सोमदत्त सूरि—	यशोधरचरित्र रास	१२६
सहसकरार्ण—	तमाम्बू गीत	२६१	हजारीमल्ल—	गिरनार सिद्धचेत्र पूजा	१६८
सतलाल—	सिद्धचक्र पूजा	२०८	हरिकृष्ण पाण्डे—	चतुर्दशी कथा	१५४
स्वरूपचन्द्र विलाला—	चौसठश्रद्धि पूजा	५२, २००	हरिराम—	छंद रत्नावली	८८
	जिनसहस्रनाम पूजा	५३	हरीसिंह—	जखडी	१६२
	निर्वाणचेत्र पूजा	५६, २०२		पद	१२७, १३५, १४६, १६२
	मदन पराजय भाषा	६१	हर्षकीर्त्ति—	कर्महिंडोलना	१६७, २७२
साधुकीर्त्ति—	चूनडी	२६४		चतुर्गति बेलि	११७, १२८, १६१
	पदसग्रह ( सतरप्रकार पूजा प्रकरण )	२७३		( बेलि के विषे कथन )	
	रागमाला	२७३		पद	१६५, १६५
सालिग—	पद	१६२		पचमगति बेलि	११७, १३०, १६५
सारस्वत शर्मा—	भडली विचार	२४५			३०७
सिद्धराज—	अष्टविधि पूजा	१६२		नेमिनाथ राखल गीत	१६६
कवि सुखदेव—	धु चरित्र	२८०		नेमीश्वर गीत	१६६
				बीसतीर्थकर जखडी	३११
				मोडा	१८८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
सूरि हर्षकीर्ति—	विजय सेठ विजया सेठानी सञ्ज्ञाय	२६०	पं० हेमराज—	गीत	१६७
हर्षचन्द्र—	पद सग्रह	११३		गोमट्टसार कर्म काण्ड भाषा	८, १७७
हरखचद ( धनराज के शिष्य )				चौरासी बोल	२७, ११२
	पदसग्रह	२८६		दोहा शतक	११४
	पार्श्वनाथ स्तोत्र	२८६		नयचक्र भाषा	४७
	श्रीतलनाथ स्तवन	२८६		नेमिराजमती जखडी	१५२
हरिकलरा —	सिंहासन बत्तीसी	२६०		पचारितकाय भाषा	१६, १८१
प० हरीवैस—	पंचवधावा	१६५		प्रवचन सार भाषा	४२, १११, १६३
हीरा—	नेमि ग्याहलो	८४		मत्तामर स्तोत्र भाषा	१०५, ११२,
हेमविमल सूरि—	नन्द बत्तीसी	२५५		११५, १३५, १३६, १६४, १७२,	
				२६३, २६६, ३०२ ३०३, ३०८	





## ★ शुद्धाशुद्धि विवरण ★

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१×१ } ३१५×१५ }	अन्तगढदशाश्रो वृत्ति	अन्तगढदशाश्रो वृत्ति
१×७	इकवीसठाणा चर्चा	इकवीसठाणा—सिद्धसेनसूरि
१×१३	जीवपाठ	जीवमंख्यापाठ
१×१४	माघ सुदी	पोस बुदी
२×१६	—	१ से ७ तक सभी पाठ रामचन्द्र कृत हैं।
४×६	कणयर्णिद	कणयर्णदी
५×२२	पावछी	यावछी
८×१५	चोछ	चोच्छं
६×२१	समोसरमवर्णन	समोसरणवर्णन
१३×११	१८३६	१८४६
१५×१७	×	१४२६
२०×२२	जिनाय	—
२४×७	भडार	भडारी
२८×२२	—	भाषा—हिन्दी
२६×६	रचनाकाल ×	रचनाकाल—
३६×२३ } ३४५×२५ } ३५३×२४ }	रङ्गू	अज्ञात
३८×१६	मे प्रतिलिपि की थी	मे संशोधन करके प्रतिलिपि करवाई थी
३६×७	५१	२५१
३६×२०	चिन्तान	चित्तान्
३६×२०	धर्मरेजितचेतसान	धर्मरजितचेतसान
४१×६	भाषा—अपभ्रंश	—
४५×१८	विद्यानन्दि	विद्यानन्द

पत्र एव पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
४६×१४	१८८३	१८६३
४६×७ } ३४६×१२ }	आ. समन्तभद्र	पूज्यपाद
४७×१०	यति	अभिनव
४७×१३	३१	३१
४८×१०	सं० १६२७ श्रावण सुदी २	सं० १८६३ अषाढ सुदी ४ बुधवार
६०×२३	—	भाषा-संस्कृत
६१×३	प्राकृत	अपभ्रंश
६४×०५	रामचन्द्र	रायचन्द्र
६६×८	अधुसारि	अमुसारि
६६×७	वसंतपाल	वसंतपाल
७०×१८	प्रद्युम्नचरि	प्रद्युम्नचरित—सध्वारु
७३×२४	भविमपत्त	भविसयत्त
७४×२	संस्कृत	अपभ्रंश
७४×४ } ३३६×२३ } ३५२×३० }	परिहानन्द	नन्द
७६×२०	परिहानन्द	परि हां नन्द
७८×१६	सं० १६१८	सं० १६७८
७८×०६	आराधना	दौलतरामजी कृत आराधना
७६×३	श्रेणिक चरित्र	श्रेणिक चरित्र ( वर्द्धमान काव्य )
७६×११	कवि वालक	कवि रामचन्द्र “वालक”
८१×१६	गौतम पृच्छा	गौतमपृच्छा वृत्ति
८२×१	अतिमपाठ—“पाठक पद सयुक्त” के पूर्व निम्न श्लोक और पदों —	
	श्रीजिनहर्षसूरिणा सुशिष्या पाठकवरा ।	
	श्रीमत्सुमतिहंसाश्च तच्छिष्योमतिवर्द्धते ॥ १ ॥	
८४×१८	ब्र० मालदेव	मालदेव
८४×२१	अनुसुव कोठ	अनुसुव कोठ
८४×२५	अगर्या मील तो	अगमी मीलतो
८५×०५	भारामल्ला	भारामल्ल

पत्र एव पक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
८५×२५	पथ	पद्य
८६× ८	आ०	भ०
८७× ७	१७०८	१७६५
८७× ७	लेखनकाल ×	लेखनकाल-सं० १८०६ फागुण बुदी १३
८७×२१	रचन	रचना
६०×१५	प्रारंभिक पाठ के चौथे पद्य से आगे निम्न पद्य और पदों—	

अंतर नाडी सोखै बाय, समरस आनद सहज समाय ।

विस्व चक्र में चित न होय, पडित नाम कहावै सोय ॥ ५ ॥

जब वर खेमचन्द्र गुर दीयो, तब आरभ प्रथ को कीयो ।

यह प्रबोध उतपन्यो आय, अधकार तिहि बाल्यो खाय ॥ ६ ॥

भीतर बाहर कहि समुझावै, सोई चतुर तापै कहि आवै ।

जो या रस का भेदी होय, या मे खोजै पावै सोइ ॥ ७ ॥

मथुरादास नाम विस्तारयो, देवीदास पिता कौ धारयो ।

अंतर वेद देस मे रहै, तीजै नाम मल्ह कवि कहै ॥ ८ ॥

ताहि सुनत अदभुति रुचि भई, निहजै मन की दुविधा गई ।

जितने पुस्तक पृथ्वी आहि, यह श्री कथा सिरोमणि ताहि ॥ ९ ॥

यह निज बात जानीयो सही, पचै प्रगट मल कवि कही ।

पोथी एक कहुं तै आनि, ज्यो उहा त्यों इहा राखी जानि ॥ १० ॥

सोरह सै सबत जब लागा, तामहि वरष एक अर्द्ध भागा ।

कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वादसी, ता दिन कथा जु मन मे बसी ॥११॥

जो हों कृष्ण भक्ति नित करौ, वासुदेव गुरु मन मे धरौ ।

तो यह मोपै ह्वै ज्यौं जिसी, कृष्ण भट्ट भाषी है तिसी ॥१२॥

॥ दोहा ॥

मथुरादास विलास इहि, जो रमि जानै कोय ।

इहि रस वेधे मल्ह कहि, बहुरनि उलटै सोय ॥१३॥

जब निसु चन्द्र अकासै होइ, तब जो तिमिर न देखै कोइ ।

तैसे हि ज्ञान चन्द्र परकासै, ज्यौं अज्ञान अध्यारौ नासै ॥१४॥

परमात्म परगट है जाहि, मानौ इहै महादेव आहि ।

ग्यान नेत्र तीजे जब होई, मृगतृष्णा देखै जगु सोई ॥१५॥

पत्र एव पंक्ति

अशुद्ध पाठ

शुद्ध पाठ

अनुभूँ ध्यान धारणा करै, समता सील माहि मन धरै ।

इहि विधि रमि जो जानै सही, महादेव मन वच क्रम कही ॥१६॥

६०४०६	या र	यार
६१४३ } ३६४४० }	उतमचद्	टोडरमल
६४४६	वनारसीदास	द्यानतराय
१००४१८	वाचक विनय सूरि	वाचक विनय विजय
१०१४६	उगणसीयइ	उगणतीसइ
१०१४६	राते रचउ	राते
१०१४७	कारया	कारणां
१०१४६	इठवन	इतवन
१०३४२६	नेमिदश भवर्णन	नेमिदश भववर्णन
१०५४२२	मानतु गाचार्य टीकाकार	मानतु गाचार्य । टीकाकार
१०७४२१	६	५
१०९४१	प्रथम पक्ति के आगे निम्न पक्ति और पढ़े—	
	“शिष्य ताहि भट्टारक सत, तिलोकेन्द्रकीरति मतिवन्त ।	
११०४११	प्राकृत ( „ )	अपभ्रंश
११४४१, १८	कवि बालक	कवि रामचन्द्र 'बालक'
११४४२३	दोह	दोहा
११४४२४	१६६१	१६६३
१ ७४१४	नि कनकामर	मुनि कनकामर
१२१४२	१७६०	१७१७
१२७४ २	ोप	विशेष
१३ ४६	मनरकट	मरकट
१३५४३	वडा चादन्त	वडाचा दन्त
१३७४५	वदो के पठनार्थ ने	चदो के पठनार्थ
१३८४११	क	वार्मिक
१३६४१	का नाम	कर्त्ता का नाम
१३६४२६	चरित	धू चरित

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१४६×५	ललचचंद	लालचन्द
१४७×१६ ३६३×२७ } }	अमरमणिक	अमरमणिक के शिष्य साधुकीर्ति
१४८×२	माणिक सूरि	पुण्यसागर
१४८×२४, २६ } ३३८×२६ } ३५०×०६ } }	मोडा	मोरडा
१४६×२१	गुजराती	हिन्दी ( राजस्थानी )
१४६×३	मोडो	मोरडो
१५०×११	जसुमालीया	जसु मालिया
१५०×१८	कापथ	कायथ
१५०×२०	पखार	परवार
१५१×६	नारी चरित्र	नारी चरित्र संबंधी एक कथा
१५५×१०	जैन	जे न
१५५×२१	बुधजन	द्यानतराय
१५६×६	राज पट्टावली	देहली की राजपट्टावली
१५६×१०	राजाओं के	देहली के राजाओं के
१६३×१५ } ३७०×२१ } }	ज्ञानवत्तीसी	अध्यात्म वत्तीसी
१७०×६	३५ वें पद्य के आगे की पंक्ति निम्न प्रकार है—	
	तस शिष्य मुनि नारायण जंपइ धरी मनि उल्हास ए ॥१३५॥	
१६६×८	पत्र संख्या- ।	पत्र संख्या-१६ ।
१७८×२६	रचनाकाल-× ।	रचनाकाल सं० १४२६ ।
१८०×१२	कण कणत्व	देवपट्टोदयाद्रितरुण तरुणित्व
१८०×१८	लोधा ही	लोधाही
१८४×६	विमलहर्षवाचक	भाव
१८७×११	१६०७	१६००
१८७×१६	१८२१	१६२१
१८८× ६	१४४४	१६४४
१६०×२१	श्रीरत्नहर्ष	श्री रत्नहर्ष के शिष्य श्रीसार
१६४× ४	भव वैराग्य शतक	वैराग्यशतक

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१६४×१८	भूधर	पं० भूधर
१६६×१७	धर्मभूषण	अभिनव धर्मभूषण
२००×२५	तेलाव्रत	लद्धिविधान तेला व्रत
२०४×१५ } ३१८×१० }	आ० गणिनंदि	आ० गुणिनदि
२०४×२४	पीले	पील्या
२१८×१६	पंडि.	पंडित
२१६×२४	रचनाकाल	रचनाकाल स० १६१८
२२१×१२	कवि बालक	कवि रामचन्द्र 'बालक'
२२१×१३	सं० १७०३	१७१३
२२४×१६	अष्टान्हिका कथा	अष्टान्हिका कथा—मतिमदिर
२२७× ७	कनककीर्ति	रुनक
२२७×२१ } ३३६× २ }	वकचोरकथा ( धनदत्त सेठकी कथा )	वकचोरकथा, धनदत्त सेठ की कथा
२२८×२१	देव ए	देवरा
२२८×२६	सै मदारखा	सैमदारखा
२३५× २ } ३५०×१८ } ३६४×५ }	कामन्द	—
२३५×१५	१७०६	१७२८
२३७× ७	१८८०	१७८०
२३८×१०	कुमुदचन्द्र	मू० क० कुमुदचन्द्र/टीकाकार उतमऋषि
२४०× ८	जयानंदिसूरि	जयनंदिसूरि
२४०×१४	शालिपंडित	शालि पंडित
२४३×१७	( युगादि देव स्तवन ) ।	( युगादिदेव स्तवन ) विजयतिलक
२४३×२७	मिधुण्यो	मिधुण्यो
२४४× २	ए भणइ	पभणइ
२४५× ६	ज्योतिप ( शकुनशास्त्र )	वास्तुविज्ञान
२४६× ७	वराहमिहरज	वराहमिहर
२५२×१०	महिसिंह	महेस

पत्र एवं पंक्ति

२५२×१४

२५२×१६

२५३× ६

२५३× ६

२५३×१५

२५४×२५

२५५×१४

२५७×१६

२५८× ६

२५६× ५

२६०× ८

२६७× ६

२६६×१२

२७०× ६

२७१×१२

२७३× ६

२७३×११

२७३×१५

२७३×१८

२७३×१८

२७६×८

२७६×१३

२८०×१०

२८४×१८

३२८×१६

३५१×२२

२८६×२८

२६०× ६

२६०×१२

२६०×१२

अशुद्ध पाठ

महसंहि

गोत्रवर्णन

रचनाकाल<sup>१</sup>

लेखनकाल स० १८८६

छह सतीयासिंह

अब्दनीवासी

हेमविमलसूरि

समासो

व्रतविधानवासो

श्रावण

२७०

५१६

बालक

२६

गोट

वीर स०

हिन्दी

१६५८

पद २

जिनदत्तसूरि

पाठ्य

भूषाभूषण

पत्रावली

श्री धूचरित

१७६६

भाष्य

तसघरन वनि धथाइ

अधकउ न तरुवइ

शुद्ध पाठ

महसंहि

खडेलवालॉ के गोत्र वर्णन

रचनाकाल स० १८८६

लेखनकाल X-1

छहस तीयासिंह

अब्द नीवासी.

हेमविमलसूरि के प्रशिष्यण संघकुल

तमासो

व्रतविधानरासो

श्रावक

२७० रचना काल स० १७४३

५१८

रामचन्द्र 'बालक'

२४

गोत

विक्रम स०

सस्कृत

१६१८

जिनदत्त सूरि गीत

पाठ

भाषाभूषण

चपत्रावली

श्री धूचरित-जनगोपाल

१६६६

भाष्य

तस घर नवनिधथाइ

अधक उनत हुवइ

पत्र एवं पक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
२६१×२८	जिनदत्त सूरि	सययसुन्दर
२६१×२०	२० का० स० १७२१ पद्य १०	—
२६२×८ } ३३×१८ }	माति छत्तीसी	प्राति छत्तीसी
२६२×८ } ३३×१८ }	यश' कीर्त्ति	सहजकीर्त्ति
२६२×१४	हरिकलश	हीरकलश
२६२×१४	स० १६३२	१६३६
२६४×७	थाउलपुरि	पाडलपुरि
२६४×११	भारवदा	भैरवदास
२६४×२८	वेतालदास	—
२६७×६	२१८	३१८
३०१×१६	” ( १२ )	सस्कृत ( १२ )
३०१×२०	” ( १३ )	हिन्दी ( १३ )
३०१×२५	चतुराई	परिचई
३०३×६	१७४०	१७४४
३०४×२ } ३२०×२४ }	गुनगंजनम	गुनगंजन कला
३१०×१५	पष्टिशत	पष्टिशत प्रकरण
३१०×१५	”	प्राकृत
३१०×६	६१	८१
३१२×६	कुशलमुनिद	—
३१५×८	चैनसुखदास	चैनसुख
३१५×१५	मुनि महिसिंह	मुनि महेस
३१६×७	गणचन्द्र	गुणचन्द्र
३१८×६	उपदेशशतक-वनारसीदास	उपदेशशतक-द्यानतराय
३२०×१६	यति धर्मभूषण	अभिनव वर्मभूषण
३३१×११	र्मदास	वर्मदास
३४१×२२	२६१	२६०
३५०×१८	२७६	३७६
३६२×१४	गोयमा	गोयम
३६३×०४	संवोध पंचासिका	—
३६४×७	उत्तमचंद्र	टोडरमल
३६४×५	कामन्द कामन्दकीय नीतिसार	—







जैन-आगम-ग्रन्थमाला : ग्रंथाङ्क ५

पंचमगणहरभयवंसिरिसुहम्मसामिविरइयं छट्टं अंगं

# णायधम्मकहाओ

[ ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम् ]

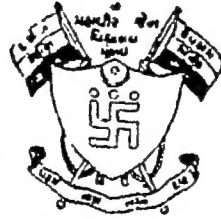
सम्पादकः

पूज्यपादाचार्यमहाराजश्रीमद्विजयसिद्धिसूरीश्वरपट्टालङ्कार-  
पूज्यपादाचार्यमहाराजश्रीमद्विजयमेघसूरीश्वरशिष्य-  
पूज्यपादमुनिराजश्रीभुवनविजयान्तेवासी

मुनि जम्बूविजयः

सहायकः

मुनि धर्मचन्द्रविजयः



श्री महावीर जैन विद्यालय

वम्बई ४०० ०३६